राजभाषा भारती

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित दिनांक 13 दिसंबर, 2007 को उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन हरिद्वार का उद्घाटन करते हुए, गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावीत जी, श्री रंजीत ईस्सर, सचिव, श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी, संयुक्त सचिव तथा श्री सचीन्द्र शर्मा, निदेशक, राजभाषा विभाग ।

संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र) हरिद्वार में बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की एक झलक ।

भारति जय विजय करे, कनक-शस्य-कमल धरे
—निराला

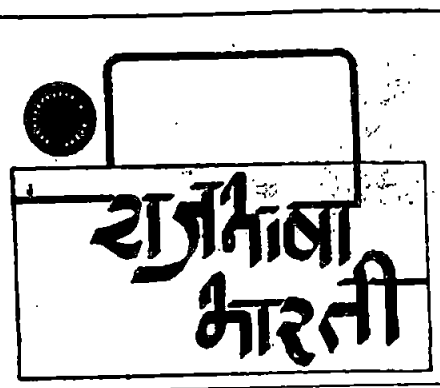

राजभाषा भारती

राजभाषा विभाग की त्रैमासिकी

वर्ष : 30

अंक : 119

अक्तूबर—दिसंबर, 2007

❑ संपादक
बिजय चंद्र मंडल
निदेशक (अनुसंधान)
दूरभाष : 24619521

❑ सहायक संपादक
शांति कुमार स्याल
दूरभाष : 24698054

❑ निःशुल्क वितरण के लिए

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं । सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

❑ पत्र-व्यवहार का पता :
संपादक, राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय,
लोकनायक भवन (द्वितीय तल),
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

ईमेल—ru-ol@mha.nic.in
patrika—ol@mha.nic.in
पोर्टल—www.rajbhasha.gov. .in.

विषय-सूची

		पृष्ठ
❑ संपादकीय		(iii)
❑ चिंतन		
1. भावात्मक एकता और हिंदी	—डॉ. अरुण होता	1
2. मानक हिंदी : स्वरूप एवं विशेषताएं	—डॉ. राहुल	4
3. भारतीय भाषाओं के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन : एक राष्ट्रीय आवश्यकता	—प्रभुलाल चौधरी	10
❑ साहित्यिकी		
4. गढ़वाली—हिंदी कोश : स्वरूप, सहभागिता और सहयोग	—डॉ. अचलानंद जखमोला	12
5. भारतेंदु पूर्व हिंदी गद्य साहित्य के समीकरण	—डॉ. प्रोमिला	16
6. समकालीन महिला उपन्यासकारों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकार	—डॉ. गुड्डी विष्ट	20
❑ पुरानी यादें-नए परिप्रेक्ष्य में		
7. भक्ति, ज्ञान एवं दार्शनिकता की त्रिवेणी : संत मलूकदास का काव्य चिंतन	—डॉ. दिनेश चमोला	23
8. गुरुनानक देव जी—मानवता की एकता के पैगम्बर	—डॉ. मनमोहन सिंह	30
❑ विश्व हिंदी दर्शन		
9. राजभाषा हिंदी और विश्व हिंदी सम्मेलन	—राजीव कुमार	33
❑ पत्रकारिता		
10. आधुनिक मीडिया का हिंदी—भाषा पर शुभ-अशुभ प्रभाव-दबाव	—डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया	36

759 HA/08—1A

विषय-सूची		पृष्ठ
❑ **संस्कृति**		
11. सामाजीकरण के वाहन–हमारे त्यौहार	–डॉ. पवन कुमार खरे	41
❑ **उदारीकरण**		
12. उदारीकरण और भारत	–सुश्री वन्दना	43
❑ **विविध**		
13. वृद्ध अवस्था–एक सुनहरी विरासत	–राम मेहर शर्मा	45
❑ **राजभाषा संबंधी गतिविधियां :**		
(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें		47
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें		54
(ग) कार्यशालाएं		59
(घ) हिंदी दिवस		66
❑ **हिंदी के बढ़ते चरण**		103
❑ **संगोष्ठी/सम्मेलन**		104
❑ **पुरस्कार/प्रतियोगिताएं**		109
❑ **प्रशिक्षण**		111
❑ **आदेश - अनुदेश**		113
❑ **पाठकों के पत्र**		115

759 HA/08—1B

संपादकीय

राजभाषा हिंदी विकास के पथ पर अग्रसर है । इसकी प्रगति में सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों/संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है । यह नि:संदेह राष्ट्रीय गौरव तथा स्वाभिमान का विषय है कि हिंदी का अल्प ज्ञान रखने वाले अधिकारी/कर्मचारी दृढ़ संकल्प हैं कि वे अपना कामकाज हिंदी में निष्पादित करेंगे ।

सरकारी कामकाज में हिंदी भाषा को स्वेच्छा से अपनाए जाने के अनेक कारणों में हिंदी भाषा में अधिकाधिक कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अनेक पुरस्कार योजनाएं है जो हिंदी की प्रगति में विशेष योगदान कर रही हैं । राजभाषा कार्यान्वयन को कारगर बनाने के लिए निष्ठापूर्वक किए गए प्रयासों के परिणामस्वरूप प्रशासनिक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक–तकनीकी क्षेत्रों में भी निरंतर हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है ।

किसी भी भाषा का पूर्ण विकास तभी संभव है जब उसका अधिकाधिक प्रयोग किया जाए और अधिकाधिक प्रयोग तभी संभव है जब हम उसका आदर करें, उसे स्वीकारें तथा उसके साहित्य के प्रति हमारी रुचि हो ।

आइए, यह संकल्प लें कि हम अपना अधिक से अधिक काम राजभाषा हिंदी में करेंगे तथा हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में अधिक से अधिक विभागीय साहित्य का सृजन कर उन्हें समृद्ध बनाने के राष्ट्रीय दायित्व को पूरा करने में मनसा–वाचा–कर्मणा अपना योगदान करेंगे ।

''राजभाषा भारती परिवार'' सदैव की तरह अपने उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अग्रसर रहते हुए प्रस्तुत अंक में ''चिंतन'' स्तंभ के अंतर्गत डॉ. अरुण होता द्वारा ''भावात्मक एकता और हिंदी'' की सर्वाधिक प्रासंगिकता पर बल दिया गया है । डॉ. राहुल ने ''मानक हिंदी : स्वरूप एवं विशेषताएं'' में आर्दश, श्रेष्ठ अथवा परिनिष्ठत, स्तर पर व्याख्या की गई है । वहीं प्रभुलाल चौधरी ने भारतीय भाषाओं के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन : एक राष्ट्रीय आवश्यकता पर प्रकाश डाला है ।

''साहित्यिकी'' स्तंभ के अंतर्गत गढ़वाली–हिंदी कोश, भारतेन्दु पूर्व हिंदी गद्य साहित्य तथा समकालीन महिला उपन्यासकारों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकार पर लेख दिए गए हैं । संत मलूकदास का काव्य चिंतन तथा गुरु नानक देव, एकता के पैगम्बर क्रमशः भक्ति, ज्ञान एवं दार्शनिकता तथा मानवता पर आधारित लेखों में नई चेतना पैदा होती है। ''विश्व हिंदी दर्शन'' स्तंभ के अंतर्गत विश्व हिंदी सम्मेलनों पर प्रकाश डाला गया है। पत्रकारिता में आधुनिक मीडिया का हिंदी भाषा पर शुभ-अशुभ प्रभावों पर विचार किया गया है । इसी तरह संस्कृति, उदारीकरण, भ्रष्टाचार और वृद्धा अवस्था–एक सुनहरी विरासत पर लेखों द्वारा नई जानकारियां देने का प्रयास किया गया है ।

इसके अतिरिक्त, राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के प्रति राजभाषा भारती की प्रतिबद्धता के अनुरूप राजभाषा संबंधी गतिविधियां तथा अन्य नियमित स्तंभ भी सदैव की भांति इस अंक में दिए जा रहे हैं । विभिन्न कार्यालयों द्वारा मनाए गए हिंदी दिवस रिपोर्ट को भी अधिकाधिक स्थान देने का प्रयास किया गया है ।

आशा है इस अंक को भी पाठकगण रुचिकर और उपयोगी पाएंगे । प्रबुद्ध पाठकों का सहयोग व उनकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी ।

–संपादक

चिंतन

भावात्मक एकता और हिंदी

–डॉ० अरूण होता*

भारत एक बहुभाषी देश है । यहाँ अनेक भाषाएँ, जातियाँ एवं संस्कृतियाँ साथ-साथ रहती हैं । भारतीय मनीषा की आत्मा एकता है । इस एकता का मूलाधार भारत की सामाजिक संस्कृति है । उसकी भावात्मक एकता है । भावात्मक एकता सामान्य अर्थ है मूलभूत एकता, हार्दिक एकता या मानसिक एकता । समाज तथा देश की शांति, प्रगति एवं विकास में भावात्मक एकता का महत्वपूर्ण योगदान है ।

भाषा संस्कृति की रीढ़ है । संस्कृतियों में आदान-प्रदान होता है । इससे संस्कृतियाँ फलती-फूलती हैं । इसी तरह भाषा का भी आदान-प्रदान होता है । इतिहास इस बात का गवाह है कि शक, हून, मंगोल, मुगल, अंग्रेज आदि आए और भारतीय संस्कृति में रच-बस गए । ठीक इसी प्रकार भाषाओं का भी आदान-प्रदान हुआ । देश की भावात्मकता की संपूर्ति हेतु एक विशिष्ट भाषा की आवश्यकता है ।

भाषा भावात्मक एकता का मूलतत्त्व है । विचार-विनिमय हेतु भाषा का ही प्रयोग होता है । यदि परस्पर ग्रहण करने की शक्ति भाषा में हो तो वह संपन्न होती है । हिंदी में यह क्षमता विद्यमान है । संस्कृत हो अथवा प्रांतीय भाषाएँ, अंग्रेजी हो अथवा अरबी-फारसी या अन्य भाषाएँ-सभी भाषाओं से इसने अपने ढंग से शब्द ग्रहण किए हैं । निस्संदेह यह उसकी अभावग्रस्तता का प्रतीक नहीं बल्कि उसकी विशिष्टता एवं शक्ति का द्योतक है ।

भारत में सामाजिक संस्कृति पल्लवित होती रही है । इस सामाजिक संस्कृति की वाहिका हेतु हिंदी सर्वाधिक अनुरूप है, क्योंकि प्रत्येक दृष्टि से यह ग्रहण करने की क्षमता से युक्त है । यह भारत की संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है । इसके माध्यम से हम एक दूसरे से, विभिन्न प्रांतों के लोगों से संपर्क करते हैं । संपर्क फिर धीरे-धीरे संबंध में परिवर्तित हो जाता है । जहाँ तक हिंदी भाषा का संबंध है, इसने मध्यकाल से ही भावात्मक एकता को प्रतिष्ठित करने हेतु ऐतिहासिक भूमिका निभाई है । कबीर, सूर, जायसी, तुलसी, मीरा आदि भक्त कवियों ने अपनी-अपनी वाणी से मानवता का प्रचार किया । भक्ति के बहाने लोक-जागरण का प्रयास भी किया । भक्ति को सर्वजन सुलभ एवं सर्वजनादृत बनाने में हिंदी की भूमिका उल्लेखनीय रही । कबीर पूरे भारत के हो गए तो दक्षिण के आचार्य भी दक्षिणं प्रांतों के ही न रह कर अखिल भारतीय आचार्य के रूप में मान्य हुए । इस एकीकरण तथा भावात्मकता के पीछे हिंदी का अबदान अविस्मरणीय रहा है । प्रसिद्ध सूफी कवि जायसी का नाम इस संदर्भ में महत्वपूर्ण है । जायसी ने मुसलमान होकर भी हिंदू घराने की कहानियाँ मसनवी शैली में लिखकर राष्ट्रीय एकता का काम किया है । रसखान, रहीम आदि इस संदर्भ में स्मरणीय हैं । भक्तिकालीन कवियों ने अपने क्षेत्र में ही नहीं उसके बाहर भी जाकर हिंदी में रचे अपने भक्ति-गीत से जन-मानस को उद्वेलित किया । इससे राष्ट्रीय एकता को बल मिला । भावात्मक एकता को प्रोत्साहन मिला । इसलिए हिंदी का प्रयोग महज एक भाषा का प्रयोग नहीं है बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक एकता एवं सामाजिक संस्कृति की पहचान है । यह अपनी अस्मिता का सूचक है । हमारे ऐतिह्य का प्रमाण है । हिंदी का प्रयोग हमारे उदात्त विचारों का परिचायक है । यह हमारे दिव्य भावों की संगमस्थल है ।

हिंदी का स्वरूप अखिल भारतीय है । भारत की राष्ट्रीयता और भावात्मक एकता में इसका समन्वित प्रयास निहित है । इसलिए गाँधीजी ने इसे अन्य भाषाओं से वरीयता दी । नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग जैसी संस्थाओं के साथ राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा आदि की बड़ी भूमिका रही है । उत्तर और दक्षिण भारत ने ही नहीं पूर्वी तथा पश्चिमी क्षेत्रों की हिंदी सेवी संस्थाओं ने भी हिंदी का प्रचार-प्रसार किया तथा इस बहाने राष्ट्रीय एकता की कड़ी को मजबूत किया । सन् 1918 ई. में इंदौर में हुए आठवें हिंदी साहित्य सम्मेलन का सभापतित्व करते हुए गाँधीजी ने कहा था- "हिंदी ही हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा हो सकती है

*हिंदी विभाग (अध्यक्ष) उत्तर बंग विश्वविद्यालय, सिलीगुड़ी (पश्चिम बंग) दार्जिलिंग-734013

और होनी चाहिए। आप हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपना कर्त्तव्य-पालन करना चाहिए।" दुःख तो इस बात का है कि हम अभी तक अपने कर्त्तव्य-पालन में सक्षम नहीं हो पाए हैं। गांधीजी का आह्वान अभी तक फलप्रसू नहीं हो पाया है। भारत राष्ट्र बन गया पर करोड़ों हृदय की वाणी चंद राजनेताओं की स्वार्थपरता तथा अदूरदर्शिता का शिकार हो गई तथा राष्ट्रभाषा के सपनों को कुचलकर रख दिया गया। गांधीजी की यह हिंदी न तो एकदम संस्कृतिनिष्ठ है और न एकदम फारसी शब्दों से लदी हुई। यह जनसमूह को आसानी से समझ में आनेवाली भाषा भी है। इसलिए इसकी स्वीकृति सर्वोत्तम है।

गांधीजी के पहले स्वामी दयानंद ने भी घोषणा की थी- "भाई मेरी आँखें तो उस दिन को देखने के लिए तरस रही हैं जब कश्मीर से कन्याकुमारी तक सब भारतीय एक भाषा समझने और बोलने लग जाएँ।" जस्टिस केशवचंद्र सेन, वंकिमचंद्र, सुभाषचंद्र, रवींद्रनाथ ठाकुर, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, नवीनचंद्र राय आदि ने हिंदी को महज एक भाषा के तौर पर ही स्वीकार नहीं किया बल्कि हिंदी के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करके भावात्मक एकता की नींव को मजबूत किया।

सन् 1857 में स्वतंत्रता का बिगुल बज उठा। इसके बाद देश में अंग्रेजों के विरुद्ध जो भावना तेजी से उठी उससे राष्ट्रीय चेतना की भावना को गति मिली। हिंदी ने उसे पुष्ट किया। मध्य भारत को पूर्व भारत से और उत्तर भारत को दक्षिण से जोड़ने तथा मिलाने का काम हिंदी ने किया। आज एक-आध प्रांतों में हिंदी राजनीति का शिकार हो रही है। हालाँकि कभी हिंदी की हिमायत करने वाले अनंतशयनम् आयंगार ने हिंदी को ही राष्ट्रभाषा स्वीकार करते हुए कहा था-

> "अब यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब अंग्रेजी का अंत हो जाए तो फिर उसके स्थान पर समस्त भारत वर्ष के लिए एक सामान्य भाषा का होना ही आवश्यक है। विभिन्न प्रांतीय भाषाओं का अपना प्राचीन इतिहास और साहित्य है। अतः उनकी स्थिति अक्षुण्ण रहनी भी परमावश्यक है। यह देखते हुए हमें अंतर-प्रांतीय संपर्क के लिए एक भाषा चुननी ही पड़ेगी। प्रजातंत्रीय देश में अधिकतम जनसमुदाय द्वारा बोली और समझी जाने वाली भाषा ही यह कार्य कर सकती है। इस दृष्टि से हिंदी इस कसौटी पर पूरी उतरती है।"

दक्षिण में सी. राजगोपालचारी की प्रेरणा से हिंदी को जन-जन की भाषा के रूप में प्रचार-प्रसार मिला। राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए जो भी प्रयत्न हुए थे वे देश को एकता के सूत्र में बाँधने हेतु प्रयास ही थे। राष्ट्रभाषा का प्रत्यक्ष संबंध राष्ट्र से है। राष्ट्रभाषा की मान्यता के साथ 'राष्ट्र' के रूप में देश उभरता है। उसमें जातीय प्रामाणिकता और 'महान परंपराओं' की शक्ति निहित होती है। उसके सहारे समाज राष्ट्र तथा संस्कृति के साथ तादात्म्य स्थापित करता है। स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं ने इसे अच्छी तरह से समझा था कि पूरे देश को एकता के सूत्र में मजबूती के साथ पिरोने के लिए एक भाषा का होना आवश्यक है। चूंकि यह भाषा हिंदी सर्वतोभावेन एक समर्थ भाषा है। इसलिए इसे जननेताओं एवं जनता ने स्वीकार किया। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान हिंदी की यह स्वीकृति हिंदी क्षेत्र के लोगों की ही नहीं, हिंदीतर भाषी राजनेताओं, पत्रकारों तथा हिंदी प्रेमियों की भी थी।

14 सितंबर, 1949 को भारतीय संविधान में राजभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठा मिली। इसके साथ सांविधानिक प्रावधान किया गया कि हिंदी के विकास हेतु अधिक से अधिक संस्कृत और भारतीय भाषाओं से शब्द लिए जाएं। इससे हिंदी हमारी सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकती है। सामाजिक संस्कृति और हिंदी का संबंध वैसा ही होना चाहिए जैसा कि शताब्दियों पहले से संत कवियों, कलाकारों, सैनिकों, व्यापारियों आदि के द्वारा प्रकट होता रहा है। उदाहरणतया संतों ने स्थानीय भाषा के शब्दों को बेहिचक अपनाया। इसे अपनाए जाने से एक लगाव रहता है। नए शब्दों से शब्द-भंडार बढ़ता है। सरकार ने वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की। पारिभाषिक शब्दकोश बनाए गए। परंतु प्रयोग की कमी से निर्मित शब्दावली शब्दकोश में पड़ी रही। ऐसे में "हिंदी में काम करना आसान है" पोस्टर पर लिखे गए और वे पोस्टर दीवारों को शोभित करते आ रहे हैं। मानसिक बुनावट ऐसी हो चुकी है कि हिंदी में काम करना सबसे कठिन है। ऐसी भावना मन से निकालना बहुत जरूरी है। हिंदी बोलना, लिखना, पढ़ना, उस भाषा में काम करना हमारा कर्त्तव्य है और राष्ट्रीय कर्त्तव्य है। राज-काज की भाषा को दुरूह कहकर पराई भाषा को अपनाना हमारी मानसिक दासता का परिचायक है।

राष्ट्रभाषा, राजभाषा के रूप में हिंदी का महत्व तो है ही संपर्क भाषा के रूप में भी इसकी भूमिका अतीव महत्वपूर्ण है। इसी रूप से भावात्मक एकता और हिंदी की सर्वाधिक प्रासंगिकता है। 'लिंक लैंग्वेज' के रूप में हिंदी हमें जोड़ती है। कोई नेपाली भाषी जब किसी दक्षिण राज्य में जाता है तो उसकी अभिव्यक्ति का माध्यम हिंदी होता है।

बंगला भाषी और गुजरात के निवासी के बीच की भाषा हिंदी ही होती है । विविधताओं से भरपूर भारत में भावनात्मक स्तर पर बड़ी भारी एकता है । भारतीयता इस भावात्मक एकता का मूलाधार है । अंग्रेजी के पैरोकार जब दक्षिण के किसी गाँव में वोट माँगने पहुँचते हैं तो वे अपनी अंग्रेजी का चोगा उतार देते हैं और हिंदी की शरण में चले जाते हैं ।

संपर्क भाषा के रूप में हिंदी की सफलता सर्वजनविदित है । इसके भावात्मक पहलू को देखते हुए बाजार ने अपना माया-जाल फैला दिया । हिंदी चैनलों की बाढ़-सी आ गई । अंग्रेजी चैनल भी हिंदी चैनल में परिवर्तित हो गए । संपर्क सूत्र मजबूत होते चले गए । संचार माध्यमों में हिंदी को प्रतिष्ठा मिली । इस नाते नई दिल्ली को वेलारी से या काशीपुर को मुंबई से जोड़ने का माध्यम हिंदी को बनाया गया । यह और बात है कि संचार माध्यमों ने अपने लाभ को सामने रखकर ही हिंदी को बढ़ावा देने का प्रयास किया है ।

भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी के संबंध को अधिक गहराई प्रदान करने में अनुवाद की भूमिका महत्त्वपूर्ण है । विश्व की भाषाओं के बीच अंग्रेजी की जो भूमिका है भारतीय भाषाओं के बीच हिंदी को वह गौरव प्राप्त है । हिंदी एक सेतु-भाषा का काम कर रही है । हिंदी की यह भूमिका उसकी राजभाषीय स्थिति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है । भारतीय भाषाओं की अनुपम कृतियां हिंदी में अनूदित हैं । तुलनात्मक अध्ययन को ये अनुवाद सार्थक बना रहे हैं । अनुवाद के माध्यम से केवल रचनाकार के विचार सामने नहीं आते बल्कि उल्लिखित अंचल की संस्कृति का भी परिचय मिलता है । अनुवाद दो संस्कृतियों को मिलाता है, जोड़ता है । एकता के बिंदुओं को रेखांकित करता है । ऐसे में दो अलग स्थितियाँ भावनात्मक स्तर पर धीरे-धीरे एकाकार हो जाती हैं । ऐसे में यदि कोई कहे कि बड़ी मछलियाँ छोटी मछलियों को खा जाती हैं तो कुछ बेतुका-सा लगता है । हिंदी की प्रतिस्पर्धा किसी भी भारतीय भाषा से नहीं है । यह तो भारतीयता के प्रतिमानों को जीवित करने वाली भाषा है । भारतीय भाषाओं के विकास में यह अपना विकास देख पाती है । ऐसे भावगत ऐक्य के कारण बंधुत्व एवं भाईचारा की भावना बढ़ती है । भारतीय भाषाओं के विकास में हिंदी का एवं हिंदी के विकास में भारतीय भाषाओं की भावना सन्निहित है ।

हिंदी आम जनता की भाषा है । वह अपनी अपराजेय शक्ति के बल पर खड़ी हुई है, आगे बढ़ रही है, और भी विकास करेगी । वह अपनी आंतरिक शक्ति से महत्वपूर्ण आसन अधिकार करने वाली अद्‌वितीय भाषा है । हिंदी केवल इसलिए महान भाषा नहीं है कि इसमें कुछ लोग कविता या कहानी लिख लेते हैं अथवा करोड़ों लोग इस भाषा में बातचीत कर लेते हैं । कोई भी भाषा उसके बोलने वालों की अधिक संख्या से बड़ी नहीं हो जाती है । वह भाषा बड़ी एवं महान बनने की अधिकारिणी बनती है जो करोड़ों हृदयों एवं मस्तिष्कों की भूख को मिटा सके तथा मूक जनता को आशा एवं उत्साह का संदेश प्रदान कर सके । वह भाषा बड़ी होती है जो अकारण कुचल दी गई आशाओं से निराश लोगों को नई प्रेरणा प्रदान करने वाली वाणी प्रदान कर सके । भावात्मक एकता के सूत्र को सुदृढ़ बनाने का सामर्थ्य प्रदान कर सकने वाली भाषा बड़ी होती है । ये सभी गुण हिंदी में मौजूद हैं ।

हिंदी के विकास में, उसके प्रचार-प्रसार में इलाहाबाद में जितना कुछ किया जा रहा है, उतना दक्षिण भारत में भी हो रहा है । रही बात विविधता की, यह भारत की भावात्मक एकता की कमी नहीं, उसकी शक्ति है । हिंदी देश की भावात्मक एकता की कड़ी है । हिंदी को महज एक भाषा के रूप में न देखा जाए, यह हमारी जातियता का भी प्रतिनिधित्व करती है । जहाँ भारत है, भारतीयता है, सह-अस्तित्व है, बंधुत्व है, भ्रातृत्व है, समानता है वहाँ हिंदी भी विद्यमान है ।

राजनीतिज्ञ क्षेत्रीयता के प्रतीकस्वरूप भाषा में प्रश्न को उभारकर, लोगों को उलझाकर भावात्मक एकता को लुंज-पुंज करने हेतु कटिबद्‌ध से लगते हैं । वे भाषा को तोड़ने के साधन के रूप में प्रयोग करने की कोशिश कर रहे हैं । भाषा की भावात्मक एकता को भुलाकर विद्‌वेष का बीज-वपन कर रहे हैं । राजनीति की भाषा होती है पर भाषा की राजनीति नहीं होनी चाहिए ।

बाजारवाद भावात्मक एकता के लिए खतरा है । यह बाजार 'बड़ो व्यापारी' है जिसके सामने पूँजी ही अर्थवान है । इससे भावात्मक एकता के सामने चुनौतियाँ खड़ी हैं । ऐसी दशा में शमशेर की पंक्ति याद आती है जो हमारा मार्गदर्शन कर सकती है- "शब्द का परिष्कार स्वयं एक दिशा है ।" शब्दों के माध्यम से ही धारदार लड़ाई लड़ी जा सकती है, क्योंकि शब्द केवल शब्द नहीं होते वे ब्रह्म होते हैं ।

हिंदी देश की एकता, भावात्मक ऐक्य एवं सांस्कृतिक अस्मिता की भाषा है । हिंदी की उपेक्षा करने का अर्थ है स्वयं उपेक्षित रह जाना । हिंदी की दुनिया में देर है, पर अंधेर नहीं । ■

मानक हिंदी : स्वरूप एवं विशेषताएँ

–डॉ० राहुल*

"हिंदी वह धागा है, जो विभिन्न मातृभाषाओं रूपी फूलों को पिरोकर भारतमाता के लिए सुन्दर हार का सृजन करेगी।" भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन के उक्त कथन के परिप्रेक्ष्य में कहा जा सकता है कि हिंदी से किसी भी भारतीय भाषा को भय नहीं है, यह सबकी सहगामिनी है। अत: हिंदी के विकास से राष्ट्र का विकास संभव है। भारतीय एकता का मुख्य साधन हिंदी ही बन चुकी है। अत: इसकी शक्ति पर अविश्वास करना धोखा है। इसमें असीम शक्ति है।

कोई राष्ट्र अपनी भाषा को छोड़कर राष्ट्र नहीं कहला सकता। अत: भाषा की रक्षा सीमाओं की रक्षा से अधिक आवश्यक है। हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। राष्ट्रभाषा में राष्ट्र की आत्मा बोलती है। समूचे देश की जनता की सोच, संस्कृति, विश्वास, धर्म और समाज संबंधी धारणाएं, जीवन के विविधापूर्ण व्यावहारिक पहलू, लौकिक/आध्यात्मिक प्रवृतियां, सामूहिक सुख-दुख के भाव, लोकनीति संबंधी विचार और दृष्टिकोण राष्ट्रभाषा के माध्यम से ही साकार होते हैं। उदात-चेतना एवं प्रेरक व्यक्तित्व के धनी श्री असित सिंह [भा.रा.से.] का एक कथन मस्तिष्क में कौंधता है, "भाषा व्यवहार की वस्तु है।.....हिंदी हमारी संपर्क भाषा और राजभाषा है।....राष्ट्रीय अस्मिता के लिए हिंदी जरूरी है।"

उपर्युक्त के परिप्रेक्ष्य में मानक हिंदी की बात करते हुए कह सकते हैं कि, "मानक" से अभिप्राय है--आदर्श, श्रेष्ठ अथवा परिनिष्ठित। भाषा का जो रूप, उस भाषा के प्रयोक्ताओं के अतिरिक्त, अन्य भाषा-भाषियों के लिए आदर्श होगा, जिसके माध्यम से वे (अन्य भाषा-भाषी) उस भाषा को सीखेंगे, जिस भाषा-रूप का व्यवहार पत्राचार, शिक्षा सरकारी कामकाज एवं सामाजिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान में समान स्तर पर होगा, वह उस भाषा का "मानक" रूप है।

"मानक" शब्द का एक अर्थ माप, मानदण्ड से है। इससे अभिप्राय प्रमाप से भी है। इसके लिए अंग्रेजी के Dignity, Veneration, Reputation, Arrogance, Indigination शब्द प्रयुक्त किए जा सकते हैं। रामचन्द्र वर्मा ने अपने शब्दकोश में किसी श्रेष्ठता, योग्यता और गुणता के अर्थ में मानक शब्द का अर्थ निश्चित किया है। परंतु हिंदी में "मानक" शब्द का प्रयोग अंग्रेजी "स्टैंडर्ड" [Standard] शब्द सामान्यत: एक अन्य अर्थ "स्तर" (Standard of living) के अर्थ में भी प्रयोग किया जाता है। यही स्तर वह परिनिष्ठित स्तर है जिसे आदर्श भाषा या मानक भाषा कहा जाता है। यह व्याकरण सम्मत, शुद्ध, परिनिष्ठित तथा परिमार्जित भाषा होती है। हमारे जीवन-स्तर की भांति भाषा-प्रयोग का स्तर भी भिन्न-भिन्न हो सकता है। पारिवारिक बातचीत में हम जिस स्तर की भाषा का प्रयोग करते हैं, उसका कार्यालय के किसी अधिकारी पद पर रहते हुए, अध्यापन क्षेत्र में अथवा साहित्य-संगोष्ठी आदि में नहीं कर सकते। पारस्परिक बोलचाल की भाषा का स्तर सामान्य, विभिन्न बोलियों, अनौपचारिक कथनों तथा अनेक प्रकार के अशुद्ध और असंगत प्रयोगों से युक्त हो सकता है, परंतु शिष्ट समाज में, विधानसभा या संसद में, कक्षा या कार्यालय में, न्यायालय या साहित्यिक मंच पर हम उससे कुछ भिन्न स्तर की भाषा का प्रयोग करते हैं जिसे "उच्च स्तर" (High Standard) की भाषा कहा जाएगा।

यही उच्चस्तरीय, आदर्श भाषा "मानक भाषा" कहलाएगी। वह व्याकरणिक नियमानुसार व्यवस्थित होगी, उसमें स्थानीय बोलियों का समावेश नहीं होगा। यह वह भाषा होगी जो शैक्षिक-साहित्यिक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, सरकारी कागजातों आदि में प्रयुक्त होती है।

इस विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि "मानक भाषा किसी देश अथवा राज्य की वह प्रतिनिधि तथा आदर्श भाषा होती है, जिसका वहां के शिक्षित-वर्ग

*साहित्य कुटीर, साइट-2/44, विकास पुरी, नई दिल्ली-110018

द्वारा अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यक, व्यापारिक, वैज्ञानिक तथा प्रशासनिक कार्यों में समान रूप से प्रयोग किया जाता है । यही समान भाषा-रूप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी व्यवहार में लाया जाता है ।''

भाषा के मानकीकरण की पद्धति

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने हिंदी में 'मानक' शब्द के लिए साधुभाषा, टकसाली भाषा, शुद्ध अशुद्ध भाषा जैसे--शब्दों का प्रयोग स्वीकार किया है । वे इसकी उत्पति Standard से नहीं, Stand (खड़ा होना) से मानते हैं । अर्थात् जो औरों के लिए प्रतिमान का काम करें । अत: किसी ''भाषा के मानकीकरण'' से अभिप्राय है, उसका ''बोली'' रूप से क्रमश: विकसित होकर ऐसी ''परिनिष्ठिता भाषा'' का रूप धारण कर लेना जो धर्म, शिक्षा, साहित्य एवं प्रशासनिक कार्यकलाप में समानत: सर्वमान्य माध्यम बन सके । संक्षेप में किसी भाषा का बोलचाल के स्तर से ऊपर उठकर मानक-रूप ग्रहण कर लेना उसका मानकीकरण है । किसी भाषा के विकास के क्रमिक सोपानों अथवा स्तरों को ''मानकीकरण की प्रक्रिया'' कहा जा सकता है । इस प्रक्रिया के मुख्यत: तीन सोपान हैं--

पहले स्तर पर भाषा का मूल रूप एक सीमित क्षेत्र में आपसी बोलचाल के रूप में प्रयुक्त होनेवाली ''बोली'' का होता है, जिसे स्थानीय, क्षेत्रीय अथवा आंचलिक बोली कहा जा सकता है । इसका शब्द-भंडार सीमित होता है । इसका कोई अपना नियमित व्याकरण या भाषाशास्त्र नहीं होता । इसे शिक्षा, अधिकाधिक कार्य-व्यवहार अथवा साहित्य का माध्यम नहीं बनाया जा सकता । बोली ही विकसित होकर भाषा का रूप ग्रहण कर लेती है ।

इस प्रकार बोली को भाषा के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए उस बोली के प्रयोक्ताओं की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक विकास-प्रक्रिया अत्यंत सहायक सिद्ध होती है । इसके प्रयोग के कारण ही बोली निखरती, संवरती, संवर्धित और संशोधित होती हुई भाषा के दर्जे को प्राप्त करती है । यही भाषा उच्च स्तर पर पहुंचकर ऐसा रूप ले लेती है जिसे मानक भाषा कहा जाता है ।

भाषा की उत्पति भास् धातु से हुई है जिसका अर्थ है वाणी को व्यक्त करना । भाषा के दो रूप मुख्यत: हैं--मौखिक और लिखित । एक तीसरा रूप भी है--संकेत भाषा । अर्थात् ''भाषा'' वह साधना है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं अथवा विचारों को लिखित या मौखिक रूप में प्रकट करते हैं । इसी प्रकार हम स्पर्श के माध्यम से अपने विचारों या भावनाओं को प्रकट करने में सक्षम हैं, लेकिन सार्थक रूप में भाषा लिखित अथवा मौखिक रूप से विचारों का प्रकटीकरण है । हर भाषा अपने ढंग से शब्दों को एक कड़ी के रूप में पिरोती है । इस अर्थ में भाषा सार्थक शब्दों की एक व्यवस्थित कड़ी है । डॉ. श्याम सुंदर दास के शब्दों में, ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि-संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं ।'' संक्षेप में हम कह सकते हैं कि भाषा भावाभिव्यक्ति का साधन है जिसका प्रयोग मानव समाज परस्पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए करता है । (डा. बाबूराम शर्मा)

दूसरे स्तर पर वही ''बोली'' अब कुछ विशेष भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और प्रशासनिक कारणों से अपना क्षेत्र-विस्तार कर लेती है, उसका लिखित रूप विकसित होने लगता है और इसी कारण वह व्याकरणिक सांचे में ढलने लगती है, उसके प्रयोक्ता अपने क्षेत्र के भीतर और बाहर से उसे पत्राचार का माध्यम बना लेते हैं, शिक्षा, व्यवसाय और प्रशासन आदि में उसका प्रयोग होने लगता है, उसका अपना साहित्य रचा जाता है, तब वह ''बोली'' न रहकर ''भाषा'' की संज्ञा प्राप्त कर लेती है । यह किसी भाषा के मानकीकरण की प्रक्रिया का दूसरा सोपान है ।

बोली से भाषा तथा भाषा से मानक भाषा बन जाने की प्रक्रिया में जो कारण अत्यंत प्रभावी होते हैं उनमें भौगोलिक परिवेश, सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थितियां मुख्य होती हैं । ये उसके साहित्यिकता के लक्ष्य तक पहुंचने की यात्रा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।

तीसरे स्तर पर पहुंचकर, मानकीकरण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाती है । डॉ. दिनेश गुप्त ने लिखा है, ''यह वह स्तर है जब भाषा के प्रयोग का क्षेत्र अत्यधिक विस्तृत हो जाता है । वह एक ऐसा ''आदर्श'' रूप धारण कर लेती है, जिसमें किसी ''विभाषा'' की गंध नहीं रहती । वह उसका परिनिष्ठिता रूप होता है । उसकी अपनी शैक्षणिक, व्यावहारिक, वाणिज्यिक, साहित्यिक, शास्त्रीय, तकनीकी एवं कानूनी शब्दावली होती है । विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक, शैक्षणिक और प्रशासनिक क्षेत्रों में भूगोल-इतिहास,

759 HA/08—2A

व्याकरण आदि की पुस्तकों, साहित्य, कला और संचार-साधनों के स्तर पर उसका एक-सा सर्वमान्य रूप ग्रहीत होता है । इस स्थिति में पहुंचकर भाषा "मानक भाषा" बन जाती है । उसी को शुद्ध, उच्चस्तरीय, परिमार्जित आदि विशेषण भी दिए जाते हैं ।"

मानक हिंदी को सर्वमान्य रूप से शिक्षित-शिष्ट समुदाय द्वारा प्रयोग में लाया जाता है । इसे राजनीतिक दृष्टि से राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा का स्थान भी प्राप्त है। यह साहित्य, शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान, कला और संस्कृति की विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्ति, आदान-प्रदान, तथा संप्रेक्षण का माध्यम है । ये सब इसके बरिरंग आयाम हैं । इन आयामों को मूल-अंतरंग आचार-मानक हिंदी की वह एकरूपता है जो ध्वनि, शब्द और वाक्य-स्तर पर कुछ विशेष और सर्वत्र समानत: ग्रहीत व्याकरणबद्धता के कारण सहजता-सुबोधता लिए हुए है । व्यवस्था एवं संरचनापरक इस एकरूपता के विधायक सामान्य लक्षणों को हम "मानक हिंदी" का अंतरंग तथा सबसे प्रमुख आयाम कह सकते हैं।

मानक हिंदी की विशेषताएं

आज "मानक हिंदी" खड़ीबोली का वह परिष्कृत रूप है, जो भारत की राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क-भाषा के रूप में स्वीकृत है । यह सभी प्रकार की उच्च शिक्षा का माध्यम है । लोक साहित्य की दृष्टि से भी खड़ीबोली अधिक संपन्न, समृद्ध और विकसित है । भारत के अनेक राज्यों के प्रशासनिक कार्य-कलाप इसी के माध्यम से होते हैं, इसमें सभी प्रकार के ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य, प्रौद्योगिकी, पत्रकारिता और तकनीकी आदि से संबंधित अपनी समर्थ शब्दावली है, अत: यह हर दृष्टि से स्वायत्त है ।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि "खड़ीबोली" में मानक भाषा बनने की क्षमता शुरू से ही विद्यमान थी । सदल मिश्र तथा इंशा अल्ला खां के वक्तव्यों से स्पष्ट है कि उस युग के साहित्यकार "खड़ीबोली" के मानकीकरण के प्रति कितने सचेत थे, यद्यपि इसके लिए उन्होंने "शुद्ध" एवं "शिष्ट समुदाय की भाषा" आदि विशेषणों का ही प्रयोग किया है । उनके "आदर्श भाषा" विषयक दृष्टिकोण का सार यह है–

(1) वह विदेशी (अरबी-फारसी) प्रभाव से मुक्त हो ।

(2) उसमें न तो संस्कृत के क्लिष्ट शब्दों की भरमार हो और न ही क्षेत्रीय, आंचलिक (गंवारू) बोलियों का पुट हो ।

(3) वह शुद्ध हिंदी हो ।

(4) वह शिष्ट-समुदाय में प्रयुक्त होती है ।

बाद में खड़ीबोली के इसी "शुद्धध" अथवा "शिष्ट रूप को" "ठेठ हिंदी" कहा गया । इस संबंध में अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिओम-कृत' "ठेठ हिंदी का ठाठ" नामक पुस्तक द्रष्टव्य है । इसी ठेठ हिंदी के विषय में भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने सन् 1873 ई. में "कालचक्र" नामक पुस्तक में लिखा था--"हिंदी नयी चाल में ढली ।" बाद में, स्वामी दयानंद सरस्वती, बालमुकुंद गुप्त, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, प्रेमचंद, निराला और आचार्य रामचंद्र शुक्ल आदि साहित्यकारों द्वारा निरंतर परिष्कृत होकर मानकीकरण के उच्चतम स्तर तक पहुंची जिसे कुछ वर्ष पहले तक "परिनिष्ठित हिंदी" के नाम से जाना जाता था । जब भारत सरकार के शब्दावली आयोग ने अंग्रेजी के स्टैंडर्ड (Standard) शब्द के लिए "मानक" पर्याय ग्रहण किया तो यह "मानक हिंदी" कहलाने लगी ।

मानक हिंदी : अभिप्राय और स्वरूप

मानक से अभिप्राय है--किसी वस्तु, या संदर्भ का वह परिनिष्ठि, परिस्कृत तथा श्रेष्ठ रूप जो अपने आपमें एक आदर्श हो । भाषा का मानकीकरण रूपात्मक एकीकरण की वह प्रक्रिया है जिसमें व्याकरणिक रूपों को अनेकता में एकता के आधार पर मानक बनाया जाता है । इसी से भाषा आदर्श रूप को प्राप्त करते हुए संपर्क-भाषा के रूप में प्रयुक्त एवं प्रचलित होती है । भाषा का यही आदर्श मानक भाषा कहलाता है । कहा गया है, भाषा का नियमान करने वाली इस भाषिक प्रक्रिया में भाषिक रूपों के कई प्रचलित विकल्पों में से किसी एक को चुनकर उसे प्रतिष्ठित, परिष्कृत तथा परिनिष्ठित बनाया जाता है । वास्तव में भाषा की मानकता मुख्य रूप से सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी है, क्योंकि मानक भाषा के प्रयोग का आधार शिक्षित व्यक्तियों का शिष्ट भाषा-प्रयोग ही होता है । उसकी संरचना में भी अधिकतम एकरूपकता की आवश्यकता होती है । इसीलिए मानक भाषा में शब्दोच्चारण, शब्द-रूपों और वाक्य-विन्यास को स्थिरता देने का प्रयास रहता है । एक शब्द का एक ही

759 HA/08—2B

उच्चारण तथा एक ही वर्तनी की अपेक्षा इसके भीतर निहित रहती है ।

मानक हिंदी के लिए व्याकरण की शुद्धता और तद्भव शब्दों की मानकता भी जरूरी है । जैसे, पूरन बहादुर=पूर्ण बहादुर; कीरति = कीर्ति, नई = नयी, हुकुम = हुक्म, किसमत = किस्मत और नमश्कार = नमस्कार में पहला शब्द अशुद्ध और दूसरा शब्द (मानक) रूप है ।

भाषा की यह एकता तभी संभव हो पाती है जब भाषा के रूप में स्थिरता पाई जाए और उसमें भाषाई परिवर्तन भी कम हो, जबकि परिवर्तन भाषा का गुण माना जाता है । अतः संरचनात्मक एकरूपता तथा प्रयोगात्मक बहुरूपता परस्पर विपरीत स्थितियां है । ये दोनों ही स्थितियां एक दूसरे के लिए बाधक होती हैं । संस्कृत भाषा के साथ भी यही हुआ है । संरचनात्मक एकरूपता के प्रयासों ने उसकी जीवन्तता को जड़ कर दिया तथा उसका व्यवहार-क्षेत्र भी सीमित होता चला गया । वह जन-जुबान से न जुड़ सकी । जबकि हिंदी अपने व्यवहार क्षेत्र के विस्तार से कई रूपों में उभरने लगी है, दिल्ली की हिंदी, मुम्बइया हिंदी और कोलकातिया हिंदी आदि ऐसे ही उदाहरण हैं ।

यद्यपि इनमें स्थानीय बोली-भाषा की बहुलता होती है, परंतु इसके बावजूद हिंदी का स्तर मानकीकरण की विशेषताएं लिए हुए हैं । यही नहीं आज हिंदी अपने प्रयोग विस्तार और व्यवहार-क्षेत्र के व्यापक आयाम के कारण विश्व पटल पर सबसे बड़ी, भाषा के रूप में स्थान की अधिकारिणी बन गयी है–यह गर्व की बात है ।

प्रसंगात हिंदुस्तानी जिसे सरल हिंदी अथवा सरल उर्दू का बोलचालवाला रूप कहा जाता है । इसे डॉ. रघुवीर सिंह ने "आमफहम" (बोधगम्य) भाषा, बहुलप्रांत की भाषा माना है । डॉ. ग्रियर्सन के मतानुसार हिंदुस्तानी का प्रयोग भारतीय लोगों द्वारा हुआ है । हिंदी /हिंदवी इसकी समानार्थी थी । इसके विकास में मुगल बादशाहों के अलावा फोर्ट विलियम कालेज, कलकता (1800 ई.) का योगदान उल्लेखनीय है यही हिंदुस्तानी कालांतर में अरबी-फारसी की बहुलता के कारण उर्दू और संस्कृत मिश्रित होने के कारण हिंदी (खड़ीबोली) कहलाई ।

मानक हिंदी (खड़ीबोली) की विकास यात्रा

खड़ीबोली हिंदी अपने बोली स्तर से क्रमशः विकास पाती हुई "मानक हिंदी" के स्तर तक पहुँची है । सिन्धु "शब्द परिवर्तित रूप "हिंद से "हिंद' तथा हिंदु से हिंदी' के रूप को प्राप्त करता हुआ लगभग डेढ़ हजार वर्ष के इतिहास का स्मरण करता है । हिंदी से तात्पर्य था--हिंद का, हिंदी की या हिंदी (भारत) की भाषा । इस अर्थ के अनुसार भारत की सभी भाषाएं 'हिंदी' थी । छठी-सातवीं शताब्दी में जबानी हिंदी का प्रयोग भारत की सभी भाषाओं के लिए किया गया । 14वीं शताब्दी में दिल्ली के आसपास (मेरठ) की जनभाषा हिंदी, हिंदु, या हिंदवी कहलाने लगी थी । जायसी ने लिखा है "तुर्की-अरबी हिंदवी भाषा जेती आहिं" । काव्यांतर में इसी हिंदवी का प्रयोग हिंदी भाषा के अर्थ में होने लगा । यह हिंदुस्तानी का एक रूप थी । इसी में आज की खड़ी बोली, के बीज दिखाई देनें लगे थे । उस समय की ब्रज, अवधी आदि साहित्य भाषाएं केवल भाषा कहलाती थीं ।

आज की "मानक हिंदी" का पूर्वरूप खड़ीबोली था जिसका जन-प्रयोग एवं साहित्यिक प्रयोग 13वीं शताब्दी अमीर खुसरो के साहित्य में सबसे पहले देखने को मिलता है । अतः कहना होगा कि अमीर खुसरो हिंदी के सर्वप्रथम रचनाकार थे । यद्यपि उनकी भाषा हिंदुस्तानी (यानी अरबी-फारसी मिश्रित उर्दू-और हिंदी) है पर खड़ीबोली की विकास-यात्रा की दृष्टि से उसका महत्व निर्विवाद है । इसका खड़ीबोली के रूप में पहलीबार प्रयोग सन् 1903 में श्री लाल्लूलाल ने अपनी कृति "प्रेमसागर" में किया था । इसी प्रकार सदल मिश्र (नसिकेतापाख्यान) तथा इंशा अल्लाखां 'रानी केतकी कहानी) ने भी किया है । प्रकारांतर से इन रचनाकारों ने खड़ीबोली की विकास-यात्रा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । ये रचनाकार खड़ीबोली के मानकीकरण के प्रति उस समय ही अत्यंत सचेष्ट थे । अर्थात् 'शुद्ध भाषा', 'शिष्ट भाषा' जैसे कथन एवं एतत्संबंधी सघन प्रयास इसकी पुष्टि के पुख्ता प्रमाण कहे जा सकते हैं । आगे चलकर इसी क्रम में और अधिक भाषाई निखार के दृष्टिगत खड़ीबोली परिनिष्ठित हिंदी कही गई के लिए स्टैंडर्ड । (Standard) अंग्रेजी, शब्द पर्याय रूप में प्रयोगगत प्रचलित हुआ ।

किसी भी भाषा के मानक रूप ग्रहण कर लेने का आधार-तत्व डॉ. दिनेश गुप्त के अनुसार--ऐतिहासिकता, स्वायतता, केन्द्रोम्मुखता, बहुसंख्यक प्रयोगशीलता, पारस्परिक बोधगम्यता, व्याकरणिक समानता तथा एकरूपता है । इन्हें इस रूप में भी रख सकते हैं :–

1. **स्वायतता–**"स्वायतता का अभिप्राय है--अपने आप में पूर्ण होना । जो भाषा किसी भी प्रकार के विषय के संबंध में हर प्रकार की अभिव्यक्ति में समर्थ होगी, वह स्वायत कहलाएगी । स्पष्ट है कि हर स्तर पर संप्रेषण में समर्थ होना भाषा के "मानक" रूप

की आवश्यकता कसौटी है । उदाहरण के रूप में आज से दो सौ वर्ष पूर्व हिंदी "स्वायत्त" भाषा कहलाने की अधिकारिणी नहीं थी । यद्यपि उसमें काव्य और शास्त्र–सभी प्रकार के असंख्य ग्रंथों की रचना हो चुकी थी, पर वह सब केवल पद्यबध साहित्य था। जनजीवन के अनेकानेक महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक, व्यावसायिक आदि विषयों के संबंध में जनता की अपनी व्यावहारिक गद्य-भाषा में हिंदी साहित्य का अभाव था । परंतु धीरे-धीरे विभिन्न विद्वानों ने हिंदी को इस दृष्टि से सक्षम बनाया । आज वह हर दृष्टि से स्वायत्त है । शिक्षा, शास्त्र, ज्ञान-विज्ञान, वाणिज्य, पत्रकारिता, कानून किसी भी क्षेत्र की, किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति के लिए उसके पास अपना उपयुक्त शब्द-भण्डार है, अपनी सार्थक प्रयुक्तियां हैं, अपनी संरचना-प्रक्रिया है । उसका यही निजीपन उसकी स्वायत्ता और परिणामतः मानकता का परिचायक है ।

2. **केंद्रोन्मुखता**–मानक भाषा एक विशिष्ट केंद्रीय रूप की वाहिका होती है, उसी प्रकार, जैसे, कोई धुरी किसी चक्र का संचालन करती है । चक्र की गति का केंद्र उसकी धुरी होती है । उसी धुरी के सहारे, चक्र के आसपास के "अरे" घूमते हैं । अतः मानकता किसी भाषा-चक्र की धुरी कही जा सकती है । भाषा का विकास, प्रसार और प्रचार उसी मानकता रूपी धुरी के सहारे होता है ।

"केंद्रोन्मुखता" का अभिप्राय यह भी है कि मानक भाषा अपने क्षेत्र और उसके आसपास की अन्य भाषाओं और बोलियों का केंद्र बन जाती है । सभी सहवर्तिनी और निकटवर्तिनी भाषाओं के शब्द, पद, अभिव्यक्ति-प्रयोग एवं मुहावरों आदि को वह अपने में दूध-पानी के समान घुला-मिलाकर उनकी संप्रेषण-शक्ति अपने में केंद्रित कर लेती है । जिस प्रकार किसी चक्र के दूर-दूर बिखरे हुए "अरे", अलग-अलग होते हुए भी, एक ओर चक्र के बाहरी वृत्त से जुड़े, रहते हैं और दूसरी ओर केंद्रीय धुरी पर आकर एकदम साथ-साथ जुड़कर स्वयं चलते हुए, चक्र को भी संचालित करते हैं, उसी प्रकार किसी भाषा की उपभाषाएं या बोलियां ऊपरी तौर पर एक-दूसरे से पृथक और दूर-दूर प्रतीत होती हुई भी मानक भाषा के साथ बड़ी निकटता से जुड़ी रहती हैं । उदाहरणतः मारवाड़ी, बोलनेवाला हरियानी को और हरियानी-भाषी भोजपुरी या मारवाड़ी को शायद न समझ पाए, किंतु इन तीनों और अन्य बोलियों के प्रयोक्ता हिंदी केंद्रीय, अर्थात् मानक रूप को, भली-भांति समझ सकते हैं ।

केंद्रोन्मुखता की दृष्टि से "हिंदी" को "मानक"–रूप प्रदान करने में राजनीतिक परिस्थितियां विशेष सहायक रही हैं । मुगलों ने आगरा-दिल्ली को केंद्र बनाया तो यहां की लोकबोली मानकता पाने लगी । खिलजी वंश से मुसलमानों का शासन दिल्ली से दक्षिण पहुंचा तो वहां भी यही भाषा "दक्खिनी" हिंदी के रूप में समृद्ध हुई ।

अंग्रेजों ने पहले कलकत्ता को केंद्र बनाया तो उन्नीसवीं शताब्दी में वही खड़ीबोली गद्य का विकास हुआ, हिंदी पत्र-पत्रिकाओं तथा अन्य महत्वपूर्ण क्रियाओं पर अनेक ग्रंथों का प्रकाशन हुआ । फिर दिल्ली केंद्र बना तो यहां से हिंदी का मानक रूप सारे भारत में, विदेशों तक पहुंच गया ।

3. **प्रयोगशीलता**–भाषा प्रयोग की वस्तु है । अर्थात् उसका जितना अधिक प्रयोग होगा वह उतनी ही अधिक विकसित होगी । यह मानक हिंदी के अर्थ में भी चरितार्थ होता है । मसलन, मानक भाषा की एक प्रमुख पहचान या विशेषता यह है कि उसके प्रयोक्ताओं की संख्या पर्याप्त होनी चाहिए । जब तक कोई भाषा किसी सीमित-वर्ग में ही प्रयुक्त होगी, वह मानक-रूप प्राप्त नहीं कर सकती । जिस भाषा को जितने अधिक लोग विभिन्न अभिव्यक्तियों के लिए प्रयुक्त करेंगे, वह उतनी अधिक विकसित होगी, उसका एक सर्वमान्य रूप निर्धारित करने की आवश्यकता भी अनुभव होगी जो एक आदर्श अर्थात् "मानक-रूप" प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगी ।

कहने की आवश्यकता नहीं, कि हिंदी ने किसी प्रकार देश-विदेश में करोड़ों लोगों द्वारा प्रयुक्त होने के कारण ही बड़ी शीघ्रता से मानक-रूप प्राप्त कर लिया । आज इसका प्रयोग करने वालों की संख्या लगभग पचासी करोड़ है ।

4. **सहजता और सुबोधता**–मानक भाषा के स्तर तक वही भाषा पहुंच सकती है जो अधिकाधिक लोगों के लिए सहजतापूर्वक बोधगम्य हो । क्लिष्ट अथवा दुर्बोध भाषा 'क्लासिकल' तो कहला सकती है, "मानक" नहीं । संस्कृत आज अधिकांश भारतीयों

के लिए क्लिष्ट है, अतः इतिहास-परंपरा से समृद्ध और पूर्णतः व्याकरण-सम्मत होते हुए भी वह मानक-रूप में मान्य नहीं है। दूसरी ओर, हिंदी इसलिए अल्प समय में "मानक" भाषा बन सकी क्योंकि अधिकांश भारतीयों के लिए उसे समझना, अपनाना और विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अभिव्यक्ति-प्रयोग हेतु ग्रहण करना अपेक्षाकृत सहज है। बांगरू और भोजपुरी (जो हिंदी की ही "बोलियां" है] बोलने वाले भले ही एक-दूसरे की बोली समझने में कठिनाई अनुभव करें पर हिंदी के मानक-रूप को समझना उनके लिए कठिन न होगा।

5. **व्याकरणिक नियमों की समानता**—भारत में सबसे प्राचीन व्याकरण प्राणिकी का अष्टध्यायी है। जिसे पतंजलि ने शिष्टजनों के अनुकरण पर बल दिया। अतः भाषा की अशुद्धता की ओर पहले भी विशेष ध्यान दिया गया है। मानक भाषा की एक अन्य विशेषता उसकी व्याकरणिक समानता है। उसकी उप-भाषाएँ अथवा बोलियां प्रायः मौखिक रूप में प्रयुक्त होती है जिसके लिए व्याकरण-संबंधी नियमों के पालन की बाध्यता नहीं। मानक भाषा मौखिक रूप के अतिरिक्त लिखित रूप में भी प्रयुक्त होती है। दोनों रूपों में उसकी मानकता अक्षुण्ण बने रहने का एक कारण यही है कि वे दोनों रूप एक-से व्याकरणिक ढांचे में ढले होते हैं।

6. **एकरूपकता**—सामान्यतः हम देखते हैं कि कई शब्द विभिन्न पुस्तकों में अलग-अलग रूपों में छपे मिलते हैं। तथा -राजनीतिक-राजनैतिक, अन्तः राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय, सांविधानिक-संवैधानिक,व्यावसायिक-व्यवसायिक, व्यावहारिक-व्यवहारिक आदि।

यद्यपि ये सभी रूप किसी-न-किसी तर्क के आधार पर शुद्ध कहे जा सकते हैं, तथापि इनमें से किसी एक रूप का अभ्यासी दूसरे रूप को अशुद्ध समझ सकता है, अथवा कोई अन्य भाषा-भाषी हिंदी सीखते समय ऐसे विभिन्न रूपों को देखकर भ्रम में पड़कर उलझ सकता है। इन आशंकाओं के निवारण हेतु मानक भाषा ध्वनि, शब्द संरचना एवं वर्तनी आदि सभी स्तरों पर एकरूपता का वरण करती है। कई बार एक ही अर्थ [संकल्पना] के सम्प्रेषण हेतु एक से अधिक शब्द प्रयुक्त होने लगते हैं। यह स्थिति भाषा की मानकता की दृष्टि से अवांछनीय है। उदाहरणः "इंस्पेक्टर" शब्द के पर्यायरूप में कहीं "अधीक्षक" कहीं "निरीक्षक" प्रयुक्त होता है। "लेक्चरर के लिए प्रवक्ता, प्राध्यापक, शिक्षक, प्रशिक्षिक, व्याख्याता" आदि विविध प्रयोग देखे-सुने जाते हैं। इसलिए मानक हिंदी, शाब्दिक या भाषायी एकरूपता पर जोर देती है।

7. **जीवन्तता**—भाषा अपने प्रयोक्ताओं के द्वारा सदैव गतिशील बनी रहती है। गतिशील भाषा ही जीवन्त होती है। जीवन्त भाषा का ही विकास होता रहता है। जब भाषा रूढ़ हो जाती है तो वह मृतप्रायः हो जाती है। संस्कृत, लैटिन, पालि, प्राकृत अपभ्रंश आदि भाषाएँ आज सामान्य प्रयोग में न होने के कारण जीवन्त नहीं मानी जा सकतीं। इसमें संस्कृत भाषा भले ही अपवाद-स्वरूप कही जाए पर सामाजिक प्रयोग की दृष्टि से वह नगण्य सी है, परन्तु उसकी मानकता अक्षुण्ण है।

अतः आज जिस रूप में "मानक हिंदी" की संकल्पना है, वह रूप उसे एक ऐतिहासिक परंपरा से प्राप्त हुआ है। वह अपने-आप में पूर्ण स्वायत्ता एवं सक्षम है। " राजभाषा" एवं "राष्ट्रभाषा" का पद उस "केन्द्रोन्मुखता" के कारण प्राप्त हुआ है। व्याकरण शास्त्र, ज्ञान-विज्ञान, विधि, वाणिज्य आदि हर प्रकार की तकनीकी अभिव्यंजनाओं के लिए हिंदी में अपनी क्षमता है। शिक्षा, व्यवसाय, प्रशासन, संचार तथा अन्तरराष्ट्रीय संदर्भ में सभी प्रकार के कार्यकलाप आदि में हिंदी की एकरूपता स्वतः सिद्ध है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि मानक हिंदी का साहित्य, साहित्यशास्त्र, व्याकरण तथा विविध विषयक शब्द-भण्डार पर्याप्त समृद्ध है। विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक वर्गों की यह अधिकृत व्यवहार-भाषा है। सामान्यतः मानक भाषा किसी देश की राजधानी या अन्य दृष्टियों से किसी महत्वपूर्ण केंद्र में बोली जाने वाली और प्रयोग में आने वाली भाषा होती है जिसे राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक अथवा सामाजिक कारणों से प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है। तात्पर्य यह है कि मानक भाषा शिष्ट समाज की भाषा है जिसका प्रायः सभी औपचारिक परिस्थितियों में, लेखन में, प्रशासन और शिक्षा के माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता है। ■

भारतीय भाषाओं के साहित्य का नागरी लिपि में प्रकाशन: एक राष्ट्रीय आवश्यकता

–प्रभुलाल चौधरी (शिक्षक)*

भारत बहुविध भाषा-भाषिक देश है। भारत एक विशाल देश है। राष्ट्रीय स्तर पर पूरे देश की अभिव्यक्त-अस्मिता को मुखरित करने वाली एक राष्ट्रीय-लिपि पूरे देश की अनिवार्यता है, इस सत्य को प्राचीनों ने भी, मध्यकालीन माध्यमिकों ने भी तथा नव्य-आधुनिकों ने भी बहुत पहले से ही अनुभव कर लिया था।

वस्तुतः सच्चाई यह है कि भाषा (ध्वनि-प्रतीक) तो आत्मा है, लिपि उस आत्मा का अभिव्यक्तिमूलक आवरण है। लिपि देह है, कोट है–और इसी कोट को, ऊपरी आवरण उतारने, पहनने, ओढ़ने, बदलने की विकासात्मक ऐतिहासिक वास्तविकताओं को लेकर विभिन्न मानव समुदाय परस्पर जूझते रहे हैं, विधि-निषेध के अखाड़े में विभिन्न कालखण्डों में अपनी लिपीय अस्मिता को लेकर परस्पर द्वंद्व, संघर्ष, संवाद, विवाद से घिरे रहे हैं। वर्तमान में भी यह लिपी-द्वंद्व थमा नहीं है। लिपि का संघर्ष, लिपियों को लेकर असमंजस्य की स्थिति आज भी पूर्ववत् कायम है। आज तो वैश्वीकरण के युग में अंग्रेजी-भाषा एवं रोमन-लिपि को वैश्विक प्रसार को देखते हुए भारत के अत्यंत समृद्ध एवं वैज्ञानिक 'देवनागरी' लिपि के प्रयोक्ताओं के समक्ष चुनौतियों का आकाश और भी अधिक दीर्घआयामी हो गया है।

हम यहाँ भारतीय लिपियों के इतिहास, उनके विकास अथवा उनके पारस्परिक संवाद, प्रवाद की बारीकियों में न जाकर राष्ट्रीय स्तर पर, एकदेशीय (भारतीय) स्तर पर विचार करते हुए इस बात को रेखांकित करेंगे कि आज के ग्लोबीकरण के युग में भारत अपनी एक अटूट राष्ट्रीय अस्मिता को किस तरह सुस्थिर रख सकता है और वैश्विक चुनौतियों की दिशा में भारत की कौनसी लिपि राष्ट्रधर्म-ध्वजा के रूप में 'भारतीयता' को विश्व मंच पर प्रतिष्ठापित कर सकती है। भारत में वर्तमान में अनेक लिपियाँ प्रचलित हैं। कश्मीर में 'शारदा लिपि' के प्रयोक्ताओं में कुछ विवाद किया है। दक्षिण में तमिल/तेलुगू/मलयालम लिपियों के पुरोधा भी 'देवनागरी' को लेकर कुछ उलझन की स्थिति में हैं। देश के दो राज्यों में 'रोमन-लिपि' के पैरोकार भी अपने-अपने ढंग से अपना मत प्रस्तुत कर रहे हैं। वस्तुतः संख्याबल की दृष्टि देखा जाए अथवा डेमोक्रेटिक स्वतंत्र-स्वाधीन भारत में प्रजातांत्रिक जीवन मूल्यों तथा राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से देखा जाए अथवा संविधान में स्वीकृत हिंदी के राजभाषिक स्वरूप के साथ उल्लिखित 'देवनागरी लिपि में व्यवहृत हिंदी' के प्रयोग की सरकारी संवैधानिक व्यवस्था की दृष्टि से देखा जाए, अथवा पूरे भारत एवं विश्व शताधिक विश्व-विद्यालयों तथा लगभग 8 करोड़ अप्रवासी भारतीयों के स्वाध्याय, चिंतन, मनन एवं पारस्परिक व्यवकार की दृष्टि से देखा जाए तो 'हिंदी' और 'देवनागरी लिपि' ही विश्वभर के सबसे विशाल जन-बल की अभिव्यक्ति का कंठहार बनी हुई है। जैसाकि पहले संकेत दिया जा चुका है कि विभिन्न मानव-समुदाय भाषा के साथ-साथ लिपीय-प्रतीकों के माध्यम से परस्पर अधिक संपूर्णता, समझ और आकर्षण के साथ जुड़ते हैं तथा विचार एवं भाव का उनके मध्य संतरण, संचारण एवं समूर्त्तन होता है, तो ऐसी स्थिति में अखिल भारतीय स्तर पर संपूर्ण भारतीय साहित्य एवं अन्याय भारतीय-भाषाओं (प्रादेशिक भाषाओं) में उल्लिखित भाषिक अभिव्यक्तियों/छवियों के अनुवादन, प्रस्तारण एवं व्यवहार के लिये सर्वाधिक उपयुक्त एवं वांछनीय लिपि अगर कोई हो सकती है, तो वह 'देवनागरी' लिपि ही हो सकती है। 'देवनागरी लिपि' के पक्ष में उसकी वैज्ञानिकता को अपेक्षाकृत अधिक भव्य स्तर पर निरूपित करने वाले उसके अंतःगुणों को प्रमाण-स्वरूप प्रस्तुत किया जा सकता है।

भारतीय आर्य भाषाओं में जो साहित्य रचा गया है, वह परिमाण और परिणाम दोनों में सर्वाधिक विस्तृत और उच्च कोटि का है। वैदिक साहित्य, उपनिषद ब्राह्मण, आरण्यक, रामायण, महाभारत, गीता आदि आर्य साहित्य

*महासचिव, राजभाषा संघर्ष समिति, मूहिदपुर रोड, जिला उज्जैन (म.प्र.)

की रचना वैदिक भाषा ओर लौकिक संस्कृति में हुई है । यह समस्त धार्मिक साहित्य नागरी लिपि में प्रकाशित है । मराठी, गुजराती, कोकणी, नेपाली का साहित्य भी नागरी लिपि में उपलब्ध है । बंगला व असमिया का साहित्य बंगला व असमिया लिपि में प्रकाशित होते हुए भी लिपि रचना की प्रकृति और प्रकार्यता की दृष्टि से देवनागरी लिपि के साहित्य से मेल खाता है । पंजाबी, सिंधी, कश्मीरी, उड़िया और दक्षिण भारत की भाषाओं में जो विशाल साहित्य रचा गया है यह साहित्य अलग-अलग लिपियों में प्रकाशित हुआ है । लिपि नेताओं का कहना है कि दक्षिण भारत की नंदनागरी लिपि इससे संबंध रखती है । नंदनागरी लिपि का संबंध ब्राह्मी लिपि के दक्षिण क्षेत्र से संबंध रखता है । इस प्रकार ऐतिहासिक दृष्टि से उत्तर भारत की समस्त भाषाएँ उत्तरी ब्राह्मी लिपि से संबंध रखती है । इस विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि संपूर्ण भारत की समस्त लिपियाँ मूलः लिपि ब्राह्मी से उत्पंन विकसित हुई है । इस ऐतिहासिक मान्यता की सत्यता तभी संभव है जब समस्त भारतीय भाषाओं के साहित्य का प्रकाशन नागरी लिपि में किया जाए । लिपि विज्ञान के अनुसार देवनागरी लिपि ब्राह्मी लिपि की उत्तराधिकारिणी है । यह भारत की राष्ट्र लिपि है । विनोबाजी ने राष्ट्रीय आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नागरी लिपि को अपनाने का भारत के समस्त भाषा-भाषियों से अनुरोध किया था । उन्होंने कहा था कि अलग-अलग भाषा-भाषी अपनी-अपनी भाषाओं के प्रचार-प्रसार के लिए अपनी-अपनी प्रांतीय लिपियों का प्रयोग अवश्य करें, किंतु राष्ट्रीय अस्मिता की रक्षा, इतिहास बोध और देश की अखण्डता के लिए एक जोड़ लिपि के रूप में नागरी लिपि का प्रयोग अवश्य करें । ऐसा करने से क्षेत्रीय बोलियों और प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य की सुरक्षा भी की जा सकेगी और राष्ट्रीय संदर्भ में राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया सघन व व्यापक बन जाएगी ।

उपरोक्त विवेचन के बाद एक जिज्ञासु पाठक के सामने यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि भारत में क्षेत्रीय लिपियाँ, प्रादेशिक लिपियाँ, राष्ट्रीय लिपि देवनागरी, परलियन और रोमन अंतर्राष्ट्रीय लिपियाँ प्रयोग व प्रचलन में विद्यमान हैं, जब भी भारतीय भाषाओं के समस्त स्वजनशील साहित्य का प्रकाशन देवनागरी लिपि में ही क्यों किया जाए? इस प्रश्न का उत्तर देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह लिपि वैज्ञानिक होने के साथ-साथ राष्ट्र लिपि भी है । देश के प्रायः सभी लोग इसे जानते और समझते हैं । इसकी सबसे बड़ी प्रमुख विशेषता यह है कि इसके लेखन, पठन और वाचन में सामंजस्यता है । अर्थात् इसमें हम जैसा लिखते हैं वैसा ही पढ़ते और बोलते हैं । सभी वर्णों के लिए इसमें अलग-अलग चिह्न विद्यमान हैं । इस लिपि में हम अपनी बातों व भावों को पूर्णरूप से व्यक्त कर सकते हैं ।

हमें अपनी एकता को मजबूत और दृढ़ बनाने के लिए, बंधुत्व की भावना को बढ़ाने के लिए, राष्ट्रीयता की नींव को सुदृढ़ बनानें के लिए, साम्प्रदायिकता, अराज़कता को पूर्णरूप से मिटाने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि हम इन बिखरे हुए मोतियों को अर्थात् विभिन्न भाषाओं और बोलियों में रचित साहित्य को एकता रूपी सूत्र में अर्थात् देवनागरी लिपि में प्रकाशित किया जाए, क्योंकि यह एक जन प्रचलित लिपि है और इसमें प्रकाशित साहित्य राष्ट्र के लिए, राष्ट्रवासियों के लिए, राष्ट्रीय एकता के लिए हितकारी है । इसमें प्रत्येक सामान्यजन भी इस साहित्य का रसास्वादन कर सकेगा ।

देवनागरी लिपि रोमन लिपि से श्रेष्ठ है, अधिक वैज्ञानिक और पूर्ण है । अधिक क्षमतावान है । स्वरों-भावनाओं तथा उच्चरित ध्वनि-प्रतीकों के संवहन, सम्प्रेषण, संरूपम, संरचना तथा लिप्यतरण में अधिक पूर्ण है । वर्तमान कम्प्यूटर, मशीनों को देवनागरी लिपि के अनुकूल ढाला जा सकता है । यंत्र लिपि के अनुसार विकसित किए जाने चाहिए, न कि लिपियों को यंत्रों के अनुसार कांटा-छांटा जाए । शरीर के अनुसार कोट के कपड़े की कटाई-छाटाई की जाती है, कोट के अनुसार शरीर को काट-पीटकर छोटा-बड़ा नहीं किया जाता है, जो लोग देवनागरी के धनी-प्रतीकों को आधुनिक यंत्रों के अनुकूल नहीं मानते और 'रोमन-लिपि' की वकालत करते हुए आधुनिक-यांत्रिकी का हवाला देते हैं-उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि देवनागरी लिपि के अनुकूल या तो आधुनिक भाषिक यंत्र बनाएं नहीं गए हैं, या यंत्रवेत्ता बनाना नहीं चाहते । रोमन-लिपि में भारतीय भाषाओं , विशेषकर हिंदी भाषा के लिप्यतरण में ध्वनियों के सही-सार्थक सम्प्रेषण में बहुत झमेला खड़ा कर दिया है । रोमन-लिपि के कारण बड़ा घालमसेल हो रहा है । 'राम' रामा हुए, 'कृष्ण' कृष्णा हुए । 'भारत' को 'भरत' भी पढ़ लिया जाता है । 'हिंदू' हिंडू पढ़ा जा सकता है । 'हिंदी' 'हिंडी' हो जाती है । भारतीय संस्कृति का यह जाना-माना शब्द 'योग' आजकल 'योगा' बोला जा रहा है । ऐसे हजारों उदाहरण दिए जा सकते हैं, जहां 'देवनागरी लिपि' से अलग 'रोमन-लिपि' के कारण भाषा का, स्वरूप की बिगाड़ा जा रहा है, अर्थ का अनर्थ हो रहा है, इस पर गहन विचार की जरूरत है । ■

गढ़वाली-हिंदी कोश : स्वरूप, सहभागिता और सहयोग

–डॉ. अचलानंद जखमोला*

पुरा काल में कोश शब्दों के संग्रह मात्र होते थे (कोशः शब्दस्य संग्रहः–त्रिकांड चिंतामणि) । मुद्रण सुविधा के अभाव में आसनी से स्मरण करने के उद्देश्य से शब्दों को छंदों में निरुद्ध किया जाता था । संस्कृत वाङ्मय में कोशों की दीर्घ परम्परा रही है । ऐसा विशाल कोश साहित्य संसार की किसी अन्य भाषा में नहीं मिलता । संस्कृत में निर्मित अमरकोश, मेदिनी, हलायुध, हेमचंद्र धनंजय, वैजयंती तथा उनकी ही परिपाटी पर रचित मध्यकालीन हिंदी में नामप्रकाश, उमरावकोश, कर्णाभरण, पारसी पारसातनाममाला आदि अधिसंख्य लघु-दीर्घ कोश निर्मित हुए जिनको सामान्यतः 'नाममाला' या 'अनेकार्थ' नाम दिया जाता रहा । नस्तालीक लिपि में खालिकबारी, अल्लाखुदाई तथा मिर्ज़ा खाँ का गद्य में रचित तथा फारसी अकारादि क्रम में संयोजित हिंदी-फारसी अप्रतिम कोश-'लुगत-ए-हिंदी' का अपना विशिष्ट स्थान है । छंदों में बद्ध इन कोशों में संज्ञा शब्दों की प्रधानता होती थी । विकास क्रम में अंग्रेजी कोशों के प्रभाव से हिंदी भाषा में भी अकारादि क्रम में कोश नियोजित किए जाने लगे जो अपेक्षाकृत अधिक सुविधाजनक प्रतीत हुए ।

अद्यतन कोशों का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विशद हो गया है । विषय-वस्तु की दृष्टि से अब एक उत्तम कोश में शब्दों का मानक रूप निर्धारण करने के उपरांत उनके विभिन्न रूप, उच्चारण, अक्षर विवृति, व्याकरणिक कोटि, व्युत्पत्ति, स्त्रोत, ऐतिहासिक विकास, शब्दप्रयोग की सीमा या विस्तार; अनेक माध्यमों जैसे पर्याय, विपर्याय, प्रतिशब्द, समभावी शब्द, विलोम, प्रतिलोम आदि द्वारा अर्थ-द्योतन, व्याख्या, परिभाषा, प्रयोग, विशिष्ट प्रयोग, उद्धरण, प्रतीकाकं के, अभिज्ञानात्मक सूचना आदि समाविष्ट होते हैं । यत्र-तत्र चित्र और आरेख भी दिए जाते हैं । अब मुख्य भाग के अतिरिक्त 'परिशिष्ट' भी प्रत्येक कोश का अभिन्न अंग माना जाता है जिसमें संकेताक्षर, संक्षेप चिह्न, प्रतीत चिह्न, मापतौल, प्रूफरीडिंग के संकेत, कोटेशन्स, संगीत तथा खेल-कूद संबंधी शब्दावली, पानी के जहाज, हवाई जहाज, मोटरकार संबंधित शब्दावली, पारिभाषिक शब्दावली, भौगोलिक तथा ऐतिहासिक या प्रसिद्धि प्राप्त व्यक्ति, स्थान, ग्रंथ छूटे हुए शब्द, शुद्धिपत्र, अंतर्कथाएं, संसार के प्रमुख शहरों तथा राजधानियों के नाम आदि अवयव समाविष्ट होते हैं । अधिकांश कोशों में मुहावरे संबद्ध शब्द के साथ ही संकलित किए जाते हैं । प्रायः सभी भाषाओं में मुहावरा, लोकोक्ति तथा कहावतों के स्वतंत्र कोश भी निर्मित हैं । वर्ण्य विषयों की विविधता, व्यापकता तथा विस्तार को देखते हुए अब कोश को 'ज्ञान का भंडार' नाम से भी अभिहित किया जाने लगा है ।

कोश आद्योपांत नहीं पढ़ा जाता । कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध आदि की भांति यह साहित्य की सर्वमान्य विधा भी नहीं है । यह तो एक संदर्भ-ग्रंथ है । ऐसी अति महत्वपूर्ण पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ या गूढ़ विषयों का स्पष्टीकरण दिया जाता है । प्राचीन कोश तो शब्दों के संकलन मात्र होते थे । अद्यतन पाठक, जिज्ञासु, छात्र, अध्यापक, वक्ता, नेता, अध्येता, लेखक, कवि, अनुवादक, प्रूफ रीडर, वकील, न्यायाधीश, पत्रकार, कार्यालयीय कर्मचारी-वृंद, पहेली भरने वाले आदि अनेक वर्गों के लिए कोश अपरिहार्य और परमोपयोगी साधन माना जाता है । सच तो यह है कि कोई भी बौद्धिक प्रक्रिया कोश के बिना पूर्ण करना वर्तमान में अकल्पनीय सी प्रतीत होती है ।

विषयवस्तु, उद्देश्य या पाठकों को दृष्टिपथ में रख कर आजकल कई प्रकार के कोश निर्मित हो रहें है, यथा अध्येता एवं छात्रोपयोगी कोश, अथवा प्रयोक्ताओं के स्तर के आधार पर निर्मित शिक्षु, प्रारंभिक, माध्यमिक, स्नातक, स्नातकोत्तर, एडवांस या आकार को ध्यान में रखते हुए

*290/II, वसंत विहार, देहरादून-248006

कोशों को संक्षिप्त, लघु, बृहत् अथवा मानक, आदर्श, प्रमाणिक, आधुनिक आदि नामों से भी अभिहित किया जाता है ।

सामान्य पाठक एवं समाज के सभी वर्गों के उपयोगार्थ एक प्रयोजनमूलक, प्रामाणिक, व्यवहारपरक तथा सर्वोपयोगी गढ़वाली-हिंदी कोश निर्मित करने का प्रस्ताव है । कलेवर में अनावश्यक स्थूलता न आए अतः इसमें कोश के मूल एवं आधारिक तत्वों को ही समाविष्ट करने का सुझाव है । अतः मल्लिनाथ सूरी के इस आप्त वाक्य पर सदैव ध्यान दिया जाएगा कि इस कोश में ऐसा कुछ भी न कहा जाए जो अमूल, निराधार एवं अनावश्यक हो (नामूल लिख्यते किञ्चिंनानपेक्षित मुच्यते) । हमारे विचार से फिलहाल प्रस्तावित कोश के लिए आवश्यक और अपरिहार्य तत्व केवल तीन होंगे :–1. शब्द, 2. व्याकरणिक कोटि का अंकन और 3. अर्थ ।

शब्द–कोश में प्रमुख स्थान शब्दों का है । फलतः इनकी संख्या, वर्तनी, मानकरूप का निर्धारण, रूप–भेद, उच्चारण आदि पर विशेष चिंतन और मंथन की आवश्यकता होगी । आजकल बाजारों में अनेक कोश उपलब्ध हैं । व्यावसायिक वृत्ति से संकलित इन कोशों में शब्द–संख्या पर अपेक्षाकृत अधिक बल दिया जाता है । ढूँढ–ढूँढ कर अनावश्यक और अवांछित शब्दों की भरती कर दी जाती है । जितने अधिक शब्द उतने ही अधिक पृष्ठ और तदनुसार मूल्य में वृद्धि । हमारा ऐसा कोई उद्देश्य नहीं है । गढ़वाली भाषा की विशाल और व्यापक शब्द-संपदा की अभिवृद्धि में अन्य कारणों के अतिरिक्त ऐतिहासिक और भौगोलिक कारकों का अति महत्वपूर्ण योगदान रहा । अनुमानतः आज गढ़वाली भाषा का शब्द-भंडार एक लाख से ऊपर है जिसमें निरंतर वृद्धि हो रही है । इस समस्त शब्दावली को प्रस्तावित कोश में समाहित करना संभाव्य संसाधनों को देखते हुए न संभव होगा और न लाभप्रद ।

उपर्युक्त स्थिति में हम केवल बहु-प्रयुक्त, जनमानस में प्रचलित, सर्वाधिक उपयोगी, सरल, बोधगम्य और सभी विधाओं, भावों, विचारों, परिस्थितियों, अवसरों तथा वर्तमान व भावी माँग, जरूरत एवं अभिरुचि को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाले शब्दों को ही प्रस्तावित कोश में स्थान दे पाएंगे । अप्रचलित, गत-प्रयोग, वर्तमान परिवेश तथा परिस्थितियों को व्यक्त करने में अक्षम, अनुपयोगी, अति क्लिष्ट, अश्लील तथा केवल कुछ दूरस्थ इलाकों, कबीलों या वर्गों मात्र में प्रयुक्त शब्दावली की समाविष्टि से कोश का आकार बढ़ाना उचित नहीं होगा । इधर आवागमन के साधनों में वृद्धि तथा तद्जनित दूरी में कमी, पारस्परिक संपर्क का आधिक्य, निकटता, आपसी आदान-प्रदान, मेल-मिलाप, धर्म-प्रचार आदि में अभिवृद्धि होने आदि के फलस्वरूप गढ़वाली शब्दावली में भी विस्तार आया है । अतः गढ़वाल क्षेत्र के असंख्य पशुपक्षी, जड़ीबुटी, वनस्पति, प्राकृति वैभव, देवी-देवता, पौराणिक-धार्मिक अनुष्ठान, अनेक त्यौहारों व समाराहों संबंधी अप्रचलित शब्दों के बजाय हम आज के संदर्भ में आवश्यक समझे जाने वाले यथा-शिक्षा, विज्ञान, भेषज, तकनीकी, उद्यम, व्यापार, यातायात, राजनीति, खेल जगत, मनोरंजन, युद्ध-कला, सूचना-प्रौद्योगिकी, ज्ञान-विज्ञान, पर्यटन, मीडिया, यत्रकारिता, विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन आदि विषय संबंधी, परंतु गढ़वाली की स्वनिक प्रकृति और प्रवृत्ति में ढले तथा घुलमिल गए बहुप्रयुक्त हिंदी तथा अन्य भाषा के शब्दों को वरीयता देंगे ।

प्रसंगवश उल्लेख्य है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की बढ़ती हुई स्वीकार्यता को देखते हुए अंग्रेजी के ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी के नवीनतम संस्करण में हिंदी के कुछ शब्दों जैसे–'अंगरेज', 'बदमाश', 'अच्छा', 'आलू', 'अरे', 'चड्डी', 'देशी', 'फिल्मी', 'गोरा', 'यार', 'साला', 'चूडी', 'लहंगा', 'गंजा', 'चीता', 'सिंदूर', 'बाल्टी', 'मसाला', आदि को स्थान मिल चुका है । सन् 1911 ई. में प्रथम बार मुद्रित कॉनसाइज आक्सफोर्ड डिक्शनरी के अगस्त, 2006 में प्रकाशित 11वें संस्करण में हिंदी के 'मेंहदी', 'मुगलाई', 'मेथी', 'एन आर आई', जैसे शब्द समाविष्ट हैं । जिन शब्दों का पर्याप्त इस्तेमाल हो जाता है, उन्हें उस भाषा के कोश में स्थान मिलना लाज़मी है । गढ़वाली में क्रियापद, उपसर्ग, परसर्ग और प्रत्यय इतनी बहुलता से उपलब्ध हैं कि उनकी सहायता से असंख्य नए शब्द गढ़े जा सकते हैं । डॉ. रघुवीर ने मात्र 520 धातुओं, 20 उपसर्ग और 80 प्रत्ययों की मदद से हजारों नए हिंदी शब्द अपने अंग्रेजी-हिंदी कोश में समाहित किए थे । विगत कुछ वर्षों से संस्कृत मूल की धातुओं, उपसर्गों, प्रत्ययों तथा विदेशी शब्दों के कुछ अंश लेकर हिंदी के लिए प्रायः प्रत्येक विषय के पारिभाषिक कोश निर्मित किए जा रहे हैं । फिर गढ़वाली भाषा में तो नव शब्द-गठन तथा उनके गढ़वालीकरण की विलक्षण क्षमता है । उसकी मूल प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना अन्य अनगिनत शब्द बनाए जा सकते हैं । गढ़वाली भाषा उन्हें अवश्य आत्मसात् करेगी ।

759 HA/08+3A

गढ़वाली शब्दों का मानक रूप एवं वर्तनी का निर्धारण एवं अंकन एक अति विवादास्पद विषय रहा है । यहाँ शब्दों में उच्चारण-विभिन्नता तथा रूपात्मक अनेकता सर्वविदित एवं बहुचर्चित है । यह वैभिन्य प्रधानत: स्वर अथवा आघात जनित है । वही शब्द अलग-अलग इलाकों में कई तरह से उच्चरित होता है । च, छ; था, थाँ, छाँ; छौ, थौ, छौ, डर, डैर; डार, डैर, डैर, डौर, बोउल, ब्वाल जैसे उदाहरणों की कमी नहीं है । इसके लिए उदारता, व्यापक दृष्टि, समुच्चय नीति तथा मध्यम मार्ग अपनाते हुए लिखित-प्रकाशित रूपों, साहित्यिक कृतियों, बहुजनों द्वारा प्रयोग में आने वाले, बोधगम्य, सरल तथा गढ़वाली क्षेत्र के केंद्रीय भागों में उच्चारित तथा लिखित शब्द-रूपों को मानक मानते हुए मुख्य प्रविष्टि के रूप में प्राथमिकता दी जानी चाहिए । प्रयोग बहुलता के आधार पर यदि अर्थ भिन्न नहीं है तो उसी शब्द के मिलते -जुलते अन्य उच्चारण, रूप-भेद उसी प्रविष्टि के साथ क्रमिक तरीके से अंकित होंगे । गढ़वाली भाषा 'उ'कार तथा 'ओ'कार बहुल है (उकार बहुलां तेषु नित्यं भाषां प्रयोजयेत्-नाट्यशास्त्र) । गढ़वाली में ये दोनों ध्वनियाँ परस्पर परिवर्तनीय हैं । समरूपता तथा मितव्ययता के लिए जातिवाचक संज्ञा, विशेषण तथा क्रियाओं को अविकारी, 'उ'कार, यथा-करणु, जांणु, आंणु, भेज्यणु, घोचणु (क्रियाएं) एवं कीलु, जांदरू, कूड़ु, पुंगड़ु, बिराळु (संज्ञा) रूप में मुख्य प्रविष्टि मिलेगी । कोष्टक में 'ओ'कारन्त रूप भी अंकित किया जाएगा । गढ़वाली भाषा की प्रवृत्ति के अनुसार परसर्ग तथा कारक विभक्तियाँ मूल शब्द के साथ ही जुड़ती हैं, जैसे-मिन(ल) (मैंने), तिन(ल) (तूने), त्यार, त्यारु (तेरा), म्यार, म्यारु (मेरा), त्वैतें, त्वैक्तें (तेरे लिए) मैते, मैक्तै (मेरे लिए), मैसणि (मुझे) त्वैसणि (तुझे) आदि । आजकल शब्दों के प्रारंभ या मध्य क्रम में पंचम वर्ण नासिक्य व्यंजन की अपेक्षा सामान्यत: बिंदु का प्रयोग हो रहा है, परंतु चंद्र बिंदु का सर्वथा त्याग नहीं । 'ये' के स्थान पर अब सर्वत्र 'ए' ही छपता है । अरबी, फारसी, तुर्की भाषाओं से आगत शब्दों में क, ख, ग, ज, फ जैसे कुछ अक्षरों के नीचे का नुक्ता लगाने या न लगाने से अर्थ में भिन्नता आ जाती है । परंतु गढ़वाली में प्रयुक्त सभी विदेशी शब्द उसी प्रकार अंकित किए जाएंगे जैसे वह यहाँ प्रयुक्त/उच्चरित होते हैं । पूर्ण विश्वस्त होने पर ही हलंत का प्रयोग तथा यथास्थान सघोष मूर्धन्य पार्श्विक ध्वनि 'ळ' का इस्तेमाल होगा । गढ़वाली में 'अ' स्वर का दीर्घ विलंबित, प्लुत उच्चारण-'अऽ, 'अऽऽ' अधिकांशत: होता है । अत: इसका प्रयोग आवश्यकतानुसार उदारतापूर्वक करना पड़ेगा । गढ़वाली के कुछ स्वरों के लिए नए वैशिष्ट्य दर्शक चिह्न (डाइक्रिटिक मार्क) की आवश्यकता हो सकती है ।

शब्दों के संकलन के लिए हमने 'कार्ड प्रणाली' अपनाई है, क्योंकि अभी तक व्यवहृत अन्य दो पद्धतियों-'रजिस्टर या कापी प्रणाली' तथा लेई कैंची प्रणाली की अपेक्षा तृतीय पद्धति-'कार्ड प्रणाली' ही सर्वाधिक वैज्ञानिक और प्रामाणिक मानी गई है । अब तो इस क्षेत्र में भी कम्प्यूटर की सहायता ली जा रही है । संकलन के स्तर पर शब्दों की प्रविष्टियाँ, उनमें अन्य शब्द जोड़ना या हटाना, संशोधन आदि के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग अधिक सरल और सुगम है । अंग्रेजी में निर्मित कोशों में तो इसका उपयोग पिछले कई वर्षों से किया जा रहा था, परंतु अब हिंदी कोशों के लिए भी कम्प्यूटर अपनाया जा रहा है । अरविंद कुमार एवं कुसुम कुमार द्वारा सन् 2005 में निर्मित नवीनतम 'समांतर कोश' के लिए 'जिस्ट कार्ड' माध्यम से ढाई लाख शब्दों का डाटा बेस तैयार किया गया था । अब तो समस्त कोश को डिजिटल रूप में वेबसाइट पर डालने का प्रचलन बढ़ रहा है ।

व्याकरणिक कोटि इंगित करने के संबंध में ज्ञात हो कि अभी तक गढ़वाली भाषा का सर्वमान्य प्रमाणिक व्याकरण भी नहीं बन पाया है । अत: सरलीकरण तथा संक्षिप्तता की दृष्टि से प्रस्तावित कोश में केवल स्त्री. (संज्ञा-स्त्रीलिंग), पु.(संज्ञा, पुलिंग), सर्व.(सर्वनाम), वि. (विशेषण), क्रि.(क्रिया) क्रि.वि.(क्रिया विशेषण), अ. (अव्यय), उप.(उपसर्ग) ही निर्दिष्ट होंगे । क्रिया के कृदंतीय रूप, अकर्मक, सकर्मक, प्रेणार्थक या कालिक भेद, संज्ञा के वचन तथा व्याकरण के अन्य अंश जैसे योजक, निपात, पदबंध, प्रत्यय, विभक्ति आदि को निर्दिष्ट करने के विषय में कार्य की प्रगति के साथ साधन और समय की उपलब्धता के आधार पर निर्णय लिया जाएगा ।

कोश की उपादेशयता और महत्त्व का उचित मूल्यांकन उसमें दिए गए अर्थ और व्याख्याओं के द्वारा ही होता है । द्विभाषीय होने के नाते गढ़वाली शब्दों के हिंदी पर्याय, समभावी, उसी या उसके आसपास के विचारों को द्योतित करने वाले शब्दों द्वारा अर्थ देने में हमें विशेष कठिनाई का आभास नहीं होता । पर्याय या समानार्थी शब्द-बोधन का सर्वाधिक प्राचीन, लोकप्रिय एवं प्रचलित माध्यम माना जाता रहा है । इसीलिए सेमुअल जॉनसन ने अपने अंग्रेजी कोश में व्याख्याओं के साथ-साथ

759 HA/08—3B

पर्याय प्रणाली को भी उतनी ही महत्ता दी थी । सटीक अर्थ समझाने के लिए यत्र-तत्र पर्याय के साथ-साथ विपर्याय एवं विलोम शब्द भी अधिक कारगर सिद्ध होंगे ।

इस कोश का उद्देश्य गढ़वाली भाषा एवं शब्दावली का प्रचार-प्रसार, उन्नयन एवं संबर्धन भी होगा । इसलिए किसी गढ़वाली शब्द का समभावी या उसके नजदीकी विचार को व्यक्त करने के लिए यदि अन्य गढ़वाली शब्द उपलब्ध हैं तो प्रथमत: ऐसे पर्याय शब्दों की सहायता ली जाएगी । हिंदी समभावी शब्द बाद में दिए जाएंगे । गढ़वाली में ऐसे समानार्थी शब्द-संपदा पर्याप्त है । सांप के लिए 'भ्वांकुरू', 'कीड़ों', 'गुरौ' तथा आने वाले कल के लिए 'भोल', 'परबात' जैसे कई पर्याय उपलब्ध हैं । 'कोचुणू', 'क्वचुणू', 'ठ्वसुणु, 'ध्वचुणू' जैसी क्रियाएं लगभग एक ही प्रकार की एक्टिविटी या क्रिया (बलपूर्वक, सप्रयास भीतर डालना) व्यक्त करती हैं । ऐसी शब्दावली को प्राथमिकता दी जाएगी ।

अर्थ या व्याख्या नपे-तुले तथा सीमित शब्दों में दी जाएगी । हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि अति साधारण या सामान्य लगने वाले शब्दों के अर्थ देना कभी-कभी सर्वाधिक झंझट और कठिनाई प्रस्तुत करते हैं । डॉ. श्यामसुंदरदास ने अपने अनेक सहयोगियों की कठिन साधना से ग्यारह खंडों में प्रकाशित सुप्रद्धि 'हिंदीशब्दसागर' के द्वारा इस क्षेत्र में सर्व प्रथम पहल की थी, जिसको आचार्य रामचंद्र वर्मा ने बाद में विस्तार व गति दी । आर्थी विवेचन के लिए रामचंद्र वर्मा के चार ग्रंथ-शब्द साधना, शब्दार्थ भीमांसा, शब्दार्थक ज्ञान कोश, शब्दार्थ दर्शन तथा दो कोश ग्रंथ 'प्रामाणिक कोश' एवं पाँच खंडों में संकलित 'मानक कोश' अति विशिष्ट स्थान रखते हैं । गढ़वाली शब्दावली अपनी अप्रतिम अभिव्यंजनशक्ति, विलक्षण मनोभावाभिव्यक्ति, सशक्त संप्रेषणीयता एवं लाक्षणिक प्रयोगों के लिए सुप्रसिद्ध है । इसके अतिरिक्त इसमें कुछ ऐसे भी शब्द हैं जिनका हिंदी में तो क्या विश्वभर की किसी भी भाषा में पर्याय, तदर्थी या समभावी प्रतिशब्द ढूँढ़ निकालना या सटीक अर्थ अथवा व्याख्या देना आसान नहीं होगा । हमें इस विषय में पर्याप्त सावधानी बरतनी पड़ेगी ।

एक अच्छे कोश में व्युत्पत्ति देना सिद्धांतत: आवश्यक समझा जाता है । श्यामसुंदरदास ने 'हिंदीशब्दसागर' में सर्वप्रथम हिंदी शब्दों की व्युत्पत्ति देना प्रारंभ किया था, जिसको रामचंद्र वर्मा ने अपने 'मानककोश' में व्यापकता प्रदान दी । फिर भी इनमें दी गई व्युत्पत्तियाँ कई स्थलों पर भ्रामक और विवादास्पद बन गई । गढ़वाली भाषा के दो तिहाई शब्द देशज या स्थानिक हैं जिनका मूल या कालक्रमानुसार ऐतिहासिक विकास दर्शाना कठिन एवं अति श्रमसाध्य होगा । प्रमुख सहायक क्रिया 'छ' (आस्ति=है), गुजराती में 'छे', मारवाड़ी में 'छै' मैथिली व बंगाली में 'छी' तथा नेपाली में 'छू' रूप में प्रयुक्त होती है । समान्यतया इसका स्त्रोत संस्कृत अस्-(होना) माना जाता रहा है । परंतु सुप्रसिद्ध व्याकरणविद् टर्नर इस क्रिया का मूल संस्कृत आक्षे>अच्छेई>छेइ>छ> मानते हैं तो भाषा शास्त्री टेसिटोरी 'ऋच्छति' से । डॉ सुनीति कुमार चाटुर्ज्या की अवधारणानुसार 'छ' क्रिया का स्रोत 'अश्चति' है । इसी प्रकार 'भुला' (छोटा भाई) किरात भाषा के 'बो-लो' तथा 'बा-लु' से अधिक साम्य रखता है न कि संस्कृत के 'भो लल्ला' से, जैसे कि कुछ भाषाविदों की मान्यता है ।

यह सर्वमान्य है कि व्युत्पत्ति रहित कोश की महत्ता कम हो जाती है । परंतु व्युत्पत्ति ऐसी होनी चाहिए जिससे अर्थ की परतें एक के बाद दूसरी स्वयमेव खुलती जाएं। उसमें किसी प्रकार का संशय न रहे । श्रेयस्कर तो यही होगा कि प्रस्तावित गढ़वाली-हिंदी कोश में हम गढ़वाली शब्दों की व्युत्पत्ति दे सकें, जिसके अभाव में शब्द का स्त्रोत एवं वास्तविक अर्थ को समझाने/समझने में कठिनाई आना स्वाभाविक है । परंतु गढ़वाली की तीन-चौथाई देशज अथवा स्थानीय शब्दावली का मूल कैसे और कहाँ से ढूँढ़ा जाए यह विचारणीय होगा । प्रत्येक गढ़वाली शब्द का उद्गम निश्चित करना, फिर उनका सप्रमाण कालक्रमानुसार ऐतिहासिक विकास दर्शाना असंभव नहीं तो अवश्यमेव अति कठिन, गम्भीर तथा श्रमसाध्य कार्य है । इसके लिए गहन खोज-बीन, गवेषणात्मक विवेक बुद्धि बहुभाषायी ज्ञान, सक्षम सहयोगी और सहायक, तथा पूर्ण उत्तरदायित्व एवं ईमानदारी चाहिए, केवल सतही पांडित्य का प्रदर्शन नहीं । हम यह भी न भूले कि व्युत्पत्ति देना एक जोखिम भरा, विवादास्पद और कंटकाकीर्ण कार्य है । भ्रामक, काल्पनिक, मनगढंत या तुक्के से व्युत्पत्ति देने के बजाय कई गणमान्य और लोकप्रिय कोशकारों ने उचित यही समझा कि इसे न दिया जाए । इन सब कठिनाइयों के बावजूद हम इस विषय पर सकारात्मक दृष्टिकोण रखेंगे ।

भारतेंदु पूर्व हिंदी गद्य साहित्य के समीकरण

–डॉ० प्रोमिला*

आधुनिक काल से पूर्व हिंदी साहित्य का विकास मुख्यतः पद्य का ही विकास रहा है। गद्य साहित्य इतनी न्यून व अविकसित दशा में प्राप्य है कि उसे नगण्य माना जाता है। विचारणीय है कि इसके मूल में कौन से कारक निहित हैं। क्या हर भाषा के साहित्य का पद्य से प्रारंभ होना (जैसे कि कुछ विद्वानों का मत है) इसका कारक बनता है या गद्य की प्रधानता का समाज की वैचारिकता व बौद्धिकता से जुड़ाव इसका उत्तरदायी है। गद्य के साहित्य में पदार्पण से समाज की स्थितियों का कौन-सा समीकरण होता है। ये सभी पक्ष अवलोकनीय हैं तथा उत्तर स्वरूप कहा जा सकता है कि अधिकतर विद्वान समाज के बौद्धिक, यथार्थवादी, वैचारिक, वस्तुवारी होते दृष्टिकोण को ही गद्य के विकास का उत्तरदायी मानते हैं ।[1]

संस्कृत साहित्य में अधिकांशतः पद्यात्मक साहित्य होने पर भी गद्य काव्य का पूर्ण निषेध नहीं रहा। कादम्बरी वासवदत्ता दशकुमार चरित आदि कई रचनाओं का निदर्शन इसकी पुष्टि करता है। वस्तुतः संस्कृत में काव्य को लोकोत्तर आनन्द का वाहक माना गया है। उसे भारतीय अध्यात्म का गुरु भाई ठहराया गया किन्तु तत्पश्चात् समाज का स्वरूप बदल गया। ईसा की 7वीं 8वीं शती से लेकर 18वीं शती तक भारतीय इतिहास में मध्ययुग का पदार्पण हुआ । चौथी शताब्दी से कामशास्त्र का प्रभाव गहरा हुआ। भावुकता, अंधविश्वास, काल्पनिकता समाज पर काबिज हो गई। संस्कृत का गद्य हाशिए पर आ गया। रचनाकर की लेखनी भावुकता की डोर से बंधी गद्य से विमुख होती गई । प्राकृत, अपभ्रंश ने समाज की भावनाओं पर थिरकती नब्ज को पकड़ा और पद्य में उतार दिया। गद्य उंगलियों पर गिने जा सकने वाले उदाहरणों में जा सिमटा ।

बहरहाल स्थिति यह रही की नाथपंथी गुरु गोरखनाथ से पूर्व गद्य अपभ्रंश की उद्योतन सूरिकृत 'कुलमाला कथा' (वि.स. 835), 'जगत सुंदरी प्रयोग माला' नामक वैदयक ग्रंथ तथा विद्यापति रचित 'कीर्तिलता' आदि कुछ एक रचनाओं के वाक्यों में ही प्रस्तुत हुआ। सन् 1400 से पहले के मात्र 13 गद्य उदाहरणों का उल्लेख चतुरसेन ने अपनी पुस्तक 'हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास' में किया है। जिनमें से कुछ उदाहरण अवलोकनीय हैं-

1. जो अणी परवाना से कोई उलंगण करेगा जी में श्री एकलिंग जी की आण है। दुबे पंचोली जानकी दास सं. 1139.
2. पंच परमेष्ठि नमस्कार। जिन शासनि-सार चतुर्दशपूर्व समुहार, संपादित सकल कल्याण संभार, विहित दुरिताप हार.....।
3. काजर का भीति तेलें सींचलि अइसनि रात्रि, पछेवां कां वेगें काजर कमोट फूजल अइसन मेघ निविड मांसल अंधकार देबू ।
4. महाराजा की विसक्रमा जी बोलाया।.....हुकम थारा। बिसनपुरी रुद्रपुरी ब्रह्मपुरी विचै अचलपुरी बसावउ। बसनपुरी का विसन लोक आया ।

इनमें पहला उदाहरण सन् 1083 में लिखा गया एक परवाने का अंश है जिसे डॉ० गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने जाली माना है। दूसरे वाक्य की भाषा संस्कृत के निकट है व यह सन् 1274 का है। तीसरा उदाहरण संस्कृत के विद्वान ज्योतिश्वर ठाकुर कृत 'वर्णरत्नाकर' (सन् 1301) नामक ग्रंथ से लिया गया है तथा चौथा उदाहरण सन् 1416 का है। भिन्न-भिन्न समयों में लिखे गए ये उद्धरण गद्य का कोई ठोस स्वरूप न प्रस्तुत कर मात्र आरंभिक झलक ही प्रदान करते हैं। [2]

वस्तुतः 9वीं शताब्दी के लगभग प्रारंभिक हिंदी के कुछ लक्षण अस्तित्व पाते हैं। 11वीं शताब्दी से इसमें पद्यात्मक साहित्य की शुरुआत होती है तथा 14वीं शताब्दी से गद्य के नमूने मिलते हैं। लगभग सभी विद्वान आचार्य रामचंद्र शुक्ल, मित्रबंधु, डॉ० रामकुमार वर्मा, चतुरसेन, विजयेंद्र स्नातक आदि इस विचार से सहमत हैं कि सर्वप्रथम गोरखपंथी साधुओं द्वारा अपनी शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु ब्रज भाषा गद्य का प्रयोग प्रारंभ हुआ। शुक्ल जी जहां इसके पक्ष में गोरखपंथी साधुओं द्वारा लिखित एक अंश का हवाला देते हैं- 'हैं कैसे वे मछंदरनाथ? आत्मज्योति निश्चल है अंतहकरन जिनके अरु मूलद्वार हैं छह चक्र जिनि नीकी तरह जानैं।'[3]

*1042, स्काईलार्क को-ओपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी, प्लाट सं. 35, सैक्टर-6, द्वारका, दिल्ली-110075

वहीं चतुरसेन गुरु गोरखनाथ की नौ रचनाओं में एक गद्य रचना बताते हुए उद्धृत करते हैं-

सो वह पुरुष संपूर्ण तीर्थ स्नान करि चुकौ अरु संपूर्ण पृथ्वी ब्राह्मननि कौं दै चुकौ अरु सहत्र जज्ञ करि चुकौ..... जा मनुष्य को मन छनमात्र ब्रह्म के विचार बैठो।''[4]

अत: आदिकाल में गद्य मूलत: राजस्थानी गद्य व ब्रजभाषा गद्य के रूप में उभरा है। राजस्थानी भाषा में वह दानपत्र, पट्टे, परवानों पर अंकित गद्य लेखों व जैनोत्तर रचनाओं जैसे ख्यात (ख्याति), बात (कहानी), वंशावली, पीढ़ी आदि के वर्णनों में आता है तो बृजभाषा में नाथपंथियों में हठयोग, ब्रह्मज्ञान, शून्य साधना आदि से संबंधित साधना मूलक साहित्य में ।

तत्पश्चात् भक्तिकाल में ब्रजभाषा का गद्य और भी विकसित होता है, वार्ता साहित्य व टीकाएं लिखने की परिपाटी मिलती है। वल्लभाचार्य के पौत्र और गोसाईं विट्ठलनाथ के पुत्र गोसाईं गोकुलदास रचित दो ग्रंथ 'चौरासी वैष्णव की वार्ता' व 'दो सो बावन वैष्णव की वार्ता' इस ग्रंथ में उल्लेखनीय हैं। दोनों की भाषा अरबी, फारसी शब्दों के साथ बोलचाल की बृजभाषा है। शुक्ल जी जहां इसके रचनाकार पर आशंकित हैं वहीं अन्य विद्वान इन्हें मौखिक रूप में गोकुलनाथ द्वारा ही प्रकट की गई मानते हैं। भाषा का अंश उद्धृत है-

'सो श्री नंदग्राम में रहतो हतो सो खंडन ब्राह्मण शास्त्र पढयो हतो। सो जितने पृथ्वी पर मत है सबनो खंडन करतो.....सो एक दिन श्री महाप्रभु जी के सेवक वैष्णव की मंडली में आयो । सो खंडन करन लाग्यो। वैष्णवन ने कही जो तेरो शास्तार्थ करनो हौवे तो पंडितन के पास जा, हमारी मंडली में तेरे आयबो को काम नहीं।'[5]

'श्रृंगार-मंडन' नामक एक अन्य रचना के रचनाकार पर भी विद्वानों में मतवैभिन्नय है। शुक्ल जी इसे गुसाईं विट्ठलनाथ का लिखा स्वीकारते हुए उदाहरण के साथ अपने इतिहास में उद्धृत करते हैं वहीं अनेक अन्य विद्वानों के मत में यह गुसाईं का नहीं है ।

इनके अतिरिक्त गोसाईं गोकुलनाथ के पौत्र हरिराय कृत 'सूरदास की वार्ता,' नाभादास कृत 'अष्ट याम' (संवत् 1660), बैकुंठमणि शुक्ल कृत 'अगहन महात्म्य' व 'वैशाख माहात्म्य,' नंददास कृत 'नासिकेतोपाख्यान' (संवत् 1760), सूरति मिश्र कृत 'बैताल पचीसी' (1767) (जिसे बाद में लल्लूलाल ने खड़ी बोली में रुपांतरित किया), बनारसी दास जैन कृत 'अर्द्धकथानक' आदि कई महत्वपूर्ण रचनाएं लिखी गईं।

प्राचीन परंपरा के अनुसरण पर बृजभाषा में टीकाएं लिखने की परिपाटी भी प्रारंभ हुई। 'श्रृंगार-शतक' पर किशोरीदास ने 'रामचंद्रिका,' पर जानकी प्रसाद ने टीकाएं रचीं। 'कविप्रिया', 'रसिकप्रिया', 'बिहारी सतसई' आदि पर भी कई टीकाएं प्राप्य हैं। परंतु महत्वपूर्ण है कि उचित मात्रा में गद्य लेखन होने पर भी भाषा का विशेष परिमार्जन या परिष्कृत रूप दिखाई नहीं पड़ा । वैष्णव वार्ताओं में गद्य कुछ निखरता प्रतीत हुआ किन्तु टीकाओं की भाषा ने सब पर पानी फेर दिया । शुक्ल ने लिखा कि- 'ये टीकाएं संस्कृत की' 'इत्यमर: और कंथ भूतम्' वाली टीकाओं की पद्धति पर लिखी जाती थी.....भाषा ऐसी अनगढ़ और लद्धड़ होती थी कि मूल चाहे समझ में आ जाए पर टीका की उलझन से निकलना कठिन समझिए ।'

अत: 13वीं से 19वीं शताब्दी तक बृज भाषा गद्य परंपरा मूलत: तीन रूपों-

1. धार्मिक शास्त्र चर्चा से संबंधित ग्रंथों में (गोरखपंथी, वैष्णवों आदि के ग्रंथ)
2. वर्णनात्मक ग्रंथों में (वार्ताएं, आख्यान, पुराण आदि)
3. टीकापरक गद्य ग्रंथों में [6]

प्रकट हो लड़खड़ाती चलती रही किन्तु उसमें क्षमता व शुद्धि का अभाव ही रहा ।

बृजभाषा गद्य के पश्चात् बारी आती है खड़ी बोली गद्य की । आचार्य शुक्ल ने माना कि अपभ्रंश काव्यों के शब्दों में झलकती खड़ी बोली कबीर की सधुक्कडी से होते हुए गंग कवि तक का सफर तय करती है । अकबर के समय में रचित 'चंद छंद बरनन की महिमा' (सन् 1580) गंग कवि की महत्वपूर्ण गद्य पुस्तक है । रचना की भाषा हिंदी खड़ी बोली है जैसा कि निम्न उदाहरण से स्पष्ट है-

'इतना सुनके पातसाहि जी श्री अकबर साहिजी आद सेर सोना नरहरदास चाख को दिया । इनके डेढ़ सेर सोना हो गया। राम बंचना पूरन भया । आम खास बरखास हुआ ।'[7]

आचार्य शुक्ल गंग कवि की रचना को खड़ी बोली गद्य की प्रथम पुस्तक बताते हैं किंतु चतुरसेन इससे पूर्व

'मिराजुल आशंकीन' व 'हिदायतनामा' नामक दो छोटी-छोटी पुस्तकों के रचेयता गेसू दराज बन्दा नेवाज शहबाज बुलंद को खड़ी बोली गद्य के प्रथम रचनाकार स्वीकारते हुए भाषा (खड़ी बोली) के फैलाव को दक्षिण के मुसलमानों से जोड़ते हैं। साथ ही एक अन्य ज्योतिष पुस्तक 'भुवनदीपक' को भी 'चंद छंद बरनन' की महिमा से पहले स्थान देते हैं।

सन् 1741 में पटियाला दरबार के रामप्रसाद निरंजनी रचित 'भाषा योगवासिष्ठ' शीर्ष से साफ सुथरी खड़ी बोली का ग्रंथ मिलता है। इस रचना की भाषा इतनी परिमार्जित, प्रौढ़ है कि लगभग सभी विद्वान, एकमत से इसकी प्रशंसा करते हैं तथा शुक्ल तो इसे गद्य की प्रथम पुस्तक व रचनाकार को प्रथम प्रौढ़ लेखक का दर्जा देते हैं। रचना का उदाहरण उल्लेखनीय है-

'ताते मन विषे जो कछू कलना है तिस का त्याग करि मोक्ष की इच्छा का भी त्याग करि बंधन बृति को भी त्याग करि हे राम जी वैराग्य अरु विवेक अभ्यास करिकें मन को निर्मल किए जब मन निर्मल हुआ तब मन का मननभाव नष्ट हो जावेगा।'[8]

वस्तुत: खड़ी बोली में समाज को पहचानने, उसकी नब्ज को पकड़ने और मस्तिष्क को टटोलने का सामर्थ्य अधिक था जिस कारण वह आमजन में अपनी पैठ बना चुकी थी। 14वीं शताब्दी में खुसरो ने उसमें पद्य और पहेलियां रचीं। आमजन के बीच से होती हुई खड़ी बोली दरबारों तक आ पहुंची। फारसी मिश्रित खड़ी बोली या रेखता में शेरोख-शायरी का नया दौर शुरू हुआ किंतु मुगल सल्तनत के विनाश के साथ ही खड़ी बोली नए क्षेत्रों में प्रसारित हुई। बदहाली की तरफ बढ़ती दिल्ली, आगरे से शायरों व व्यापारियों के जमावड़े पूर्वी शहरों मुर्शिदाबाद, लखनऊ, बनारस आदि में फैलने लगे। लोगों के साथ उनकी भाषा, खड़ी बोली भी फैली।

भारत की साहित्यिक व राजनैतिक स्थितियों में नए युगों का पदार्पण हुआ। रीतिकाल की समाप्ति, अंग्रेजी शासन की स्थापना से खड़ी बोली गद्य लेखन भी अप्रभावित न रह सका। 1850 में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के समानांतर सदासुखलाल ने भागवत की कथा का 'सुखसागर' नाम से भाषांतर किया। उर्दू-फारसी के इस दिग्गज ने हिंदी गद्य की तरल अवस्था में धार्मिक आख्यान लिखा जोकि महत्वपूर्ण है। शुक्ल जी ने इसकी भाषा पर टिप्पणी रूप में लिखा कि 'उन्होंने अपने हिंदी गद्य में कथा वाचकों, पंडितों और साधु संतों के बीच दूर-दूर तक प्रचालित खड़ी बोली का रूप रखा जिसमें संस्कृत शब्दों का पुट भी बराबर रहता था।' भाषा का नमूना दर्शनीय है-

'विद्या इस हेतु पढ़ते हैं कि तात्पर्य इसका (जो) सतोवृत्ति है वह प्राप्त हो और उससे निज स्वरूप में लय हुजिए। इस हेतु नहीं पढ़ते हैं कि चतुराई की बातें कह के लोगों को बहलाइए।'[9]

सदासुख लाल की ही भांति फारसी-उर्दू के प्रसिद्ध शायर इंशाअल्ला खां ने स्वप्रेरणा से 'रानी केतकी की कहानी या उदयभान चरित' की रचना की। 'जैसे भले लोग-अच्छों से अच्छे,-आपस में बोलते चालते हैं ज्यों का त्यों वही सब डोल रहे और छांव किसी की न हो।' भाषा पर दिए इस वक्तव्य की लीक का अनुसरण करते हुए खां साहब ने प्रचलित खड़ी बोली की बोलचाल वाली भाषा प्रयुक्त की। हालांकि कथन शैली पर उर्दू ही हावी रही।

इसके अतिरिक्त लल्लू लाल व सदल मिश्र ने फोर्ट विलियम कॉलेज में कार्यरत रहते हुए कई पुस्तकों की रचना की। इनमें लल्लू लाल रचित (कुल 11 कृतियां) 'प्रेम सागर' व सदल मिश्र लिखित (कुल 3 रचनाएं) 'नासिकेतोपाख्यान' भाषा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्रेमसागर की रचना का आधार जहां चतुर्भुज का श्रीमदभागवत बना वहीं नंददास के नासिकेत पुराण से सदल मिश्र की रचना जन्मी। पहले की भाषा का ढांचा संस्कृत अथवा ब्रज रंजित हिंदी का रहा व दूसरे में अधिक व्यवहारिक, मुहावरेदार, आकर्षक व चटपटी भाषा उभरी जिससे सहजत: सदल मिश्र का स्थान हिंदी गद्य निर्माताओं में अधिक प्रतिष्ठित हुआ। दोनों पुस्तकों के गद्य उदाहरण द्रष्टव्य हैं:-

(i) 'राजा परीक्षित ने श्री शुकदेव जी से पूछा, महाराज रौनक द्वीप तो भली ठौर थी, काली वहां से क्यों आया.....।' (प्रेमसागर)

(ii) 'जग में एक से एक सिद्ध हुए हैं, पर मैं जानता हूँ कि तुम्हारे गुठा वो तेज को कोई दशांश भी नहीं पा सकता है।' (नासिनेतोपाख्यान)[10]

जिस समय उपर्युक्त चार लेखक गद्य निर्माण में रत थे लगभग उसी समय विलियम कैरी व मूर साहब जैसे मिशनरियों ने ईशा का संदेश जनसाधारण तक पहुंचाने के उद्देश्य से धार्मिक पुस्तकों का अनुवाद कार्य प्रारंभ करवाया तथा इसके लिए साधारण बोली सरल हिंदी को ही चुना

साथ ही स्थान-स्थान पर खुले शिक्षा केंद्रों के लिए विविध पाठ्य पुस्तकें भी तैयार करवाईं। इससे न केवल हिंदी के व्यवहारिक रूप का विकास हुआ बल्कि उसमें नए भावों और विषयों को व्यक्त करने का सामर्थ्य भी बढ़ा। हिंदी की क्षेत्रीय बोलियों में भी (बाइबिल के अनुवादों से) कुछ समृद्धि हुई।

राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद [जोकि बाद में (1856 में) शिक्षा विभाग के इंस्पेक्टर नियुक्त हुए] ने 1844 में बनारस नामक अखबार निकाला किंतु यह अखबार देवनागरी में लिखा उर्दू का अखबार था जिसकी भाषा नीति व्यापक आलोचना का शिकार बनी। तारा मोहन मिश्र ने विरोध स्वरूप 'सुधारक' नाम से पत्र प्रारंभ किया। इसी परंपरा में 1852 में 'बुद्धि प्रकाश' नामक एक अन्य पत्र प्रकाशित होने लगा। अंतिम दोनों पत्रों की भाषा हिंदी की प्रकृति के अनुकूल थी।

राजा शिव प्रसाद के समकालीन राजा लक्ष्मणसिंह ने अधिक दूरदर्शिता दिखाई व पूर्व के विपरीत संस्कृतनिष्ठ हिंदी को अपनाया। अपने तीनों अनुवादों शुकुंतला, रघुवंश तथा मेघदूत में इन्होंने इसी आदर्श का अनुगमन किया। इनकी शैली से शुद्ध हिंदी में अच्छा गद्य लिख सकने को बल मिला। अनुवादों के अलावा इन्होंने आगरे से 'प्रजाहितैषी' नामक पत्र भी निकाला।

इसके अतिरिक्त राम प्रसाद निरंजनी ने गद्य के जिस ढांचें को प्रस्तुत किया था उसी परपंरा में दयानंद सरस्वती ने तर्क-वितर्क की भाषा-शैली के साथ ईसाई धर्म के विपक्ष में वेदों की पुनर्स्थापना का उद्देश्य सामने रख हिंदी के व्यापक प्रसार में सहायता की। गुजराती भाषी होने पर भी उन्होंने 'सत्यार्थ-प्रकाश' के लेखन से तात्कालीन गद्य पर गहरा प्रभाव डाला। पंजाब में श्रद्धाराम फुल्लौरी ने सनातनी धर्म का पक्ष लेकर हिंदी, पंजाबी, उर्दू में पुस्तकें लिखी व अपना सिद्धांत ग्रंथ 'सत्यामृत प्रवाह' प्रौढ़ हिंदी में प्रस्तुत किया। 'भाग्यवती' नाम से एक उपन्यास भी इन्होंने रचा जिसे कुछ विद्वान हिंदी का पहला उपन्यास स्वीकारते हैं।

विस्तृत विवेचन विश्लेषण के पश्चात् अंत में कहा जा सकता है कि न केवल साहित्य बल्कि लेखन का ढंग भी समाज की स्थितियों, परिस्थितियों व मानसिकताओं का सरोकारी होता है। संस्कृत में पद्य के साथ गद्य लिखने का प्रचलन तत्कालीन भावुकता और बौद्धिकता से आबद्ध रहा। जहां एक तरफ इसमें काव्य के श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत हुए वहीं नाटक आदि में गद्य के श्रेष्ठ ग्रंथ भी रचे गए। पाली, प्राकृत, अपभ्रंश भाषाओं के विकास के साथ समाज में पनपी कल्पना ने गद्य का साथ छोड़ पद्य से समीकरण कर लिया। गद्य केवल कुछ वाक्यों तक सकुचित हो गया। न केवल कहानी, उपन्यास बल्कि इतिहास, ज्योतिष, भूगोल आदि की पुस्तकें भी लिखी जाने लगीं तथा भारतेंदु के आगमन से पूर्व तक हिंदी में गद्य की अनेक शैलियां प्रचलित हो गईं। सदासुख लाल की शैली जहां पंडिताऊपन लिए थी वहीं लल्लू लाल की शब्दावली में ब्रजभाषा पर आग्रह था। सदल मिश्र का गद्य पूरबीपन से रचा बसा था तो शिवप्रसाद में उर्दूपन की गहरी छाप थी। लक्ष्मण सिंह तत्समता का आग्रह लिए थे किंतु स्वीकार्य है कि प्रस्फूटन के बाद भी खड़ी बोली हिंदी गद्य का वास्तविक विकास भारतेंदु के पश्चात् ही होता है। गद्य की विविध विधाओं नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध, समालोचना, जीवनी, आत्मकथा आदि में सुव्यवस्थित और सुगठित गद्य भारतेंदु के प्रयत्नों से तत्पश्चात् ही गति पाता है।

1. (i) हिंदी साहित्य का इतिहास, गणपतिचंद्र गुप्त, पृ. 810 (ii) आधुनिक हिंदी साहित्य की भूमिका, डा. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, पृ. 253 (iii) हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, पृ. 67.
2. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास, आचार्य चतुरसेन, पृ. 389-391.
3. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 383.
4. हिंदी भाषा और साहित्य का इतिहास, वही, पृ. 391-392.
5. वही, पृ. 392-393.
6. हिंदी साहित्य का इतिहास, विजयेंद्र स्नातक, पृ. 182-184.
7. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 388-389.
8. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. नगेन्द्र, पृ. 421.
9. हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृ. 394.
10. हिंदी साहित्य का इतिहास, सं. नगेन्द्र, पृ. 422. ■

समकालीन महिला उपन्यासकारों के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकार

–डॉ. गुड्डी बिष्ट*

साहित्य समाज की चेतना में सांस लेता है । वह समाज का परिधान है जो जनता के जीवन के सुख-दुख, हर्ष-विषाद, आकर्षण-विकर्षण के ताने-बाने से बुना जाता है । उसमें विशाल मानव जाति की आत्मा का स्पंदन ध्वनित होता है वह जीवन की व्याख्या करता है इसीलिए उसमें जीवन देने की शक्ति आती है । वह मानव को उसके जीवन को लेकर ही जीवित है इसलिए वह पूर्णतः मानव केन्द्रित है । साहित्य उसी मानव अनुभूतियों भावनाओं और कलाओं का साकार रूप है। मानव सामाजिक प्राणी है वह सामाजिक समस्याओं विचारों तथा भावनाओं का जहां सृष्टा होता है । वही वह उसमें स्वयं भी प्रभावित होता है । इसी प्रभाव का मुखर रूप साहित्य है इसी से विद्वानों ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है ।

कलाकार युग दृष्टा और युग सृष्टा होते हैं । साहित्यकार अतीत और वर्तमान के आधार पर भविष्य के नव निर्माण की नींव रखते हैं--"कलाकार जीवन को सत्यता ही नहीं देता वरन् सत्य को समझने की दृष्टि भी देता है ।" [1]

मन्नू भण्डारी का 'महाभोज' नामक उपन्यास समाज में घिनौनी राजनीति एवं गन्दे लोगों का दस्तावेज है जिन्होंने गाँधी व नेहरू के आदर्श की आड़ में अपने घिनौने कर्मों को कार्यरूप दिया है । अपनी इस घिनौनी राजनीति में मनुष्य उसके लिए बलि का बकरा बन गया है । राजनीति का यही घिनौना रूप समाज में अनेक प्रकार के अत्याचार व पाखण्डों को जन्म देता है । ऐसे समाज के संबंध में राहुल जी का कहना है कि–"जिस समाज ने प्रतिभावों को जीतेजी दफनाना अपना कर्तव्य समझा है और गदहों के सामने अंगूर बिखेरने में जिसे आनन्द आता है ऐसे समाज के अस्तित्व को हमें पल भर भी बर्दाश्त नहीं करना चाहिए? ·····ऐसे समाज को जीने देना पाप है इस पाखण्ड, धूर्त, बेईमान, जालिम, नृशंस समाज को पैट्रोल डालकर जला देना चाहिए ।" [2]

समकालीन महिला लेखिकाओं में मुख्य रूप से मन्नू भण्डारी, शिवानी और कृष्णा सोबती सदृश जागरूक कलाकारों का साहित्य समाज की सापेक्षता का संवाहक है । उनके उपन्यासों में समसामयिक समाज बोलता है । वह न तो उपदेशक बनकर आई हैं और न आदर्शवादी नेताओं की भाँति उन्होंने आदर्शों की आड़ में समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया है । उन्होंने समाज की वास्तविक स्थिति से अवगत कराते हुए भलाई-बुराई, पाप-पुण्य, सुख-दुख का चित्रण कर मानव मन की गहराईयों का चाहकर सामाजिक समस्याओं पर अपने उपन्यासों के कथानकों का निर्माण किया है । सामाजिक उपन्यासकार अपनी रचना में वर्तमान समाज की विसंगतियों का चित्रण कर भावी समाज के निर्माण की भूमिका तैयार करता है । इस दृष्टि से 'महाभोज' में शुरू से आखिर तक सामाजिक संरचनाओं की दरारों पर पैनी नजर रखी गई है । लेखिका मन्नू जी ने बड़ी तीक्षण दृष्टि से पूरे समाज को देखा है । उन लोगों को भी बारीकी से जो गरीबों के हित की बात करते हैं किंतु वास्तविक शोषक वे ही होते हैं। दा साहब का कथन दृष्टव्य है--"दुहाई सब गरीबों को देते हैं पर उनके हित की बात कोई नहीं सोचता, जनता को बाँट कर रखो · · · कभी जात की दीवारें खींचकर तो कभी वर्ग की दीवारें खींचकर । जनता का बँटा बिखरापन ही तो स्वार्थी राजनेताओं की शक्ति का स्रोत है ।" [3]

मन्नू जी का 'स्वामी' नामक उपन्यास एक प्रेम कथा है किन्तु प्रेम भी सामाजिकता के दायरे से बाहर नहीं होता। नारी मन के अंर्तद्वंध सामाजिक संबंधों का अंतर्विरोध प्रेमी और पति के बीच चयनक्रम में विचारों का घात प्रतिघात तथा अंत में आस्था प्रेम कर्तव्य और शाश्वत मूल्यों का वरण लेखिका की स्वस्थ सामाजिक चेतना को व्यक्त करते हैं । 'स्वामी' उपन्यास का पात्र नरेन समाज के उस रूप का प्रतीक है जो पाने की लालसा में कर्तव्य का ध्यान खो बैठता है-- "प्रेमी और स्वामी (पति) के दो ध्रुवों के बीच झूलता हुआ मिन्नी का जीवन समाज के समक्ष कई प्रश्न खड़ा करता है जैसे नारी की अपनी सामाजिक स्थिति क्या है ।" [4] क्या वह जिसे चाहती है उसका वरण नहीं कर सकती ? क्या वह मायके व ससुराल दोनों ही स्थानों पर उपेक्षा सहने

*बिष्ट भवन, नर्सरी रोड, श्रीनगर गढ़वाल-246174 (उत्तराखण्ड)

के लिए उपेक्षित है? क्या स्त्री की दुश्मन स्त्री ही नहीं है, यद्यपि लेखिका ने इन प्रश्नों का अलग से आख्यान नहीं किया फिर भी प्रबुद्ध पाठक को यह प्रश्न सहज ही कुरेदते हैं। समाज में विवाह और परिवार जहां परस्पर पूरक है वहां विवाह और दहेज का संबंध भी चोली दामन का रहा है। दहेज की समस्या सम्पूर्ण समाज की एक भयावह समस्या है और फिर हिंदू परिवारों की प्रथम आवश्यकता बनकर रह गई है। दहेज समस्या न केवल दांपत्य संबंधों को बल्कि परिवार से लेकर संपूर्ण समाज की संरचना को प्रभावित कर रही है। विवाह की गरिमा के अनुरूप कन्या पक्ष द्वारा स्वेच्छा से दिए गए वस्त्र, आभूषण आदि उपहार रूढ़ होकर वरमूल्य का रूप ग्रहण कर 'दहेज' के पारंपरिक अर्थ को भी कलंकित कर रहा है। दहेज दानव, दहेज कोढ़ जैसे अपशब्द से प्रताड़ित होकर भी आज उन्मुक्त अट्टाहास कर रहा है। समाज की नई पुरानी पीढ़ी, शिक्षित-अशिक्षित, स्त्री-पुरुष, निर्धन-धनी सभी पीड़ित होते हुए भी समाधान नहीं खोज पा रहे हैं। महिला कथाकार इस तथ्य को स्वीकारती है कि--"दहेज का आरंभ पुत्री को पिता के धन का हिस्सा देने के रूप में हुआ होगा फिर उसकी विकृति ने उसे व्यावसायिक रूप प्रदान कर मोल-भाव से संबंध किया है।" [5]

दहेज के मीठे परिणाम कम व खट्टे अधिक ही रहे है। 'चौदह फेरे' नामक उपन्यास में दहेज लाने व न लाने वाली बहू के प्रति सास के व्यवहार को सरलता से समझा जा सकता है--"आधुनिक छोटी बहू का प्रत्येक दोष सुभद्रा की आंखों में सामान्य ही रहता है, जब उसकी जेठानी चौके में बैठकर अतिथियों के चींटी दल के लिए पचास-पचास गिलास चाय बनाकर भेजती, वह अपने कमरे में बैठी अंग्रेजी किताबों से स्वेटर बुनती। मायके से वह प्रचुर मात्रा में दहेज लाई थी इसी से सास उसकी नादरशाही को खुशी-खुशी झेल लेती थी।" [6]

कभी-कभी सामाजिक बंधनों में बंधा व्यक्ति यथार्थ को छिपाने की कोशिश करता है क्योंकि समाज उसे जीने नहीं देगा। इसका स्पष्ट प्रमाण बेरोनिका जैसी आदर्श व विदेशी युवती के शब्दों में व्यक्त होता है जो व्यक्ति से ज्यादा महत्व समाज को देते हुए कहती है-"लक्ष्मी तुम यहां से चली जाओ मेरी प्रतिष्ठा पर आंच मत आने देना--मेरे समाज को मत जानने दो लक्ष्मी, कि मेरे भाई की पत्नी उसकी पत्नी बनने से पहले इस शराबी शोहदे की पत्नी थी।" [7]

समाज में नारी का एक घृणित एवं परित्यक्ता रूप भी है, जिसको सारा समाज घृणित नजरों से देखता है, उसे घृणित किसने बनाया है ? क्या उसी समाज ने जो नारी को आदर्श व देवी की मूर्ति के रूप में भी देखता है? जिसकी मां भी नारी है। बहन व पत्नी भी नारी है। उसी ने नारी की यह दशा करके रखी है। नवाबजान पंडित जी को चेतावनी देती हुई कहती है-- "वहां जाकर बेमतलब हमसे मत उलझ बैठना। तुम जानते हो, हमारी जवांनी हमारी रोटी है, वक्त बेवक्त हमें कहीं जाना पड़े तो लौटने में जो मुंह में आये सो कहकर नौकरानियों के सामने हमें जलील मत करना। जिस रात को हम ड्यूटी पर गई वह रात फिर हमारी नहीं रहती। पर जिस रात को हम घर पर रहेंगी, वह बेशक पूरी तरह से तुम्हारी है। कभी-कभी तुम एकदम बचपना कर बैठते हो यही सब हमें अच्छा नहीं लगता।" [8]

नारी का समाज में यही घृणित रूप व नारी की विकृत स्थिति का परिचय देते हुए गौहरजान गजानन को चेतावनी देते हुए कहती है--"देखो गजानन तुम उन कामिनियों को नहीं जानते, तुम जवान हो गुणी हो, सुन्दर हो, एक बार वहां पहुंचे तो एक ही कोठे के बनकर नहीं रह पाओगे, तुम्हारी दशा भूखे कुत्तों के बीच गिराई गई हड्डी सी हो जायेगी।" [9]

परंतु इसके बिल्कुल विपरीत नारी का रूप लेखिका समाज में सबसे ऊंचा देखना चाहती है फिर चाहे मर्यादा हो या पद प्रतिष्ठा बेटी सुरंगमा के लिए लक्ष्मी के शब्द समाज पर करारा व्यंग्य करते हैं--"तब क्या करेगी ? दिन रात शराबी बाप को दरवाजे से उठाकर पलंग पर लिटाती रहेगी क्या? या मेरी तरह मास्टरनी बन जीवनभर खूखार सिरफिरी इंस्पेक्टरिनियों की धौंस सहेगी क्या? सुन ले लड़की सरकारी कालेज की मास्टरनी बनी तो वे विभागीय शेरनियां तेरा खून पीती रहेंगी और किसी प्राइवेट कॉलेज की नौकरी की तो नरभक्षी मैनेजर तेरा जीना दूभर कर देंगे। नीरो चतुर्वेदी, श्यामला, मीताधर सब तो मेरी यूनिवर्सिटी की लड़कियां थी, आज कोई एस.डी.एम. है कोई डिप्टी सेक्रेटरी।" [10]

हमारा समाज एक कुंवारी लड़की को मां के रूप में नहीं देख सकता, इसलिए नंदी जब रोहित को मां का नाम देकर बताना चाहती है-"मैं नहीं चाहती कि अब कोई उससे कहे कि मैं उसकी मां नहीं कैंजा हूं, ईश्वर कृपा से मैं बहुत दूर हूं, कहां हूं यह भी आपसे इसलिए छिपा रही हूं कि जिससे मेरा इस छूटे गांव से फिर कोई रिश्ता न रह जाए। सुरेश भट्ट की पवित्र धारा में प्रवाहित कर बहा देना चाहती हूं। भाइयों ? न रोहित कभी यह जान पाएगा कि वह एक पगली का अवैध पुत्र है और न मैं उसे यह हवा लगने दूंगी कि उसकी नानी हत्यारिनी थी, पिता शराबी, जैसा भी हो आप सभी को मुझे अपना सहयोग देना ही होगा, कल शाम को हमारा परिवार फिर आप सबसे विदा ले लेगा।" [11]

समाज के जिस भय से वह गांव छोड़कर गई थी उसी समाज ने जब बच्चे रोहित को पिता के नाम का अहसास करावाया तो बच्चा मां से पूछता है और मां को लौटना पड़ता

759 HA/08--4A

है, फिर उसी गांव में जहां लौटने की कसम खाकर गई थी। तब सुरेश मरणासन्न स्थिति में है, रोहित को दिखाते हुए नंदी कहती है--''रोहित तुम रोज पूछते थे न, तुम्हारे डैडी कहां है? ये रहे तुम्हारे डैडी।''

शिवानी का 'सुरंगमा' पुरुष समाज के प्रति वितृष्णा का भाव रखता है यही कारण है कि दिनकर के प्रणय प्रस्तावों को सुरंगमा प्रायः अनदेखा अनसुना कर देती है किंतु जब दिनकर उसके चरणों में बैठकर प्रणय याचना करता है तो वह द्रवित हो जाती है फिर भी उसका प्रेम वासना से पंक्ति नहीं है। यह उपन्यास अनेक सामाजिक विकृतियों एवं राजनीतिक विद्रूपताओं को उजागर करता है। समाज में जमींदारों एवं वैश्याओं के वैभवपूर्ण विलासी जीवन, राजलक्ष्मी का अभिशप्त जीवन, विनीता का स्वच्छंद आचरण, दिनकर के राजनीतिक दांव-पेंच व उसके अनेक रूप आदि सूक्ष्मता से चित्रित किए गए हैं। राजलक्ष्मी, राबर्ट की बहिन, सुरंगमा जैसी नारियां समाज में विसमताओं से भरा जीवन जीने को मजबूर हैं किंतु समाज के लिए सुरंगमा जैसी नारी के चरित्र को लेखिका ने विशिष्ट एवं श्लाध्य दिखाया है। जहां एक और शिवानी के 'सुरंगमा' में समाज की विभिन्न परिस्थितियों को अलग-अलग रूप में दिखाया गया है, वहीं दूसरी ओर संस्कृति की गरिमा को लेकर कृष्णा सोबती का 'जिंदगीनामा' भी।

कृष्णा सोबती का 'जिंदगीनामा' पंजाब के सांस्कृतिक जीवन का जीवन्त चित्र प्रस्तुत करता है। इसलिए इसे आंचलिक उपन्यास का नाम भी दिया गया है। इस उपन्यास में पंजाब विशेष में रहने वाले लोगों के बीच परस्पर सौहार्दपूर्ण व्यवहार की झांकी वहां के सम्मत समाज का परिचय दे रही है। पंजाब में हिंदू और मुसलमानों का मिलकर रहना एक दूसरे के सुख-दुख में शामिल होना, बड़े जमींदारों या शाहों के यहां दोनों वर्गों का (हिंदू और मुसलमान) मिल-जुलकर काम करना शाही नामक चरित्र का आस-पड़ोस की औरतों की समय-समय पर रुपये व पैसे द्वारा मदद करना, यह है बंटवारे से पूर्व की पंजाबी समाज में पल रही एक झांकी। इस उपन्यास में आत्मीयतापूर्ण संबंध प्रखर हैं। कई पीढ़ियों की कथा कहता यह उपन्यास काल की गतिशीलता को भी संकेतित करता रहता है। यह उपन्यास पंजाब प्रदेश में रहने वाले लोगों की पारिवारिक सामाजिक और सांस्कृतिक जिंदगीनामा का जीवंत इतिहास प्रस्तुत करता है। स्वतंत्रता से पूर्व पंजाब की संस्कृति और वहां का समाज सांझा समाज था। लेखिका को उस साझे समाज से लगाव और सम्मोहन है। यहां के समाज में जमींदारों का दबदबा दिखाई देता है। कुछ महत्वपूर्ण उपन्यासों में कृष्णा सोबती ने सामाजिक संदर्भ में महत्वपूर्ण समस्याओं को उजागर किया है। परंतु इन सभी पक्षों के प्रकटीकरण में नारी जीवन, उसकी विवशता, उस पर जुल्म, उसका विद्रोह, उसका वैधव्य आदि सबल माध्यम या जरिया बनकर आए हैं। 'डार से बिछुड़ी' की असहाय मालन हो या सूरजमुखी अंधेरे की रत्ती, सभी सामाजिक विद्रयताओं का शिकार हैं। परंपरा में जकड़ी हैं। डार से बिछुड़ी उपन्यास में सामंती शानों-शौकत का आडंबरपूर्ण चित्रण वहां के भयावह समाज का जीवंत दस्तावेज है।

लेखिका ने अपने उपन्यास के माध्यम से यह भी दिखाया कि अनमेल विवाह समाज का कोड़ है, इसका दुष्परिणाम नारी को ही भोगना पड़ता है धन और सोना-चांदी के बल पर हवेलियों के अभ्यास छोटी लड़कियों का उपभोग कर उनका सौदा करने में भी बाज नहीं आते ''जी धक करने लगा, जिनकी बैठक में रातभर टिकी थी वह तो किसी के बेटे से नहीं दिखते थे पका-पका चेहरा।''[12]

सभी महिला उपन्यासकार स्वीकारती हैं कि आजादी के बाद नारी की उपेक्षा का प्रभाव उनके लेखन पर पड़ा है-स्वतंत्रता के बाद नारी लेखन में नारी मुक्ति के स्वर तेजी से उभरे। नारी लेखन द्वारा नारी जीवन की व्यथा-कथा लिखी गई। उषा प्रियंवदा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा सोबती, शशि प्रभा शास्त्री, मैत्रेयी पुष्पा, शिवानी आदि ने नारी की अस्मिता तथा नारी की मुक्ति के लिए कहानियां लिखी। इसके बाद पीढ़ी में मृदुला गर्ग, निरूपमा सेवती और मेहरून्निसा परबेज आदि का कथा लेखन पारंपरिक मूल्यों व तिलस्म को जोड़ता हुआ मानव मूल्यों को गढ़ता है। इसके बाद की पीढ़ी में जैसे मालती जोशी, मृणाल पाण्डे, कृष्णा अग्निहोत्री, मणिक मोहनी आदि लेखिकाओं ने खंगाले पानी को छनने में सहायता दी है।

संदर्भ

1. डॉ. गुलाब राय	-काव्य के रूप,	पृ. 160
2. पंडित राहुत सांस्कृत्यायन	-तुम्हारी क्षय,	पृ. 5-6
3. मन्नू भण्डारी	-महाभोज,	पृ. 110
4. मन्नू भण्डारी	-स्वामी,	पृ. 110
5. एम. आर. गुप्ता	-आधुनिक परिवार समस्या एवं संक्रमण,	पृ. 54
6. शिवानी	-चौदह फेरे,	पृ. 256
7. शिवानी	-सुरंगमा,	पृ. 84
8. शिवानी	-सुरंगमा,	पृ. 101
9. शिवानी	-सुरंगमा,	पृ. 97
10. शिवानी	-सुरंगमा,	पृ. 116
11. शिवानी	-कैंजा,	पृ. 41
12. कृष्णा सोबती	-डार से बिछुड़ी,	पृ. 35

759 HA/08—4B

भक्ति, ज्ञान एवं दार्शनिकता की त्रिवेणी : संत मलूकदास का काव्य चिंतन

–डॉ. दिनेश चमोला 'शैलेश'*

निर्गुण भक्ति धारा की ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रमुख संतों में मलूकदास अत्यंत उच्च कोटि के विचारक, आध्यात्मवादी चिंतक, मनीषी एवं प्रभविष्णु कवि हुए हैं । संत मलूकदास ने अपनी अद्‌भुत मेधाशक्ति, जीवन–दर्शन से ओत–प्रोत आध्यात्मिक चिंतन एवं अपनी यथार्थपरक काव्याभिव्यक्तियों के माध्यम से न केवल पूरे युग को गहन रूप में प्रभावित किया वरन् अवमूल्यन से त्रस्त मानवता को अद्‌वितीय आध्यात्म शक्ति प्रदान कराकर नई ऊर्जा प्रदान कर इस संसार की नश्वरता के प्रति उन्हें पग–पग आगाह भी किया। संतों का अवतरण अवमूल्यन के चरम तथा अराजकता की निकष पर भी संभव होता है । ऐतिहासिक बर्बरता का वह काल जहां भावनात्मक स्तर पर संवेदनशील हृदयों की संवेदनाओं को चूर–चूर कर श्रद्‌धा, भक्ति, आध्यात्म, विश्वास व लोक चेतना को खंडित करने पर उतारू था तो ऐसे गहन अंधकार के क्षणों में संत परंपरा में प्रवर संत मलूकदास का अवतरण निश्चित रूप से एक ज्ञान के ऐसे दिव्य पुंज के रूप में था जिससे सुप्त मानवता के हृदय गहवरों में अज्ञानता का तिमिर सदा–सदा के लिए विच्छिन्न हो गया ।

संत मलूकदास का जन्म 5 वैशाख विक्रमी संवत 1631 को इलाहाबाद जिले के कड़ा नामक ग्राम में हुआ । इनके पिता का नाम सुंदर दास खत्री ककड़ तथा माता का नाम शांती देवी था । इनके पूर्वज पंजाब से आकर यहां बस गए थे । बालक मलूकदास का जन्म यद्‌यपि सामान्य बालकों की ही तरह हुआ किंतु अबोध बचपन से ही बालक विलक्षण प्रतिभा एवं अलौकिक दर्शन व जीवन दृष्टि को अपने में समेटे हुए था । बालपन के जिन मासूम क्षणों को निरंतर अपने अग्रजों व अपनों की स्नेहवत्सला छांव की पग–पग अपेक्षा होती है, वहीं मलूकदास ठेठ बचपन से ही नितांत एकाकी एवं आत्ममुग्ध प्रकृति के बालक रहे । एकांत में प्रकृति के सान्निध्य में बैठकर घंटों प्रकृति की विराटता व मौनता से मुखर होकर प्रमुग्ध भाव से बतियाना। मन ही मन प्रमुदित होकर प्रकृति के सुरम्य आंचल में अपनी हंसी की पिटारी खोलना, नीले अंबर को ताक–ताक कर प्रसन्न हो भीतरी संगीत से वशीभूत हो नृत्य की झांवरे डालना, खग–बृंदों से अंतरात्मा की बोली से बतियाना, खुद ही में डूब–डूब कर चहकना, जहां उनकी दार्शनिकता की पराकाष्ठा को प्रतिध्वनित करता है वहीं सामान्य बालकों की तरह पास–पड़ोस का कूड़ा बीनना, कंकर–पत्थर छानना उनकी सहज मानवीय प्रवृति को दर्शाता है । 'होनहार विरवान के होत चीकने पात' की धुन पर बालक मलूकदास में यह अलौकिक दार्शनिकता की लंबी–लंबी बाहें कहीं न कहीं उनके उज्जवल व प्रतापी भविष्य की रूपरेखा को दर्शाती नजर आती थी । मलूकदास के इन अलौकिक कारनामों से ही प्रभावित होकर एक महात्मा ने उनके माता–पिता से उनके भावी तेजस्वी व्यक्तित्व की भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि 'विलक्षण गुणों को समेटे हुए यह बालक या तो महान तेजस्वी सम्राट बनेगा या फिर विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ने वाला कोई संत प्रवर साधु अथवा महात्मा ही।'

बालक मलूकदास की बांछे उस घड़ी खिल जातीं जब कभी साधुओं का रेला या महात्माओं का समूह या साधु मंडली ईश चिंतन अथवा भगवत चर्चा करता हुआ उसके इर्द–गिर्द से गुजर जाता। बहुत बार बालक के भीतर का मौन दर्शन उसे प्रेरित कर गंगा के उस तट की ओर भी आंमत्रित कर देता जहां किल्लोल करती जल लहरियों के आंचल में

संपादक 'विकल्प', भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, हरिद्‌वार रोड़, मोहकमपुर, देहरादून-248 005

बैठकर वह घंटों एक मौन व समर्पित तपस्वी की तरह ध्यानमग्न हो समाधि में डुबा रहता। यही नहीं बालक के अबोध बचपन की अनेकानेक ऐसी घटनाएं थी जो उसे इस मानवीय धरातल से अलौकिकता की राह पर अग्रसर हो जाने की पूर्व उद्घोषणा करती। संसार में रहते हुए भी बालक में निर्लिप्तता, निश्चेष्टता व निष्काम भावना का उद्भव प्रारंभ से ही दिखाई देता है।

सांसारिक उदासीनता का चरम ही कहीं न कहीं भावी भक्ति व आध्यात्म की आधार भूमि बनती है, यह बात नित्यप्रति बालक मलूकदास के जीवन में अक्षरशः सत्य प्रतीत होती दिखाई देती थी। एक बार माता-पिता की अनुपस्थिति में घर में एकाएक साधुमंडली के आगमन पर बालक ने भिक्षाटन में घर में उपस्थित समग्र अनाज ही साधुमंडली को अर्पित कर दिया। थके-हारे माता-पिता कार्योपरांत घर लौटे व माता शांती देवी जब भोज्य सामग्री जुटाने हेतु जब भंडार गृह में पहुंची तो अनाज के पात्रों को रिक्त देख कर बौखला गई व मन ही मन समझ गई कि जरूर मलूक ने संपूर्ण अनाज साधु महात्माओं अथवा भिक्षुकों को दान कर दिया होगा। मां क्रोधित होकर उसकी मूर्खता पर बर्बरता से बिफरी किंतु अपने में गहन भक्ति, आध्यात्म एवं दर्शन की त्रिवेणी का अस्वादन करने वाले बालक मलूक ने उतनी ही विनम्रता से कहा कि 'मां कोठार खाली कहां है? लगता है आपने उसे ढंग से नहीं देखा।' यह कह जब बालक मां को भंडार गृह के उस कोठार को दिखाने ले गए तो मां के आश्चर्य की सीमा न रही कि पहले जो कोठार आधा था वह कठोर अब अनाज से भरा हुआ था। बस यह देख मां मलूक व मलूक के आराध्य के प्रति मन ही मन श्रद्धा भाव से नत होकर निर्निमेष कभी कोठार की तरफ देखती, तो कभी बालक की समुद्र सी धैर्य व आस्था की विपुल भाव राशि की ओर।

मलूकदास के जीवन के अनेकानेक प्रसंग भक्ति की अंतरंगता, श्रद्धा, विश्वास व आस्था की ऊंचाइयों को अपने में समेटे उस अनंत, अगाध व अतुलनीय देवत्व की पराकाष्ठा का बोध कराने के लिए युगीन परिस्थितियों को अभिप्रेरित करते हैं। 'सांसारिक पराजय ही आध्यात्मिक जय हो सकती है' इस कथन को अबूझ बचपन के अचेत दिनों से लेकर परिपक्व, प्रौढ़ता तक आने पर बार-बार चरितार्थ करते रहे जीवन में मलूकदास। माता-पिता बालक की सांसारिक विरक्ति की बात जानते हुए भी समय-समय पर उन्हें इस प्रकार की व्यावसायिक वृत्तियों से जोड़े रखना जरूरी समझते थे ताकि बालक व्यवहार से शिक्षा लेता-लेता उसकी (संसार की) आसक्ति में रुचिपूर्वक रमता चला जाए। किंतु संसार के सरोवर में मलूक भक्ति के कमल की तरह खिलते, बढ़ते, पल्लवित-पुष्पित होते चिंतन व भावों का मकरंद लुटाते और उसी तरह से निर्लिप्त रहते जिस तरह कमल जल से।.... जो जल में रहते हुए भी जल में नहीं रहता, और नहीं रहते हुए भी, रहता है। वह संसार में रहते किंतु निर्मूल भाव से। उनके मूल की जड़ें किसी दूसरे अलौकिक लोक की भक्ति, उपासना और आध्यात्म के सरोवर से प्राण व ऊर्जा पाती थीं जो अदृष्ट होकर भी इस दृष्ट संसार में कुछ नया रचने के लिए उसे अनवरत प्रेरती रहती थी।

मलूकदास की अभिरुचि न संसार में थी न संसार के क्रियाकलापों में ही। उन्हें न कभी नश्वर जगत के अप्रभावी व अस्थायी अध्ययन की आवश्यकता हुई, न ही नश्वर संबंधों से आसक्ति के विस्तार की। माता-पिता बालक के इस असाधारण व्यवहार से निरंतर भीतर ही भीतर कष्ट में रहते। वे जब-तब बालक को डांट-डपट कर अपने कंबलों के व्यापार से जोड़े रखना चाहते। यह बात वे भलीभांति जानते थे कि जिसकी अभिरुचि व्यापार में नहीं है, वह व्यापार की समृद्धि की पूर्वपीठिका कैसे बन सकता है? किंतु फिर भी सांसारिक विरिक्त कहीं उसे आध्यात्म की आसक्ति के पथ की ओर न अग्रसर कर दे, इस बात से डर कर वे उसे अपने व्यापार के विक्रय एवं संवर्धन से जोड़े रखते।

बहुत बार यह भी होता कि व्यापार को निकले बालक मलूकदास सारी की सारी कंबले बिना किसी मोलभाव के या तो भिक्षुकों में बांट देते या फिर शीत की ठिठुरती हुई सांझों को उन निरीह व बेसहारा परिवारों को दे आते जिनके लिए एक कंबल भर भी जुटाना, जीवर भर की पूंजी की तरह था। स्वयं बिना कुछ मूल्य पाए खाली हाथ घर लौट आते। तब भी मुख मुद्रा पर गांभीर्य की विपुल राशि का तेज दिपदिपाता रहता। एक बार भीषण गर्मी में जगह-जगह, गांव-गांव व ठांव-ठांव भटकते हुए भी जब कंबलों के गट्ठर में से एक भी कंबल नहीं बिकी तो बालक मलूकदास क्लांत हो एक पेड़ की घनी छाया में सुस्ताने लगे और उनकी आंख लग गई। कुछ पल विश्राम के उपरांत जब उनकी आंख खुली तो सामने एक मजदूर खड़ा था जो उनकी क्लांति से प्रभावित हो उस गट्ठर को न्यूनतम दाम पर उनके घर पहुंचा देने का अनुरोध कर रहा था। मलूकदास ने बिना किसी सोच-विचार के उसे गट्ठर थमा दिया और वह घर पहुंच गया। जब मजदूर ने मलूकदास व अपने मध्य हुए बात-चीत का संदर्भ मां को दिया तो मां को मलूक दास की मूर्खता पर

क्रोध तो हुआ ही, साथ ही मजदूर की निष्ठा व ईमानदारी पर संशय भी। इसलिए मलूकदास के आने तक मां ने कुछ भोजन खा लेने के बहाने से मजदूर को कोठरी में बैठाकर उसे बाहर से बंद कर दिया।

मलूकदास के आने पर मां ने अपने मन के संदेह को उसके सम्मुख व्यक्त किया और मजदूर को दी गई कुल कंबलें फिर से गिनने के लिए मलूक को कहा। जब मलूक ने कंबलों के गिनने के पश्चात् उनकी सही संख्या पाई तथा मजदूर के वहां न होने की बात मां को बताई तो मां फिर से आश्चर्य से भर गई। वहां केवल एक रोटी का टुकड़ा बचा था किंतु वह बंद मजदूर गायब था। मलूकदास ने वह बचा हुआ टुकड़ा खाकर मां को कहा–'मां सचमुच तुम बहुत भाग्यवान हो कि ईश्वर ने तुम्हें साक्षात दर्शन दिए' और यह मलूकदास की हठ ही थी कि वह भी कोठरी को बंद कर तब तक उसके अंदर बैठा रहा जब तक कि उसकी प्रार्थना से प्रभावित होकर दयासिंधु भगवान ने पुनः साक्षात दर्शन उसे न दे दिए।

मलूकदास दिव्य-दृष्टि वाले अलौकिक प्रतिभा के संत थे। उनके जीवन की अनेकानेक ऐसी घटनाएं उन्हें सांसारिक पथों से विचलित कर आध्यात्म के अमरत्वपूर्ण मार्ग की ओर बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुई। संत मलूकदास ने 'ज्ञान बोध', 'भक्ति विवेक', 'ज्ञान पारोछि', 'सुखसागर', 'विभै विभूति', 'ध्रुव चरित्र' जैसे ग्रंथ लिखे। डॉ. बलदेव वंशी के अनुसार–''संत मलूकदास के वंशज 14वीं गद्दी के पीठाचार्य स्वामी नानक चंद जी ने संत मलूकदास जी की वाणी, हस्तलिखित ग्रंथ की फोटो प्रति, जो कि 455 पृष्ठों की है, मुझे सौंपी, ताकि में उसे कैथी बोली से पाठ निर्धारित कर वर्तमान स्वरूप में लाकर प्रकाशित करवाऊं। हस्तलिखित प्रति को पढ़ना, शिरोरेख एक होने से पद का (शब्द का) स्वरूप सुनिश्चित करके पाठ निर्धारित करना सर्वाधिक कठिन कार्य रहा।

–मलूकदास (बलदेव वंशी),
साहित्य अकादमी, दिल्ली 2006, पृष्ठ-28

मलूकदास का भावुक मन सांसारिक संवेदनाओं की गहन भट्टी में तप-तप कर इतना निखरा कि अनुभूतियों के स्वर वाणी के रूप में फूट-फूट कर मूल्यहीनता के युग में मानवीय सरोकारों को दिशा-निर्दिष्ट करने में तथा समय की शिला पर स्थायित्व ग्रहण करने में सक्षम होने लगे। इनकी वाणी में जहां पग-पग पर नश्वरता के प्रति विद्रोह तथा सूक्ष्म के प्रति आत्मिक सघनता के शंखनाद की अनुगूंज सुनाई देती है जो मानव के भीतर बौद्धिक जड़ता को तोड़ चेतना को नई सृष्टि की नींव डालती है। वहीं इसके समानांतर ही उनकी वाणी में क्षण-क्षण उस अनश्वर, अखंड एवं अलौकिक ब्रह्म को समझ पाने की गहरी अंर्तवेदना भी सन्निहित दिखाई देती है। मानव जीवन चौरासी लाख योनियों में अत्यंत दुर्लभ व सक्षम जीवन है। वह जीवन चिंतन से जन्म-जन्मांतरों को मुक्ति प्रदान करने के लिए है। चिंतन के धरातल पर जो मनुष्य इस स्वर्णिम अवसर का सदुपयोग नहीं कर पाया उसका जीवन पशुओं से भी बदतर है और मलूक के शब्दों में वह आत्महंता है। संसार का विस्तार मलूकदास की दृष्टि में एक निरर्थकता व काया का गणित है। काया की माया पश्चाताप के गंतव्य पर समाप्त होती है। वह समूचा संसार सारहीन है जो राम नाम स्मरण के मूल मंत्र से वंचित है। इस दुर्लभ जीवन में जिसने उस अनश्वर व कालातीत ब्रह्म के अलौकिक आनंद प्रदान करने वाले नामरस का पान नहीं किया वह जीवन निरर्थक सर्वथा व्यर्थ, कलंकित एवं कालांतर तक विषाद की वैतरिणी में डुबो देने वाला है। मलूकदास के शब्दों में–

राम सुमिर ले रे मना, बिरथा न जन्म गंवाउ।
औसर बीता जाता है, बहुरि न ऐसा दांउ॥

राम भजन कर लेहि मन, जब लगि तन कुसलात।
नदी नीर जेंउ जन्म पद, मारू-मारू किए जात॥

मलूकदास की समूची जीवन-दृष्टि जहां आध्यात्म के रंग में पूरी तरह से पगी हुई थी वहीं उनके दार्शनिक चिंतन की विराटता उनकी वाणियों में यत्र-तत्र सार रूप में विश्व क्षितिज में अमिय रस का वर्णन करती दिखाई देती है। इस संसार रूपी भवसागर से कोई भी प्राणी तब तक पार नहीं हो सकता जब तक राम नाम रूपी किश्ती व मल्लाह रूपी गुरु की वैशाखी उसे प्राप्त नहीं हो जाती। सांसारिक सुखों का अंत दुखों के प्रारंभ से होता है। जबकि आध्यात्म के पथ में आने वाले कष्ट अंततः अन्त काल तक शाश्वत सुख की अनुभूति कराते हैं। इस गहन, अगाध व अंतर अज्ञानता के अंधकार रूपी भवसागर से पार पाने का एक मात्र साधन है संत समागम। संत होने का सौभाग्य उन्हें ही प्राप्त होता रहा है जिन्होंने अपने भावनाओं के समग्र जीवन विटप को उस अराध्य के श्रीचरणों में संपूर्णतः समर्पित कर दिया हो। काया से उत्पन्न महत्वाकांक्षाओं के संसार के दहन के उपरांत ही उस अदृष्ट, निराकार व सर्वकालिक ब्रह्म के साम्राज्य के तोरणद्वार खुलते हैं सांसारिक कर्मों का फल

जहां इच्छाओं को विस्तार देता है वहीं अंततः दुख, वितृष्णा एवं पश्चाताप में समाप्त होता है । किंतु ज्ञान, भक्ति, आध्यात्म के मार्ग में पड़ने वाला दुख प्रभु प्राप्ति पर स्थायी सुख का पर्याय हो जाता है । यह अनहद नाद जब मन के गलियारों में गूंजने लगता है तो दसेन्द्रियों के द्वार एकरस होकर उसके श्रीचरणों का ही अभिनंदन करते दिखते हैं फिर मन का पंछी मुक्त होकर उस स्थायी 'परमानंद' का हिस्सा हो जाता है । भक्ति आध्यात्म और ईश्वर के मध्य सेतू का कार्य करती है संत प्रवृत्ति अथवा संतों का परम पवित्र लोकमंगलकारी सन्निध्य इसलिए निशिवासर इनका स्मरण ही जीवों को इस काल के कुचक्र की मजबूत चार दीवारियां फांद जीवन को सर्वथा के लिए मुक्त कराने की सामर्थ्य रखता है । कवि के शब्दों में–

रामहिं सुमिरहु रैन दिन, छांडि कर्म फल आस ।
संतन की सेवा करत, मिलिहैं हरि सुख रास ।।

अब सागर के तरन को, है हरि नाम आधार ।
सो बिसरायो सहज ही, रे मन मूढ़ गंवार ।।

देह की आसक्ति और दैहिक संबंधों की अनुरक्ति से उपजा तृष्णाओं का संसार सदैव कष्ट के साम्राज्य की ओर ले जाता है जो काल-कालांतर इच्छाओं के भंवर में गोते खिलाता हुआ ज्ञान चक्षुओं का धूल-धूसरित कर देता है । यह दैहिक संसार भौतिकता के विस्तार के लिए नहीं, वरन् संत समागम से ज्ञान व ईश रस का आचमन कर इस देह के माध्यम से जीव श्रृंखलाओं को जन्म-जन्मांतरों से मोक्ष प्रदान करवाने के लिए प्राप्त है । सुंदर देह वह नहीं जो दैहिक सुंदरता का विस्तार करे बल्कि वह है जो ज्ञान चक्षुओं से निर्मित मोक्ष के उस परम दिव्य व स्थायी धाम की ओर ले जाए जहां से जीवन व जन्म की पुनरावृत्ति न हो ।

यह नश्वर शरीर एक दिन गल-गल कर मिट्टी हो जाएगा । 'मिट्टी से मिट्टी तक' की यह देहिक उड़ान तब तक महज उपलब्धियों के शून्यों के परत-दर-परत पढ़ने का विस्तार तब तक निरर्थक व न गिनने योग्य··· सारहीन हैं··· जब जक उसके समक्ष भक्ति, ज्ञान, आध्यात्म, गुरु व ईश रूपी एक (1) का नेतृत्व न हो । इस मिथ्या देह पर गर्व करना महज गहन मूढ़ता का प्रथम प्रदर्शन है । इसलिए इसकी सार्थकता तभी है जब इसके माध्यम से किसी ऐसी सृष्टि का विन्यास हो जो अनश्वर व शाश्वत हो । वह अमरता की सृष्टि महज सच्चे नाम का संधान ही हो सकती है–

अंत एक दिन मरहुगे, गलि गलि जैहैं चाम ।
ऐसी झूठी देह ते, लेहु न सांचा नाम ।।

सुंदर देह पाइ के, मत कोई करे गुमान ।
काल दरेरा खायगा, क्या बूड़ा क्या जवान ।।

मानव जीवन पाकर अकर्मण्य व अचेत हो निस्सार मृत्यु जन्म-जन्मातरों के पश्चाताप के अलावा कुछ दे ही क्या सकती है । संसार की दैहिक व तृष्णाजनित सृष्टि का विस्तार नितांत मिथ्या है रेतीले घरौंदों की तरह । अज्ञानता के प्रबल प्रवाह से मिथ्या सत्य की जब तक प्रतीति कराता है जब तक ज्ञान चक्षु 'सत्य और मिथ्या' के मध्य के अंतर का पिटारा खोल कर उनके समक्ष नहीं रख लेते । सांसारिक सुखों के गवाक्ष उस मुकाम से पूर्व ही दम तोड़ देते हैं जहां से अलौकिकता का सुख प्रारंभ होने भर को भी होता है । यहां की मृत्यु निरर्थकता की दहलीज पर निष्प्राण हो जाती है जबकि आध्यात्मिक प्रांगण अर्थात् प्रभु के सान्निध्य व श्रीचरणों में प्राप्त मृत्यु, मृत्यु को भी सार्थकता प्रदान करती है । अतः बार-बार अपनी वाणी के माध्यम से संत मलूकदास युग को आगाह करते हुए कहते हैं :–

इस जीने का गर्व क्या, कहा देह की प्रीत ।
बात कहत ढह जात है, ज्यों बालु की भीत ।।

मरने मरने भांति है, जो मरि जाने कोइ ।
राम द्वारे जो मरे, बहुरि न मरना होइ ।।

जब मृत्यु इस भौतिक संसार का अंतिम सत्य है तो सत्य पर उस अनश्वरता की मुहर क्यों लगा ली जाए जो जीव व यौनियों के बंधनों को पार कर अमरत्व की सीमा में प्रविष्ट करने का पारपत्र (पासपोर्ट) ही हाथ में सौंप दे। संसार का संबंध व चिंतन इहलोक की दीवारों को फांद कर उहलोक की हद को स्पर्श भी नहीं कर सकता । प्रभु ने हर प्राणी को उसी प्रकार के भौतिक अवयव, वाणी, दृष्टि व चिंतन का संसार सौंपा है जिसके अनुप्रयोग संधान व अनुभूति के चरम पर वह जन्म-जन्मातरों की नैया को डुबो भी सकता है व जन्म-जंमातरों के बंधनों से मुक्त हो कर अमरत्व की श्रेणी में आ देवत्व भी पा सकता है ।

यहां की सब वस्तुएं मृत्यु की याचिका हैं । मृत्यु के मेजबान अपने अतिथियों को मृत्यु के अतिरिक्त उपहार में दे ही क्या सकते हैं । अमरत्व की सीमा मृत्युलोक की समाप्ति के निकष से प्रारंभ होती हैं । मिथ्या देहिक संबंधों व संसाधनों से उपजे व सृजित वे

घर यमपुरी से कम नहीं जहां भक्ति, भगवान व आध्यात्म की अनुगूंज सुनाई न देती हो । ऐसा जीवन मलूक के विचार में निरा श्मशान ही है । इसीलिए वह निरंतर सांसारिकों को हरि चरणों में पूर्णत: समर्पित हो जाने का आह्वान करते कहते हैं–

भजि ले चरन मुरारि के, जीति सार न हारु ।
कह मलूक हरि चरन बिनु, जनमि मुए कै बार ।।

कहत मलूक सपूत सो, भगति करै चित लाइ ।
जरा मरन ते बीच परै, अजर अमर होइ जाइ ।।

जा घर भगति न भागवत, संत नहीं मेहमान ।
ता घर जम डेरो किये, जिय तेहि परो मसान ।।

सांसारिक उपलब्धियां तथा यहां की मिथ्या समृद्धि की बुलंदियां मलूक को स्थायी सुख की अनुभूति कराने के बजाए गहन अंतर्वेदना देकर भीतर ही भीतर टीसती हैं । अहंकार नश्वर उपलब्धियों पर भीतर से लगने वाला वह घुन है जो इस दुर्लभ देह के जन्म-जंमातरों के आवागमन को झेलने की सामर्थ्य को भीतर ही भीतर नष्ट करता रहता है । यह समूचा अपनों का स्वप्नमय संसार महज जन्म-जंमातरों का ऋणोनुबंध है । ऋणों के शेष लेखों के तहत ही संबंधों की कोटि यथा--पत्नी, सुत, सुता, भगनि एवं माता-पिता के रूप में निर्धारित होती है । सबको छोड़ हमें ज्ञान चक्षुओं के माध्यम से अच्छे व सच्चे की पहचान मलूक इन दो टूक शब्दों में करवाना चाहते हैं–

दया धरम हिरदै बसे, बोले अमृत बैन ।
तेई ऊंचे जानिए, जिनके नीचे नैन ।।

भेदी होइ सो जानै, नट बाजी संसार ।
झूठे नाते जगत के, तात मात सुत नार ।।

और सकल सब धंध है, सांचा तू करतार ।
जग फुलवारी जयों रचि, तिन बहु रंग संवार ।।

मृत्यु लोक की प्रसवासृष्टि अमरता को जनने में सर्वथा असमर्थ है । मृत्यु का विस्तार मृत्यु लोक से अमर्त्य लोक की ओर भला कैसे ले जा सकता है? मिथ्या तृष्णाओं से उपजा हुआ क्रोध उस विषाक्त विषधर की तरह है जिसके डसने से असली सुख कल्पों के लिए विनष्ट हो जाते हैं । क्रोध तथा काम के प्रति सचेत करती हुई वाणी की एक बानगी प्रस्तुत है–

क्रोध तो काला नाग है, काम तो परगट काल ।
आपु आपु को ऐंचते, करि डारा बेहाल ।।

एक कनक अरु कामिनी, ए दोऊ बटमार ।
मीठी छूरी लाइ कै, मारा सब संसार ।।

मलूकदास आडंबरहीन भक्ति एवं श्रद्धा के अटल विश्वासी हैं । मौलिक श्रद्धा के अभाव में इन सांसारिक तीर्थों एवं पवित्र स्थलों का भी कोई महत्व नहीं है जब तक कि मन रूपी ईश्वर भक्ति सरिता में डूब कर उस ईश्वर का अमिय रस न प्राप्त कर लें । कवि मौलिक भावों के अभाव में केवल संध्या-तर्पण तथा तीर्थाटनों के स्नान को भी उस पवित्रता का सा महत्व नहीं देता जब तक कि वह राम नाम के सच्चे चरणामृत के स्थायी व प्रभावी तत्व से अनभिज्ञ हो । वह समूची प्रदर्शनकारी श्रद्धा, ढोंग भरे विश्वास व आचरणहीन वेद, पुराणों, शास्त्रों का अध्ययन तब तक निरर्थक है जब तक उस परम तेजस्वी, अटल सत्य के पर्याय हरि के नाम, जाप व अस्तित्व से सीधा साक्षात्कार न हो जाए । कवि भावुक मिथ्या प्रदर्शन से कहीं अधिक आत्मिक समर्पण का प्रशंसक है । इसीलिए इस भवसागर से तरण का एक मात्र उपाय राम नाम के सच्चे जाप को ही मानता है–

राम नाम की पूजा मेरी, सुमिरन मेरे राम ।
तीरथ गंगा आदि सब, मेरे हरि के नाम ।।

संध्या तरपन सब तजे, तीरथ कबहुं न जाउं ।
हरि हीरा हृदय बसै, ताहि पैठि अंहवाउं ।।

वेद पुरान सासतर, पूजा क्रिया अचार ।
एक पुरुष के आसरे, तजिये सब बेवहार ।।

मलूक की भक्ति उन अस्थायी व अप्रभावी तीर्थस्थलों की ओर अग्रसर होने के लिए कभी भी प्रेरित नहीं करती जहां महज आडंबर व प्रदर्शन का साम्राज्य हो । उसके लिए अमरत्व की सारभूमि वही है जहां हरि का स्थायी निवास स्थान है । मिथ्या व सत्य के मूलभूत अंतर को पहचानने के उपरांत ही हरि गुण के स्थायी महत्व को समझा जा सकता है । मलूक बार-बार दिगंबरों के उस अनंत साम्राज्य की बात करते हैं जहां धोबी की कल्पना करना भी किसी हीनता से कम नहीं है । जहां हरि स्मरण व प्रभु चर्चा का अभाव है उस वैभवजन्य प्रदेश में जाने का न्यौता भी मलूक कभी नहीं देते बल्कि इसके समानांतर यह मानते हैं कि संसार से मोक्ष प्रदान करने वाला महज राम नाम अर्थात प्रभुसप्ता ही है–

उहां न कबहुं जाइए, जहां न हरि का नाम ।
दीगंबर के गांव में, धोबी का क्या काम ।।

राम राम के नाम को, जहां नहीं लवलेस ।
पानी तहां न पीजिए, परिहरिए सो देश ।।

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय ।
कोटि बार समझाइया, कौआ हंस न होय ।।

मलूक के लिए महज मूर्ति पूजा बावरेपन का पर्याय है । पूजा की सत्पात्र तो आत्मा ही है महज । वह समूची साधना निस्सार है जिसके केंद्र में आत्म तत्व का अभाव है । अमरत्व तथा मोक्ष के लिए ईश्वर का स्थायी सान्निध्य आवश्यक है । वह सर्वव्यापक, सर्वगुण संपन्न ईश्वर सर्वभूतांतरात्मा है । इसलिए उसको तब तक नहीं पहचाना जा सकता जब तक आत्म चक्षु उन्मीलित हों । अपनी दार्शनिक विचारधारा से मलूक विश्व के चेतन समुदाय को निरंतर इसी संदेश के संप्रेषण से पग-पग सचेत करना चाहते हैं । जन्म-जन्मांतरों की मौत से आगाह होकर प्रभु नाम का अमरत्व पीना न केवल मानवता की सार्थकता का प्रतीक है अपितु मलूक की समूचे जीवन दर्शन का अभीष्ट भी–

जागो रे अब जागो भैया, सिर पर जम की धार ।
ना जाने कौने घरी, कहि लै जइहै मार ।।

कुंजर चीटी पशु नर, सब में साहेब एक ।
काटे गला खोदाए का, करकै सूरमा लेख ।।

साधे दुनिया बावरी, पत्थर पूजन जाय ।
मलूक पूजै आत्मा, कुछ मांगै कुछ खाय ।।

मलूक उस चेतन आत्मा की पूजा व भक्ति के आराधक हैं जो आंतरिक वाणी से; ज्ञान चक्षुओं के चमत्कार से, संचित दुष्कर्मों के तम को ज्योतित कर दे । वह ऐसा पवित्र तीर्थ मलूक के लिए स्वयं मनुष्य का हृदय ही है जिसके मूल सरोवर में प्रभु का स्थायी निवास है । प्रभु से सीधा साक्षात्कार ही अनेक तीर्थाटनों के समेकित सुखों का अटूट अहसास है । कबीर के फक्कड़वाद की तरह मलूक का दार्शनिक चिंतन भी उन देवताओं, प्रस्तरों, पहाड़ों की पूजा को निरर्थक करार देता है जिनसे कई गुना बेहतर वह चक्की है जिसका कुटा, पिसा खा कर जीव जगत, प्राण एवं जीवंतता ग्रहण करता है । मलूक इस नश्वर संसार में उस परब्रह्म की इसी प्राणदायी भक्ति एवं चेतना को वितरित करने का अभिलाषी है । यदि हृदय तीर्थ में हरि का निवास है तो उसे सहस्र तीर्थाटनों का लाभ स्वतः ही मिल जाता है । इसीलिए मलूक आत्मा की उद्धार व मौलिक पूजा-अर्चन की सिफारिश कर श्रीहरि के चरणों में ही मरने की आकांक्षा रखते हैं ताकि फिर से कभी पुनर्मृत्यु न हो–

कहे विवेक जग आइकै, मरना है निरधार ।
पै हरि द्वारे जो मरै, मरै न दूजी बार ।।

जेते देखे आतमा, तेते सालिगराम ।
बोलनहारा पूजिए, पत्थर से क्या काम ।।

आतम राम न दीन्हहीं, पूजत फिरै पषान ।
कैसहु उक्ति न होयगी, केतिक सुनौ पुरान ।।

देवल पूज कि देवता , की पूजे पहाड़ ।
पूजन को जांता भला, पीस खाय संसार ।।

हम जानत तीरथ बड़े, तीरथ हरि की आस ।
जिनके हिरदे हरि बसै, कोटि तिरथ तिन पास ।।

यह संसार दिग्भ्रमित अनिश्चितताओं का मकड़जाल है । इससे पार पाने के लिए दिव्य चक्षुओं से प्राप्त ज्ञान ज्ञान की अंतरंगता से सत-चित ब्रह्म का अहसास जरूरी है...और उसके लिए अपेक्षित होता है अनवरत दुरूह व अडिग विश्वासमय अभ्यास । जिस तरह स्वप्न में प्राप्त असीमित वैभव व उल्लास की पराकाष्ठा स्वप्न के टूटते ही छिन्न-भिन्न हो जाती है उसी तरह इस भौतिक संसार का प्रभुत्व दैहिक अवसान होते ही विलुप्त हो जाता है । मलूक राम नाम रूपी भक्ति की उस अचूक औषधि का उपयोग करने के लिए संसार को चेताता है जिससे न केवल इस जन्म के बल्कि कोटि-कोटि जन्मों के बंधन मुक्त हों । आत्मिक तीर्थ में गोता लगाने का आह्वान करते हुए मलूक प्रसुप्त मानव को जगाने की चेष्टा इस प्रकार करता है–

रे मन सूता क्या करै, उठि भज चरन मुरारि ।
जैसा सपना रैन का, तैसा यह संसार ।।

राम सुमिरि रे मना, जो चाहत कुसलात ।
अटके जग जंजाल में, जंम सिरानों जात ।।

राम नाम औषध करौ, हिरदै राखै याद ।
संकट में लौ जाइए, दूर करै सब व्याध ।।

भौतिकता के असीमित सुखों की चाह की दलदल में व्यक्ति इस कदर डूब जाता है कि उसमें से उभरने की वह सोच भी नहीं सकता । सांसारिक प्रदर्शनी व व्यापार की वस्तुएं, यहां के भावनात्मक संबंधों का विस्तार तथा आसक्ति की वैतरिणी, व्यक्ति को इसी में संलिप्त रहने के लिए प्रेरती रहती है, तब तक वह इन समस्त ऋणों से उऋण नहीं हो सकता जब तक सद्गुरु के रूप में उस परमसत्ता का संदेशवाहक यानि सतगुरु उसे प्राप्त नहीं हो जाता । वह सत्ता सर्वसत्ताओं को अनुप्राणित करने वाली शीर्ष सत्ता है । अतः सांसारिक संबंधों से विरक्ति लेकर मलूक उसी सतगुरु की आसक्ति में डूब जाने के लिए बार-बार मानव को चेताता है ताकि वह इस

जन्म-मृत्यु चक्र तथा माया जाल की भूलभुलैया से उसे सदा-सदा के लिए मुक्त कर दें--

अब मैं सतगुरु पूरा पाया ।
मन तै जनम जनम डहकाया ।।

कई लाख तुम रंडी छांड़ी, केते बेटी बेटा ।
कितने बैठके सिरदा करते, माया जाल लपेटा ।।

कितने के तुम पित्र कहाए, केते पित्र तुम्हारे ।
गया बनारस कर कर थाके, देत देत पिंड हारे ।।

कई लाख तुम लसकर जोड़े, केते घोड़े हाथी ।
तेऊ गए बिलाप छिनक में, कोई रहा न साथी ।।

आवागमन मिटाया सतगुरु, पूजी मन की आसा ।
जीवन मुक्त किया परमेसुर, कहत मलूकदासा ।।

सांसारिक सत्ता क्षणिक व अत्यल्प नश्वर शक्ति लिए होती है, पानी के बुदबुदे की तरह क्षणभंगुर । परमत्व, अमरत्व व स्थायीत्व पाने के लिए; इस जन्म-जन्मान्तरों के बंधन से मुक्ति पाने के लिए उस परम पिता परमात्मा का संसर्ग ही अनिवार्य है जो बिना पंखों के काल व स्थान की दूरियां नाप लेता है, बिना चापू, बिना पानी, नदी की नाव चला सकता है, बिना पावों के पूरे ब्रह्मांड का भ्रमण कर आता है, ऐसा निराकार व संप्रभुता वाला व्यक्तित्व कोई और नहीं वही सतगुरु है जो इस दुख सागर को पार कर स्वर्ग के साम्राज्य की ओर ले जाकर मानव को यौनियों के जंजाल से मुक्ति प्रदान करता है । यह युक्ति सतगुरु के अलावा कौन बता सकता है जो हर सोचे हुए को यथार्थ में बदल देने की सामर्थ्य रखता हो–

चींटी के पंग कुंजर बांधे, जा को गुरु लखावे ।
बिन पंखन उड़ि जाए अकासे, बिन पंखन उड़ि आवै ।।
सोई सिष्य गुरु का प्यारा, सूखे नाव चलावै ।
बिन पायन सब जग फिरि आवै, सो मेरा गुरु भाई ।
कहै मलूक ता की बलिहारी, जिन यह जुगत बताई ।।

इस संसार का समूचा चिंतन एवं उपलब्धियां मलूकदास के लिए खाक के समान हैं । यहां मानव ने भौतिक तृष्णाओं, इच्छाओं से वशीभूत होकर नेकनीयती छोड़ कर बुरे माध्यमों से संसाधन एवं धन-दौलत जुटाई । शून्य से प्रारंभ होकर इह लोक की यात्रा शून्य में ही विलीन हो जाती है । यहां की हर उपलब्धि उस परम सत्ता के सान्निध्य, स्नेह एवं अंतरंगता के अभाव में अर्थहीन है । मलूक इस सारहीन सृष्टि के विस्तार को खाक से अधिक कुछ नहीं मानते–

नाम हमारा खाक है, हम खाकी वंदे ।
खाकहिं ते पैदा किए, अति गाफिल गंदे ।।

कबहुं न करते बंदगी, दुनिया में भूले ।
आसमान को ताकते, घोड़े चढ़ि फूले ।।

जोरू लड़के खुस किए, साहेब सिराया ।
राह नेकी की छोड़ि की बुरा अमल कमाया।।

हरदम तिस को याद कर, जिन वजूद संवारा ।
सबै खाक दर खाक है, कुछ समुझ गंवारा ।।
हाथी घोड़े खाक के, खाक खानखानी ।
कहैं मलूक रहि जायगा, औसाफ निसानी ।।

इस प्रकार संत मलूकदास की समूची वाणी जहां भक्ति, ज्ञान वैराग्य और गहन दार्शनिकता से ओत-प्रोत है वहीं मूल्यहीनता के युग में मानवों में एक नवीन चिंतन धारा का भी सूत्रपात करती है तो मानव होने की सार्थकता जानने हेतु उत्प्रेरित करती है । मानव जीवन पाकर यदि संपूर्ण मेधा का उपयोग नवीन सृष्टि व नए मूल्यों की स्थापना हेतु न कर सके तो ऐसा जीवन इस वसुंधरा पर भार के अतिरिक्त कुछ नहीं है । मलूकदास ने अपना समूचा जीवन इन मौलिक उद्भावनाओं को जीते हुए संसार के प्राणियों के नेतृत्व के लिए अपनी बेबाक वाणी के माध्यम से अनेक ऐसे सार्थक संदेश प्रचारित-प्रसारित किए जिससे विश्व कल्याण एवं आत्म मंथन की ज्योति प्रदीप्त हुई व राष्ट्र एक नई भावधारा की ओर उन्मुख हुआ । 108 वर्ष की दीर्घ आयु प्राप्त कर संत मलूकदास वैसाख बदी चतुर्दशी विक्रम संवत् 1739 को पंचतत्व में विलीन हो गए । इनकी मृत्यु के संदर्भ में 'परिचयी' के अनुसार ये दोहे प्रचलित हैं–

संवत सत्रह सौ उनतालीस, बुधवार तिथि आय।
चतुर्दशी वैशाख सदी, सिंह लगन सिताय ।।

समाधान सबको कियो नाना रूप दिखाय ।
गुरु मलूक निज धाम को, चले निसान बजाय ।।

अपने अद्भूत जीवन-दर्शन के आधार पर संत मलूकदास की समग्र वाणी संत परंपरा में अपनी अनूठी पहचान रखती है जो मानवता के निर्माण एवं मूल्यों की स्थापना में सतत प्राण तत्व बन दिग-दिगंत को आने वाले समय में भी दिशा निर्दिष्ट करती रहेंगी । ■

759 HA/08—5A

गुरु नानक देव जी-मानवता की एकता के पैगम्बर

–डॉ. मनमोहन सिंह*

श्री गुरु नानक साहब जी के अवतार धारण बारे जो कुछ भाई गुरदास जी ने एक छन्द में कहा है, वह उस समय की बदलती हुई दिशा का एक आशा से भरपूर वर्णन है। भाई साहब कहते हैं :–

''सत्गुरू नानक प्रगटिया मिटी धुन्ध जग चानॅण होइया:''

अन्धेरी रात को एक छोटी सी मोमबती दूर-दूर तक रोशन कर सकती है। अंग्रेजी के महान विद्वान विलियम शेक्सपीयर ने अपने एक नाटक में उस समय का दृश्य पेश किया है जब उसके नाटक की नायिका अपने पति के दोस्त का मुकदमा जीतकर घर वापस आती है, दिन छिपा हुआ है। घर में जगती मोमबती का दृश्य पेश करते हुए कहता है :–

एक छोटी सी मोमबती कहाँ तक अपनी किरणें बिखेरती है। उसी प्रकार भलाई का एक छोटा सा कार्य भी संसार में चमकता है।

भावार्थ यह है कि अगर अन्धेरी रात हो तब एक छोटा सा टिमटिमाता हुआ दीपक भी आपको रास्ता दिखा सकता है। परन्तु अगर चारों तरफ धुन्ध चढ़ी हुई हो तब एक नहीं हजारों दीपक या मोमबत्तियाँ किसी भी व्यक्ति को रास्ता नहीं दिखा सकतीं।

श्री गुरु नानक देव जी ने न केवल समय की धुन्ध दूर की बल्कि उसे रोशनी दी। कितना भी शक्तिशाली हवाई जहाज हो, परन्तु अगर आसमान में धुन्ध चढ़ी हुई हो तो उसको उड़ाना मुश्किल हो जाता है। इसी प्रकार कोई कितना बड़ा पैगम्बर, विद्वान या वैज्ञानिक हो उसके लिए धुन्ध को चीरना मुश्किल होता है। ऐसी धुन्ध को चीरकर गुरु नानक देव जी ने जो उजियाला किया उसकी महिमा आज संसार के समस्त वैज्ञानिक गा रहे हैं।

वर्षों पहले अमरीका का प्रथम व्यक्ति चाँद पर उतरा। उस समय के अमरीकन प्रधान मिस्टर निक्सन ने अमरीका की इस प्रगति पर बिगुल बजाने की जगह संसार के समस्त इन्सानों को अपने अन्दर झांककर देखने के लिए प्रेरित किया।

राष्ट्रपति निक्सन ने कहा ''बीसवीं शताब्दी का मनुष्य आसमान में तारों को चीरता हुआ चाँद तक पहुँच गया है। यह एक बहुत ही बड़ी सफलता है। परन्तु असल प्राप्ति वह मानी जाएगी जिस दिन इस पृथ्वी का इन्सान आकाश व पाताल को खोजने की बजाय अपने मन तक पहुँचेगा।''

मन तक पहुँचने का रास्ता हमें गुरु नानक साहब बख्शतें हैं। हमारा मन कितना शक्तिशाली है, इसका अन्दाजा भी नहीं लगाया जा सकता। इसलिए गुरु साहब जी ने मन को ज्योति सरूप बताया है, वे फरमाते हैं :–

''मन तू जोत सरूप है
अपणा मूल पछाण;''

इस प्रकार जिस व्यक्ति ने अपना मन जीत लिया उसने समझो सारा जगत जीत लिया। हजूर ने फरमाया है:–

'मन जीते जग जीत'

सन् 1469 के समय में मानवता सात आकाश व सातों समुद्रों से आगे नहीं पहुँची थी। गुरु नानक साहब से पहले हो चुके महापुरुषों व पैगम्बरों ने एक बात कही थी कि ईश्वर ने सात आकाश और सात पाताल बनाए हैं, जिसका सबूत सतरंगी इन्द्रधनुष है। परन्तु गुरु नानक साहब ने ये सारी सीमाएं तोड़कर एक तरफ रख दी। उन्होंने यह नहीं कहा कि जो पैगम्बर सात आकाश व सात पाताल की बात प्रस्तुत करते हैं वे गलत हैं। बल्कि फरमाया है कि वे अपनी जगह पर ठीक हैं। परन्तु परमात्मा ने उनको यहीं तक देख सकने की शक्ति प्रदान की थी।

जब गुरु नानक साहब जी पुरी के मन्दिर जाते हैं, तब वहाँ के पण्डित ने गुरु साहब को इसलिए मन्दिर में दाखिल

*889, फेज-10, मोहाली (चण्डीगढ़)-160062

759 HA/08—5B

नहीं होने दिया, क्योंकि उनके साथ भाई मरदाना था, जिसे वे शूद्र समझते थे। गुरु नानक साहब ने आगे बढ़कर मन्दिर के अन्दर थाली में दीपक रखी आरती उतारते पण्डित की बाजू पकड़ ली, और उसे बाहर लाकर कहने लगे "तू इस छोटी सी दुनिया के मन्दिर की छत के नीचे बैठा आरती उतार रहा है जरा बाहर आकर देख ब्रहमाण्ड की आरती ।" वहाँ गुरु साहब जी ने 'भवखण्डना तेरी आरती' का शब्द उचारा है। इस शब्द द्वारा 'कहत करोड़ी अन्त ना अन्त' वाली बात हुई।

आज का लगातार प्रगति करता हुआ विज्ञान गुरु नानक साहब की सोच शक्ति व अथाह दृष्टि की पूरी तरह मान्यता देता है। कुछ साल पहले हुए जर्मनी के शहर बौन में समूह धर्मों के विद्वानों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन हुआ। वहाँ पर अलग-अलग धर्मों के विषय में पर्चे पढ़े गए। कान्फ्रैंस में डॉक्टर विलियम हैमबर्ग ने सिक्ख धर्म के विषय में जो पर्चा पढ़ा उसमें लिखा गया कि सिक्ख धर्म दुनिया का एक ही केवल ऐसा धर्म है जो विज्ञान आधारित धर्म है। आज का वैज्ञानिक आसमान की तरफ देखता है, उससे बाकी के वैज्ञानिक पूछते हैं कि ऊपर क्या है? वह उत्तर में कहता है खाली जगह। पूछते-पूछते जब उससे पूछा जाता है कि खाली जगह से ऊपर क्या है? तब उसके पास कोई उत्तर नहीं होता। इन सवालों का उत्तर गुरु नानक साहब जी से मिलता है जो कहते हैं 'करोड़ी अन्त ना अन्त' यह वह शब्द है जो लाखों आकाशों व लाखों पातालों की बात करता है। जो कुछ गुरु नानक साहब ने देखा व सुना वह संसार के सामने रख दिया।

गुरु नानक साहब जी पृथ्वी पर पहले पैगम्बर हुए थे, जिन्होंने किसी धर्म, ईमान या दीन का खण्डन नहीं किया। वे प्रत्येक धर्म का सत्कार करते थे। गुरु नानक साहब से शुरू हुआ वह सत्कार गुरु गोविन्द सिंह जी तक उसी प्रकार चलता रहा। दसों गुरुओं की बाणी में कहीं भी कोई विरोधाभास नहीं है। ऐसा भी नहीं कि एक गुरु साहब ने कुछ कहा हो, और दूसरे ने कुछ, सभी ने एक ही उपदेश दिया है।

गुरु नानक साहब जी ने ईश्वर के नाम का शब्द गा-कर ईश्वर को प्राप्त किया। गुरु नानक साहब का भारत के लोगों के ऊपर बहुत बड़ा अहसान है। हिन्दुस्तान शब्द का सबसे पहले प्रयोग बाबर बाणी में गुरु नानक साहब ने किया, जब उन्होंने हिन्दुस्तान डराया का जिक्र किया। इसी समय हिन्दुस्तान के पण्डितों ने जमीन को चार वर्णो में विभाजित करके यहां छुआ-छूत की नींव को पक्का कर दिया। इन्सान को इन्सान से दूर किया व आपस में एक दूसरे का दुश्मन बनाया। परन्तु गुरु नानक साहब ने चारों वर्णो को एक ही उपदेश दिया, जहां पर जात-पात व ऊंच-नीच की परछाई तक नहीं पहुंची।

गुरु नानक साहब ने हिन्दुस्तान के पण्डितों व बुद्धिजीवियों को दोषी नहीं ठहराया, बल्कि उन्हें जगाने का प्रयत्न किया। वे इन पण्डितों को जो तुर्की पठानी अमल करते थे तथा ऊपर तुर्की टोपी व कमीज के नीचे जनेऊ पहनते थे, उन्हें बहुत ही प्यार से समझाया कि पाखण्ड छोड़ो, अपने अन्दर मर्दानगी पैदा करो, 'छोडीले पाखण्ड' कह-कहकर पण्डित हो तो पण्डित बनकर दिखाओ, अच्छे पण्डित बनो। इसी प्रकार मुल्ला व काजियों को भी प्यार से समझाया कि कुरान शरीफ़ को समझने का प्रयत्न करो। वे नमाज पढ़ने जाते हैं, परन्तु मस्जिद में खड़े रहते हैं। जब मुल्ला व काजी इसका कारण पूछते हैं तो वे मुस्करा कर कहते हैं कि मैं नमाज किसके साथ पढ़ता, आपको तो अपने घर जन्मे घोड़ी के बछेरे की फिक्र थी, कि कहीं वह कुएं में न गिर जाए । जब तक नमाज पढ़ते-पढ़ते आप अल्लाह ताला के रंग में नही रंग जाते तब तक नमाज अधूरी है।

गुरु नानक साहब ने संसार की चारों दिशाओं का वर्णन किया, जिन्हें चार उदासियाँ कहा जाता है। उत्तर, पूर्व, पश्चिम व दक्षिण। मतलब यह कि वे प्रत्येक दिशा में गए, हर प्रकार के लोगों व धर्मों के मानने वालों के साथ विचार-विमर्श किया । उनका मनोरथ समस्त मानवता को एक प्लेटफार्म के ऊपर लाना था। इतना बड़ा कार्य खण्डन-मण्डन के साथ नहीं किया जा सकता, प्यार व मौहब्बत के साथ हो सकता है। अगर किसी को गलत रास्ते पर मुड़ा हुआ देखा तो उसे सीधे रास्ते पर लाने का प्रयत्न किया, तब प्यार की भाषा से उसे हरेक बात का महत्व समझाया।

गुरु नानक साहब का मक्का मदीना जाना कोई करामात नहीं था, वह एक जरूरी मिशन था। जो लोग एक इमारत को ईश्वर का घर समझते हैं, उन्हें समझाना था कि ईश्वर का घर एक जगह सीमित नहीं है, वह चारों ओर है। उन्होंने बहुत ही आदर के साथ कहा 'भाई मेरी टाँगे उधर कर दो, जिधर ईश्वर का घर नहीं है' इस छोटे मगर उचित ढंग से सदियों से मन में बसे आए एक अन्धेरे घर में रोशनी चमकाना था। जिसके अन्दर गुरु नानक के उपदेश की किरणें चली गयी, वह अपने आप चाँदनी का रूप हो गया।

गुरु नानक देव जी के मिशन के अनेक पात्र हमारे सामने आते हैं। कहीं कोई सज्जन ठग है, कहीं कोई वली

कंधारी है और कहीं कोई कौडा राक्षस है। ये सब समाज की बुराइयाँ हैं, अज्ञानता के मठ हैं। इन्हें गुरु नानक साहब जी ने तलवार के जोर से नहीं, बल्कि प्यार की ताकत से जीता है। प्यार व सच्चाई बहुत चमत्कार दिखा सकती है।

उत्तरी भारत में उनका संबध जहाँ वली कंधारी से पड़ता है, जिससे वे पानी की घूँट मांगते हैं, वहीं दक्षिण भारत में कर्नाटक के इलाके में नानक झीरा में वे मुसलमान पीरों को पानी के चश्में प्रदान करते है। गुरु नानक साहब का मिशन जितना बड़ा था हम उतने बड़े प्रयत्नों के साथ उसे संसार में फैला नहीं सके। आज की दुनिया के लिए अगर कोई सबसे बढ़िया प्रोग्राम है तो वह गुरु नानक साहब का उपदेश है। गुरु नानक साहब का सिद्ध गोष्ठी करना एक सबक है उन्होंने सिद्धों को ठीक ही कहा था कि आप निजि मुक्ति व निजि ज्ञान के लिए संसार के लोगों को भटकते हुए छोड़कर पहाड़ों में चढ़ चले हो। आपको अपनी निजि मुक्ति क्या तारेगी अगर आपका समाज अन्धेरे में ही हाथ मारता रहेगा।

गुरु नानक साहब ने पीरों व पैगम्बरों की दुनिया में अपने लिए जो स्थान बनाया, उसका सही वर्णन तब मिलता है जब वे मुसलमान के एक डेरे में जाते हैं जहाँ अनगिनत साधु इकट्ठे हुए थे। उन साधुओं को पता लगता है कि नानक नाम का कोई महापुरुष हमारे डेरे में आया है। वे गुरु नानक साहब जी का इम्तिहान लेने के लिए दूध का भरा हुआ बर्तन भेजते हैं। गुरु नानक के साथी भाई मरदाना के मुँह में पानी भर आता है, वह दूध पीना चाहता है।

गुरु साहब मरदाने को समझाते हैं कि भाई यह दूध पीने के लिए नहीं भेजा, हमारा इम्तिहान लेने के लिए भेजा गया है। यहाँ के डेरे का साधु इस दूध के भरे बर्तन द्वारा हमें सन्देश भेजते हैं कि यह डेरा तो पहले से ही दूध के बर्तन की तरह ऊपर तक भरा हुआ है, आप यहाँ कैसे समाओगे। तब गुरु साहब ने एक छोटा सा फूल तोड़कर बर्तन के ऊपर रख दिया और भरा-भराया बर्तन वापस भेज दिया। मुल्तान के उस डेरे के सारे पीर तुरन्त समझ गए कि इस महापुरुष का संसार के महापुरुषों में वही दर्जा है, जो दूध के भरे बर्तन के ऊपर रखे हुए फूल का है।

हम बहुत ही गर्व के साथ गुरु नानक साहब जी को मानवता का पैगम्बर कह सकते हैं, क्योंकि उन्होंने हमें सब की भलाई का उपदेश दिया। ■

लेखक कृपया ध्यान दें

'राजभाषा भारती' में प्रकाशनार्थ ज्ञान-विज्ञान की सभी विधाओं पर स्तरीय लेख आमंत्रित किए जाते हैं । लेख पर उचित मानदेय देने की भी व्यवस्था है । लेख ए-4 आकार के कागज पर टाइप किया हुआ होना चाहिए जो सामान्यतः तीन हजार शब्दों से अधिक का न हो । कृपया नोट करें कि हस्तलिखित लेख स्वीकार नहीं किए जाएंगे । लेख के साथ इस आशय का घोषणा पत्र भी होना चाहिए कि यह लेख/रचना लेखक की मौलिक कृति है और यह इससे पहले प्रकाशित नहीं हुई है ।

यदि किसी कारणवश किसी लेख को पत्रिका में शामिल करना संभव न हुआ तो उसे लौटाया नहीं जाएगा । कृपया इस संबंध में पत्राचार न करें । कृपया लेख निम्नलिखित पते पर भेजें :-

संपादक/उप संपादक
राजभाषा भारती,
राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय)
कमरा सं. ए-4, द्वितीय तल, लोकनायक भवन,
खान मार्किट, नई दिल्ली-110003

राजभाषा हिंदी और विश्व हिंदी सम्मेलन

–राजीव कुमार*

हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जोकि भारत में सबसे ज्यादा बोली जाती है जबकि विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली चाइनीज भाषा के बाद हिंदी का दूसरा स्थान है। यही कारण है कि हमारी संविधान सभा ने 14 सितम्बर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया। तब से प्रत्येक वर्ष 14 सितम्बर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। सितम्बर माह के दौरान भारत में स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों, स्वायत्त निकायों, सार्वजनिक उपक्रमों/कंपनियों, सार्वजनिक बैंकों आदि में हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। इस बात में कोई शक नहीं है कि आज हिंदी भाषा का ग्राफ बढ़ रहा है तथा यह विश्व में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है जिससे स्वयं ही इसकी महत्ता का पता चलता है। इस संबंध में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित करने का फैसला लिया गया जिससे वास्तव में हिंदी की स्थिति बेहतर हुई है। हिंदी प्रेमियों ने इसे विश्व स्तर पर पहचान दिलवाने के लिए विश्व हिंदी सम्मेलन की शुरुआत की।

प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में पहला विश्व हिंदी सम्मेलन 10-14 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित किया गया। यों तो कहा जाता है कि उत्तर भारत के लोग अधिक मात्रा में हिंदी बोलते हैं परन्तु पहला विश्व हिंदी सम्मलेन हिंदीतरभाषी श्री अनंत गोपाल शेवड़े की प्रेरणा और प्रयास से ही संभव हो सका था। इस सम्मेलन का उदघाटन तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने किया था। मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि थे। इस सम्मेलन की अध्यक्षता राम गुलाम जी ने ही की थी। इस सम्मेलन में 30 देशों के 122 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस सम्मेलन में शिक्षा संबंधी सात सत्र आयोजित किए गए थे जिनमें से दो पूर्ण और पाँच समानांतर सत्र थे। जिनके विषय थे - हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति तथा शाश्वत मूल्यों की खोज। इसके साथ ही पाँच समानांतर सत्र थे - जनसंचार साधनों की भूमिका, विश्व मानव का मूल्यांकन, संकट और भाषा तथा लेखन के संबंध में युवा पीढ़ी की मानसिकता, प्रशासन विधि और विधायी कार्यों की भाषा, ज्ञान-विज्ञान का माध्यम तथा भाषा शिक्षण और सहायक सामग्री। इस प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में निम्नलिखित प्रस्तावों को पारित किया गया था -

1. संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा की मान्यता दी जाए, 2. वर्धा में विश्व हिंदी विद्यापीठ स्थापित हो, तथा 3. सम्मेलन के स्थायित्व के लिए जरूरी योजना बनाई जाए।

इस सम्मेलन में आचार्य विनोबा भावे द्वारा भेजा गया संदेश भी पढ़ा गया। इस सम्मेलन के समापन समारोह के अवसर पर प्रख्यात हिंदी कवयित्रि सुश्री महादेवी वर्मा ने मुख्य वक्ता की हैसियत से विचार व्यक्त किए। 14 जनवरी, 1975 को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के कार्यालय प्रांगण में विश्व हिंदी विद्यापीठ की नींव रखी गई थी जोकि आज महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है। इसमें विश्व के कोने-कोने से आकर छात्र हिंदी का उच्च अध्ययन कर रहे हैं।

द्वितीय विश्व हिंदी सम्मेलन

दूसरा विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 1976 में 28-30 अगस्त के बीच मारीशस की राजधानी पोर्ट लुई में हुआ। इस सम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डा. कर्ण सिंह ने की थी। इस सम्मेलन का बोधवाक्य था- वसुधैव कुटुम्बकम। इस सम्मेलन में 17 देशों के 181 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस दौरान

*ई-105/ए, लाजपत नगर, साहिबाबाद, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.)-201005

विभिन्न विद्वानों ने समारोह को संबोधित किया उनमें डॉ. निकोल बलबीर (फ्रांस), डॉ. लोचार लुत्से (जर्मनी), डॉ. फादर कामिल बुल्के, श्री अमृतलाल नागर और मॉरीशस के युवा एवं क्रीड़ा मंत्री श्री दयानंद बंसतराय भी शामिल थे। इस सम्मेलन में चार मुख्य विषय रखे गए थे जिन पर संवाद किया गया -1. हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति, शैली और स्वरूप, 2. जनसंचार के साधन और हिंदी, 3. हिंदी के प्रचार में स्वैच्छिक संस्थाओं की भूमिका और 4. विश्व में हिंदी के पठन-पाठन की समस्या। इस सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता भी डा॰ कर्ण सिंह, केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने ही की थी जिस पर मारीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर शिवसागर रामगुलाम ने आभार व्यक्त किया था।

तृतीय विश्व हिंदी सम्मेलन

तीसरा विश्व हिंदी सम्मेलन भारत की राजधानी नई दिल्ली में 28-30 अक्तूबर, 1983 के बीच आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी ने की थी। सम्मेलन में 6566 प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिसमें 260 प्रतिनिधि विदेशों से पधारे थे। इस सम्मेलन में जिन विषयों पर चर्चा की गई वे निम्न प्रकार थे–

1. अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के प्रसार की संभावनाएं और प्रयास
2. भारत के सांस्कृतिक संबंध और हिंदी
3. मानव मूल्यों की स्थापना में हिंदी की भूमिका
4. आधुनिक भारत में हिंदी पत्रकारिता की प्रगति

इस सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता तत्कालीन लोक सभा अध्यक्ष डा॰ बलराम जाखड़ ने की थी।

चतुर्थ विश्व हिंदी सम्मेलन

चौथा विश्व हिंदी सम्मेलन 2 से 4 दिसम्बर 1993 में मॉरीशस की राजधानी पोर्ट लुई में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की आयोजन समिति का अध्यक्ष मॉरीशस के तत्कालीन संस्कृति मंत्री श्री मुक्तेश्वर चुन्नी को नियुक्त किया गया था। भारत के प्रतिनिधि मंडल में श्री मधुकर राव चौधरी थे। इस सम्मेलन का बोधवाक्य – वसुधैव कुटुम्बकम था। इस सम्मेलन का उद्घाटन मॉरीशस के तत्कालीन प्रधानमंत्री सर अनिरुद्ध जगन्नाथ ने किया था। इस सम्मेलन में भी हिंदी की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति एवं उसको विश्व स्तर पर सभी के लिए अध्ययन हेतु सुगम बनाए जाने पर जोर दिया गया। इस सम्मेलन के समापन समारोह की अध्यक्षता मॉरीशस के तत्कालीन उपराष्ट्रपति श्री रवीन्द्र धनबरन ने की थी।

पंचम विश्व हिंदी सम्मेलन

पांचवें विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन त्रिनिदाद एवं टोबेगो की राजधानी पोर्ट ऑफ स्पेन में 4 से 8 अप्रैल, 1996 तक किया गया। त्रिनिदाद एवं टोबेगो स्थित इस सम्मेलन के प्रमुख संयोजक हिंदी निधि नामक संस्था के तत्कालीन अध्यक्ष श्री चंका सीताराम थे। इस सम्मेलन का उद्घाटन त्रिनिदाद एवं टोबेगो के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री वासुदेव पांडे ने किया। इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री माता प्रसाद ने किया जिसमें उनके साथ 16 अन्य सदस्यों ने भी इस सम्मेलन में भाग लिया था। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय था – अप्रवासी भारतीय और हिंदी। इसमें हिंदी से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की गई। इस सम्मेलन के वक्ताओं में हिंदी निधि के अध्यक्ष श्री चंका सीताराम, ब्रिटेन में भारत के तत्कालीन उच्चायुक्त डा॰ लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, त्रिनिदाद के शिक्षा मंत्री श्री आदेश नन्नान व भारत की ओर से श्री माता प्रसाद भी शामिल थे।

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन

छठा विश्व हिंदी सम्मेलन वर्ष 1999 में 14 से 18 सितम्बर के बीच लंदन (इंग्लैंड) में आयोजित किया गया। इसका आयोजन यू॰के॰ हिंदी समिति, गीताजंलि बहुभाषी समुदाय, बर्मिंघम और भारतीय भाषा संगम द्वारा किया गया। इस सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व तत्कालीन विदेश राज्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने किया। प्रतिनिधि मण्डल के उपनेता के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार डा॰ विद्यानिवास मिश्र ने अभूतपूर्व योगदान किया। सम्मेलन का उद्घाटन भारत की विदेश राज्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने किया। इस बार सम्मेलन का केंद्रीय विषय था – हिंदी और भावी पीढ़ी। यह सम्मेलन दो दृष्टियों से महत्वपूर्ण था क्योंकि एक तो हिंदी साहित्य के भक्ति काल (स्वर्ण काल) के प्रतिनिधि कवि संत कबीर दास जी की छठी जन्मशताब्दी थी और दूसरे यह सम्मेलन हिंदी को संविधान में अपनाए जाने के 50वें वर्ष में आयोजित हो रहा था। इस सम्मेलन में 21 देशों के 700 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया और 46 हिंदी सेवा विद्वानों को इस सम्मेलन में सम्मानित भी किया गया जिसमें 20 विदेशी विद्वान भी थे।

सातवां विश्व हिंदी सम्मेलन

7वां विश्व हिंदी सम्मेलन भारत से दूर सूरीनाम की राजधानी पामारिबो में 5 से 9 जून, 2003 के बीच आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के प्रमुख आयोजक थे - श्री जानकी प्रसाद सिंह। सम्मेलन का उद्घाटन सूरीनाम के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री रोनाल्डो रोनाल्ड वेनेत्शियान ने किया। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय **विश्व हिंदी- नई शताब्दियों की चुनौतियां** । भारत के प्रतिनिधि के रूप में तत्कालीन विदेश राज्यमंत्री श्री दिग्विजय सिंह जी ने सम्मेलन में भाग लिया। सम्मेलन में भारत से 200 प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। इस सम्मेलन में यह संकल्प भी लिया गया कि लगभग 132 देशों में 80 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाने वाली हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषा बनाने की पहल की जाए। इसमें हिंदी से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लिए प्रयास शुरू होने चाहिए। इसमें हिंदी पत्रकारिता, हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी, हिंदी अनुवाद की समस्याएं, विदेशों में हिंदी शिक्षण संस्थाएं, जैसे विभिन्न मुद्दों पर संवाद हुआ ।

आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन

8वां विश्व हिंदी सम्मेलन न्यूयार्क (अमेरिका) में 13-15 जुलाई, 2007 के मध्य आयोजित किया गया । आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन संयुक्त राष्ट्र के परिसर में आयोजित हुआ। भारत के विदेश राज्यमंत्री श्री आनन्द शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि **हिंदी बड़ी भाषा है। हिंदी अब संयुक्त राष्ट्र तक पहुंच चुकी है तो यह और आगे भी जाएगी** । समापन समारोह में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के विशेष प्रतिनिधि और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष डॉ. कर्णसिंह ने विद्वतापूर्ण संबोधन दिया। यह पहली बार है कि **संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव 'बान की मून'** जो भारत में भी काम कर चुके हैं, ने हिंदी में भाषण दिया। उनका सहज संबोधन प्रत्येक भारतवासी को ही नहीं अपितु विश्व में सभी हिंदी प्रेमियों को बहुत अच्छा लगा । उन्होंने हिंदी में ही कहा, **'नमस्ते, क्या हाल-चाल है।''** हिंदी प्रेमियों को तो ये शब्द पागल कर देने के लिए काफी थे। इस सम्मेलन का केंद्रीय विषय - **विश्व मंच पर हिंदी** था। इसमें भारत से पहुंचे अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया और अपने विचार प्रकट कर हिंदी को बढ़ावा देने तथा इसे संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता प्रदान करने पर जोर दिया ।

विश्व हिंदी सम्मेलनों ने हिंदी प्रेमियों एवं विद्वानों को अवश्य ही एक सुदढ़ एवं विचारशील मंच प्रदान किया है। हिंदी के विकास की गति को देखकर हमें आवश्यक रूप से कहना चाहिए कि **'चक दे हिंदी'** अर्थात् हिंदी का पूर्ण उत्थान एवं विकास हो, उसका सम्मान करने में हमें पूरी आत्मीयता से कार्य करना चाहिए और इस जोश को बनाए रखना चाहिए।

अब हिंदी के बारे में भी ऐसा ही कहा जाना चाहिए - **'चक दे हिंदी'**। इससे हम भारतीय होने का गर्व महसूस कर इसकी और उन्नति में भागीदार हो सकेंगे। इसमें भी कोई शक नहीं है कि अपनी भाषा की उन्नति के बिना कोई समाज सही उन्नति नहीं कर सकता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी 'निजी भाषा उन्नति भयी, सब उन्नति को मूल'। हिंदी संस्कृत व अन्य महत्वपूर्ण साहित्यिक भाषाओं के विद्वानों **प्रो॰ फादर कामिल बुल्के** ने बहुत ही सही कहा है, **'मैंने विश्व की अनेक भाषाओं का अध्ययन किया है परंतु जैसी संप्रेषण क्षमता हिंदी भाषा में है वैसी अन्य किसी भी भाषा में नहीं है।** अंग्रेजी का ग्राफ पहले के मुकाबले बहुत बढ़ा है परन्तु हिंदी ने भी उत्तरोत्तर प्रगति की है। हिंदी आज प्रत्येक देशी और विदेशी चैनल की पहली पसंद बनी हुई है। आज हमें हिंदी के प्रति अपनी मानसिकता को बदलने की आवश्यकता है। हिंदी विश्व की बहुत ही समृद्ध भाषा है तथा इसके अस्तित्व को कोई खतरा नजर नहीं आता है ।

अंत में, हम यह कह सकते हैं कि उपर्युक्त सम्मेलनों से हिंदी की स्थिति में अवश्य सुधार होगा। परन्तु इसके लिए हमें अपनी इच्छा शक्ति को सुदृढ़ करना होगा और इसे पूरी ईमानदारी से क्रियान्वित करना होगा तभी इसे हम संयुक्त राष्ट्र संघ की आधारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलवाने में कामयाबी हासिल कर सकते हैं। इसके लिए हमें आर्थिक रूप से भी तैयार रहना चाहिए, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र संघ की मान्यता प्राप्त भाषा बन जाने पर इस पर होने वाले खर्च को भी हमें ही वहन करना होगा। वैसे आज हिंदी की दयनीय स्थिति को सुधारने में मीडिया, टी.वी., सिनेमा और अन्य पत्र-पत्रिकाओं ने विशेष भूमिका अदा की है। आने वाला समय हिंदी का होगा। हिंदी पत्रकारिता से लेकर विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों की पहली पसंद बन चुकी है। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है कि हिंदी विश्व भाषा अवश्य बनेगी। हमें अपनी राजभाषा का पूर्ण सम्मान करना चाहिए । ■

आधुनिक मीडिया का हिंदी-भाषा पर शुभ-अशुभ प्रभाव-दबाव

–प्रो० (डॉ०) सुन्दरलाल कथूरिया*

भाषाओं के स्वरूप-विकास की कहानी बड़ी विचित्र है। यदि हम इस पर दृष्टिपात करें तो यह स्पष्ट होते देर नहीं लगती कि लिखित-मानक भाषा का स्थान कालान्तर में बोलियों और जनभाषाओं ने लिया है। एक कालखण्ड में जहाँ एक साहित्यिक-मानक भाषा होती है, वहाँ उसी के समानान्तर आम बोलचाल की भाषा भी होती है, जो उस लिखित साहित्यिक भाषा से बहुत कुछ भिन्न होती है। जहाँ साहित्यिक भाषा का प्रयोग साहित्यिक कृतियों में साहित्यिकारों-लेखकों और प्रबुद्ध संशिक्षितों द्वारा किया जाता है, वहाँ बोलचाल की भाषा का प्रयोग आम जनता के द्वारा किया जाता है। इस बोलचाल की भाषा में भी थोड़ी-थोड़ी दूरियों में यत्किंचित् परिवर्तन लक्षित किया जा सकता है, क्योंकि भाषा तो बहता नीर है और यह उक्ति बहुप्रचलित है – 'चार कोस पर पानी बदले, दस कोस पर बानी।' लिखित साहित्यिक भाषा जब रूढ़ हो जाती है तो उसका स्थान एक नयी विकसित भाषा ले लेती है जिसमें आम बोलचाल की शब्दावली का प्राधान्य होता है। वैदिक संस्कृत > (लौकिक) संस्कृत > पालि (पाली) > प्राकृत > अपभ्रंश और अपभ्रंश के विभिन्न रूपों में विविध भारतीय भाषाओं का विकास इसी की साक्ष्य प्रस्तुत करता है। इसी आधार पर यह कहा जाता है कि संस्कृत प्रायः सभी या अधिकतर भारतीय भाषाओं की जननी है और भारत की अधिसंख्य भाषाओं में संस्कृत शब्दावली या उसके अपभ्रंश रूपों को कुछ सीमा तक देखा जा सकता है। विभिन्न भारतीय भाषाओं की समान स्रोतीय शब्दावली के अनुसंधान में यह आधार, मुख्य रूप से सहायक रहा है। शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हिंदी भी इसका अपवाद नहीं है। आज हम जिस खड़ी बोली को मानक हिंदी के रूप में स्वीकार करते हैं, उसमें ही नहीं, उस हिंदी की विभिन्न बोलियों और क्षेत्रीय भाषाओं में भी संस्कृत की तत्सम या तद्भव शब्दावली का प्राधान्य लक्षित किया जा सकता है।

भाषाओं के विकास के संबंध में ध्यातव्य यह भी है कि उनके विकास में लिखित भाषा से अधिक महत्त्व और योगदान मौखिक भाषा का होता है। अज्ञान, मुखसुख, भौगोलिक परिवेश तथा ध्वनि-परिवर्तन के अन्य अनेक कारणों से भाषा के स्वरूप का विकास हो जाता है। वैयाकरण जिसे स्खलन, विकृति या दोष मानते हैं, भाषावैज्ञानिक उसे भाषा के विकास का नाम देते हैं। यदि हम शब्दों की व्युत्पत्तियों पर ध्यान दें तो यह बात नितान्त स्पष्ट हो जाएगी। यहाँ हम कुछ सामान्य से उदाहरण देख लेते हैं – कर्म > कम्म > काम। सर्प > सप्प>साँप। संतुष्टि > संतुट्ठी > संतोष। हस्त > हत्थ > हाथ। धर्म > धम्म > धरम। परमः > पम्मो > परम। इस प्रकार के असंख्य उदाहरण देखे-खोजे जा सकते हैं। इस प्रकार के भाषिक परिवर्तनों/भाषिक विकास के ही कारण संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश और अपभ्रंश से विभिन्न भारतीय भाषाओं का विकास हुआ है। संस्कृत-व्याकरण की दृष्टि से 'कर्म' को 'कम्म' या 'काम' कहना या लिखना अशुद्ध है, पर भाषावैज्ञानिक इसे अशुद्ध न मानकर भाषा का स्वाभाविक विकास मानेंगे। यही स्थिति अन्य शब्दों की भी है। भाषागत विकास का एक अन्य रूप यह भी है कि शब्द का रूप तो वही रहता है, पर अर्थ में आकाश-पाताल का अन्तर आ जाता है। वैदिक संस्कृत और (लौकिक) संस्कृत में ऐसे शब्दों को खोज लेना कठिन नहीं है। इस दृष्टि से यहाँ हम केवल एक उदाहरण दे रहे हैं। संस्कृत में 'वृषभ' का अर्थ है बैल, किंतु वैदिक संस्कृत में यह शब्द अनेकत्र सर्वशक्तिमान ईश्वर के लिए प्रयुक्त हुआ है।

हिंदी की ग्राहिका शक्ति

शौरसेन अपभ्रंश से उद्भूत हिंदी-भाषा के स्वरूप का निरन्तर विकास हुआ है। हिंदी की ग्राहिका शक्ति बहुत बड़ी है। उसने देशी-विदेशी भाषाओं के बहुत से शब्दों को अपने

*बी-3/79, जनकपुरी, नई दिल्ली-110058

स्वरूप में समाहित किया है और आज वे शब्द हिंदी-भाषा में इतने रच-बस गए हैं कि उन्हें हिंदी से अलग करके देखा नहीं जा सकता। चाय, रेल, बस, कॉलेज, स्कूल आदि शब्दों के साथ उर्दू भाषा के सैकड़ों-हजारों शब्द इस भाषा ने अपने स्वरूप में आत्मसात् किए हैं और उनसे इसके स्वरूप का बहुत विकास हुआ है। इधर, आधुनिक मीडिया के अपरिमित विस्तार से हिंदी-भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ बहुत बढ़ गई हैं। इस संक्षिप्त आलेख में हम इन संभावनाओं के साथ इसके शुभ-अशुभ प्रभाव-दबाव पर भी एक सीमा तक ही विचार करेंगे।

आधुनिक मीडिया और हिंदी

आधुनिक मीडिया में सबसे पुराना है 'प्रिंट मीडिया' और इसके बाद रेडियो, फिल्म्स, और टी.वी.। इधर 'कंप्यूटर क्रांति' के फलस्वरूप इंटरनेट के द्वारा 'ई-मेल', 'वेब-साइट', 'एस.एम.एस.' आदि की धूम मची हुई है। इसके पूर्व दूरभाष और 'तार' भी त्वरित संदेश-प्रेषण का साधन रहा है, किंतु अब इसमें 'मोबाइल' (चल दूरभाष) भी जुड़ गया है। निःसंदेह आधुनिक माध्यमों के इन रूपों ने हिंदी-भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ बढ़ाई हैं और अभी इन संभावनाओं के आकाश को छू लेने की आशा है। हिंदी-भाषा के स्वरूप की इन विकासात्मक संभावनाओं के दृष्टिगत एक संभावना तो यह भी हो सकती कि हिंदी से उसी प्रकार कोई अन्य भाषा विकसित हो जाए, जैसे कि संस्कृत से पालि, प्राकृत आदि भाषाएँ विकसित हुई हैं। इस भाषा का नाम क्या होगा, यह तो अभी सुनिश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, पर यह भाषा गांधी जी द्वारा सुझाए गए नाम 'हिंदुस्तानी' के निकट तो होगी ही। हो सकता है, इस भाषा का नाम हिंदुस्तानी ही हो जाए या फिर 'इंडिका भाषा' या ऐसा ही कुछ और।

नई पीढ़ी की जा रही है भ्रमित

भाषा सीखने में अनुकरण का बहुत बड़ा हाथ होता है-विशेषकर बच्चों, किशोरों और युवकों पर। प्रौढ़ों और वृद्धों की भाषा तो जैसी बनी होती है, बहुत कुछ वैसी ही रहती है, पर बालकों का मन गीली मिट्टी के समान होता है। वे जिस भाषा को सुनते हैं उसी का अनुकरण करते हैं और वैसी ही भाषा बोलने लगते हैं। श्रव्य-दृश्य माध्यमों का प्रभाव बालकों, किशोरों, युवक-युवतियों, अनपढ़ लोगों पर तो पड़ता ही है, पढ़े-लिखों पर भी पड़ता है। प्रारंभ में रेडियो और फिल्म्स का जो प्रभाव जन-मानस पर पड़ा, वह किसी से छिपा नहीं है। हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी हिंदी फिल्म्स और रेड़ियो का बहुत बड़ा योगदान है। हिंदी-फिल्मों को देखने-समझने के लिए बहुत से हिंदीतर भाषियों ने हिंदी सीखी, किंतु इन फिल्मों के माध्यम से जिस हिंदी का प्रचार-प्रसार हुआ, वह 'बम्बइया' हिंदी थी। मानक हिंदी के स्थान पर यह एक ऐसी हिंदी थी, जो सामान्य बोलचाल की भाषा के निकट थी और जिसमें उर्दू, अंग्रेजी तथा क्षेत्रीय भाषाओं एवं बोलियों के शब्दों का मिश्रण था। वाक्य-विन्यास का ढाँचा और क्रियापद हिंदी के, किंतु बीच की अधिकांश शब्दावली उर्दू-अंग्रेजी की।

आकाशवाणी व दूरदर्शन भी संक्रमित

आकाशवाणी से प्रचारित-प्रसारित होने वाले अधिकतर कार्यक्रमों में भी 'सरल हिंदी' पर बल था और वहाँ 'सरल हिंदी' का आशय यही था कि संस्कृतनिष्ठ शब्दावली से बचते हुए ऐसी हिंदी का प्रयोग किया जाए कि जो आम बोलचाल की भाषा के निकट हो तथा जिसमें समझ में आ जाने वाले उर्दू शब्दों की बहुतायत हो और प्रचलित अंग्रेजी शब्दों का भी प्रयोग हो। प्रारंभ में, इस प्रवृत्ति पर बहुत बल नहीं था, किंतु धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति बल पकड़ने लगी। बाद में दूरदर्शन (टी.वी.) के धारावाहिकों और अनेक चैनलों पर आने वाले समाचारों पर उर्दू-अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का धड़ल्ले से और बहुतायत से प्रयोग होने लगा है, जिसका प्रभाव जनमानस, विशेषकर युवा मानसिकता पर पड़ रहा है। दूरदर्शन पर विभिन्न विदेशी चैनलों के आ जाने से इस प्रभाव में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है। शेखर सुमन, लालू यादव तथा अन्य अनेक क्षेत्रीय नेताओं-अभिनेताओं का प्रभाव दर्शकों पर पड़ रहा है और वे उस भाषा के अनुकरण में गौरव का अनुभव कर रहे हैं, फलतः आधुनिक प्रचार माध्यम हिंदी-भाषा के स्वरूप की जो विकासात्मक संभावनाएँ बना रहा है वह 'पंचमेल खिचड़ी' भाषा की है। कबीर की भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी भाषा' का नाम दिया गया था, क्योंकि वे जहाँ जाते थे, वहाँ की भाषा का कुछ प्रभाव ग्रहण कर लेते थे और उनकी कविता में उन प्रदेशों की भाषाओं के कुछ शब्द आ जाते थे। आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने देश-विदेश को निकट ला दिया है। दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर हम नेताओं-अभिनेताओं की जिस खिचड़ी भाषा को सुनते हैं, उससे निश्चय ही प्रभावित होते हैं। यदि हम स्कूल-कॉलेज के छात्र-छात्राओं के वार्तालाप को ध्यान से सुने तो पाएंगे कि एक वाक्य भी विशुद्ध हिंदी में नहीं है-प्रायः सभी वाक्यों में अंग्रेजी के शब्दों की भरमार है या फिर कुछ शब्द उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं के हैं और यह प्रभाव दूरदर्शन के चैनलों, फिल्मों का तो है ही, समाचारों का भी है।

759 HA/08—6A

खिचड़ी भाषा

आज दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों के समाचारों में जिस खिचड़ी भाषा का प्रयोग हो रहा है, वह 'आज तक' में 2002-2004 को प्रसारित समाचारों के कुछ वाक्यांशों (कैप्शंस) को देखने से स्पष्ट हो जाएगा । आइए देखें- छोटी-छोटी अपीलों को नजरअंदाज, खिलाफ एफआईआर दर्ज, कैबिनेट की बैठक, मुसलमानों के वोट बैंक को एन्कैश करने की कोशिश, उन सिद्धांतों को डाइल्यूट करना, जिस तरह से अपीजमेंट पॉलिटिक्स बढ़ रही है, सेना की वर्दी-डिजाइनरों की राय, आर्मी की यूनिफार्म को, अमेरिकी विमान की इमरजेंसी लैंडिंग, आज तक की हैडलाइंस के प्रायोजक हैं, फील गुड, रोड शो, विजन छोटा हो गया है, विजन की कमी है, अब लेते हैं एक छोटा सा ब्रेक, फिलहाल वक्त है एक ब्रेक का, बोर्ड के पास बहुत आप्शन्स नहीं हैं, आदि । कहने की आवश्यकता नहीं कि दूरदर्शन (टी.वी.) के विभिन्न चैनल आज हिंदी के नाम पर जिस भाषा का प्रयोग कर रहे है, उसमें अंग्रेजी के शब्दों की भरमार है । स्पष्टत: आधुनिक मीडिया में हिंदी भाषा के स्वरूप की जो विकासात्मक संभावनाएँ बन रही हैं, वे एक ऐसी पंचमेल खिचड़ी भाषा की हैं जिसमें अंग्रेजी भाषा के शब्दों की बहुतायत है तथा जिसमें न तो विराम-चिह्नों के प्रयोग की ओर समुचित ध्यान दिया जा रहा है, न लिंग भेद के समुचित प्रयोग की ओर ही । निश्चय ही यह प्रवृत्ति चिन्त्य और अशुभ है । भाषावैज्ञानिक भले ही इसे विकास का नाम दें, हम इस हिंदी-भाषा के साथ खिलवाड़ की संज्ञा देंगे ।

समाचार पत्रों पर भी दुष्प्रभाव

हमने ऊपर जिस स्थिति का वर्णन किया है, वह केवल 'इलैक्ट्रोनिक मीडिया की ही नहीं है, 'प्रिंट मीडिया' की भी है । 'प्रिंट मीडिया' में पुस्तकें-पत्र पत्रिकाएँ, सरकारी एवं अन्य राजनीतिक दलों के प्रचार, विज्ञापन आदि तो आते ही हैं, दैनिक समाचार पत्र भी आते हैं । 'प्रिंट मीडिया' में दैनिक समाचार पत्रों की भाषा जन-मानस को सर्वाधिक प्रभावित करती है, उनसे हिंदी-भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ सर्वाधिक बनती हैं । दैनिक समाचार पत्रों की पाठक-संख्या तो लाखों में होती ही है, वे देश के हर कोने से छपते भी है । दैनिक समाचार पत्रों के उपरान्त बड़े साप्ताहिकों, पाक्षिकों, मासिकों आदि की गणना होती है । आज स्थिति यह है कि हिंदी के अनेक दैनिक/सप्ताहिक पत्रों के नाम या तो खिचड़ी भाषा में है या फिर पूरी तरह अंग्रेजी में, यथा-नवभारत टाइम्स (दैनिक), नई दिल्ली टाइम्स (दैनिक), रायल टाइम्स (दैनिक), बिजनौर टाइम्स (दैनिक), सांध्य टाइम्स (दैनिक), शाह टाइम्स (दैनिक), पब्लिक एशिया, मुजफ्फर नगर बुलेटिन (दैनिक), इंडिया टुडे (साप्ताहिक), आउटलुक (हिंदी साप्ताहिक) यू.एस.एम. पत्रिका (मासिक)। इस प्रकार के नामों से हिंदी भाषा के विकासात्मक स्वरूप की जो संभावनाएँ बनती हैं वे सुस्पष्ट हैं अर्थात् अंग्रेजी मिश्रित या खिचड़ी हिंदी । स्पष्टत: मीडिया के प्रभाव से हिंदी का यह स्वरूप आधुनिक युवा पीढ़ी को प्रभावित और भ्रमित कर रहा है और इसके चलते वे मानक हिंदी से परिचित नहीं हो रहे हैं । मीडिया के प्रभाव से उनकी भाषा भ्रष्ट और दूषित हो रही है ।

भाषागत निकृष्टता के कुछ उदाहरण

यदि हम पिछले कुछ दिनों के समाचार-पत्रों पर दृष्टिपात करें तो यह पाएंगे कि हिंदी के समाचार पत्रों पर अंग्रेजी-उर्दू का दबाव बढ़ा है और उनमें खिचड़ी भाषा का बहुतायत से प्रयोग होने लगा है जबकि पहले यह स्थिति नहीं थी । आइए दैनिक समाचार पत्रों से भी कुछ उदाहरण देख लें-

मजिस्ट्रेट निलंबित, सीबीआई जाँच होगी । (दैनिक जागरण, 30 जनवरी 2005 पृष्ठ-1)

क्रीमीलेयर की सीमा ढाई गुना बढ़ाने की सिफारिश । (दैनिक जागरण, 30 जनवरी 2005 पृष्ठ-1)

बर्ड फ्लू रोकने के लिए रेड अलर्ट (दैनिक जागरण, 30 जनवरी 2005 पृष्ठ-1)

पेंशनर्स को रिटर्न पर मिलेगी छूट (दैनिक भास्कर, 1 जनवरी 2005 पृष्ठ-1)

टेस्ट के बाद वन-डे का रोमांच आज से (दैनिक भास्कर, 1 जनवरी 2005 पृष्ठ-1)

फ्लैश से बोल्ड कर देंगे कैमरा मोबाइल (वही, पृष्ठ-2, मेट्रो भास्कर)

आज आप किसी भी दैनिक या साप्ताहिक हिंदी समाचार पत्र को उठा लीजिए और उनके शीर्षको को देखिए तो पाएंगे कि उनमें अंग्रेजी शब्दों की भरमार है । शब्द अंग्रेजी का, लिपि नागरी, वाक्य हिंदी का, किंतु आधे या तीन चौथाई शब्द अंग्रेजी के । हम यह मानते हैं कि इलैक्ट्रानिक मीडिया के आ जाने से कुछ शब्दों, निर्देशों (कमांड्स) के अंग्रेजी प्रयोगों से नहीं बचा जा सकता, किंतु जिन हिंदी शब्दों से पाठक विधिवत् परिचित हैं और जिनके प्रयोग में कोई कठिनाई नहीं, अनावश्यक रूप से उनके स्थान पर भी

759 HA/08—6B

अंग्रेजी शब्दों को ही बढ़ावा दिया जा रहा है और इन प्रयोगों से गर्व का अनुभव किया जा रहा है । यह स्थिति केवल शीर्षकों की ही नहीं, मुख्य सामग्री और विवरणों की भी है । कांस्टेबल, एसएचओ, प्रोग्राम, ट्रांसपोर्टर, यूज़ीसी, सुप्रीम कोर्ट, हाई कोर्ट, चार्जशीट, मिनी ट्रक, मॉडल स्टेट, प्रॉबलम, मिनी बजट, इंटैलीजेंट, फील गुड, फील बैड, रोड शो, लॉकअप, रैम्प, रिपोर्टिंग, वन-डे, ट्रेफिक, फोरम, एयरपोर्ट, वी.आई.पी., रिकॉर्ड, ड्रा, स्काई, मल्टीमीडिया, ट्राई, म्यूजिक, लाइव, सीवर लाइन, प्रेशर हार्न, प्रॉपर्टी, 'शेल्टर टु एवरीवन' बुकिंग, स्टोरेज सोल्यूशन, शॉपिंग माल, सीनियर मॉल, फाइनेंशियल इंजीनियर, डिसिजन मेकर, फोबिया, कैंपस, आउटसोर्सिंग क्वालीफाई, पीएम, आईसीसी, आर्किटेक्ट, स्कीम, डिटर्जेंट, सेविंग अकाउंट, ऑनलाइन, हाई फाई, समर क्लेक्शन, कन्टेंपरेरी, यूनिट एरिया, ब्रांड लांचिंग, सेलेब्रिटी फाइल, मार्डन, इंडिया शाइनिंग, होटल बिल जैसे सैकड़ों-हजारों शब्द प्रतिदिन आम जनता और पाठकों को परोसे जा रहे हैं । आधुनिक मीडिया में इन प्रयोगों के चलते हिंदी भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ सुस्पष्ट ही हैं । कालान्तर में इन शब्दों को हिंदी अपने भीतर उसी तरह रचा-बसा लेगी, जैसे कि उसने चाय, बस, रेल, स्कूल, कॉलेज, आदि को रचा-बसा लिया है । केवल दैनिक पत्रों में ही, सुप्रसिद्ध साप्ताहिकों में भी न्यूनाधिक इस प्रवृत्ति को देखा जा सकता है । 'बेसीकली' (इंडिया टूडे, 30 जुलाई, 2003, पृष्ठ 66), 'सीरियल का बच्चा' (आउटलुक साप्ताहिक, 1 जून, 2003, पृष्ठ 61), 'पिछड़ा वर्ग एक बड़ा वोट बैंक' (देश की माया, नवम्बर 2003, पृष्ठ 16) आदि इसके साक्षी हैं ।

हिंदी पर उर्दू व अंग्रेजी का आक्रमण

जहाँ एक ओर हिंदी-वाक्यों में मीडिया अंग्रेजी शब्दों को झोंक रहा है, वहीं दूसरी ओर उर्दू शब्दों की भी भरमार होती जा रही है । इस दृष्टि से विज्ञापन एवं दृश्य प्रचार निदेशालय, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा माननीय पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी के 13 सितम्बर, 2003 को दिए गए भाषण के हिंदी रूपान्तर 'मीडिया : सामाजिक दबाव का असरदार माध्यम' को देख लेना ही पर्याप्त होगा । उस पाँच पृष्ठीय प्रचारात्मक सामग्री में आए उर्दू-अंग्रेजी के शब्दों-मुहावरों में से कुछ हैं - पेशेवराना अंदाज, ब्रेहतरीन, इर्द-गिर्द, मिडिया, शानदार, हैरत, डिजाइन, मुकाबले, काफी बेहतर, तोहफा, ज्यादातर, नजरअंदाज, मुश्किलों, गारंटी, जिम्मेदारियाँ, आनन-फानन, फैसला, सुर्खियाँ, रिपोर्टिंग, खामियों, परवाह, खासतौर, मुद्दों, हिस्सा, करीब, अहम, अलावा, जरूरत, ज्यादा, विरासत, मायने, मतलब, सदी, शुरूआत, मिशन, दरअसल, अखबार आदि । इसी सूची से स्पष्ट है कि सरकारी मीडिया और प्रचार-तंत्र हिंदी के नाम पर उर्दू-शब्दों को झोंकने में लगा है और ये शब्द हिंदी भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाओं को व्यक्त करते हैं अर्थात् निकट भविष्य में मीडिया के प्रभाव से हिंदी भाषा का यही रूप बनने वाला है । दूसरे शब्दों में गांधीजी का 'हिंदुस्तानी' का स्वप्न साकार होने में अब बहुत देर नहीं है । इसे गांधीजी की दूरदर्शिता भी कहा जा सकता है । महात्मा गांधी ने बहुत पहले जिस हिंदुस्तानी भाषा की वकालत की थी उसे आधुनिक मीडिया अब व्यावहारिकता का आवरण पहना रहा है । किन्तु एक दृष्टि से देखा जाए तो यह हिंदी-भाषा के साथ खिलवाड़ ही है, और मुझे तो इसके पीछे किसी घिनौनी दुरभिसंधि की गंध आती है ।

आधुनिक मीडिया में हिंदी भाषा के स्वरूप की विकासात्मक संभावनाओं के चलते अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) का भेद लगभग समाप्त-सा हो गया है । 'हंस' और 'हँस' जैसे शब्दों के भेद अब अधिकतर विद्यार्थियों की समझ से परे हैं । कंप्यूटर-क्रांति के आ जाने से अनुनासिक चिह्न का प्रयोग प्रायः भुला दिया गया है तथा अनुस्वार और अनुनासिक दोनों का काम अधिकांशतः अनुस्वार से चलाया जा रहा है । 'हूँ', जिम्मेदारियाँ, 'यहाँ', 'वहाँ', 'सुर्खियाँ', 'प्रवृत्तियाँ', 'आँख', 'अँगीठी', 'आँचल', जैसे शब्दों को अब 'हूं', 'जिम्मेदारियां', 'यहां', 'वहां', 'सुर्खियां', 'प्रवृत्तियां', 'अंगीठी', 'अंगूठा', 'आंचल' के रूप में लिखा जा रहा है । हम कह सकते हैं कि हिंदी भाषा की 'नागरी लिपि' की जिस वैज्ञानिकता की दुहाई देकर बार-बार यह कहा जाता है कि इसमें जैसा बोला जाता है, वैसा लिखा जाता है, इसका वह गुण आधुनिक मीडिया के प्रभाव से बहुत सुरक्षित नहीं रह गया है, पर भाषावैज्ञानिक दृष्टि से तो यह हिंदी भाषा का विकास ही है । टी.वी. के विभिन्न चैनलों के नीचे जो शीर्षक (कैप्शंस) दिए जाते हैं, कई बार उनमें 'में' के स्थान पर 'मे' और 'हैं' के स्थान पर 'हे' लिखा रहता है, फलतः उन्हें देखने वाले किशोर, बालक और आधुनिक युवक इन शब्दों को अशुद्ध रूप में लिखने लगते हैं और अध्यापकों द्वारा समझाने पर भी समझने को तैयार नहीं होते, क्योंकि उन्होंने उसे उस रूप में टी.वी. के कैप्शंस में लिखा देखा है । टी.वी. जैसे दृश्य-श्रव्य माध्यम पर वर्तनी

की और भी बहुत-सी भूलें देखने को मिल जाती हैं, जिनका सद्य: प्रभाव सुकुमार मति बालकों पर पड़ता है तथा हिंदी भाषा के उस स्वरूप की विकासात्मक संभावनाएँ बनती हैं। 'श' (तालव्य) और 'ष' (मूर्धन्य) के स्थान पर जहाँ किसी एक 'श' के बने रहने की संभावना है, वहाँ 'ऋ' के स्थान पर 'रि' की संभावना भी बन रही है। 'लृ' जैसे वर्णों की उपयोगिता पर तो पहले से ही प्रश्नचिह्न लगा हुआ है-हिंदी के संदर्भ में। अब 'ऋतु', 'ऋषि' जैसे शब्दों को 'रितु', 'रिशि' के रूप में लिखे जाने की संभावनाएँ बढ़ रही हैं। आधुनिक मीडिया के प्रभाव से वर्तनी संबंधी ऐसी भूलों के कालान्तर में विकास के रूप में स्वीकार्य हो जाने की पूरी संभावना है। हिंदी भाषा में हलन्त-प्रयोग तो पहले ही समाप्त हो चुका है। 'विद्वान', 'भगवान', 'श्रीमान', बुद्धिमान', 'आत्मसात्' जैसे शब्दों का विकास, विद्वान्, भगवान्, बुद्धि मान्, आत्मसात के रूप में हो गया है और अब बड़े-बड़े विद्वान् इन शब्दों को बिना हलन्त प्रयोग के लिख रहे हैं।

हिंदी व्याकरण भी क्षतिग्रस्त

आधुनिक मीडिया के विभिन्न रूपों के बढ़ते प्रभाव से विराम-चिह्नों की ओर ध्यान देने की प्रवृत्ति कम हुई है। डाकघर में तार भेजते समय प्राय: प्रेषक विराम-चिह्नों का प्रयोग नहीं करते, क्योंकि उनका प्रयोग करने पर कुछ और धन देना पड़ेगा। भाषा और संस्कृति का अविच्छिन्न संबंध है, अत: आज की उपभोक्तावादी संस्कृति से हिंदी-भाषा का प्रभावित होना सहज-स्वाभाविक है। आधुनिक मीडिया तो यों भी उपभोक्तावादी-पूँजीवादी संस्कृति की देन है, अत: उसमें मितव्ययिता की दृष्टि से कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक कह देने की कला की विशेष महत्व है। इसका प्रभाव विराम-चिह्नों के प्रयोग पर तो पड़ा ही है, हिंदी भाषा की विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति पर भी पड़ा है। विराम-चिह्नों के प्रयोग में जहाँ एक ओर अनवधानता बढ़ी है, वहाँ कुछ विराम-चिह्नों के प्रयोग में बदलाव भी लक्षित किया जा सकता है। पूर्ण-विराम के स्थान पर नवभारत टाइम्स जैसे दैनिक पत्र फुल स्टाप (.) का प्रयोग कर रहे हैं, जिससे प्रभावित होकर अनेक लेखक भी इसी का प्रयोग करने लगे हैं तथा अनेक पुस्तकों के प्रकाशन में भी इसे ही स्थान दिया गया है। अल्प-विराम, अर्द्धविराम, विसर्ग आदि का प्रयोग बहुत कम हो रहा है और लगता है कि निकट भविष्य में इनका प्रयोग न के बराबर रह जाएगा। आज भी बहुत से स्थानों पर 'दु:ख' को 'दुख' के रूप में तथा 'अन्त:करण' को 'अन्तकरण' के रूप में लिखा देखा जा सकता है।

व्यावसायिकता के इस समय में आधुनिक प्रचार माध्यम विज्ञापनों से भरे पड़े हैं, बल्कि उन्हीं के बल पर चल रहे हैं। विज्ञापन की भाषा और साहित्य की भाषा में आकाश-पाताल का अन्तर होता है। विज्ञापन की भाषा में शब्द कम, प्रभाव अधिक, न विराम-चिह्नों की परवाह, न क्रियापदों की आवश्यकता, भाषा संश्लिष्ट और सामाजिक। समाचार पत्रों में छपने वाले विज्ञापनों से कहीं अधिक प्रभाव टी.वी. पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों का पड़ता हैं। आधुनिक मीडिया में विज्ञापनों की भाषा ने हिंदी भाषा के जिस विकासात्मक रूप की संभावनाएँ बढ़ाई हैं, वह संश्लिष्ट और सामाजिक भाषा की है। 'स्वीकार करें' या 'स्वीकार कीजिए' के स्थान पर 'स्वीकारें' जैसे शब्द-प्रयोग तो पहले से ही प्रचलन में हैं, अब इस प्रकार के प्रयोगों के बढ़ जाने की संभावनाएँ और बढ़ी हैं। संस्कृत संश्लिष्ट भाषा थी, किंतु उसी की वरिष्ठ पुत्री हिंदी का विकास विश्लिष्ट भाषा के रूप में हुआ था, पर अब आधुनिक मीडिया के दबाव और प्रभाव से हिंदी भाषा के संश्लेषण और सामाजिकता की ओर प्रत्यवर्तन की संभावनाएँ बनती दिखाई दे रही हैं। न्यूनतम विराम चिह्नों के साथ क्रियापदों के लोप की संभावनाओं से भी इंकार नहीं किया जा सकता। इस प्रकार, निष्कर्ष रूप में संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि आधुनिक मीडिया के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार एवं बढ़ते वर्चस्व के कारण मानक हिंदी के स्वरूप में आमूल-चूल परिवर्तन और विकास की अनन्त संभावनाएँ हैं।

अन्त में इस ओर संकेत कर देना अप्रांसगिक न होगा कि किसी भी भाषा के स्वरूप का विकास दो-चार वर्षों में नहीं होता यह एक सतत प्रवाहमान धीमी प्रक्रिया है। ऊपर हमने आधुनिक प्रचार क्षेत्र में हिंदी भाषा के रूप की जिन विकासात्मक संभावनाओं की ओर संकेत किया है, अभी उन्हें मात्र संभावनाओं के रूप में ही ग्रहण करना चाहिए तथा इन संभावनाओं के पूर्णत: चरितार्थ होने और हिंदी भाषा के स्वरूप में बड़ी सीमा तक परिवर्तित होने की अभी प्रतीक्षा करनी चाहिए। साथ ही, भाषावैज्ञानिकों को भी भाषा के विकास और विकृति पर पुनर्विचार की आवश्यकता अनुभव हो सकती है-आधुनिक मीडिया के दबाव-प्रभाव से हिंदी भाषा पर पड़ने वाले इन व्यापक शुभ-अशुभ प्रभावों के चलते। ■

संस्कृति

सामाजीकरण के वाहक-हमारे त्यौहार

-डॉ० पवन कुमार खरे*

संघर्षमय संसार की कटुस्मृतियों को क्षणभर में भुला देने के लिए, मानव इधर-उधर मृग मरीचिका में भटकता है। सुख और शांति की पिपाशा को शांत करने के लिए मानव ने नए नए आयोजन किए। जीवन के कांटे भरे मार्गों को सुगम और सरल बनाने के लिए हमने नए-नए अविष्कार किए। जीवन के उत्पीड़न, शोक, चिंता और दुःख को भुलाकर मानव मुस्कुरा सके और एक साथ बैठकर हंस सके। इन्हीं सब प्रवृत्तियों ने मिलकर हमारे त्यौहारों को जन्म दिया है।

वर्तमान संदर्भ में जब हम पर्व एवं त्यौहारों को मनाने की दृष्टि से देखते हैं तो हम देखते हैं कि पर्व एवं त्यौहार दोनों हमारे राष्ट्रीय गौरव और राष्ट्र की स्मिता को अक्षुण्ण रखने में मील के पत्थर का काम करते हैं। हमारी सामाजिक एकता, मानवीय प्रेम, सौहार्द और सामाजिक मूल्यों की रखवाली इन्हीं पर्व एवं त्यौहारों के द्वारा सम्भव हो पाती है।

पर्व और त्यौहार जन-जन के हृदय में मानवीय मूल्यों की प्राणप्रतिष्ठा करते हैं। कोई भी त्यौहार हम मनाते हैं, उस त्यौहार के पीछे जीवन को सुखमय बनाने वाले मूल्य छिपे रहते हैं। ये मूल्य त्यौहारों को मनाते समय आनंद देते हुए हमारे अंदर स्वतः ही प्रवेश करते चले जाते हैं। विजयादशमी, होली, दीपावली, रक्षाबन्धन, ईद, क्रिसमस कोई भी त्यौहार हम मनाएं, हर त्यौहार हमारे अन्तर्मन में अच्छाईयों को लाता है। दीपावली का त्यौहार घर की साफ-सफाई करते हुए दीपक जलाने का त्यौहार है। इस दिन भगवान राम, रावण का वध करके अयोध्या लोटकर आए थे। विजयदशमी के दिन भगवान राम ने रावण का वध किया था। बुराई का प्रतीक माना जाने वाला रावण भगवान राम के हाथों मारा गया। कहने का मतलब यह है कि कोई भी त्यौहार हम अच्छे गुणों को अपनाने हेतु और बुरी आदतों को त्याग देने हेतु ही मनाते हैं।

ईद के त्यौहार के अवसर पर जब सभी लोग अपने आपसी मतभेद भुलाकर गले मिलते हैं और सामूहिक समाज के द्वारा अल्लाह के सामने झुककर इबादत करते हैं तो इससे समाज में भाईचारा और प्रेम की भावना जाग्रत होती है। इसी प्रकार ईसाई धर्म के अनुयायी ईशु मसीह का जन्म उत्सव, गुड फ्राइडे का त्यौहार विभिन्न पकवान बनाकर, प्रार्थना करके, नए-नए वस्त्र धारण करके मनाते हैं।

दक्षिण भारत में पोंगल पर्व, होली पर्व, पंजाब में लोहड़ी पर्व, फसलों के संबंध में खुशियाँ मानने हेतु सभी मिलकर मनाते हैं। इस प्रकार त्यौहारों द्वारा समाजीकरण का सशस्त्रीकरण होता है। सभी लोग अपने दुखों को छोड़कर अपनी शक्ति को साफ सफाई, पकवान बनाने, नए-नए वस्त्र खरीदने में लगाते हैं। इससे नीरसता का अंत होता है मानव, दुखों से उबरता है ईष्ट की आराधना में लिप्त होता है जिससे उसे अपने परिवार के प्रति, समाज के प्रति एवं राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों का भी बोध होता है।

त्यौहार और पर्व हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन के अभिन्न अंग होते हैं। इनके बिना हम सामाजिक एकता और राष्ट्र की एकता को स्थिर नहीं रख सकते। हर त्यौहार को मानवीय प्रेम और सद्भाव का जनक माना जाता है। चाहे ईद का पर्व हो चाहे दीवाली का हो, चाहे क्रिसमस का हो, उसके अंदर छिपे प्रेम और सद्भाव के मूल्य हमारी राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देते है। गणतंत्र दिवस का पर्व हमारे संविधान का पर्व है। इस दिन हमारा संविधान लागू हो गया था। संविधान में स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा हमारी एकता को मज़बूत करने के लिए रखे विचार हैं, जो हमारे महान संविधान निर्माताओं डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू ने बहुत दूरदर्शितापूर्ण सोच विचार कर रखे थे। स्वतंत्रता दिवस का पर्व हमारी आजादी का पर्व है। इस दिन हमने अपनी गुलामियत चाहे वह

*79, विद्यानगर, उज्जैन, सांवर रोड, (म.प्र.)

शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक कोई भी हो, उखाड़कर फैंक दिया था ।

पर्व एवं त्यौहारों के द्वारा सामूहिक क्रियाशीलता जो हमें दिखाई देती है उस सामूहिक क्रियाशीलता के द्वारा हमारे सामूहिक हितों की पूर्ति होती है । महान स्वतंत्रता सेनानी लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश उत्सव मनाने का त्यौहार शुरू किया था । इस त्यौहार को मनाने का उद्देश्य अपनी धार्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर को बनाए रखना । उन्होंने इस पर्व के द्वारा सारे राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किया था । "स्वतंत्रता हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, इसे हम लेकर रहेंगे ।" यह नारा उन्होंने गणेश उत्सव मनाते समय ही दिया था ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि त्यौहारों के माध्यम से हम सामूहिक क्रियाशीलता और सामूहिक प्रयासों के द्वारा सामूहिक और राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करते हैं ।

त्यौहार हमारे पूर्वजों के महान संस्कारों को परिवारों में सदैव करते रहने का कार्य करते हैं । त्यौहारों के द्वारा हम उनके रीति रिवाजों, रस्मों, प्रथाओं और परम्पराओं को अपनाकर परिवार की मर्यादा की रक्षा करते हैं । त्यौहारों के द्वारा समाज का हर परिवार अपनी मर्यादाओं में रहता हुआ लोकाचारों और लोकरीतियों को अपनाता है । पूर्वजों की परम्पराएँ, समझदारी, सूझबूझ, जीवन मूल्य त्यौहारों के माध्यम से ही बरकरार रहते हैं । अच्छाईयों का प्रतीक माने जाने वाले पूर्वजों द्वारा सत्यमार्ग पर चलने वाली दी गई सीखों को हम त्यौहारों के अवसर पर याद करते हैं । त्यौहार पूर्वजों के महान गुणों को पीढ़ी दर पीढी स्थानान्तरित करने का काम करते है ।

ईश्वर के प्रति प्रबल आस्था और भक्ति का भाव जाग्रत करने वाले हमारे त्यौहार समाज में समानता और सामाजीकरण का भाव पैदा करते हैं । हर धर्म के त्यौहारों का मूल उद्देश्य ईश्वर की आराधना और भक्ति से होता है । भक्ति हमें सभी प्राणियों से प्रेम करना सिखाती है । भक्ति की बहती धारा में हमारे अन्तर्मन की सभी बुराईयाँ नष्ट हो जाती हैं । हृदय पवित्र हो जाता है । आत्मा निर्विकार हो जाती है । सभी प्राणियों के प्रति अहिंसा, दया, प्रेम करूणा का भाव भक्ति से ही पैदा होता है । सर्वधर्म समभाव का भाव भक्ति से जाग्रत होता है । सर्वधर्म समभाव के द्वारा ही मानवीय प्रेम की गंगा हर व्यक्ति के अन्त:करण में प्रवाहित होने लगती है । जब हम हर त्यौहारों के अंदर छिपे लोक कल्याणकारी मूल्यों पर गम्भीर चिंतन मनन करते हैं जो हमें पता चलता है कि ये सभी त्यौहार मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु ही बनाए गए हैं । पारिवारिक संस्कारों के पुनर्जागरण हेतु त्यौहारों का मनाया जाना लाजमी है । संयुक्त परिवारों का आज जो हमें विघटन दिखलाई दे रहा है उसके पीछे हमें अपने त्यौहारों में छिपे मानवीय मूल्यों को नजरअंदाज कर देना ही समझ में आता है । संयुक्त परिवारों के टूटते जाने से जो एकल परिवार बन रहे हैं उसमें पूर्वजों के महान संस्कारों का लोप दिखाई दे रहा है जो कि हमारे सामाजिक विघटन को ही बढ़ावा दे रहा है ।

त्यौहार हमें बड़े बुजुर्गों और माता-पिता के प्रति सम्मान और आदर करना सिखलाते हैं । हमारे धर्म में यह बात हर जगह लिखी मिलती है कि हमें माता-पिता का सम्मान करना चाहिए । त्यौहारों के माध्यम से बुजुर्गों का सम्मान करना हम सीखते हैं । श्राध्य पक्ष से पितृमोक्ष अमावस्या तक हम पूर्वजों की आत्माओं के प्रति जो श्रृद्धा-भक्ति भाव रखते हैं उसमें बुजुर्गों के प्रति आदर का भाव स्वत: ही हमारे अन्तर्गत में पैदा होने लगता है । ऐसा माना जाता है कि इस दौरान श्राध्य पक्ष में पूर्वजों की आत्माएँ अपने घरों में आशीष देने हेतु आती हैं । श्राध्य पक्ष और पितर विसर्जन के त्यौहारों को मनाने का मूल उद्देश्य पूर्वजों के विचारों और उनके किए गए महान कार्यों को अपने जीवन में अपनाकर जीवन को सफल बनाना ही माना गया है ।

त्यौहारों के द्वारा सामाजिक कुरीतियों का भी दमन होता है । त्यौहारों में समाज के सभी वर्ग के लोग शामिल होते हैं । सामूहिक प्रार्थनाओं और नमाजों के द्वारा किसी भी प्रकार का भेद भाव नहीं रहता । देवालय में होने वाली प्रार्थनाओं में ईश्वर की नजरों में सभी समान होते हैं । इस कारण सामाजिक कुरीतियाँ सामूहिक पूजा पाठ एवं सामूहिक भजनों के द्वारा स्वत: ही भागने लगती हैं ।

त्यौहार हमारे राष्ट्रीय हितों के साथ-साथ नैतिक और धार्मिक भावनाओं के प्रचार-प्रसार के द्वारा विश्वग्राही मानवीय मूल्यों को जन-जन के हृदय में प्रतिष्ठित करते हैं जिससे विश्वकल्याण की भावना को पोषण मिलता है । अत: हम यह मानते हैं कि सभी धर्मों के त्यौहारों से मानवीय मूल्यों की स्थापना सामाजिक एकता का विकास, नैतिक एवं धार्मिक भावनाओं का प्रचार, सामाजिक कुरूतियों का दमन, समाज में प्रेम, सद्भावना, सामूहिक क्रियाशीलता एवं सामूहिक हितों की पूर्ति, समाज में समानता एवं समाजीकरण बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना का विकास, पारिवारिक संस्कारों का विकास, सामाजिक मर्यादाओं की रक्षा, ईश्वर के प्रति प्रबल आस्था भक्ति भाव एवं विश्व कल्याण और राष्ट्रीय हितों की पूर्ति होती है । ■

उदारीकरण

उदारीकरण और भारत

–सुश्री वन्दना वधवा*

भूमिका

उदारीकरण उद्योगों के नए युग का आरम्भ है । उदारीकरण का अर्थ है अर्थव्यवस्था पर लगे अंकुशों को समाप्त करना, इंस्पेक्टर राज की समाप्ति, सरकारी नियंत्रण में ढील, सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को सीमित करके निजी क्षेत्र का विस्तार करना तथा विदेशी निवेश को आमंत्रित करना । उदारीकरण ने बैंकिंग व्यवसाय तथा प्रशासन का चिन्तन तथा प्राथमिकताएं ही बदल दी हैं । आज उत्पादकता, कार्यक्षमता तथा लाभप्रदता सर्वोपरि हो गई है ।

1981 के बाद विश्व में आर्थिक सुधारों का जो दौर आरम्भ हुआ उसे LPG के नाम से जाना जाता है :-

(i) L अर्थात् लिबरलाइजेशन (उदारीकरण)

(ii) P अर्थात् प्राइवेटाइजेशन (निजीकरण)

(iii) G अर्थात् ग्लोबलाइजेशन (वैश्वीकरण)

कारण

भारत में उदारीकरण के फैलाव के प्रमुख कारण हैं— विदेशी ऋण में बेहताशा वृद्धि, विदेशी मुद्रा भण्डार में लगातार गिरावट, सरकारी खर्च में वृद्धि, विदेशी पूंजी का पलायन, सार्वजनिक क्षेत्र का बढ़ता घाटा, औद्योगिक उत्पादन में कमी तथा कृषि उत्पादन में ठहराव । सोवियत संघ के विघटन के बाद पूंजीवादी अर्थव्यवस्थाओं का एकीकरण, खाड़ी युद्ध तथा बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में ठहराव भी उदारीकरण के पनपने के प्रमुख कारण हैं । भारतीय अर्थव्यवस्था को संकट से बचाने के लिए 1991 में मिश्रित अर्थव्यवस्था की अवधारणा के स्थान पर उदारीकरण को अनेक विरोधों और आशंकाओं को दर-किनार करते हुए अपनाया गया । उदारीकरण के परिणामस्वरूप अर्थव्यवस्था को बाजारोन्मुख तथा प्रतिस्पर्धात्मक बनाने की कवायद शुरू हुई । भुगतान संतुलन को दूर करने के लिए मुद्रा का अवमूल्यन किया गया, लाइसेंस प्रक्रिया को समाप्त किया गया, उद्योगों के विस्तार तथा नए निवेश के लिए सरकारी अनुमति को गैर-जरूरी बनाया गया ।

लाभ

- आर्थिक सुधार लागू होने से लाइसेंस राज की समाप्ति हो गई है ।
- उद्योगों में प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत हुई है ।
- भारतीय उद्योग नई तकनीक अपनाने की ओर अग्रसर हुए हैं ।
- साफ्टवेयर उद्योग में जबरदस्त उछाल आया है ।
- तकनीकी विशेषज्ञों की मांग में जबरदस्त उछाल आया है । प्रोफेशनल को मुंह मांगा वेतन मिलने लगा है ।
- रोजगार के अवसर विश्वव्यापी हुए हैं ।
- राष्ट्रों के बीच जो दूरियां थीं, वह समाप्त हो गई हैं । आज समूचा विश्व एक राष्ट्र लगने लगा है ।
- बहुराष्ट्रीय कंपनियां उन्नत तकनीकी का प्रयोग कर रही हैं, इसके बावजूद भारतीय अर्थव्यवस्था में लघु एवं कुटीर उद्योगों का महत्व कम नहीं हुआ है ।

प्रभाव

* इससे अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों में गुणात्मक सुधार आए परन्तु अधिकांशतः नकारात्मक परिणाम ही सामने आए हैं । देश की कमजोर अर्थव्यवस्था को ढीले-ढाले राजनैतिक नेतृत्व द्वारा ठोस तैयारी किए बिना विश्व प्रतिस्पर्धा में उतार दिया गया ।

*8/15 रमेश नगर, नई दिल्ली-110015

* लघु तथा कुटीर उद्योग बंद होने की कगार पर पहुंच गए हैं। कर्मचारियों की छंटनी होने लगी है, बेरोजगारी बढ़ रही है । बेरोजगारी बढ़ने से अपराधों का ग्राफ तेजी से बढ़ रहा है ।

* देशी उद्योगों के आधुनिकीकरण के ठोस उपाय नहीं किए गए जिससे निवेशकों में, पूंजीपतियों में निराशा घर कर गई तथा भारतीय श्रमिक विदेशी तकनीक के आगे नतमस्तक हो गए ।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से देश की संप्रभुता तथा सुरक्षा पर खतरा मंडराने लगा है । ये कंपनियां अपने अधिकाधिक लाभ के लिए राष्ट्रीय हितों की तिलांजलि दे रही हैं ।

* गांधी जी की स्वदेशी की भावना को धक्का लगा है।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियां भ्रमात्मक विज्ञापन के जरिए उपभोक्ताओं को ठग रही हैं । उन पर सरकार का कोई नियंत्रण नहीं है ।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियों के छूट देने से स्वदेशी उद्योग संकट में फंस गए हैं ।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियां उन उद्योगों में निवेश करती हैं जहां परिपक्वता अवधि छोटी होती है तथा लाभ अधिक होता है । रूस तथा जापान जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाएं भी उदारीकरण के शिकंजे से बच नहीं सकी हैं ।

* उदारीकरण वह नशा है जो शुरू में तो आनन्दित करता है परन्तु अन्ततः वह शरीर को खोखला बना देता है ।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने सामाजिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया है । लोगों को भौतिकतावादी बना दिया है ।

* बहुराष्ट्रीय कंपनियां अप्रत्यक्ष रूप से देश की सांस्कृतिक विरासत में छेद कर रही हैं ।

* उदारीकरण विकसित देशों द्वारा विकासशील देशों की अर्थव्यवस्था में सेंध लगाने के समान है । 18वीं शताब्दी में जो कार्य ईस्ट इंडिया कंपनी ने किया था, वर्तमान में यही कार्य बहुराष्ट्रीय कंपनियां उदारीकरण के माध्यम से कर रही हैं ।

* विश्व बैंक तथा अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष भारत पर कोई परोपकार की भावना से कार्य नहीं कर रही हैं । ये संस्थाएं समय-समय पर किसी भी गरीब तथा छोटे राष्ट्र की अखंडता तथा सार्वभौमिकता को भी चुनौती देती रहती हैं ।

निष्कर्ष

भारतीय अर्थव्यवस्था आर्थिक सुधारों के द्वितीय चरण में पहुंच चुकी है । जब आर्थिक सुधार लागू किए गए तब आशा की जा रही थी कि इससे आम जनता को फायदा पहुंचेगा तथा रोजगार के अवसर विश्वव्यापी हो जाएंगे । आर्थिक सुधार लागू करने से भारतीय अर्थव्यवस्था विभिन्न परिवर्तनों के दौर से गुजर रही है ।

अर्थव्यवस्था का उदारीकरण घातक साबित होगा, यदि वह देश के साधारण व्यक्ति की जिन्दगी को बेहतर बनाने में सहायक साबित नहीं होता । कृषि एवं कृषि आधारित उद्योगों को गति प्रदान नहीं करता तथा अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर तथा समतामूलक नहीं बनाता । उदारीकरण को विकसित देशों के मुखौटे के रूप में नहीं, बल्कि अपने देश के सामाजिक और आर्थिक ढांचे के परिप्रेक्ष्य में देखना चाहिए । ■

राष्ट्रभाषा सर्वसाधारण के लिए जरूरी है और हमारी राष्ट्रभाषा हिंदी ही बन सकती है ।

–लोक मान्य तिलक

विविध

वृद्ध अवस्था—एक सुनहरी विरासत

–राम मेहर शर्मा*

वृद्ध अवस्था में यदि भगवान किसी की बाल अवस्था लौटा दे तो इससे बड़ी कृपादृष्टि मनुष्य पर भगवान की और क्या हो सकती है । बालक के पास सरलता होती है, बालक के पास सहज भाव होते हैं । बालक के पास द्वेष, घृणा और ईष्या नहीं होती है । बालक के पास क्षमा करने की अद्भुत शक्ति होती है । जिसके साथ वह लड़ता है अगले ही क्षण उसका मित्र बन जाता है । कोई व्यक्ति यदि बालक को पीटता है तो वह बालक अगले ही क्षण, उस व्यक्ति के साथ फिर वैसे की घुल मिल जाता है जैसे कि कुछ हुआ ही नहीं था । हम भी भगवान के जीवन के अन्य पक्षों की अपेक्षा उसकी बाल लीला पक्ष को सुनकर तथा पढ़कर अधिक आनंदित होते हैं । बच्चे के साथ बात करने से "तनाव कम होता है, चूंकि वह स्वार्थ से परे होता है"।

वृद्ध तनाव कैसे कम करें

मनुष्य को बढ़ती उम्र में तनाव की स्थिति से गुजरना होता है । इसका कारण वृद्ध अवस्था में व्यक्ति के पास कार्यों को करने की शक्ति कम हो जाती है और यदि वह उन्हें स्वयं नहीं कर पाता है और उन कार्यों को करने में उसे अपने बच्चों, सगे-संबंधियों तथा मित्रों की सहायता नहीं मिलती है तो ऐसी स्थिति में उसकी चिंता बढ़ना स्वाभाविक है और इसलिए उसे तनाव की स्थिति से गुजरना पड़ता है । कई स्थितियों में वृद्ध अस्वस्थ होने के कारण चिड़चिड़ा हो जाता है, उसकी सही तरह से देखरेख नहीं हो पाती है अथवा आर्थिक तंगी के कारण वह अच्छा इलाज भी नहीं करा पाता हो तो ये सभी कारण उसकी बीमारी को बढ़ाते हैं और तनाव के कारण और नई बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं । जैसे ऊपर उल्लेख किया गया है, यदि मनुष्य फिर अपनी सोच अबोध बालक की तरह बना ले तो उससे तनाव घटाने में काफी सहायता मिलेगी । दिनचर्या में जो भी क्रोधित करने वाली बातें हुई हों उन्हें भुला दें, जिनके कारण दुःख पहुंचा हो उन्हें क्षमा प्रदान कर दें, भले ही वे क्षमा न मांगें, किन्तु ऐसा करने से स्वयं वृद्ध को काफी राहत मिलेगी । यहां पर वृद्ध भगवान के उस भाव का अनुसरण करें कि जो व्यक्ति उन्हें चोट पहुंचा रहे हैं या पत्थर मार रहे हैं, उनके बारे में "ईशु " कहते हैं कि "हे प्रभु इन्हें क्षमा करना ये अबोध हैं, इन्हें पता ही नहीं है कि ये क्या कर रहे हैं ।" यदि किसी कारण से हमारी बात से किसी को दुख पंहुचा है तो हम उससे भी बिना झिझक क्षमा मांग लें, ये भी तनाव को कम करने का बहुत सार्थक तरीका है ।

वृद्ध भय के भाव को कैसे कम करें

वृद्ध व्यक्ति में भय का भाव आयु के साथ-साथ बहुत बढ़ जाता है । सत्य के रास्ते को न छोड़ें। सत्य का अनुसरण करने से हम काफी भय मुक्त जीवन व्यतीत कर सकते हैं । भगवान की आराधना करें, उनकी आराधना से जो प्रकाश प्राप्त होगा वही जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है । इस बात का इतिहास गवाह है कि सत्य के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को कम कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और अंत में भगवान उसकी सहायता करके उसका जयघोष कराता है ।

वृद्ध अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता कैसे बनाए रखें

वृद्ध अवस्था में व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसकी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता या तो समाप्त अथवा कम हो गई है या बिल्कुल नहीं रही है । वह इस निष्कर्ष पर तब पहुंचता है जब कि उसके परामर्श को कोई तूल नहीं दिया जाता है । इस भाव को वृद्ध व्यक्ति प्रबल न होने दें, इससे उसमें हीन भावना घर करने लगती है । वृद्ध को यह समझना होगा कि समय परिवर्तनशील है । यह हो सकता है कि उसके अनुभव बेकार हो चुके हैं । यह अनुभव अन्य व्यक्ति अथवा परिवार के लिए उपयोगी हो सकते हैं वृद्ध व्यक्ति इन्हें अन्य व्यक्तियों में बांट सकते हैं । वृद्ध व्यक्ति आय के अनुसार अपेक्षाकृत अधिक बोलने लगते हैं, इसलिए कई बार उन्हें बार-बार चुप रहने को कहा जाता है अथवा चुप कर दिया जाता है । इस स्थिति में वे अपने विचारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर चोट मानते हैं । ऐसी स्थिति में अच्छा हो वृद्ध व्यक्ति प्रेक्षाध्यन की मुद्रा में बैठकर भगवान का स्मरण करें । इससे न केवल उसकी चिंता समाप्त होगी, बल्कि उसे चिंतन का सुअवर भी मिलेगा ।

*एफ-2564ए, पालम विहार, गुड़गांव-122017

759 HA/08--7A

वृद्ध मौन रह कर कैसे पुनः ऊर्जा अर्जित करें

वृद्ध व्यक्ति कुछ देर जैसे 15 मिनट अथवा 30 मिनट तक मौन बैठने का अभ्यास करें। इस प्रक्रिया से उन्हें व्यर्थ की बात सोचने अथवा अधिक बोलने से छुटकारा मिलेगा। इससे वे अन्य लोगों की बातचीत आदि में अधिक बाधक नहीं बनेंगे। मौन की स्थिति में बैठने से व्यक्ति अपनी खोई हुई ऊर्जा भी पुनः अर्जित कर सकता है। वृद्ध व्यक्ति खाली समय में संगीत का आनंद लें। यदि उन्हें गाना आता हो अथवा कोई कविता, कव्वाली कण्ठस्थ हो तो उसे गुनगुनाएं, ऐसा करने से उसकी मन की स्थिति में सुधार आएगा और तनाव घटेगा।

वृद्ध कला अथवा किसी अन्य पुराने शौक को जागृत करें

यदि जीवन में किसी भी कला के प्रति रुझान रहा हो तो उसे पुनः जागृत करें। बागवानी का शौक है तो उसे पुनः बढ़ाएं। पौधों को देखकर जीवन में नए विचारों का संचार होता है। वृद्ध व्यक्ति ये प्रयास करें कि कोई उपयोगी कार्य, भले ही वह बहुत छोटे स्वरूप का हो, अन्य किसी व्यक्ति अथवा बालक के लिए अवश्य करें। वृद्ध व्यक्ति के अनुभव के आधार पर किया कार्य कई बार किसी अन्य व्यक्ति के लिए इतना उपयोगी हो सकता है, जिससे उसके जीवन का मार्ग ही बदल सकता है।

वृद्ध सदैव अपनी आशावादी सोच रखें

अच्छे जीवन के लिए स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक है। वृद्ध अपने खान-पान के साथ-साथ रोजाना व्यायाम करें। दैनिक रूप में सुबह तथा सांयकाल सैर करें और यह प्रयास करें कि वे सैर अपने मित्रों के साथ करें। सैर करते समय कई बार बड़ी उपयोगी बातों पर विचार हो जाता है, जिसका सभी को लाभ मिल जाता है। वृद्ध अपने पुराने मित्रों से भी निरंतर मिलते रहें, इससे उन्हें एक तुलनात्मक जीवन शैली का लाभ मिलेगा। पुराने मित्रों के साथ पुरानी समस्याओं में खो जाने के बाद "हंसी के ठहाकों" का लग जाना, एक आम बात है, जो कि जीवन में सहजता ला देता है।

नई पीढ़ी वृद्ध के अनुभवों का लाभ उठाए

इल्यिनूर रुजवेल्ट के शब्दों में, यदि जीवन की भविष्यवाणी का पता चल जाए तो जीवन-जीवन नहीं रह जाता और इस स्थिति में जीवन की सुगन्ध ही समाप्त हो जाती है। जीवन के गर्भ में क्या पल रहा है, इसकी अनिश्चितता ही जीवन को चलायमान रखती है। हम कर्मयोगी बनें और फल सर्वशक्तिमान पर छोड़ दें। ये बात सभी पर लागू होती है, जिसमें वृद्ध भी शमिल हैं, जिन्हें जीवन के प्रति पूरी तरह आशावादी होना चाहिए। वृद्ध की ये सोच होनी चाहिए कि उसके पास अपना व्यक्तित्व है, जीवन का बडा अनुभव और एक गहन सोच है, जिसको न तो कोई चुनौती दे सकता है और न ही कोई उसे छिन्न-भिन्न कर सकता है। उसका बचा हुआ जीवन सुनहरा है, बस वह अपनी सोच को सही रखे।

वृद्ध को सत्य का मार्ग कैसे प्रिय हो जाता है

वृद्ध अवस्था में, वृद्ध व्यक्ति जिह्वा का अधिक प्रयोग करने लगता है। वृद्ध यदि अधिक भी भाष्य करता है तो भी उसे अन्यथा न लें। वृद्ध के पास जीवन के इतने अधिक अनुभव एकत्रित हो जाते है, उन्हें वह सब के साथ बांटना चाहता है। अपने जमाने को वह बहुत अच्छा समझता है। नई पीढ़ी को उसकी बहुत सी बातें अच्छी नहीं लगती हैं, चूंकि वे आज के आधुनिक युग के साथ मेल नहीं खाती है। नई पीढ़ी की सेवा और मान-सम्मान देने संबंधी सोच और मान्यताओं में भी बड़ा अन्तर आ गया है। नई पीढ़ी को ये कभी नहीं भूलना चाहिए कि उसके पास अनुभव के साथ-साथ "आशीर्वाद" भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। यदि वृद्ध व्यक्ति की सेवा और उसके मान सम्मान में अन्तर आ गया है तो यह स्मरण रहे उसके परिवार-जनों को भी "आशीर्वाद" पूर्ण रूप से नहीं मिल सकेगा और वे इससे सदैव वंचित रह जाएंगे।

वृद्ध को गुरू की तरह सम्मान दिया जाए

वृद्ध-अवस्था में जाते जाते वृद्ध व्यक्ति सच्चाई और झूठ के अन्तर को काफी स्पष्ट रूप में समझने लगता है। एक झूठ को सत्य सिद्ध करने हेतु मनुष्य को बार-बार अनेक रूप में झूठ बोलना पड़ता है। इससे व्यक्ति को यह डर रहता है कि कहीं उसका झूठ पकड़ा न जाए, अतः वह इस बारे में बहुत सतर्क रहता है। इस स्थिति में काफी समय तक मनुष्य अपने ऊपर झूठ के भाव से ग्रस्त रहता है। अतः वृद्ध व्यक्ति जीवन के कटु अनुभव के बाद सभी को सत्य मार्ग पर चलने की सीख देता है, जो कि भावी पीढ़ी के लिए बहुत उपयोगी होता है।

वृद्ध व्यक्ति "एक गुरू" की तरह हो जाता है। उसकी यह प्रबल इच्छा रहती है कि सभी अनुज उसकी बातें शिष्य की तरह सुनें और उन का अनुसरण करें। वृद्ध व्यक्तियों को कई बार ऐसा लगता है कि वह जो कुछ करना चाहते हैं अथवा कराना चाहते हैं, वह सब उनके अनुसार नहीं हो रहा है। ऐसी स्थिति में वह विचलित हो जाता है। वह मौन रहना चाहता है ताकि अपने कार्यों पर मनन कर सके। चिंतन की यह स्थिति वृद्ध के सम्मान को बनाए रखती है। ■

759 HA/08—7B

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

(क) विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

मुख्य आयकर आयुक्त (सं. नि. प्रा.), गुवाहाटी

मुख्य आयकर आयुक्तालय (सं.नि.प्रा.), गुवाहाटी की विभागीय 'राजभाषा कार्यान्वयन समिति' की वर्ष 2007-08 की प्रथम त्रैमासिक बैठक दिनांक 21-8-2007 को सांय 3.00 बजे श्री एन. एल. माओ, भा.रा.से., आयकर आयुक्त, गुवा-II, गुवाहाटी की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई ।

सदस्य सचिव ने वर्ष 2007-08 के वार्षिक कार्यक्रम में 'ग' क्षेत्र के लिए निर्धारित किए गए लक्ष्यों पर चर्चा करते हुए निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने का सभी सदस्यों से अनुरोध किया । इस संबंध में अध्यक्ष महोदय ने वार्षिक कार्यक्रमों में निर्धारित किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने का निदेश दिया ।

अध्यक्ष महोदय ने निम्नलिखित व्यवस्था दी :-

पूर्वोत्तर क्षेत्र के सभी आयकर आयुक्त को राजभाषा कार्यान्वयन समिति का सदस्य बनाया जाए तथा समिति की बैठकों की तारीख 15 दिन पहले सूचित कर दी जाए । इसी प्रकार सभी आयकर आयुक्त/संयुक्त आयकर आयुक्त अपने यहां रा.का. समिति गठित करें और समिति की बैठकों की तिथि नियत करके सहायक निदेशक (रा.भा.) को सूचित करें जिससे वे संबंधित कार्यालयों में बैठकें आयोजित करा सकें । बैठकों के साथ-साथ हिंदी कार्यशाला भी उन कार्यालयों में चलाई जाएं ।

सबसे पहले हिंदी में प्रशिक्षण प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को छोटे-छोटे काम जैसे फाइल का नाम, रजिस्टर का नाम आदि हिंदी में लिखने का आदेश दिया जाए तथा बाद में छोटी-छोटी टिप्पणियां हिंदी में भी लिखने का आदेश दिया जाए ।

हिंदी कार्यशाला शीघ्र आयोजित की जाए । अधीनस्थ कार्यालयों में राजभाषा निरीक्षण/रा.का. समिति की बैठक आयोजित करते समय हिंदी कार्यशालाएं भी आयोजित की जाएं ।

सभा के अंत में श्री शेष मणि शुक्ल, सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने अध्यक्ष महोदय तथा बैठक में उपस्थित सभी सदस्यों का धन्यबाद ज्ञापन किया तथा अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्यवाही की समाप्ति की घोषणा की ।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हरियाणा क्षेत्र, पंचकूला

मुख्य आयकर आयुक्त, हरियाणा क्षेत्र, पंचकूला की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 20-9-2007 को दोपहर 3.30 बजे श्री जसपाल सिंह, आयकर आयुक्त, पंचकूला की अध्यक्षता में उनके कमरे में आयोजित की गई ।

सदस्य सचिव ने सूचित किया कि राजभाषा विभाग द्वारा जारी वर्ष 2007-08 के लिए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार 'क' क्षेत्र के लिए पत्राचार संबंधी निर्धारित लक्ष्य 100% है । 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय कार्यालयों से पत्राचार शत-प्रतिशत हिंदी में किया जाना चाहिए और 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र में स्थित केंद्रीय सरकारी कार्यालयों में 65% हिंदी में किया जाना चाहिए । इसी प्रकार 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य, संघ-राज्य क्षेत्र के कार्यालयों/व्यक्तियों को भेजे जाने वाले पत्र शत-प्रतिशत हिंदी में होने चाहिए । हिंदी में प्राप्त पत्र का उत्तर हिंदी में दिया जाना चाहिए । अध्यक्ष महोदय ने चाहा कि हिंदी में पत्राचार को बढ़ाया जाए । प्रशासन संबंधी मामलों में जहां तक संभव हो सके पत्राचार हिंदी में ही किया जाए । काउण्टर पर जितनी भी रिटर्नें प्राप्त होती हैं उन पर तथा पावती पर मोहर हिंदी में लगाई जाए तथा उनको हिंदी के पत्रों की संख्या में शामिल किया जाए ।

बैठक के अंत में अध्यक्ष महोदय ने कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर बल दिया । उन्होंने कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है, इसका अधिक से अधिक प्रयोग किया जाना चाहिए । भाषा में कठिन शब्दों का प्रयोग न करके सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग करना चाहिए । उन्होंने वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को भी यथासम्भव प्राप्त

करने पर जोर दिया । उन्होंने कहा कि हमारा क्षेत्र 'क' क्षेत्र में आता है और सभी हिंदी जानते हैं । अत: हिंदी में कार्य करने में उन्हें कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए । जहां तक संभव हो सके हमें अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए ।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), द्वितीय म.प्र. ग्वालियर

कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.), द्वितीय म. प्र. ग्वालियर की त्रैमासिक बैठक दि. 5-11-2007 को अपराह्न 5.00 बजे कार्यालय के सभा कक्ष में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता सुश्री एनी जी. मैथ्यू महालेखाकार (ले. एवं हक.)-II म. प्र. द्वारा की गई ।

सर्वप्रथम समिति के समक्ष गत तिमाही की बैठक दि. 30-7-2007 के कार्यवृत्त का वाचन किया गया जिसे सर्व-सम्मति से स्वीकार किया गया ।

गत बैठक में दिए निर्देशानुसार समिति के समक्ष सितंबर, 2007 में संपन्न हिंदी सप्ताह का विवरण प्रस्तुत किया गया, साथ ही हिंदी के उत्कृष्ट कार्य के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की ओर से कार्यालय को दिए गए द्वितीय पुरस्कार के विषय में भी जानकारी दी गई । यह भी अवगत कराया कि कार्यालय की पत्रिका वीरांगना त्रैमासिकी को वर्ष 2006-07 के लिए सान्त्वना पुरस्कार नराकास समिति द्वारा घोषत किया गया । समिति के सभी सदस्यों ने उक्त उपलब्धियों पर अपना हर्ष व्यक्त किया । अध्यक्ष महोदय ने भविष्य में भी इसी प्रकार राजभाषा के कार्यान्वयन पर और अधिक ध्यान देने के निर्देश दिए ।

बैठक की मद संख्या तीन के अनुसार कार्यालय की पत्रिका वीरांगना के 35-36वें अंक का विमोचन महालेखाकार महोदय सुश्री एनी जी. मैथ्यू के कर कमलों द्वारा सम्पन्न किया गया । अंक की सभी सदस्यों ने प्रशंसा की तथा करतल ध्वनि से अपना हर्ष व्यक्त किया ।

कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद एवं सीमा शुल्क, गाजियाबाद

केंद्रीय उत्पाद शुल्क आयुक्तालय, गाजियाबाद की माह 1 जुलाई, 2007 से 30 सितम्बर, 2007 तक की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 11-12-2007 को अपराह्न में 12.00 बजे श्री प्रशांत कुमार, आयुक्त (विभागाध्यक्ष पदेन) रा.भा.का. समिति संरक्षक की अनुमति से श्री विजय कलसी, अपर आयुक्त, महोदय की अध्यक्षता में आयोजित की गई।

'हिंदी तिमाही प्रगति' आख्याओं को समीक्षोपरान्त पाया गया कि भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम द्वारा "क" क्षेत्र में वर्ष 2007-08 के लिए 100 प्रतिशित का निर्धारित लक्ष्य रखा गया है, जिसके अनुपालन में आयुक्तालय गाजियाबाद के निम्नलिखित शाखाओं/मंडलों में हिंदी में कार्य की प्रगति का प्रतिशत काफी कम है, जिसे अपर आयुक्त (का. एवं सत.) महोदय ने अत्यंत गंभीरता से लिया और उन्होंने यह निर्देश दिया कि जिन शाखाओं के हिंदी में कार्य कम है या पिछले तिमाही से हिंदी कार्य का प्रतिशत कम हुआ है, वे इसका स्पष्टीकरण अविलम्ब प्रशासनिक अधिकारी (राजभाषा) को उपलब्ध कराएं ।

उपरोक्तानुसार प्राप्त माह 01 जुलाई, 2007 से 30 सितम्बर, 2007 तक की हिंदी तिमाही प्रगति रिपोर्ट पर अध्यक्ष महोदय ने सभी उपस्थित अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्धारित लक्ष्य 100 प्रतिशत प्राप्त करने हेतु अपने अधीनस्त कर्मचारियों/अधिकारियों को उचित दिशा-निर्देश दें एवं प्रेरित करें ।

अध्यक्ष महोदय द्वारा उपस्थित अधिकारियों द्वारा हिंदी प्रगति से संबंधित प्राप्त सुझावों के आधार पर अधिकारियों को निम्नलिखित निर्देश एवं सुझाव दिए गए:-

(क) कार्यालय में प्रयोग आने वाली सभी प्रकार की मोहरें हिंदी में बनवाई जाएं ।

(ख) कम प्रतिशत वाले शाखाओं को पत्र लिखे जाएं ।

(ग) जिन शाखाओं में हिंदी कार्य का प्रतिशत पिछली तिमाही से कम हुआ है उन्हें विशेष निर्देश दिए जाएं ।

(घ) निरीक्षण वाले प्रोफार्मा सरकुलेट करते हुए सभी मण्डल/शाखाओं से द्विभाषी रबर स्टैम्प आदि के बारे में विवरण मंगाई जाएं।

(ड.) कंप्यूटर द्विभाषी होने तथा हिंदी नेमप्लेट, बोर्ड आदि के बारे में विवरण मंगाई जाएं।

(च) सभी शाखा प्रभारियों को हिंदी में हस्ताक्षर करने का सुझाव दिया गया।

(छ) माइक्रोसाफ्टवेयर हिंदी में डलवाने तथा एम.एस. आफिस हिंदी में मंगवाने हेतु निर्देश दिये गये।

(ज) हिंदी प्रशिक्षण देने हेतु सुझाव/निर्देश दिए गए।

दक्षिण पूर्व रेलवे

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 84वीं बैठक दिनांक 28-9-2007 को महाप्रबन्धक, दक्षिण पूर्व रेलवे,

श्री वी. के. रैना की अध्यक्षता में संपन्न हुई। सेवानिवृत्ति के कारण महाप्रबंधक महोदय का अंतिम कार्यदिवस होने से महाप्रबंधक महोदय के सम्मान में अभिनंदन पत्र, गज़ल प्रस्तुत की गई। महाप्रबंधक ने राजभाषा की बैठक के अंतिम संबोधन में कहा कि दक्षिण पूर्व रेलवे में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी बोलने में एवं समझने में कोई कठिनाई नहीं होती है। यदि सभी अधिकारी एवं कर्मचारी फाइलों पर नोटिंग लिखने का अभ्यास करें तो लिखने की कठिनाई को भी दूर किया जा सकता है।

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) डा. जी. नारायणन ने मुख्य राजभाषा अधिकारी का कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात् अपने पहले संबोधन में कहा कि यद्यपि उन्हें हिंदी लिखने में थोड़ी कठिनाई होती है, फिर भी, वे इस दिशा में प्रयास कर रहे हैं कि कर्मचारियों के साथ हिंदी में बात करें तथा हिंदी की फाइलों पर छोटी-छोटी टिप्पणियां हिंदी में लिखें। उन्होंने सभी विभागाध्यक्षों से आग्रह किया कि हिंदीभाषी अधिकारी फाइलों पर हिंदी में टिप्पणियां अवश्य दें। उन्होंने वित्त सलाहकार एवं मुख्य लेखा अधिकारी (FA&CAO) का ध्यान इस ओर खींचा कि उनके कार्यालय में वित्तीय सहमति के लिए भेजे जाने वाले हिंदी के प्रस्तावों (proposals) पर अंग्रेजी प्रस्तावों की मांग की जाती है।

पूर्वोत्तर रेलवे

रेलवे पर 25 से 28 सितम्बर, 07 तक मनाए जा रहे राजभाषा सप्ताह समारोह के अंतर्गत 28-09-07 को पूर्वाह्न में कार्मिक विभाग के सभासागर में आयोजित मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य परिचालन प्रबंधक श्री वी. के. जायसवाल ने कहा कि कार्यालयी कार्य में न केवल छोटे-छोटे वाक्यांशों का प्रयोग किया जाए, अपितु सरल, सुबोध और सहज शब्दों का ही प्रयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि टिप्पणियों एवं पत्रों का आशय स्पष्ट हो सके।

इससे पूर्व अपने स्वागत संबोधन में रेलवे के अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं मुख्य मालभाड़ा परिवहन प्रबंधक श्री रणविजय सिंह ने कहा कि पूर्वोतर रेलवे ने रेलवे बोर्ड एवं गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित अधिकांश लक्ष्यों को या तो पूरा कर लिया है, या लक्ष्य के बिलकुल समीप है।

बैठक का संचालन करते हुए रेलवे के राजभाषा अधिकारी श्री ईश्वर चंद्र मिश्र ने मुख्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की स्थिति समिति के समक्ष प्रस्तुत की। उन्होंने दो महत्वपूर्ण बिंदुओं को रेखांकित करते हुए कहा कि रेल कार्यालयों में होने वाली विभागीय बैठकों की कार्यसूची में हिंदी प्रगति मद को शामिल किया जाए और रेल अधिकारियों द्वारा अपने सामान्य निरीक्षण के दौरान वहां की हिंदी प्रयोग की स्थिति का जायजा भी लिया जाए।

पूर्व रेलवे

क्षेरेराकास की तिमाही बैठक 20-09-2007 को संपन्न हुई महाप्रबंधक, पूर्व रेलवे श्री एन.के. गोयल की अध्यक्षता में संपन्न इस बैठक के मुख्य अतिथि, माननीय सांसद, राज्यसभा श्री वशिष्ठ नारायण सिंह थे।

रेलवे के उप मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं क्षेरेराकास के पदेन सदस्य-सचिव श्री चन्द्र गोपाल शर्मा ने समिति अध्यक्ष, समिति-सदस्यों, मुख्य अतिथि माननीय सांसद श्री वशिष्ठ नारायण सिंह तथा सभी आमंत्रित महानुभावों का अभिनंदन किया।

मुख्य राजभाषा अधिकारी (मुराधि) ने अपने भाषण में निम्नलिखित जानकारी दी :-

—पिछली तिमाही के दौरान आसनसोल मण्डल के मधुपुर स्टेशन को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए इस वर्ष का रेल मंत्री राजभाषा पुरस्कार मिला है।

—सभी कंप्यूटर हिंदी में कार्यक्षम बना लिए गए है।

—महाप्रबंधक के निर्देशानुसार हिंदी कंप्यूटर पर कार्यशालाएं चलाई जा रही हैं। कंप्यूटर कार्यशाला में अब तक 237 कर्मचारी तथा 80 अधिकारी भाग ले चुके हैं।

—हिंदी पखवाड़ा के अवसर पर अनेक अनुष्ठान जैसे हिंदी निबंध/हिंदी टिप्पण आलेखन/हिंदी टंकण-आशुलिपि/हिंदी वाक प्रतियोगिताएं आयोजित किए गए है जिनमें सभी विभागों के कर्मचारी/अधिकारी बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं।

—इस बार हिंदी दिवस पर मुख्यालय में महाप्रबंधक के संदेश पाठन के अलावा प्रश्न-मंच का आयोजन भी किया गया। क्विज मास्टर की भूमिका रेलवे के वरिष्ठ उप महाप्रबंधक ने निभाई। इस अभिनव पहल का चतुर्दिक स्वागत हुआ।

—हिंदी में नाटयमंचन हर मण्डल/कारखाने सहित रेलवे के पूरे कार्यक्षेत्र में हो रहा है, ताकि रेलवे के हर वर्ग के कार्मिकों की अभिरुचि हिंदी के प्रयोग-प्रसार में बढ़ सके।

महाप्रबंधक ने कहा कि वे अब तक समिति की दो बैठकों की अध्यक्षता कर चुके हैं। यह उनकी तीसरी

बैठक है । अब तक जो निर्णय हुए हैं, उसमें प्रमुख हैं :

—आतंरिक कार्यों जैसे, फाइलों पर नोटिंग/ दौरा कार्यक्रम/ टी ए बिल/ छुट्टी आवेदन आदि में हिंदी का प्रयोग तथा पत्राचार लक्ष्यानुसार हिंदी में करना । किंतु, जिस गति से प्रगति होनी चाहिए, उस गति से अब तक नहीं हो पाई है । यह भ्रांति धारणा मन से निकल जानी चाहिए कि अंग्रेजी में नोट/ड्राफ्ट बनाने से फाइल जल्दी निकलेगी । उन्होंने अधिकारियों से हिंदी में टिप्पणियां/पत्र प्रस्तुत करने का आग्रह किया ।

—कंप्यूटरों पर हिंदी सॉफ्टवेयर मौजूद है तथा कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है । किंतु, उन्होंने सारगर्भित स्वर में कहा कि क्या कंप्यूटर प्रयोक्ता वास्तव में कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर रहे हैं । केवल प्रशिक्षण देने से बात नहीं बनती, बल्कि प्रशिक्षण प्राप्त कार्मिकों को अपने ज्ञान व कौशल का उपयोग भी करना चाहिए । उन्होंने निर्देश दिया कि अधिकारीगण इस संबंध में कड़ी निगरानी रखें ।

—डेस्क प्रशिक्षण कार्य में तेजी लानी चाहिए । यह भी देखा जाए कि ये प्रशिक्षित कार्मिक अपना डेस्क कार्य हिंदी मे संपन्न कर रहे हैं या नहीं । उन्होंने कहा कि अगली तिमाही बैठक तक हर विभाग/शाखा के कम-से-कम 10 से 20 कार्मिकों को हिंदी में कार्य का डेस्क प्रशिक्षण दिया जाए तथा उनसे हिंदी में काम भी कराया जाए ।

—पिछली बैठक के निर्णय का हवाला देते हुए महाप्रबंधक ने कहा कि सियालदह मण्डल हर स्टेशन पर स्टेशन संचालन नियम अनिवार्यत: द्विभाषी रूप में वाकई उपलब्ध कराएं । इस कार्य में अब और विलम्ब न हो । साथ ही, रेलवे के बंगाल क्षेत्र में पड़ने वाले स्टेशनों के नियम एवं गेट निर्देश हिंदी-अंग्रेजी के अलावा बंगला में भी उपलब्ध रहे । मुख्य संरक्षा अधिकारी इस बारे में कड़ी निगरानी रखें तथा समय-सीमा निर्धारित कर इस कार्य को सम्पन्न कराएं अगली बैठक में इस बारे में स्टेशनवार/गेटवार स्थिति रखी जाए ।

पूर्व मध्य रेल

क्षेत्रीय रेल राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 19वीं बैठक दि. 21-9-2007 को महाप्रबंधक, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर श्री गिरीश भटनागर की अध्यक्षता में महाप्रबंधक सम्मेलन कक्ष, हाजीपुर में संपन्न हुई ।

मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य विद्युत इंजीनियर, श्री नरेश कुमार सिंहल ने उक्त अवसर पर बैठक में उपस्थित माननीय सांसद/प्रेक्षक सदस्य श्री फुरकान अंसारी एवं अध्यक्ष महोदय तथा उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि इस रेल पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार में निरंतर प्रगति हो रही है । उन्होंने मुख्यालय में दि. 14-9-07 से 21-9-07 तक हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों जैसे - हिंदी निंबध, हिंदी वाक्, हिंदी टिप्पण/आलेखन प्रतियोगिता, हिंदी कार्यशाला, हिंदी क्विज, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नाटक तथा कवि सम्मेलन के उपरान्त पुरस्कार वितरण जैसे कार्यक्रम पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला ।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए महाप्रबंधक, श्री गिरीश भटनागर ने माननीय सांसद सहित उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए बताया कि राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने एवं राजभाषा संबंधी कार्यकलापों में भाग लेने के प्रति हमारे अधिकारियों/कर्मचारियों में काफी उत्साह है। उन्होंने बताया कि 14-9-07 को हिंदी सप्ताह के उद्घाटन पर "राष्ट्रीय एकता में हिंदी की भूमिका" पर आयोजित विचार गोष्ठी में प्रख्यात साहित्यकार डॉ. तरूण और डॉ. मंगलम की उपस्थिति में सार्थक परिचर्चा हुई । उन्होंने बताया कि इस रेल पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की दिशा में काफी सराहनीय कार्य किए गए जिसके परिणामस्वरूप माननीय रेल राज्य मंत्री श्री नारायण भाई जे. राठवा द्वारा दि. 21-6-07 को रेल मंत्री राजभाषा शील्ड प्रदान किया गया । हिंदी पत्राचार का प्रतिशत 97.2 के बदले शत-प्रतिशत सुनिश्चित करने तथा राजभाषा कर्मचारियों से संबंधित कर्त्तव्य सूची इस रेल की आवश्यकतानुसार बनाने जैसे मुद्दे पर बताते हुए कहा कि इसमें राजभाषा कर्मचारियों द्वारा किए जाने वाले निरीक्षणों की संख्या आदि का उल्लेख होना चाहिए । उन्होंने विभागीय बैठकों के कार्यसूची/कार्यवृत्त शत-प्रतिशत द्विभाषी में जारी होने पर प्रसन्नता व्यक्त की । धनबाद मंडल के सीमावर्ती स्टेशनों पर राजभाषा के नियमों के अनुसार सूक्ति लिखवाने से संबंधित माननीय सांसद महोदय के सुझाव को गंभीरता से लेने का उन्होंने धनबाद मंडल के प्रतिनिधि को आदेश दिया । इस दिशा में एक सप्ताह के भीतर एक टीम गठित कर इस काम को शीघ्र पूरा करने को कहा । अंमरेप्र/धनबाद की अनुपस्थिति पर आपत्ति जताते हुए कहा कि उन्हें अनुपस्थिति की विधिवत् अनुमति लेनी चाहिए थी। उन्होंने हिंदी सप्ताह के अवसर पर मंचित नाटक की प्रशंसा करते हुए बताया कि अगली नाट्य प्रतियोगित्र में इसे मंचन के लिए भेजा जाना चाहिए ।

मुख्यालय स्थित विभिन्न विभागों के बीच हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए दी जाने वाली पुरस्कार योजना के अंतर्गत जून, 2007 को समाप्त तिमाही की अंतर्विभागीय राजभाषा चल शील्ड माननीय सांसद, श्री फुरकान अंसारी द्वारा कार्मिक विभाग को प्रदान की गई । मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री अरविंद कुमार ने यह शील्ड माननीय सांसद से ग्रहण की ।

केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क के आयुक्त का कार्यालय

केंद्रीय राजस्व भवन, आर.जी. गडकरी चौक, नासिक-422002

केंद्रीय उत्पाद तथा सीमा शुल्क, नासिक आयुक्तालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वित्तीय वर्ष 2007-08 की द्वितीय बैठक दिनांक 31-8-2007 को अपराह्न 15.00 बजे, श्रीमती एफ.एम. जसवाल, आयुक्त की अध्यक्षता में कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुई । अध्यक्ष महोदया ने कहा कि राजभाषा अधिनियम के नियमों/उपबंधों तथा राजभाषा संबंधी आदेशों का अपने मंडल कार्यालयों एवं उनके अधीन रेंज कार्यालयों एवं मुख्यालय स्थित अनुभागों में यथोचित रूप से अनुपालन किया जाए। कार्यान्वयन संबंधी कार्य का विशेष महत्व है और समुचित स्तर के अधिकारियों द्वारा इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया जाना चाहिए । सभी मंडल एवं अनुभाग प्रभारियों को व्यक्तिगत रूप से यह देखना होगा कि कार्यालय द्वारा धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किए जाने वाले सभी कागजात मुख्यत: सामान्य आदेश, परिपत्र आदि द्विभाषी रूप में ही जारी किए जाएं ।

हिंदी पत्राचार की समीक्षा के दौरान अध्यक्ष महोदया ने निर्देश दिए कि हिंदी पत्राचार में दर्शाए गए आंकड़े सही होने चाहिएं । इसके लिए हिंदी पत्राचार का आवक-जावक रजिस्टर अलग से रखा जाए एवं हिंदी पत्रों के रिकार्ड को अद्यतन रखा जाए जिससे हिंदी के पत्राचार की स्थिति स्पष्ट होगी । संबंधित मंडल प्रभारी/अनुभाग प्रभारी आंकड़ों की जांच के बाद ही रिपोर्ट पर हस्ताक्षर करें । ऐसी स्थिति में जहां अंग्रेजी में पत्र लिखना अनिवार्य हो, उस पत्र पर कवरिंग लैटर हिंदी में लगाकर हिंदी कार्य को बढ़ाया जाए । इसी तरह फाइल कवरों पर विषय आदि हिंदी में लिखें जाएं तथा हिंदी में टिप्पणियां लिखें और सभी रजिस्टरों में हिंदी में ही प्रविष्टियां की जाएं ।

अध्यक्ष महोदया ने निर्देश दिया कि सभी रजिस्टरों एवं फाइलों के विषय हिंदी में अथवा द्विभाषी रूप में लिखे जाएं तथा फाइलों में यथासंभव टिप्पणियां हिंदी में ही लिखी जाएं । कार्यालय के सभी सूचना पट्ट, रबर की मुहरें, अधिकारियों के बैज एवं बिल्ले तथा प्रतीक चिन्ह हिंदी में बनवाए जाएं ।

भारतीय प्रसारण निगम

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र बी-42, सादुलगंज, बीकानेर

दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र, बीकानेर में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक का आयोजन दिनांक 20-08-07 को किया गया ।

बैठक का शुभारंभ हिंदी अधिकारी श्री उमेश चन्द्र श्रीवास्तव के स्वागत भाषण से हुआ । तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय की अनुमति से विगत बैठक का विवरण प्रस्तुत बिंदुओं पर हुई चर्चा तथा उन कार्यों की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया ।

- सभी अधीनस्थ रिले केंद्रों पर हिंदी की उप-समिति का गठन किया जा चुका है । उप-समिति का अध्यक्ष रिले केंद्र प्रभारी/सहायक अभियंता है । सभी केंद्रों पर तिमाही की नियमित हिंदी बैठकें आयोजित करने के केंद्र अभियंता के सुझाव पर सभी सह-प्रतिभागियों ने सहमति जताई तथा कहा कि बैठकें नियमित आयोजित की जा रही हैं । केंद्र अभियंता महोदय ने कहा कि रिले केंद्र पर आयोजित की जाने वाली बैठक की रिपोर्ट इस कार्यालय को भी प्रेषित की जानी चाहिए ।

- प्रेषण कार्य के लिए प्रयुक्त होने वाले लिफाफों पर प्रेषण का पूरा पता तथा रिले केंद्रों से दूरदर्शन अनुरक्षण केंद्र को भेजे जाने वाले लिफाफों पर पूरा पता छपवाने के संदर्भ में यह निर्णय लिया गया कि इसी वित्तीय वर्ष में यह कार्य करवा दिया जायेगा ।

केंद्र अभियन्ता महोदय ने बताया कि आगामी माह में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाएगा जिसमें अधिकाधिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाए । केंद्र अभियंता महोदय ने सभी उपस्थिति अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह किया कि हिंदी के आधिकाधिक प्रयोग हेतु अपनी व्यक्तिगत रुचि व दृढ़ इच्छा शक्ति का प्रयोग करें । इसके साथ ही श्री राजेश नाहटा, केंद्र अभियंता द्वारा सभी प्रतिनिधि को धन्यवाद ज्ञापित करने के पश्चात् बैठक का समापन हुआ ।

आकाशवाणी : कटक

श्री बसन्त कुमार बेहेरा, केंद्र अभियंता, आकाशवाणी, कटक की अध्यक्षता में दिनांक 11-10-2007 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संपन्न हुई । दिनांक 04-07-2007 को हुई बैठक में लिए गए निर्णयों में से एकाध निर्णय को छोड़कर बैठक के कार्यवृत्त को सर्वसम्मति से पुष्टि के बाद हुए विचार विमर्श और निर्णय लिए गए । जुलाई-सितम्बर, 2007 तिमाही प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की गई । मूल पत्राचार की स्थिति लक्ष्य से काफी पीछे होने के कारण बैठक में गंभीरतापूर्वक यह निर्णय लिया गया कि प्रशासन अनुभाग, अभियांत्रिकी अनुभाग, लेखा अनुभाग एवं कार्यक्रम अनुभाग से भेजे जाने वाले विवरण रिपोर्ट आदि के अग्रेषण-पत्र निश्चित रूप से हिंदी में भेजे जाएं ।

धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले कागजातों के बारे में विचार किया गया । हिंदी अधिकारी श्री सुरेंद्रनाथ सामलजी ने कहा : अधिकांशत: ऐसे कागजातों को पहले अंग्रेजी में जारी कर दिया जाता है फिर उसका हिंदी अनुवाद जारी किया जाता है । उन्होंने सुझाव दिया ऐसे कागजातों को जारी करने से पहले हिंदी अनुभाग को हिंदी अनुवाद के लिए अवश्य भेजा जाए ।

आकाशवाणी : अहमदाबाद

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक संयुक्त रूप से दिनांक 24-8-2007 को श्री भगीरथ पंडया, केंद्र निदेशक आकाशवाणी, अहमदाबाद की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

सर्वप्रथम अध्यक्ष महोदय ने उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत किया फिर बैठक शुरू हुई । पहले पिछली बैठक के मुद्दों पर समीक्षा एवं सर्वानुमति से पुष्टि की गई ।

पिछली तिमाही में 2007-2008 का वार्षिक कार्यक्रम सभी उपस्थित सदस्यों में वितरित किया गया । उस पर भी आगे चर्चा की गई । भारत सरकार के कार्यालयों द्वारा असांविधिक प्रक्रिया साहित्य जैसे नियम, कोड, मैनुअल, मानक फार्म आदि को अनुवाद कराने के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो को भेजा जाए ।

कंप्यूटर, ई-मेल, वेबसाइट सहित उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी सुविधाओं का अधिक से अधिक उपयोग करते हुए हिंदी में काम को बढ़ावा दिया जाए ।

अध्यक्ष महोदय ने जानना चाहा कि क्या हमारे कार्यालय में हिंदी पत्राचार में वांछित बढ़ोतरी हो रही है । इसके लिए प्रयास बढ़ाए जाएं । हिंदी में पावती प्रिंट करवा के रखी जाए । जरूरत पड़ने पर तुरंत किया जा सके । प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों का 100% हिंदी पत्राचार करना अपेक्षित है । श्री जे. आर. राठोड कार्यक्रम निष्पादक ने बताया वे अपना पूरा पत्राचार हिंदी में करते हैं ।

आकाशवाणी : कडपा

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक दिनांक 10-10-2007 को आकाशवाणी, कडपा केंद्र में श्री ए. मल्लेश्वर राव, कार्यालयाध्यक्ष की अध्यक्षता में संपन्न हुई ।

अध्यक्ष जी ने यह बताया कि हिंदी पाक्षिक पत्रिका 'इंडिया टुडे' और "मिलाप"-राजभाषा पत्रिका, आदि पुस्तकालय में पढ़ने के लिये रखा जाए । जिससे कार्यरत सभी कर्मचारी पढ़ कर हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान बढ़ाने में फायदा उठा सकें । उन्होंने यह बताया कि इसके संबंध में एक परिपत्र जारी किया जाए ताकि सभी कर्मचारी पुस्तकालय में आकर इन पत्रिकाओं को पढ़ सकें ।

अध्यक्ष जी ने यह सूचित किया कि प्रस्तुत आकाशवाणी के कर्मचारी प्राज्ञ में ग्यारह और प्रबोध में एक अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो चुके हैं । सभी उम्मीदवारों को एकमुश्त पुरस्कार, नकद पुरस्कार का वितरण किया गया । हिंदी दिनोत्सव 14 सितंबर 2007 को सभी को यह पुरस्कार वितरण किए गए । उन्होंने हिंदी एकक को यह सूचित किया कि बाकी रहे कर्मचारियों को भी हिंदी परीक्षा के लिए नामांकित करें ।

एन.टी.पी.सी. : टांडा

टांडा विद्युतगृह के महाप्रबंधक सम्मेलन कक्ष में दिनांक 26-9-2007 को राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 19वीं बैठक महाप्रबंधक (टांडा) श्री पी. के. अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित की गई । बैठक में सभी विभागाध्यक्ष, उपमहाप्रबंधक तथा समिति के सदस्य उपस्थित रहे । सर्वप्रथम कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव श्री ओम प्रकाश, सहायक हिंदी अधिकारी द्वारा अध्यक्ष एवं सदस्यों का स्वागत किया गया । तत्पश्चात् अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक की कार्रवाही प्रारंभ की गई । लगभग दो घण्टे चली राजभाषा कार्यान्वयन समिति की इस बैठक में विद्युतगृह में धारा 3(3) का अनुपालन, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, कंप्यूटर साफ्टवेयर, हिंदी पुस्तकों की खरीद, हिंदी प्रोत्साहन योजना आदि महत्वपूर्ण विषयों पर विधिवत चर्चा के उपरांत समुचित निर्णय लिए गए ।

सचित्र समाचार

पंजाब नेशनल बैंक, झारखण्ड, अंचल रांची के राजभाषा समारोह में "पी. एन. बी. राजभाषा समारोह 2007" में डॉ. शैलेश पंडित, डॉ. महुआ माजी तथा श्री कमल प्रसाद, अंचल प्रबंधक (बीच में)।

क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दिल्ली एवं उत्तर क्षेत्र) हरिद्वार में राजभाषा विभाग द्वारा लगाई गई पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी का एक दृश्य।

बैंक ऑफ इंडिया, अंचल कार्यालय, नई दिल्ली में 14-9-2007 को ''हिंदी दिवस समारोह'' के अवसर पर हिंदी में कार्य करने का संकल्प लेते हुए आंचलिक कार्यालय के स्टाफ सदस्य ।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड बालुटार, सिंगताम (पूर्वी सिक्किम) में हिंदी दिवस समारोह-2007 में बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम की झलक ।

सीमा सुरक्षा बल महानिदेशालय, नई दिल्ली में "हिंदी दिवस 2007" के दौरान हिंदी प्रतियोगिता में पुरस्कृत कर्मी ।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड, मुख्यालय, फरीदाबाद द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री विलायती राम गोयल, अनुसंधान अधिकारी, राजभाषा विभाग । साथ में हैं डॉ. राजबीर सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) और श्री पी. डी. मिश्रा, प्रबंधक (राजभाषा) ।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, (नाईपर) द्वारा आयोजित "हिंदी पखवाड़ा-2007" में भाषण देते हुए एक अधिकारी ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भंडारा की बैठक में विशेष अतिथि से पुरस्कार ग्रहण करते हुए डॉ. एस. के. माथुर ।

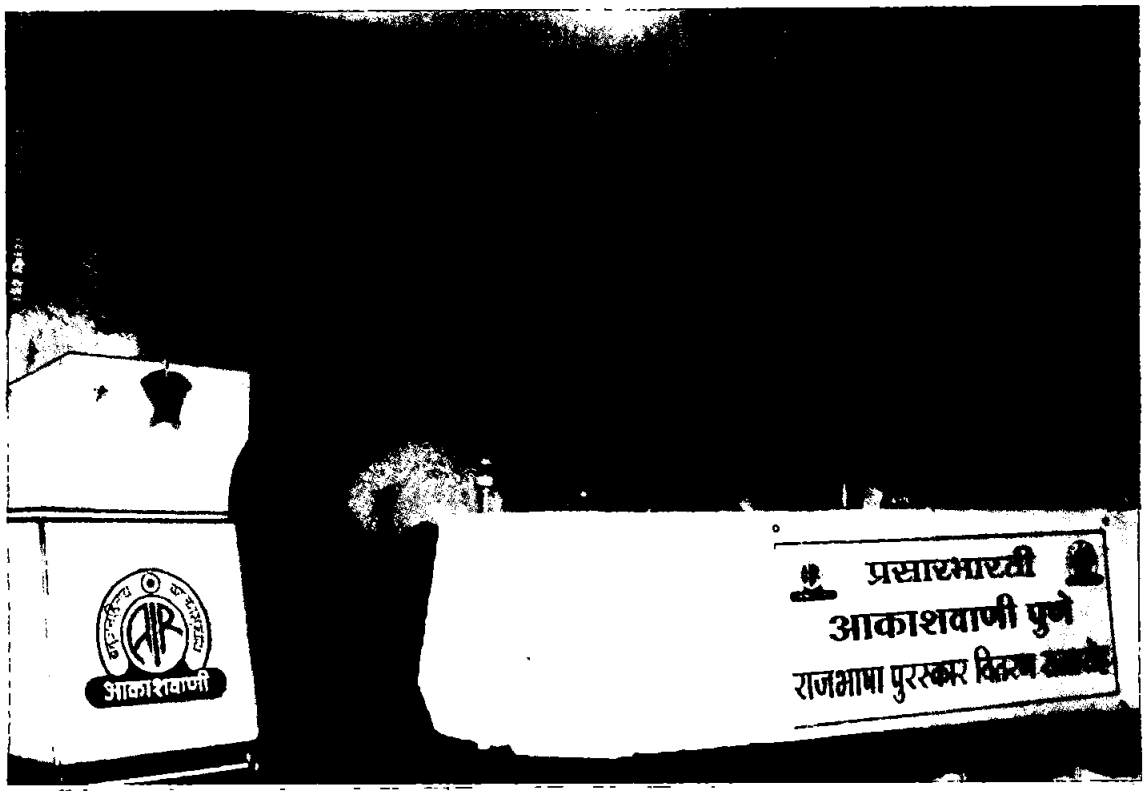

आकाशवाणी पुणे में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह में काव्य पाठ करते हुए श्री शरदेन्दु शुक्ल ।

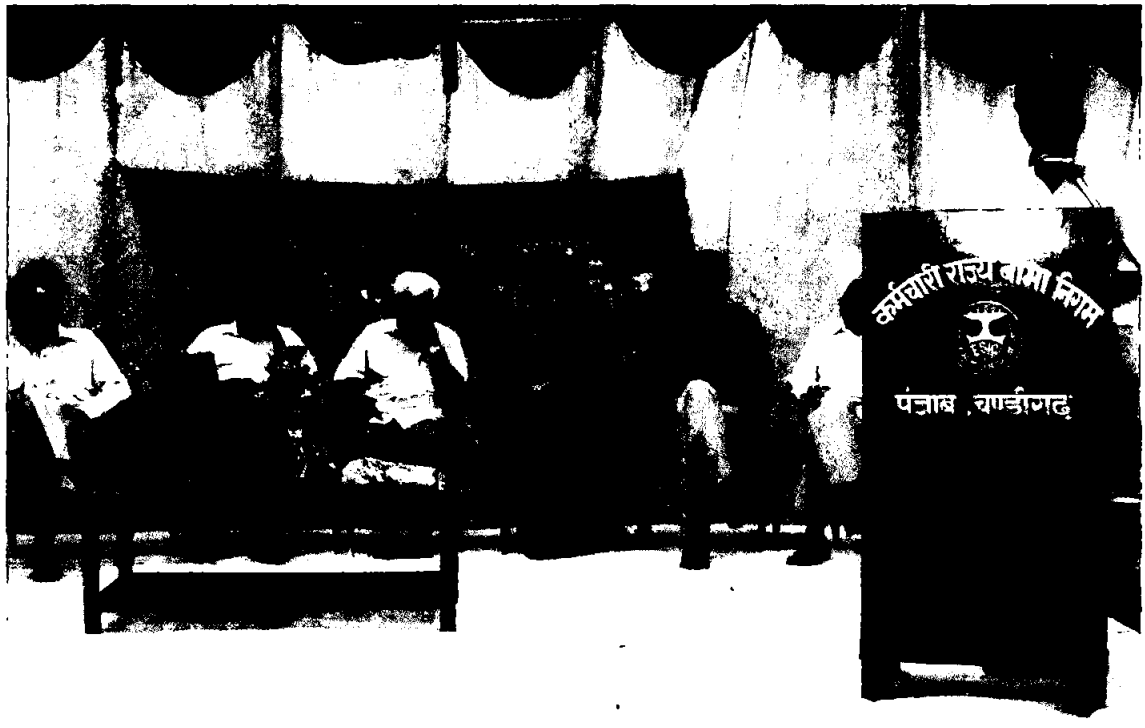

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में हिंदी दिवस समारोह-2007 में भाषण देते हुए एक अधिकारी ।

सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, करनाल द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला की एक झलक ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पानीपत द्वारा आयोजित पुरस्कार समारोह में इंडियन ऑयल उत्तरी क्षेत्र पाइप लाइन्स को "रिफाइनरी राजभाषा शील्ड" प्रदान करते हुए श्री सी. मनोहरन, अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, पानीपत रिफाइनरी ।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र, केंद्रीय कार्यालय, पुणे में आयोजित "हिंदी दिवस समारोह" में बाएं से श्री विकास छापेकर, महाप्रबंधक (मा.स.प्र.), अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री एम. डी. मल्या, मुख्य अतिथि डॉ. केशव प्रथम वीर तथा सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) डॉ. दामोदर खड़से ।

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय-1 द्वारा आयोजित हिंदी दिवस में मुख्य अतिथि पद्म श्री डॉ. श्याम सिंह शशि एवं उप महाप्रबंधक डॉ. एच. के. शर्मा एवं अन्य क्षेत्रीय प्रबंधकगण ।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा आयोजित भूजल शब्दावली कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए एक अधिकारी ।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस महानिदेशालय, नई दिल्ली में आयोजित हिंदी कार्यशाला के प्रमाणपत्र वितरण समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, उप महानिरीक्षक (प्रशासन), प्रशिक्षणार्थी को प्रमाणपत्र एवं सहायक साहित्य प्रदान करते हुए ।

एन. एच. पी. सी. : फरीदाबाद

निगम मुख्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2007-08 की दूसरी तिमाही बैठक श्री सुधीर कुमार चतुर्वेदी, निदेशक (कार्मिक) महोदय की अध्यक्षता में 27-9-2007 को आयोजित की गई । बैठक में सर्वप्रथम महाप्रबंधक (मा.सं.वि., का. संचार व राजभाषा) ने निदेशक (कार्मिक) एवं अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति तथा उपस्थित सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया और बैठक की कार्यसूची से अवगत कराया । तत्पश्चात् वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) डॉ. राजबीर सिंह ने एनएचपीसी में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया । साथ ही पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों के अनुपालन की समीक्षा भी की गई ।

बैठक के सदस्यों को सूचित किया गया कि जुलाई, 2007 में निगम के विभिन्न विभागों में कार्यरत कार्मिकों को हिंदी सॉफ्टवेयर "सारांश" का प्रशिक्षण दिया गया । साथ ही सदस्यों को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा तैयार सी डैक के माध्यम से किए गए श्रुतलेख साफ्टवेयर की जानकारी भी दी गई । बैठक में यह भी बताया गया कि निगम में हर दूसरा मंगलवार हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है और इस संबंध में अधिकाधिक कार्य हिंदी में करने संबंधी सार्वजनिक उद्घोषणा भी की जाती है तथा विभागीय बैठकों में भी इस बात पर चर्चा की जाती है ।

बैठक में निगम मुख्यालय के विभागों और विभिन्न परियोजनाओं/पावर स्टेशनों/क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग की स्थिति की विस्तृत समीक्षा की गई तथा अध्यक्ष महोदय ने मुख्यालय के सभी विभागों और सभी पावर स्टेशनों/परियोजनाओं एवं कार्यालयों में राजभाषा प्रयोग को बढ़ाने के निर्देश देते हुए कहा कि हमें राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कारगर प्रयास करने चाहिएं । उन्होंने कहा कि फाइलों पर हिंदी में अधिक से अधिक टिप्पणियां लिखी जाएं तथा कंप्यूटरों पर भी हिंदी में कार्य की प्रतिशतता बढ़ाई जानी चाहिए । उच्च अधिकारी स्वयं भी हिंदी में कार्य करें तथा अधीनस्थ कार्मिकों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें ताकि निगम में हिंदी कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति हो ।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

संस्थान की राजभाषा कार्यान्वयन समिति (राकास) की बैठक मुख्य भवन के गोष्ठी कक्ष में दिनांक 2-8-2007 को दोपहर 12.00 बजे डॉ. अरुणाभा दत्ता, कार्यकारी निदेशक, भापेसं की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई ।

सर्वप्रथम डॉ. दिनेश चमोला, सदस्य-सचिव ने राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों का बैठक में स्वागत किया । इसके उपरांत पिछली बैठक के कार्यवृत्त की पुष्टि की गई ।

डॉ. चमोला, सदस्य-सचिव ने समिति को बताया कि 'क' क्षेत्र में स्थित केंद्र सरकार के कार्यालयों के लिए हिंदी पत्राचार का लक्ष्य शत-प्रतिशत निर्धारित किया गया है जबकि इस तिमाही में संस्थान द्वारा किया गया हिंदी पत्राचार पूर्व की तुलना में कम है । इस पर चर्चा करते हुए कार्यकारी निदेशक एवं अध्यक्ष, राकास, डॉ. ए दत्ता का सुझाव था कि प्रचुर मात्रा में किए जाने वाले पत्राचार को अनिवार्य रूप से हिंदी में ही किया जाना चाहिए । डॉ. एम. आर. त्यागी का कहना था कि संस्थान के अधिकांश वैज्ञानिक प्रभागों में हिंदी टंकक की उपलब्धता न होने से हिंदी में पत्र लिखने में कठिनाई होती है । इस पर डॉ. चमोला ने कहा कि संस्थान के सभी सहायक ग्रेड-III वाले कर्मचारी हिंदी टंकण में तथा अधिकांश अंगेजी आशुलिपिक हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण प्राप्त हैं । डॉ. ए दत्ता ने सभी सदस्यों से अपेक्षा की कि वे अपने अनुभाग/प्रभाग से संबंधित अधिकाधिक पत्राचार हिंदी में ही सुनिश्चित करें ।

सदस्य-सचिव, डॉ. दिनेश चमोला ने समिति को अवगत कराया कि हाल ही मे संस्थान के 13 आशुलिपिकों ने हिंदी आशुलिपि की परीक्षा उत्तीर्ण की है जो संस्थान के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है । उन्होंने कहा कि सत्र 2007-08 में उपर्युक्त प्रशिक्षण के लिए 3 आशुलिपिकों को नामित कर दिया गया है जिन्हें भारतीय सर्वेक्षण विभाग में प्रशिक्षण दिया जाएगा ।

सदस्य-सचिव ने समिति को अवगत कराया कि राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत जो भी सामग्री मुद्रित अथवा लिखी जाए उसकी जांच अनिवार्य रूप से राजभाषा अनुभाग से करवा ली जानी चाहिए ताकि अनावश्यक त्रुटियों से बचा जा सके । उन्होंने कहा कि इस संबंध में एक नोट निदेशक महोदय को प्रस्तुत किया गया है जिसमें मुख्य गेट के नामों को अनिवार्यत: द्विभाषी करने का अनुरोध किया गया है । उन्होंने कहा कि संस्थान में प्रयुक्त होने वाले नाम-पट्ट, साइनबोर्ड, पत्रशीर्ष तथा प्रपत्र आदि को भी अनिवार्य रूप से द्विभाषी ही मुद्रित करवाया जाना चाहिए तथा मुद्रण व प्रकाशन पूर्व उसकी जांच राजभाषा अनुभाग से करवाए जाने की जरूरत है । ■

759 HA/08—8A

(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों की बैठकें

कोलकाता (बैंक)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), कोलकाता की 43वीं बैठक दिनांक 24-8-2007 को अपराह्न 3.30 बजे मर्चेंट चेंबर ऑफ कामर्स के सम्मेलन कक्ष 15बी, हेमंत बसु सरणी, कोलकाता में आयोजित की गई । बैठक की अध्यक्षता संयोजक बैंक यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया के कार्यपालक निदेशक सुश्री सुनंदा लाहिड़ी ने की ।

समिति की 22-2-2007 को संपन्न 42वीं बैठक के कार्यवृत्त की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई । सदस्य-सचिव के अनुरोध पर अध्यक्ष महोदया ने समिति की हिंदी पत्रिका 'नगर प्रभा' के आठवें अंक का विमोचन किया ।

समिति के तत्वावधान में आयोजित राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता वर्ष 2005-06 के विजेता सदस्य कार्यालयों को अध्यक्ष महोदया के कर-कमलों द्वारा पुरस्कृत किया गया ।

अध्यक्ष महोदया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार बैंक में व्यवसाय बढ़ाने की दृष्टि से किया जाना चाहिए । हमारे देश में चूंकि अधिकतर लोग हिंदी समझते हैं इसलिए ग्राहकों के नजदीक जाने का उपाय हिंदी हो सकता है । उन्होंने अपने भाषण में यह भी कहा कि वित्तीय समावेशन के लिए बैंक के सभी कर्मचारियों को हिंदी जानना जरूरी है । नराकास (बैंक) कोलकाता के स्तर पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए हम आम जनता के करीब पहुंच सकते हैं । उन्होंने विजेता सदस्य कार्यालयों को बधाई दी एवं राजभाषा हिंदी में कार्य करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया ।

इम्फाल (मणिपुर)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इम्फाल की वर्ष 2007 की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 28-6-2007 को 11.00 (पूर्वा.) बजे महालेखाकार (ले.प.) मणिपुर कार्यालय के सभा कक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री राजबीर सिंह, अध्यक्ष, न.रा.का.स. तथा महालेखाकार (ले.प.), मणिपुर ने की ।

बाद में अध्यक्ष महोदय ने कहा कि भारत में 60 करोड़ लोग हिंदी भाषा समझते हैं और थोड़ा-बहुत बोलव समझते हैं, फिर भी हमारी मानसिकता अंग्रेजी की बनी हुई है । हिंदी हमारी राजभाषा है । अतः इसका प्रयोग-प्रसार बढ़ाने में भरपूर सहयोग दें ।

प्रतिभागियों ने अपने कार्यालय की हिंदी प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की ।

पिछली बैठक की कार्यवृत्त की पुष्टि अध्यक्ष महोदय की अनुशंसा पर की गई, सदस्यों से टिप्पणी आह्वान करते हुए कोई प्रतिकूल टिप्पणी न मिलने पर पिछली बैठक की कार्यवृत्त की पुष्टि कर दी गई ।

अध्यक्ष महोदय ने नाराजगी जताते हुए खेद प्रकट किया कि बहुत ही कम कार्यालयों से अर्धवार्षिक रिपोर्ट प्राप्त होती है, जिससे हिंदी प्रशिक्षण के लिए विभिन्न कार्यालयों में वास्तविक स्थिति का पता नहीं लगाया जा सकता । उन्होंने सभी कार्यालयों को अर्धवार्षिक रिपोर्ट भेजने का अनुरोध किया ।

(क) अध्यक्ष महोदय ने अनुरोध किया कि नियम के अनुसार कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्ष ही बैठक में भाग लें ताकि राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार को प्रभावी ढंग से लागू किया जा सके । साथ ही उन्होंने सचेत किया कि आगामी बैठक में जिस कार्यालय के कार्यालय अध्यक्ष भाग नहीं लेंगे उनकी रिपोर्ट उनके मंत्रालय को भेज दी जाएगी ।

(ख) अध्यक्ष महोदय ने सुझाव दिया कि सभी प्रकार की छुट्टियों, भविष्य निधि फार्म, ड्यूटी ज्वाइनिंग रिपोर्ट आदि द्विभाषी रूप से तैयार करें ।

तूतीकोरिन

दिनांक 27 सितंबर, 2007 को भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन के तत्वावधान में नराकास, तूतीकोरन की 19वीं बैठक भापासंतू के अतिथिगृह स्थित सभागृह में संपन्न हुई । बैठक में भाग लेने आए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग के उप निदेशक, डॉ. वी. बालकृष्णन ने अपने उद्बोधन में कहा कि सभी सदस्य कार्यालयों एवं प्रमुखों का यह संवैधानिक कर्तव्य है कि वे बैठक में उपस्थित रहें । बैठक में हिंदी अधिकारियों, पदाधिकारियों की उपस्थिति उतनी अनिवार्य नहीं जितनी कार्यालय प्रमुखों की । हिंदी पदाधिकारी केवल उनकी सहायता के लिए होते

759 HA/08—8B

हैं। हमें हिंदी में जागरूकता लाने हेतु सबसे पहले हिंदी के बारे में सोचना होगा, दिमाग में बिठाना होगा, हम सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों में काम करते हैं। अत: हमारा कर्तव्य है कि हम इसके बारे में सोचें व राजभाषा में काम करें। चूंकि आज भी सरकारी कार्यालयों में अंग्रेजी का वर्चस्व है क्योंकि हमारी मानसिकता एवं व्यवस्था ही ऐसी है इसे बदलने की जरूरत है। आज विश्व के 10 प्रमुख विकसित देशों की भाषा उनकी मातृभाषा है। प्रशासन, शिक्षा अनुसंधान, कानून, विज्ञान, साहित्य उनकी अपनी मातृभाषा में उपलब्ध है। इसलिए वे उन्नति कर विकसित देश बन गए हैं। चीन, यू.एस., जापान, जर्मनी, कोरिया, इजराइल, फ्रांस, आस्ट्रेलिया सभी तो विकसित हैं। जो मातृभाषा अपना नहीं सके वे अविकसित देशों की श्रेणी में हैं। अत: हम हिंदी के बारे में सोचें एवं धीरे-धीरे, छोटा-छोटा कार्य हिंदी में करने की शुरुआत करें एवं अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व भी पूरी तरह निभाएं।

इस अवसर पर अध्यक्ष नराकास श्री वी.वी.एस. रामाराव ने कहा कि पिछले दो वर्षों से हमारे केंद्रीय कार्यालयों से हमें राजभाषा शील्ड पुरस्कार प्राप्त हो रहा है। यहां 'ग' क्षेत्र में होते हुए हमें जो थोड़ा बहुत काम हिंदी में कर पा रहे हैं, यह उसी का परिणाम है। आप भी अपने कार्यालय में धीमे ही सही पर लगातार थोड़ा काम राजभाषा में करें तो सुखद परिणाम प्राप्त होंगे। राजभाषा का कार्यान्वयन सभी केंद्रीय सरकारी कार्यालयों का उत्तरदायित्व है। उसे पूरी तरह निभाने का प्रयास करें। इस अवसर पर CISF के सहायक कमांडेंट श्री पी.के. मूर्ति ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि संभावना बहुत है लेकिन इच्छाशक्ति नहीं। अगर इच्छाशक्ति होगी तो राजभाषा कार्यान्वयन में मुश्किल नहीं है। लेकिन इस शुभ कार्य को हम सब मिलकर ही आगे बढ़ा सकते हैं।

एलूरु

दिनांक 30-10-2007 को अपराह्न 3.00 बजे को महाप्रबंधक, दूरसंचार कार्यालय, बी.एस.एन.एल. भवन, एलूरु में महाप्रबंधक, दूरसंचार जिला एलूरु एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री एल. अनंतराम की अध्यक्षता में न.रा.का.स. की छठी बैठक आयोजित की गई हैं।

अध्यक्ष महोदय श्री एल. अनंतराम, आई.टी.एस. ने अपने अध्यक्षीय भाषण में बताया कि अभी तक एलूरु न.रा.का.स. निर्धारित समय सीमा में नियमित रूप से बैठकों का आयोजन कर रही है। राजभाषा विभाग से जारी किए गए वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार हमें राजभाषा कार्यान्वयन बेहतर रूप से करने का प्रयास करना चाहिए। इसके अनुसार हर तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना है। बी.एस.एन.एल. कार्यालय में अनिवार्य रूप से हर तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला आयोजित की जा रही है। हिंदी पखवाड़ा भी बड़े पैमाने पर मनाया जाता है। उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों के प्रधानों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालयों में होने वाले राजभाषा से संबंधित कार्यक्रम एवं प्रगति प्रतिवेदनों की एक प्रति अध्यक्ष, न.रा.का.स. को भी भेजें। एलूरु न.रा.का.स. को उत्तम न.रा.का.स. का रूप देने के लिए प्रयास करें।

न.रा.का.स. के सचिव एवं सहायक निदेशक (राजभाषा), बी.एस.एन.एल. श्री बी. विश्वनाथाचारी ने अपनी रिपोर्ट में दिनांक 4-10-2007 से 5-10-2007 तक हैदराबाद में आयोजित क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन 2007 (दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के लिए) के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन में उपरोक्त दोनों क्षेत्रों में बेहतर राजभाषा कार्यान्वयन करने वाले कार्यालयों/ न.रा.का.स. समितिओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। राजभाषा विभाग के सचिव श्री रंजीत ईस्सार की अध्यक्षता में हुए पुरस्कार वितरण समारोह में उस्मानिया विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री सुलेमान सिद्दीकी ने पुरस्कार वितरण किया।

इस सम्मेलन में हिंदी के गणमान्य विद्वान और विज्ञान के क्षेत्र में प्रमुख वैज्ञानिक अपने हिंदी भाषणों से सम्मेलन को सफल बनाया। इसके अतिरिक्त सी-डाक, अक्षर ए.पी.एस. कार्पोरेट आदि साफ्टवेयर संस्थाओं ने अपने उत्पादनों का प्रदर्शन किया।

श्रीमती पी. वत्सला जी. कुट्टी, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग और शुचींद्र शर्मा, राजभाषा विभाग के निदेशक के मार्गदर्शन में श्री विश्वनाथ झा ने इस सम्मेलन को बेहतर ढंग से आयोजित किया।

एलूरु में प्राज्ञ और हिंदी टंकण परीक्षा केंद्र भी हैं। हर वर्ष मई और नवंबर महीनों में प्राज्ञ परीक्षा और जनवरी और जुलाई महीनों में हिंदी टंकण परीक्षा, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली की ओर से चलाई जाती है।

भंडारा

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भंडारा की छ:माही बैठक का आयोजन दिनांक 12-10-2007 को आयकर

विभाग, भंडारा के सौजन्य से किया गया, जिसमें भंडारा शहर स्थिति सभी केंद्रीय कार्यालयों, बोर्ड, बैंक, उपक्रमों आदि के लगभग 25 कार्यालय प्रधानों/अधिकारियों ने भाग लिया । बैठक की अध्यक्षता श्री विजय लिल्हारे, उपमहाप्रबंधक, दूरसंचार निगम लिमिटेड, भंडारा ने की ।

पिछली छःमाही में राजभाषा संबंधी किए गए कार्यों की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई एवं उसकी समीक्षा की गई ।

इस अवसर पर दूरसंचार निगम लि., भंडारा कार्यालय द्वारा 'प्रकाशित मासिक पत्रिका भंडारा दूरसंचार समाचार' का विमोचन किया गया, जिसकी सभी विभागों द्वारा प्रशंसा की गई एवं आशा व्यक्त की गई कि इससे न केवल राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सहायता मिलेगी बल्कि दूरसंचार निगम की विभिन्न गतिविधियों एवं स्कीम्स का भी प्रचार एवं प्रसार होगा ।

श्री शिरवाद, शाखा प्रबंधक, सैन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने सदन को सूचित किया कि उनकी भंडारा शाखा को उनके केंद्रीय कार्यालय द्वारा वर्ष 2005-2006 के लिए राजभाषा में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र दिया गया है । ठीक इसी प्रकार डा. एस. के. माथुर ने सदन को बताया कि बुनियादी तसर बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, भंडारा को केंद्रीय रेशम बोर्ड, बेंगलोर द्वारा वर्ष 2005-2006 के लिए राजभाषा में उत्तम कार्य हेतु, एक चल शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया है । सदन द्वारा उन्हें ध्वनिमत से बधाई दी गई । अध्यक्ष श्री विजय लिल्हारे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में इसे अन्य विभागों के लिए प्रेरणादायी बताया ।

इस अवसर पर नराकास भंडारा की ओर से वर्ष 2006-2007 में उत्कृष्ट कार्य करने वाले विभागों को पुरस्कृत किया गया । प्रथम पुरस्कार बुनियादी तसर रेशमकीट बीज संगठन, केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा, द्वितीय पुरस्कार सिंडिकेट बैंक, भंडारा एवं तृतीय पुरस्कार प्रदर्शन-सह-तकनीकी सेवा केंद्र (कोसोत्तर प्रौद्योगिकी संस्थान) केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा को दिया गया । पुरस्कार में एक राजभाषा शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया । उत्कृष्ट कार्य करने वाले अन्य विभागों को भी प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये।

बालाघाट

वर्ष 2007-08 की प्रथम बैठक समिति के अध्यक्ष श्री देबाशीष दास, वैज्ञानिक-डी, केंद्रीय रेशम बोर्ड की अध्यक्षता में केंद्रीय विद्यालय, भरवेली, बालाघाट के सभाकक्ष में दिनांक 22-8-2007 को आयोजित की गई । इस अवसर पर अध्यक्ष महोदय ने सर्वप्रथम उपस्थित समस्त सदस्यों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि किसी भी देश के विकास के लिए उस देश की एक निश्चित राष्ट्रभाषा का कार्यरूप में होना अति आवश्यक है, जिसके माध्यम से शासनतंत्र द्वारा सही मायने में विभिन्न योजनाएं बना कर देश के संपूर्ण विकास के लिए कार्य करते हुए नागरिकों की सेवा कर सकता है । अत: हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि हम देश की राजभाषा "हिंदी" में ही अपने समस्त शासकीय कार्य निबटाने का प्रयास करें । इस अवसर पर सदस्य सचिव महोदय द्वारा अपने चयन पर सभी को धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि यह एक ऐसा मंच है जहां से हम अपने सामूहिक प्रयासों से राजभाषा के कार्यान्वयन को बढ़ावा दे सकते हैं तत्पश्चात् बैठक की कार्रवाई प्रारम्भ करते हुए पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर हुई अनुवर्ती कार्रवाई की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई । समिति को सूचित किया गया कि सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा नियम की धारा 3(3) के अन्तर्गत जारी किए गए अधिकांश पत्र जैसे ज्ञापन, आदेश, परिपत्र, निविदा सूचना एवं प्रेस विज्ञप्ति आदि हिंदी भाषा में ही जारी हुए हैं, जिस पर अध्यक्ष महोदय द्वारा अपनी खुशी व्यक्त करते हुए सदस्यों से अपेक्षा की कि यदि भविष्य में ऐसा कोई पत्र अंग्रेजी में जारी हो गया हो तो उसका हिंदी रूप भी जारी करें ।

शिवपुरी

दूरसंचार वाहिनी, आई.टी.बी.पी. वाहिनी मुख्यालय में दिनांक 30-8-07 को शिपुरी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक का आयोजन श्री महेश कलावत, द्वितीय कमान की अध्यक्षता में किया गया । बैठक में शिवपुरी नगर के केंद्रीय सरकार कार्यालयों-सपोर्ट वाहिनी करैरा, दूरदर्शन, आकाशवाणी, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर, भारतीय जीवन बीमा निगम, न्यू इंडिया एश्योरैंस, ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स, केंद्रीय विद्यालय शिवपुरी व करैरा, भारतीय डाक तार विभाग, आसूचना ब्यूरो, बैंक ऑफ बड़ौदा, आयकर विभाग एवं आई.टी.बी.पी. के प्रशासनिक अधिकारियों ने भाग लिया ।

श्री महेश कलावत, द्वितीय कमान, कार्यवाहक अध्यक्ष शिवपुरी नराकास ने अधिकारियों को बताया कि हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया । उसी अनुसार हिंदी को राजभाषा का संवैधानिक दर्जा प्राप्त है । भारत बहुभाषी देश है । यहां सभी भाषाएं एक दूसरे का आदर करती हैं और हिंदी आम बोल चाल की भाषा होने के कारण, सारे देश में

संपर्क भाषा का कार्य कर रही है । पूरे देश को एक सूत्र में पिरोए हुए है और सशक्त भाषा बनकर उभरी है । हिंदी भाषा आज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना स्थान बना रही है । हिंदी भाषा में कंप्यूटर साफ्टवेयर विकसित होने से, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में गुणात्मक परिवर्तन आया है । आकाशवाणी, दूरदर्शन, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, विज्ञापनों, चलचित्रों, प्रशासन, व्यापार विज्ञापनों, संसद में, साहित्य, विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान आदि क्षेत्रों में इसका प्रयोग हो रहा है । हिंदी देश के अलग-अलग भागों में भिन्न-भिन्न माध्यमों से प्रचलित है और इसका किसी न किसी रूप में ज्ञान हर किसी को है । दक्षिण भारत में जहां हिंदी मातृभाषा नहीं है वहां भी आज संगीत या फिल्मों के माध्यम से हिंदी का प्रयोग होता है ।

उन्होंने अधिकारियों को सुझाव दिया कि सरकारी कामकाज में सरल हिंदी का प्रयोग करें । साहित्यिक भाषा की कार्यालय में कोई उपयोगिता नहीं है । हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग करें, जिसे सभी आसानी से समझ सकें । हिंदी में कार्य करते समय सामान्यरूप से अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों का बेहिचक प्रयोग करें । जहां भी लगे हिंदी शब्द को समझने में पढ़ने वालों को कठिनाई हो सकती है वहां मूल अंगेजी शब्द को कोष्ठक में हिंदी में लिखें । आधुनिक यन्त्रों या कलपुर्जों तकनीकी विषयों आदि के लिए मूल अंग्रेजी शब्द ही अपनाएं। परन्तु उन्हें हिंदी/देवनागरी में लिखें । लम्बे उलझे वाक्यों के स्थान पर छोटे-छोटे और सरल वाक्यों का लिखने का अभ्यास करें ।

मंडी (हि.प्र.)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंडी की छ:माही बैठक दिनांक 31-7-2007 को सायं चार बजे आयकर अपर आयुक्त एवं अध्यक्ष नराकास मंडी श्री सुनील वर्मा की अध्यक्षता में आयोजित की गई । अध्यक्ष महोदय की अनुमति से बैठक का संचालन श्री सुरेन्द्र शर्मा सहायक निदेशक (रा.भा.) मुख्य आयकर आयुक्त, कार्यालय शिमला ने किया ।

अध्यक्ष महोदय ने सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि "आप सब अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर बैठक में आएं इस हेतु आप सबका धन्यवाद''। यह समिति हम सब की सांझा समिति है और हम सब के कार्यालयों में एक दूसरे के सहयोग से राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए गठित की गई है । समिति के सभी सदस्य कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए अपने-अपने ढंग से प्रयास हो रहे हैं लेकिन हमारे प्रयास सरकार और संसदीय समिति की अपेक्षाओं के अनुसार होने चाहिएं । जब कभी भी संसदीय समिति हमारे किसी कार्यालय का निरीक्षण करे तो हम इस स्थिति में हों कि अपने कार्यालय के बारे में उनको गर्व से बता सकें । आज की बैठक में जो भी चर्चा हुई है और निर्णय लिए गए हैं उन्हें आप पूरी तरह से अपने कार्यालयों में लागू करवाएं और यह प्रयास करें कि समिति की बैठकों में कार्यालय अध्यक्ष अनिवार्य तौर पर स्वयं आएं।

पानीपत

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पानीपत की वर्ष 2007 की दूसरी बैठक दिनांक 19-7-2007 को श्री चक्रपाणी मनोहरन, कार्यकारी निदेशक पानीपत रिफाइनरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । बैठक में राजभाषा विभाग के उप निदेशक (कार्या.) श्री प्रेम सिंह बतौर राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित थे ।

दिनांक 28-3-2007 की बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव, श्री एस. के. त्रिपाठी ने सदस्यों को अवगत कराया और कार्यवृत्त की पुष्टि की गई ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय नई दिल्ली से पधारे उप निदेशक (कार्या.) डा. प्रेम सिंह ने प्रत्येक कार्यालय से अनुरोध किया कि वे अपनी छ:माही रिपोर्ट नियमित रूप से समिति के कार्यालय को तथा राजभाषा विभाग को अनिवार्य रूप से भिजवाएं, जिससे उनके द्वारा हिंदी कार्यान्वयन हेतु किए जा रहे प्रयासों का अवलोकन एवं समीक्षा किया जा सके । साथ ही प्रत्येक कार्यालय के प्रधान नराकास की बैठक में अनिवार्य रूप से हिस्सा लें ।

समिति के अध्यक्ष श्री सी. मनोहरन ने समिति के क्रिया-कलापों पर संतोष प्रकट करते हुए सदस्यों से अनुरोध किया कि हिंदी कार्यान्वयन के वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक सदस्य हर संभव प्रयास करें । इसके लिए कार्य योजना बनाएं और उसे कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित करें । उन्होंने सितंबर माह में हिंदी पखवाड़ा/सप्ताह के आयोजन का जिक्र करते हुए कहा कि इसका आयोजन केवल खानापूर्ति न हो बल्कि इसका आयोजन गंभीरतापूर्वक होना चाहिए ।

जयपुर

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की 53वीं अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 22-8-2007 को अपराह्न 3.00 बजे महालेखाकार भवन, जयपुर के मनोरंजन कक्ष में आयोजित की गई । इस बैठक को जयपुर नगर स्थित केंद्रीय सरकार के विभिन्न कार्यालयों के कार्यालयाध्यक्ष/प्रतिनिधिगणों ने अपनी उपस्थिति से सफल बनाया ।

श्रीमती मीनाक्षी मिश्रा महालेखाकार (ले. व हम.) राजस्थान एवं पदेन अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन

समिति (केंद्रीय कार्यालय), जयपुर ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में उपस्थित सभी कार्यालयाध्यक्षों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि आप अपने-अपने व्यस्तम कार्यक्रमों में से समय निकालकर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जयपुर की इस बैठक में आए हैं, इसके लिए मैं आप सभी की बहुत आभारी हूं। साथ ही कहा कि इस बैठक में हमें हिंदी के कार्य में हुई प्रगति का लेखा-जोखा रखने का मौका मिलता है। अधिकतर कार्यालयों से प्राप्त छ:माही प्रतिवेदनों से ज्ञात होता है कि राजकाज में राजभाषा के प्रयोग में काफी प्रगति हुई है, परन्तु कुछ कार्यालयों से छ:माही प्रतिवेदन प्राप्त नहीं होने की बात का भी उन्होंने उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि महात्मा गांधी जी ने भी हिंदी को सम्पूर्ण भारत की राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया था। उन्होंने वर्ष 2006-07 के दौरान राजकाज में राजभाषा में श्रेष्ठ कार्य करने वाले पुरस्कार विजेता कार्यालयों को बधाई देते हुए कहा कि पुरस्कार मूल्यांकन समिति के अध्यक्ष कार्यालय ने इस कठिन कार्य को पूरी पारदर्शिता रखते हुए उत्तम प्रकार से पूरा किया है। अपने संबोधन के अन्त में उन्होंने एक बार पुन: सभी का आभार व्यक्त किया।

इलाहाबाद

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, इलाहाबाद की वर्ष 2007-2008 की पहली बैठक दिनांक 30-8-2007 को अपराह्न 4.00 बजे माननीय आयकर आयुक्त श्री आर.के. जैन की अध्यक्षता में आयोजित की गई। इस बैठक में 57 कार्यालयों के 115 अधिकारियों सहित केंद्रीय विद्यालयों के प्रधानाचार्य आदि उपस्थित थे।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री आर.के. जैन ने कहा कि देवनागरी लिपि पूर्णतया वैज्ञानिक लिपि है, इसलिए यह अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। हमें सहजता से हिंदी को अपनाना होगा और ऐसे वातावरण का निर्माण करना होगा जो कि हिंदी के विकास के अनुकूल हो। उन्होंने बताया कि राजभाषा के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान की है, जब तक उच्च स्तर पर हिंदी कार्यान्वयन का प्रयास नहीं किया जाएगा, राजभाषा का कार्यान्वयन बाधित होगा। प्रत्येक विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों के पहल करते ही अधीनस्थ कर्मचारी स्वयं हिंदी में कामकाज शुरू कर देंगे।

शिमला

शिमला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक दिनांक 4-10-2007 को सायं 3 बजे मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, रेलवे बोर्ड भवन के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्य आयकर आयुक्त एवं समिति अध्यक्ष श्री पी. के. चोपड़ा जी ने की।

सूचित किया गया कि पिछली बैठक में लिए गए निर्णयानुसार नगर स्तर हिंदी कार्यशाला का आयोजन दिनांक 19 एवं 20 जुलाई, 2007 को आयकर कार्यालय में किया गया। जिसमें नगर के 7 कार्यालयों से 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सदस्य सचिव ने कहा कि कार्यशाला में अपेक्षित संख्या में प्रतिभागी नहीं आए। अत: जो कार्यालय अपने स्तर पर कार्यशाला आयोजित नहीं कर पाते हैं वे भविष्य में अवश्य कर्मचारी नामित करें।

पिछली बैठक में लिए गए निर्णयानुसार उप समिति की बैठक दिनांक 18 जुलाई को आयोजित की गई जिसमें हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित करवाने के संबंध में निर्णय लिए गए। तद्नुसार नगर स्तर पर 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया। श्री ध्रुव शर्मा, प्रबंधक राजभाषा, पंजाब नेशनल बैंक ने इनकी विस्तृत जानकारी सदस्यों को दी।

राजभाषा विभाग के प्रतिनिधि डॉ. सरोज कुमार त्रिपाठी ने अपने संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारी राजनैतिक, ऐतिहासिक व सामाजिक आवश्यकता है। लोकतंत्र लोक के लिए है। लोक को महत्व देने के लिए ही सूचना का अधिकार अधिनियम लाया गया है। भारत की 1 अरब 10 करोड़ जनता को उसकी भाषा में ही सूचना/जानकारी उपलब्ध करवाने के लिए हिंदी का प्रयोग आवश्यक है।

अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि समिति की बैठक में इतनी बड़ी संख्या में सदस्य उपस्थिति उनके लिए बहुत खुशी की बात है।

आज की बैठक में जो भी चर्चा हुई है या निर्णय लिए गए हैं आप कृपया उन्हें अपने-अपने कार्यालयों में अवश्य लागू करवाएं। बैठक में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा दिए गए निदेशों की चर्चा की गई है। संसदीय समिति कभी भी किसी भी कार्यालय का निरीक्षण कर सकती है। अत: सभी सदस्य कार्यालयों में नियमों और आदेशों का अवश्य पालन होना चाहिए। सभी कार्यालय नियम 8(4) के अधीन आदेश जारी करें। जिन कार्यालयों में पहले ही आदेश दिए जा चुके हैं वे भी इनकी समीक्षा करें। यदि कोई अधिकारी/कर्मचारी इनसे छूट गया हो तो पुन: आदेश जारी करें। इन कर्मचारियों से हिंदी में ही कार्य करवाएं। संसदीय समिति का कहना है कि नगर में स्थित केंद्रीय कार्यालयों में राजभाषा के कार्यान्वयन का दायित्व इस समिति का है। अत: हम सबको मिलकर अपने कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रयास करने हैं। ■

(ग) कार्यशालाएं

क्षेत्रीय मूंगा अनुसंधान केंद्र, बोको

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

क्षेत्रीय मूंगा अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, बोको में दिनांक 28 अगस्त, 2007 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. हरीश चंद्र महापात्र, वैज्ञानिक-घ ने की और श्री सर्वेश्वर महन्त, सेवा-निवृत्त हिंदी शिक्षक बोको हाईस्कूल को कार्यशाला के उद्घाटन समारोह का मुख्य अतिथि एवं कक्षा में व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में अपने मत व्यक्त करते हुए डा. हरीश चंद्र महापात्र, वैज्ञानिक-घ ने सभी को आह्वान किया है कि सभी ने अपनी राष्ट्रभाषा को पूरी तरह कार्यालय में व्यवहार हेतु प्रयास करना चाहिए। डॉ. ए.के. साहु, वैज्ञानिक-ग ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि हिंदी एक सहज-सरल भाषा है और इसे शीघ्र अपनाया जा सकता है, अत: हमें हिंदी को आगे बढ़ाने हेतु आगे आना चाहिए। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि के वक्तव्य में श्री महन्त जी ने कहा कि हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अनुमोदित करते समय देश के कुछ प्रान्तों से आपत्ति आई थीं परन्तु बाद में सभी ने इसको अपना लिया है।

श्री सर्वेश्वर महन्त जी ने कार्यशाला के अन्तर्गत कक्षा ली। कक्षा में उन्होंने उपस्थित सभी सदस्यों को हिंदी व्याकरण सीखने की सहज-सरल पद्धति बताई। उन्होंने कार्यालयीन पत्र, परिपत्र, आदेश लिखने के उपाय पर भी चर्चा की। प्रेस रपट किस तरह से लिखा जाता है उस पर भी उन्होंने प्रकाश डाला एवं कुछ व्याकरण संबंधी त्रुटियों के समाधान पर भी चर्चा की।

कक्षा में इस कार्यालय एवं अधीनस्थ इकाईयों से आए लगभग 24 अधिकारी तथा कर्मचारियों ने भाग लिया। कक्षा में उपस्थित सदस्यों द्वारा कुछ व्याकरण संबंधी गलतियों पर प्रश्न उठाया एवं इसके समाधान पर भी चर्चा हुई। कक्षा पर सभी ने संतोष व्यक्त किया एवं कहा कि इसी तरह की कक्षा से उन सबकी काफी ज्ञान मिलता है जो कार्यालय में कार्य करने में सहायक होता है। इसके बाद तकनीकी कक्षा आयोजित की गई। तकनीकी कक्षा में बोलचाल हिंदी में ही किया गया।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग

एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के पूर्वोत्तर क्षेत्रीय कार्यालय शिलांग में दिनांक 26-7-2007 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता श्री मुकल तिवारी, निदेशक मानचित्रण कला प्रभाग ने किया। डा. टी.के. सिन्हा, राजभाषा अधिकारी एवं रसायनविद् (कनि.) ने अपने स्वागत भाषण के दौरान उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से सरकारी कार्य हिंदी में करने का अनुरोध किया। अध्यक्ष महोदय ने इस अवसर पर हिंदी की महत्ता एवं इसके प्रयोग पर संक्षिप्त प्रकाश डाला तथा उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों से अपना सरकारी कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करने का आह्वान किया। तत्पश्चात् श्री जे.पी. दाम्हे, उपनिदेशक (राजभाषा), भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (मुख्यालय), कोलकाता ने हिंदी कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डाला। श्री संजीव शर्मा, निदेशक (तकनीकी समन्वय-2) ने कहा कि हिंदी में काम करना बहुत आसान है, अत: हमें ज्यादा से ज्यादा सरकारी काम हिंदी में करना चाहिए। डा. ए. अबसार, निदेशक, शैलिकी प्रभाग ने हिंदी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यशाला में कुल 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इन्हें राजभाषा के महत्व, इससे संबंधित विभिन्न आदेशों एवं इसके क्रियान्वयन के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ हिंदी में टिप्पण/आलेखन का अभ्यास भी कराया गया।

परमाणु ऊर्जा विभाग, भारी पानी संयंत्र, तूतीकोरिन, तमिलनाडु

भारी पानी संयंत्र तूतीकोरिन में दिनांक 6-7 सितंबर को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्घाटन महाप्रबंधक श्री वी.वी.एस. रामाराव ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री रामाराव ने

कहा कि हम नियमानुसार हर तिमाही में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन कर अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित कर रहे हैं, जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों से भी नामांकन प्राप्त कर उनकी भागीदारी सुनिश्चित की जाती है । मुझे आशा है धीरे-धीरे व थोड़ा-थोड़ा कार्य आप हिंदी में करने की शुरुआत जरूर करें एवं अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व निभाएं ।

इस अवसर पर राभाकास सचिव श्री मनोज शर्मा ने बताया कि हमारा कार्यशाला आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कार्मिकों को कार्यालय में राजभाषा में काम करने संबंधी प्रशिक्षण देना है । उन्होंने कार्मिकों के कार्यसाधक ज्ञान संबंधी परिभाषा बताते हुए कहा कि उन्हीं कार्मिकों को नामित करें जिन्हें कार्यसाधक ज्ञान हो । अन्यथा कार्यशाला में प्रशिक्षण देने का हमारा मूल उद्देश्य सफल नहीं होगा ।

कार्यशाला में भारी पानी संयंत्र के कार्मिकों के साथ-साथ नराकास, तूतीकोरिन के सदस्य कार्यालयों जिनमें डाक विभाग, भारत पेट्रोलियम कारपोरेशन, तटरक्षक अवस्थान, CISF, CMFRI, जिरकोनियम काम्पलेक्स, बीएसएनएल, FCI आदि कार्यालयों के प्रतिभागियों को भी प्रशिक्षण दिया गया । इस दो दिवसीय कार्यशाला में "राजभाषा के विविध उपबंध", ज्ञान प्रबंधन, पेंशन, नियम, छुट्टी रियायत, हिंदी व्याख्या, मानक टिप्पणियां, कंप्यूटर हार्डवेयर, मानसिक स्वास्थ्य एवं अनुवाद संबंधी विषयों पर व्याख्यान संयंत्र के प्रशासन अधिकारी, सहायक कार्मिक अधिकारी, सहायक निदेशक (राजभाषा), प्रवर श्रेणी लिपिक एवं हिंदी अनुवादक द्वारा प्रस्तुत किए गए ।

आकाशवाणी, नागपुर

आकाशवाणी, नागपुर में मंगलवार, दिनांक 25 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस/पखवाड़े के दौरान हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । आकाशवाणी, नागपुर की राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित इस कार्यशाला का शुभारंभ, राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष केंद्र निदेशक श्री चेतन एस. नाईक की उपस्थिति में संपन्न हुआ ।

प्रमुख वक्ता श्री सोमपाल सिंह ने "हिंदीतर भाषियों को हिंदी लिखने में होने वाली कठिनाईयां" इस विषय पर मानक वर्तनी का देवनागरी लिपि में उच्चारण के आधार पर शब्दों में ह्स्व एवं दीर्घ मात्रा का उपयोग कैसे किया जाता है इस बाबत बोर्ड पर वाक्य बनाकर विस्तार से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जानकारी दी गई ।

कार्यशाला में आकाशवाणी, नागपुर के 38 अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे ।

अंत में प्रभारी हिंदी अधिकारी श्री संजय एस. भक्ते ने प्रमुख अतिथि एवं सभी अधिकारी तथा कर्मचारियों को इस आयोजन को सफल बनाने में विशेष योगदान के लिए आभार प्रकट किया ।

लेखा कार्यालय, गोला बारूद फैक्टरी, खड़की, पुणे

राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ करने, सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक को दूर करने, टिप्पणी, प्रारूप/मसौदा लेखन, पत्र-लेखन एवं अधिक से अधिक कार्यालयीन कामकाज कंप्यूटर पर करने के उद्देश्य से दिनांक 23-7-2007 से 27-7-2007 के दौरान पांच दिवसीय पूर्णकालिक द्वितीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री बनवारी स्वरूप, भा.र.ले.से. वित्त एवं लेखा नियंत्रक (फै.), खड़की निर्माणी समूह के द्वारा किया गया । उद्घाटन भाषण में उन्होंने हिंदी कार्यशाला आयोजन के उद्देश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए कहा कि कार्यालय में सरकारी कामकाज को हिंदी में करने में आने वाली विभिन्न कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास कार्यशाला के दौरान किया जाएगा, ताकि भविष्य में प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में कर सकें । उन्होंने सभी प्रतिभागियों से अपील की कि वे इस कार्यशाला में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए इस अवसर का भरपूर लाभ उठाएं । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी कार्यशाला का आयोजन तभी सफल माना जाएगा जब कर्मचारी अपना कार्यालयीन कार्य हिंदी में करेंगे ।

कार्यशाला में 16 कर्मचारियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । कार्यशाला में व्याख्यान देने हेतु पुणे स्थित केंद्र सरकार के अन्य कार्यालयों से भी व्याख्याताओं को आमंत्रित किया गया था । इस दौरान राजभाषा संबंधी विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें से मुख्य हैं : संघ की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम/नियम, संकल्प, लेखा नियंत्रक कार्यालयों, अधीनस्थ कार्यालयों तथा अनुभागों के हिंदी नाम, रक्षा लेखा विभाग के प्रयुक्त पदनाम, साधारण टिप्पणियां/मसौदे लिखना, राजभाषा संबंधित महत्वपूर्ण आदेश, तार/फैक्स लिखना, अनुशासनिक मामले, बिलों का भुगतान

तथा लेखा आपत्तियां, आंतरिक लेखा परीक्षा, प्रशासन में प्रयुक्त वाक्यांश व अभिव्यक्तियां, टिप्पणी और मसौदा लेखन फर्नीचर, टेलीफोन लेखन सामग्री, कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य, ई.डी.पी. संबंधित मामले, आवेदन लिखना, प्रशासन में विदेशी अभिव्यक्तियां, पदों का सृजन, भर्ती, नियुक्ति, पदोन्नति एवं स्थानांतरण, पत्राचार से संबंधित शब्दावली, श्रम से संबंधित मामले, पत्राचार के विविध रूप, हिंदी -अंग्रेजी, अंग्रेजी-हिंदी अनुवाद, वेतन लेखा परीक्षा से संबंधित मामले, डॉक्टरी परीक्षा, चरित्र तथा पूर्ववृत्त का सत्यापन तथा सेवा पंजी संबंधी मामले, पेशगियों से संबंधित मामले, लागत तथा सामग्री से संबंधित मामले, यात्रा संबंधी मामले, बैठकें आयोजित करना, शब्दकोश का प्रयोग, हिंदी भाषा और लिपि एवं लेखा कार्यालय के विभिन्न अनुभागों में किए जाने वाले विभिन्न कार्यों को हिंदी में किए जाने संबंधी अन्य व्याख्यान । कार्यशाला के समापन पर सभी प्रतिभागियों से कार्यशाला की उपयोगिता एवं इसके उद्देश्य प्राप्ति पर लिखित प्रतिक्रिया ली गई । अधिकांश प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाएं उत्साहवर्धक थीं, जिनमें यह उल्लेख था कि इस प्रकार कार्यशालाएं और अधिक आयोजित की जाएं । कार्यशाला के समापन पर श्री ए.एन.जी. नायर, भा.र.ले.से. वित्त एवं लेखा उपनियंत्रक (फै.) द्वारा सभी प्रतियोगियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए ।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन

मुख्य नियंत्रण सुविधा, अंतरिक्ष विभाग, हासन में दिनांक 17 सितंबर, 2007 को समूह-घ के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई ।

डॉ. सी. जी. पाटिल, निदेशक, एमसीएफ ने कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए कहा कि एमसीएफ में प्रत्येक तिमाई में राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बारी-बारी से प्रशिक्षण दिलवाया जा रहा है । आपने आगे कहा कि कार्यालयों में सभी कर्मचारियों/अधिकारियों को अपना सरकारी कामकाज अधिक-से-अधिक हिंदी में करने के लिए प्रयास करना होगा । कार्यशाला के आयोजन का उद्देश्य है कि इससे सभी अपना ज्ञान बढ़ाएं और अपने दैनंदीन कार्यों में उस ज्ञान का वास्तविक उपयोग करें तभी यह प्रयास सफल होगा ।

श्री एच.आर. चंद्रशेखर प्रधान का. एवं सा.प्रशा./आं. वि.स. ने अपने भाषण में, समूह-घ वर्ग के लिए भी इस तरह की कार्यशाला आयोजित करने के लिए विभाग द्वारा उठाए गए कदम की सराहना की और कहा कि यह सभी के लिए हितकारी साबित होगी । आपने आगे कहा कि आप सभी को विभाग द्वारा प्रारंभ की गई प्रोत्साहन योजना का भी लाभ उठाना चाहिए ।

श्री बी.वी. कानडे, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि कर्मचारियों को कम से कम व्यवहारिक ज्ञान तो रहना चाहिए ताकि कार्यालय में प्रशासनिक कार्यों में हिंदी का प्रयोग कर सकें ।

श्री एस.एन. रामकृष्ण, वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी ने सत्र संचालन के दौरान सभी कर्मचारियों को दैनंदीन कार्यालयीन कार्यों के प्रयोगार्थ छोटे-छोटे वाक्यों का अभ्यास करवाया। विभाग द्वारा घोषित प्रोत्साहित योजना के बारे में जानकारी देकर ज्यादा से ज्यादा हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, फरीदाबाद

भूजल शब्दावली कार्यशाला

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय, फरीदाबाद में दिनांक 5-6 नवंबर, 2007 को वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के सौजन्य से दो दिवसीय भूजल शब्दावली कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री एस.के. सिन्हा, निदेशक (प्रशा.) ने कहा कि हमें प्रशासनिक कार्यों में ही नहीं, बल्कि तकनीकी रिपोर्ट एवं वैज्ञानिक आलेख लिखने के लिए भी हिंदी का अधिक से अधिक उपयोग करना चाहिए । उन्होंने आशा व्यक्त की कि कार्यशाला बोर्ड में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में उपादेय सिद्ध होगी । वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के वैज्ञानिक अधिकारी श्री एम.एल. मीणा ने आयोग द्वारा शब्द निर्माण के सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं कहा कि कोई भी शब्द आयोग द्वारा अनुमोदन के बिना प्रामाणिक नहीं होता । आयोग को भारत सरकार ने शब्द निर्माण हेतु अधिकृत किया है । अतः शब्दावली प्रकाशन के पूर्व आयोग का अनुमोदन आवश्यक है । संकाय सदस्य के रूप में श्री एम.एल. मीणा, वैज्ञानिक अधिकारी श्री जयसिंह, उपनिदेशक (सेवानिवृत्त), श्री एस.पी. अरोड़ा, सहायक निदेशक (सेवानिवृत्त), डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह, उपनिदेशक (रा.भा.), केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, श्री राजेंद्र सिंह पवार, अधिकारी सर्वेक्षक, केंद्रीय भूमि जल बोर्ड, भोपाल ने विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिया ।

759 HA/08—9A

दिनांक 6-11-2007 को कार्यशाला का समापन एवं प्रमाण पत्र वितरण समारोह संपन्न हुआ । इस अवसर पर केंद्रीय भूमि जल बोर्ड के अध्यक्ष श्री बी. एम. झा उपस्थित थे । दो दिवसीय भूजल शब्दावली कार्यशाला की समीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के वैज्ञानिक अधिकारी श्री एम.एल. मीणा ने कहा कि इस कार्यशाला में सम्मिलित प्रतिभागियों ने पर्याप्त रूचि ली और कक्षा को जीवंत बनाए रखा । निदेशक (प्रशा.) श्री एस.के. सिन्हा ने इस आयोजन हेतु वैज्ञानिक-तकनीकी शब्दावली आयोग को धन्यवाद दिया । प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री बी.एम. झा, अध्यक्ष ने कहा कि इस तरह के आयोजनों से ज्ञान-विज्ञान व शासन-प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी प्रयोग में वृद्धि होती है । अध्यक्ष महोदय ने आशा व्यक्त की कि इस कार्यशाला से अधिकारियों-कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने में सहायता मिलेगी । कार्यशाला में केंद्रीय भूमि जल बोर्ड के साठ अधिकारियों ने भाग लिया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया । अंत में कार्यशाला के संयोजक एवं उपनिदेशक (रा.भा.) डॉ. वीरेंद्र कुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

महानिदेशालय, भा.ति.सी.पु. बल

'हिंदी कार्यशाला' का आयोजन

महानिदेशालय, भा.ति.सी. पुलिस द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन एवं सरकारी काम हिंदी में करने में कर्मचारियों की झिझक दूर करने के लिए यू.एन. सिवपोल सैंटर, तिगड़ी में बल की विभिन्न इकाइयों आदि से आए 23 है.कां./सी.एम. के लिए 24-9-2007 से 3-10-2007 तक "अर्ध दिवसीय हिंदी कार्यशाला" आयोजित की गई ।

महानिदेशालय द्वारा आयोजित इस हिंदी कार्यशाला में केंद्रीय अभिलेख कार्यालय के दल संख्या 890201139 है.कां./सी.एम. जयसिंह ने प्रथम एवं दल संख्या 890070015 है.कां./सी.एम. रिखी राम, परिवहन वाहिनी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया । उल्लेखनीय है कि महानिदेशालय द्वारा प्रत्येक कार्यशाला की समाप्ति पर प्रशिक्षणार्थियों की एक घंटे की वस्तुनिष्ठ किस्म की लिखित परीक्षा ली जाती है ताकि इसमें भाग लेने वाले कार्मिक कार्यशाला के प्रति पूर्ण गंभीरता अपनाएं । इस कार्यशाला के प्रशिक्षणार्थियों को महानिदेशालय में आयोजित एक सादे समारोह में मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक (प्रशासन) अब महानिरीक्षक (केंद्रीय) परिक्षेत्र द्वारा "प्रमाणपत्र" एवं "सहायक साहित्य" भेंट किया गया ।

श्री नन्द लाल, अपर उप-महानिरीक्षक (प्रशासन) ने अपने स्वागत संबोधन में आशा प्रकट की कि हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन से हर स्तर पर सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा और कार्मिकों की हिंदी में काम करने में आने वाली कठिनाइयां एवं झिझक दूर होगी । उन्होंने अवगत कराया कि इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़े विभिन्न विषयों की व्यावहारिक कक्षाओं को भी आयोजित किया गया और सभी प्रशिक्षणार्थियों ने इसमें उत्साह और रूचि से भाग लेकर कार्यशाला को सफल बनाया । उन्होंने परिणाम की घोषणा करते हुए समस्त प्रशिक्षणार्थियों को बधाई दी ।

मुख्य अतिथि श्री प्रमोद अस्थाना, भा.पु.से., उप महानिरीक्षक (प्रशासन) अब महानिरीक्षक (केंद्रीय) परिक्षेत्र ने सर्वप्रथम सभी प्रशिक्षणार्थियों को कार्यशाला में रूचिपूर्वक भाग लेने और इसके सफल आयोजन के लिए बधाई दी । उन्होंने कहा कि यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि महानिदेशालय स्तर पर बल के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए प्रत्येक तिमाही में नियमित रूप से इन कार्यशालाओं का आयोजन राजभाषा अनुभाग द्वारा किया जा रहा है ।

मुख्य अतिथि ने इस बात पर जोर दिया कि सरकारी कार्य में हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग करें । उन्होंने यह भी कहा कि शब्दावली में कुछ शब्द कठिन हैं परंतु इसका यह अर्थ नहीं कि उनका प्रयोग न करें । शब्द को प्रयोग करने से ही वह प्रचलन में आता है और तभी हम उसे समझ सकते हैं । जहां पर हिंदी में कठिन शब्द का प्रयोग जरूरी हो वहां पर उसका प्रयोग अवश्य करें और साथ-साथ कोष्ठक में अंग्रेजी का शब्द भी लिख दें ताकि उसे समझने में कोई कठिनाई न हो । उन्होंने कहा कि हिंदी को अपने कार्य- व्यवहार में अपनाएं, साथ ही अध्ययन करते हुए भाषा का ज्ञान बढ़ाएं और उसे सरकारी कामकाज में प्रयोग लाएं । अपने सहकर्मियों को भी इस प्रकार अर्जित ज्ञान से लाभांवित करें । उन्होंने आशा व्यक्त की कि प्रशिक्षणार्थियों ने कार्यशाला में काफी सीखा होगा और अगर कुछ कमी रह गई हो तो उसे अपने प्रयासों से सीखें । उन्होंने कहा कि कार्यशाला में जो सीखा है उसे अपने साथियों में भी बांटिए । अपने सहभागियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करें, तभी हिंदी कार्यशाला के आयोजन की सार्थकता सिद्ध होगी ।

759 HA/08—9B

मुख्यालय : मुख्य अभियंता, सेवक परियोजना
पिन 931 714
द्वारा–99 सेना डाकघर

मुख्यालय में दिनांक 5 सितम्बर से 7 सितम्बर 2007 तक एक तीन दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला की अवधि प्रतिदिन 15.00 बजे से दोपहर 17.30 बजे तक ढ़ाई घंटे की थी। हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन परियोजना के हिंदी अधिकारी श्री आर.एस. घेरा, संयुक्त निदेशक (प्रशा.) ने की ।

इस कार्यशाला में परियोजना सेवक मुख्यालय तथा स्थानीय यूनिटों के 24 कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में कार्यशाला आयोजित करने के उद्देश्य, हिंदी लिपि, बर्तनी, पत्र, परिपत्र, नोटिंग, अन्तर कार्यालय टिप्पणी आदि के अभ्यास के साथ पत्र व्यवहार तथा दैनिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले वाक्यांशों का भी अभ्यास कराया गया तथा हिंदी में प्रोत्साहन योजनाओं एवं राजभाषा नियम/अधिनियम/ संकल्प आदि के बारे में भी कर्मचारियों को जानकारी दी गई ।

कार्यशाला के समापन समारोह की अध्यक्षता श्री आर.एस.घेरा, संयुक्त निदेशक (प्रशा.), परियोजना के हिंदी अधिकारी ने की। इस अवसर पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि जैसा कि आप लोगों को पता ही है कि इस बार सीमा सड़क महानिदेशालय से हिंदी की राजभाषा चल शील्ड हमारी परियोजना को मिली है इस अवसर पर मैं आप सबको बहुत-बहुत बधाई देता हूँ व उम्मीद करता हूँ कि अगले साल भी यह शील्ड हमें ही मिले लेकिन यह तभी संभव है जब आप लोग इस साल भी पिछले साल की तरह ही हिंदी के कार्य में पूरी लगन के साथ अधिक से अधिक कार्य करेंगे। अत: मेरी आप लोगों से विनती है कि आप लोग अपने दैनिक सरकारी कार्य में सरल हिंदी का प्रयोग करें जिससे कि आपकी बात दूसरों की समझ में आसानी से आ सके। इस कार्यशाला में बताई गई बातों का उपयोग अपने दैनिक सरकारी काम काज में करें और आप अपने अंदर हिंदी में कार्य करने की इच्छा जगाएं तभी हम अपनी उम्मीदों पर खरे उत्तर पाएंगे।

भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड

भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड, सामूहिक कार्यालय, बेंगलूर में दिनांक 14-09-2007 को हिंदी दिवस प्रतिज्ञा के साथ हिंदी दिवस समारोह बड़े उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ शुरू किया गया। श्री वी.एम. चमोला, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) ने बेमल के अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी दिवस प्रतिज्ञा दिलाया तथा सभी अधिकारी/कर्मचारी ने उसे दोहराया ।

इस उपलक्ष्य में दि. 26-09-2007 को अधिकारियों/ कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें बेमल सामूहिक कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी, विशेषकर नव नियुक्त अधिकारी/कर्मचारी ने बड़े उत्साह से भाग लिया। श्री वी.एम. चमोला, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) ने कार्यशाला की अध्यक्षता की। उन्होंने अपने प्रेरणात्मक अध्यक्षया भाषण के माध्यम से प्रतिभागियों को हिंदी में कार्यालयीन काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रयोग से देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दूरी घटी है तथा पूरे देशवासी राष्ट्रीय एकता की इस कड़ी से जुड़े हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भले ही अंग्रेजी का प्रयोग आवश्यक हो, लेकिन अपने देश में आपसी संपर्क तथा संबंधों के लिए हिंदी ही जरूरी है। अत: हमें अंग्रेजी ही नहीं, हिंदी में भी काम-काज करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

डॉ.एम.शंकर प्रसाद, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स लिमिटेड (एच.ए.एल.) कार्यशाला के संकाय सदस्य के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने राजभाषा की संवैधानिक स्थिति, संविधान में राजभाषा से संबंधित विभिन्न अनुच्छेद, राजभाषा अधिनियम, नियम आदि विषयों से प्रतिभागियों को अवगत कराया ।

पारादीप पत्तन न्यास

दि. 27-07-2007 को हिंदी प्रशिक्षण केंद्र में पारादीप पत्तन न्याय के अधिकारी तथा कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। श्री आर॰ सी॰ मिश्र, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, राजभाषा विभाग ने प्रतिभागियों को हिंदी टिप्पण तथा प्रारूप लेखन में आ रही कठिनाइयों का हल करते हुए शुद्ध टिप्पण तथा प्रारूप लेखन का प्रशिक्षण दिया और कार्यालय में उपलब्ध कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करने हेतु सुझाव दिया। अंत में श्री एन. के. पटनायक, हिंदी अधिकारी ने सभी प्रतिभागियों को हिंदी कार्यशाला में भाग लेने के लिए धन्यवाद दिया और कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे अपने कार्यालयी कार्यों में हिंदी का अधिक प्रयोग करें साथ ही कंप्यूटर पर भी हिंदी में काम करें।

गुवाहाटी रिफाइनरी

हिंदी के प्रसार-प्रचार तथा कार्यालयीन काम काज में हिंदी को बढ़ावा देने हेतु गुवाहाटी रिफाइनरी प्रशिक्षण केंद्र में दिनांक 15-10-07 को गुवाहाटी रिफाइनरी के कर्मचारियों, अधिकारियों तथा हिंदी संयोजकों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सहायक निदेशक श्री अशोक कुमार मिश्र की उपस्थिति में कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन गुवाहाटी रिफाइनरी के मुख्य प्रबंधक (प्रबंधन सेवाएं व प्रशिक्षण) श्री आर.के. शर्मा ने किया। उद्घाटन भाषण में श्री शर्मा ने देश की एकता तथा अखण्डता के लिए हिंदी का प्रचार-प्रसार की महत्व पर जोर देते हुए कहा कि कार्यालयों में हिंदी का भी अपना मजबूत इच्छा शक्ति के चलते सम्भव है। श्री अशोक कुमार मिश्र ने अपने भाषण में प्रोत्साहन व प्रेरणा के माध्यम से कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने की बात को दोहराया तथा नियमित अभ्यास के द्वारा कार्यालयीन नोटिंग-ड्राफ्टिंग लिखने की पहल करने के लिए सभी को आहवान किया ।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में रक्षा लेखा नियंत्रण कार्यालय से पधारे संकाय सदस्य श्री सौरभ कुमार सिंह ने राजभाषा नीति तथा परिभाषिक शब्दावली के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा द्वितीय सत्र में भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण से संकाय सदस्य के रूप में पधारे डॉ. दुर्गाशरण मिश्र ने हिंदी व्याकरण तथा हिंदी में होने वाली साधारण अशुद्धियों के बारे में व्याख्यान किया। इसी अवसर पर प्रतिभागियों के बीच एक हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता भी आयोजित की गई और विजेताओं को पुरस्कृत किया गया ।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि०, चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा 5 और 6 अक्टूबर, 2007 को संपर्क कार्यालय, शिमला में दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । कार्यशाला का उद्घाटन श्री अर्नेष्ट तिर्की, प्रमुख (मानव संसाधन) ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन संबोधन में कहा कि राजभाषा हिंदी में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। राजभाषा कार्यान्वयन नीति के अनुसार कार्यालय के सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को अपना कार्य हिंदी में करने के लिए कार्यसाधक ज्ञान होना अनिवार्य है। इसी प्रसंग में हिंदी कार्यशालाओं के माध्यम से कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।

इस दो दिवसीय कार्यशाला में श्री देश राज, सहायक राजभाषा अधिकारी ने व्याख्यान दिए। इन्होंने अपने व्याख्यान में कार्यशाला का उद्देश्य, तिमाही प्रगति रिपोर्ट, राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम, प्रोत्साहन योजना, हिंदी पत्राचार, हिंदी में टिप्पण, व्यक्तिगत दावों के फार्म, 8 वीं अनुसूची के तहत भाषाएं, भाषायी तौर पर क,ख,ग क्षेत्रों का वर्गीकरण, प्रशासनिक कार्य में प्रयुक्त होने वाले प्रचलित वाक्यांश आदि विषयों पर प्रकाश डाला ।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में प्रतिभागियों के साथ चर्चा-परिचर्चा के दौरान हिंदी में कार्य करने पर आने वाली कठिनाइयों के संबंध में चर्चा की और यथासंभव समाधान भी किया । अंत में श्री. बी. एम. बंटा, प्रबंधक (यांत्रिक), संपर्क कार्यालय, शिमला ने अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि इस कार्यशाला में हमें बहुत जानकारी प्राप्त हुई है जो हमें हिंदी में कार्य करने के लिए सहायक सिद्ध होगी । उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास रहेगा कि हम इस कार्यालय में हिंदी पत्राचार के **100 प्रतिशत लक्ष्य** को प्राप्त कर सकें।

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि०, फरीदाबाद

निगम मुख्यालय में राजभाषा की प्रगति के लिए दिनांक 31-07-2007 को विभिन्न विभागों में कार्यरत सहायक स्तर के कार्मिकों के लिए एक-दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में विभिन्न विभागों के 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

डॉ राजबीर सिंह, वरि. प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए प्रतिभागियों का आह्वान किया कि वे हिंदी के प्रचार-प्रसार में प्रतिबद्धता से योगदान दें।

इस अवसर पर श्री पी.डी. मिश्रा, प्रबंधक (राजभाषा) ने कार्यशाला में उपस्थित कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि हमें अपना दैनिक कार्यालयीन कार्य हिंदी में करना चहिए । कम्प्यूटरों पर भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करना चाहिए ताकि निगम में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सके और निरधारित लक्ष्यों की प्राप्ति की जा सके।

कार्यशाला के प्रथम सत्र में श्री वी.आर.गोयल, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अपने व्याख्यान में प्रतिभागियों को भारत सरकार की राजभाषा नीति और उसका कार्यान्वयन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी और प्रतिभागियों की शंकाओं/समस्याओं

का समाधान किया। साथ ही "हिंदी में टिप्पण एवं प्रारूपण" विषय पर भी प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी दी।

कार्यशाला के दूसरे सत्र में श्री केवल कृष्ण, तकनीकी निदेशक राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने राजभाषा विभाग की साइट पर उपलब्ध राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विविध जानकारियां देते हुए बताया कि राजभाषा विभाग द्वारा मंत्र एंव श्रुतलेख सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है, जिसके माध्यम से अनुवाद एंव कंप्यूटर पर बोल कर हिंदी में कार्य किया जाना सम्भव है। उन्होंने उपस्थित प्रतिभागियों को हिंदी सॉफ्टवेयर " लीला " की जानकारी भी दी और बताया कि किस प्रकार लीला सॉफ्टवेयर से हिंदी प्रबोध/प्रवीण/प्राज्ञ स्तर का हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है।

एनटीपीसी के टांडा विद्युतगृह

हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 28-9-2007 को विद्युतगृह के कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन टीक्यूएम सम्मेलन कक्ष में किया गया। कार्यशाला का उद्घाटन उप महा प्रबंधक (मा०सं०) श्री मुसाफिर दुबे ने किया। इस अवसर पर उपस्थित कर्मचारियों को संबोधित करते हुए श्री दुबे ने विद्युतगृह में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा अनुभाग की ओर से किए जा रहे प्रयासों की सराहना की तथा कार्यशाला की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं दीं । कार्यशाला के प्रथम सत्र में कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के सरल एवं सहज तरीके से उपयोग तथा द्वितीय सत्र में धारा 3(3) के अंतगर्त आने वाले कागजातों, तिमाही प्रगति रिपोर्ट संबंधी प्रारूप, क, ख, ग क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले प्रांतों, हिंदी प्रोत्साहन योजना के नियम-निर्देशों आदि के बारे में जानकारी दी गई। कार्यशाला में कुल 22 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया ।

केनरा बैंक - कोलकाता

विशेष हिंदी अनुवाद कार्यशाला

प. बंगाल और सिक्किम में स्थित अपनी शाखाओं व कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए केनरा बैंक ने 24 व 25 सितंबर 2007 का एक विशेष हिंदी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें अतिथि वक्ता के रूप में संबोधित करते हुए श्री सतीश कुमार पांडेय, कार्यालयाध्यक्ष, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, भारत सरकार-गृह मंत्रालय ने अनुवाद की बारीकियों से प्रतिभागियों को अवगत कराते हुए शब्दों के नहीं वरन् अर्थ के अनुवाद के महत्व पर प्रकाश डाला और उदाहरणों के साथ भाषाओं की प्रकृति के अनुरूप अनुवाद के बारे में समझाया । बैंकिग से जुड़ रहे नए-नए शब्दों की अनुवाद संबंधी समस्याओं पर भी प्रतिभागियों ने श्री पांडेय से चर्चा की ।

दो दिवसीय इस विशेष प्रशिक्षण में प्रतिभागियों ने विभिन्न प्रकार के अभ्यासों द्वारा सरल वाक्यों, विविध वाक्यांशों, वाउचरों, पत्रों, परिपत्रों व प्रेस विज्ञप्तियों आदि के अनुवाद का प्रशिक्षण लिया ताकि भारत सरकार की अपेक्षाओं के अनुरूप केनरा बैंक की हरेक इकाई राजभाषा-हिंदी का कार्यान्वयन कर सके । केनरा बैंक द्वारा यह विशेष प्रशिक्षण हिंदी माह के सिलसिले में किया जा रहा है । सितम्बर 2007 को हिंदी माह के रूप में मनाते हुए केनरा बैंक के कोलकाता स्थित अंचल कार्यालय में अपने कर्मचारियों के लिए हिंदी पत्रलेखन प्रतियोगिता, अनुवाद प्रतियोगिता, हिंदी समाचार वाचन प्रतियोगिता, हिंदी कार्टून कथन प्रतियोगिता तथा 14 सितम्बर 2007 को हिंदी दिवस का आयोजन कर बैंक के कर्मचारियों को अपना अधिकाधिक बैंकिंग कार्य हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया गया ।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान

संस्थान के संकाय और स्टाफ सदस्यों के लिए 11 सितंबर, 2007 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला संस्थान में 01 से 14 सितंबर, 2007 तक आयोजित हिंदी पखवाड़े की एक गतिविधि के रूप में आयोजित की गई ।

कार्यशाला के विषय को भाषण एवं अभ्यास पद्धति द्वारा प्रतिपादित किया गया। सहभागियों को केंद्रीय सचिवालय हिंदी परिषद् द्वारा प्रकाशित 'सामान्य टिप्पणियां तथा प्रारूप' नामक पुस्तिका और राजभाषा संबंधी मुख्य नियमों और निर्देशों से संबंधित सामग्री दी गई । अतिथिवक्ता ने हिंदी और अंग्रेजी भाषा के शब्दों, वाक्यों और टिप्पणियों पर चर्चा करते हुए सहभागियों को हिंदी में लिखने का अभ्यास कराया। उन्होंने सहभागियों को राजभाषा संबंधी मुख्य नियमों की जानकारी भी दी ।

इस कार्यशाला का उद्घाटन श्री संजय कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक (सामान्य सेवा) ने किया। उन्होंने आशा प्रकट की कि कार्यशाला सहभागियों के लिए उपयोगी रहेगी तथा इससे संस्थान में हिंदी के कार्य को बढ़ावा मिलेगा । ■

(घ) हिंदी दिवस

पूर्ति प्रभाग, वाणिज्य एंव उद्योग मंत्रालय, नई दिल्ली

14 सितंबर 2007 से 28 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। पखवाड़े के दौरान प्रभाग में अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं यथा हिंदी वर्तनी प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण व दक्षता प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें विभाग के कार्मिकों और अधिकारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पखवाड़े के दौरान राजभाषा विभाग से प्राप्त माननीय गृह मंत्री जी का संदेश विभाग के सभी कार्यालयों, अधिकारियों और कर्मचारियों को परिचालित किया गया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में संयुक्त सचिव श्रीमती सिहाग ने कहा कि हिंदी का प्रयोग केवल पखवाड़े तक सीमित नहीं रहना चाहिए अपितु इसके प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयास रखने की आवश्यकता है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें दूसरी भाषाओं के प्रचलित शब्दों को अपनाने में संकोच नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से हिंदी भाषा और समृद्ध होगी। उन्होंने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी वर्तनी प्रतियोगिता, कंप्यूटर पर हिंदी टंकण एवं दक्षता प्रतियोगिता, हिंदी में मूल रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहन योजना तथा अधिकारियों के लिए हिंदी में डिक्टेशन योजना प्रतियोगिता के विजेताओं को बधाई दी और पुरस्कार वितरित किए ।

अल्पसंख्यक कार्य मंत्रालय, नई दिल्ली

दिनांक 14, सितंबर से 21 सितम्बर, 2007 तक एक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। इसमें भारत सरकार की राजभाषा नीति के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए अनेक कदम उठाए गए। इसके अतिरिक्त चार प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं । मंत्रालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक भाग लिया। पुरस्कार विजेताओं को मंत्रालय के सचिव श्री एम. एन. प्रसाद के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए। सचिव महोदय ने विजेताओं को बधाई दी और सभी उपस्थित जनों से मंत्रालय में हिंदी का वातावरण बनाने तथा अधिक से अधिक काम हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित किया ।

वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग

विभाग में 14 सितम्बर से 28 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े की शुरूआत करते हुए 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया गया और इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतियोगियों के लिए 1 दिन की हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें उप निदेशक (रा.भा.) श्री डी. डी. तिवारी द्वारा भारत सरकार की राजभाषा नीति, राजभाषा अधिनियम, नियम, संकल्प आदि सहित विभिन्न संवैधानिक उपबंधों से अधिकारियों/कर्मचारियों को अवगत कराया।

इस अवसर पर विभाग के उप सचिव (प्रशा.) श्री मनोज सहाय प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए अपने विचार रखे। सहा. निदेशक (रा.भा.) श्री परमानंद आर्य ने इस वर्ष आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में संक्षेप में बताया।

17 सितम्बर से 28 सितम्बर तक कुल 11 प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें हिंदी टिप्पण, मसौदा लेखन, निबंध लेखन, अधिकारियों तथा कर्मचारियों के लिए पृथक-पृथक राजभाषा संगोष्ठी, हिंदी कविता, अहिंदी भाषियों के लिए हिंदी सामान्य ज्ञान, हिंदी स्लोगन, हिंदी प्रश्नावली, अधिकारियों तथा कर्मचारियों लिए अलग-अलग श्रुतलेखन प्रतियोगिता शामिल थीं। इसमें 9 अधिकारियों तथा 34 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया।

पखवाड़े की समाप्ति पर पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें विभाग की अपर सचिव श्रीमती रीता मेनन द्वारा विजेताओं को पुरस्कार तथा प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए ।

दक्षिण मध्य रेलवे

मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण कार्यालय, सिकंदराबाद, दक्षिण मध्य रेलवे, में दि. 10-9-07 से 14-9-07 तक राजभाषा सप्ताह का आयोजन किया गया ।

राजभाषा सप्ताह समारोह के उपलक्ष्य में दि. 16-8-2007 को पूर्वाह्न निबंध प्रतियोगिता और अपराह्न वाक् प्रतियोगिता आयोजित की गई। दिनांक 17-8-2007 को टिप्पण और प्रारूप लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा इसी कड़ी में दिनांक 30-8-2007 को स्मृति प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण श्री अजय कुमार गुप्ता ने की।

सप्ताह का मुख्य कार्यक्रम दिनांक 13-9-2007 को आयोजित किया गया । अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री अजय कुमार गुप्ता ने सभी कर्मचारियों से हिंदी में काम करने की अपील की, जिसके लिए उन्होंने निर्माण संगठन द्वारा बनाए गए रुटीन पत्रों के टैंप्लेट तथा शब्दावली के उपयोग का सुझाव दिया।

रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा

रेलवे स्टाफ कालेज, वडोदरा में दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया। इस पखवाड़ा समारोह का शुभारंभ हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 14-9-2007 को अपर महानिदेशक द्वारा सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित करके किया गया।

इस अवसर पर आमंत्रित मुख्य वक्ता डॉ. बंशीधर शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एम. एस. विश्वविद्यालय, वडोदरा ने महादेवी वर्मा एवं समकालीन साहित्यकारों का हिंदी के विकास में योगदान विषय पर संकाय सदस्यों/अधिकारियों एवं मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों को संबोधित किया।

दिनांक 27-9-2007 को महानिदेशक श्रीमती शोभना जैन की अध्यक्षता में राजभाषा पखवाड़ा समारोह-2007 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रशस्ति-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए, इसके अतिरिक्त हिंदी में मूल टिप्पण आलेखन पुरस्कार योजना-2006-07 के अंतर्गत कालेज के 10 कर्मचारियों को भी प्रशस्ति-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्रदान किए गए। इस अवसर पर महानिदेशक महोदया ने मेहमान अधिकारियों को सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने के प्रति प्रेरित किया तथा उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन से राजभाषा हिंदी के प्रति संकाय सदस्यों, मेहमान अधिकारियों तथा कर्मचारियों में सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ है, जो राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित विविध लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक रहेगा तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में भी सहायता मिलेगी।

पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

पूर्व मध्य रेल मुख्यालय, हाजीपुर में दिनांक 14 सितंबर, 2007 से 21 सितंबर, 2007 तक हिंदी सप्ताह का भव्य आयोजन किया गया।

श्री गिरीश भटनागर, महाप्रबंधक, पूर्व-मध्य रेल ने दिनांक 14 सितंबर, 2007 को 11.00 बजे दीप प्रज्ज्वलित और माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर हिंदी सप्ताह का उद्घाटन किया। उन्होंने सभी से राजभाषा हिंदी में ही सरकारी कामकाज करने का आह्वान किया। मुख्य राजभाषा अधिकारी व मुख्य विद्युत इंजीनियर ने अपने संबोधन द्वारा सभी का स्वागत करते हुए, हिंदी सप्ताह के अंतर्गत आयोजित किए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी ।

महाप्रबंधक श्री गिरीश भटनागर ने सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, वाक्, टिप्पण व आलेखन और राजभाषा क्विज के सफल प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया । अपने अध्यक्षीय संबोधन में महाप्रबंधक श्री गिरीश भटनागर ने हिंदी सप्ताह में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की भूरी-भूरी प्रशंसा की।

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग

भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग कार्यालय में दिनांक 14 सितंबर 2007 से 28 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं, यथा : हिंदी में निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन, भाषण तथा प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

दिनांक 28 सितंबर 2007 को श्री ड़ी. डी. राजू, निदेशक, जीवाश्मिकी प्रभाग की अध्यक्षता में हिंदी पखवाड़ा का समापन किया गया। श्री डी. डी. राजू ने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी भाषा सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोती है। अत: जिन्हें हिंदी का समुचित ज्ञान नहीं है, वे हिंदी जल्द से जल्द सीखें, जिससे कि कार्यालय में अधिक से अधिक काम हिंदी में किया जा सके। श्री वेंकटस्वामी, निदेशक, भू-रासायनिक मानचित्रण ने कहा कि हिंदी सीखना, उसमें काम करना बिल्कुल आसान है।

दिनांक 5 अक्तूबर 2007 को विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों के लिए आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह

में उप महानिदेशक महोदय ने विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए तथा सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। उन्होंने भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण, पूर्वोत्तर क्षेत्र, शिलांग कार्यालय में हो रहे हिंदी में कार्य को संतोषप्रद बताया तथा सभी से अनुरोध किया कि हिंदी के कार्य को और आगे बढ़ाने का हर संभव प्रयास करते रहें। उन्होंने पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी ।

विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, नागपुर

निदेशालय में "हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा" के उपलक्ष्य में दिनांक 3-9-2007 से 14-9-2007 तक विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-9-2007 को विपणन एवं निरीक्षण निदेशालय, प्रधान शाखा कार्यालय में उप कृषि विपणन सलाहकार की अध्यक्षता में हिंदी समारोह का आयोजन किया गया। सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कार्यक्रमों की जानकारी दी तथा डॉ. आर. वी. कोठे, वरिष्ठ विपणन अधिकारी ने मंत्रिमंडल सचिव का संदेश पढ़कर सुनाया। इस अवसर पर डॉ. भरत मूर्ति मेहरोत्रा, सहायक कृषि विपणन सलाहकार ने भी अपने विचार व्यक्त किए। विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को अध्यक्ष महोदय के करकमलों से नकद पुरस्कार वितरित किए गए । अध्यक्ष महोदय ने इस बात पर खुशी जाहिर की कि कार्यालय में बहुत काम हिंदी में किया जा रहा है। डॉ. आर. रमेश आर्य ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा श्रीमती रंजना रानी माहेश्वरी के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ ही यह समारोह सम्पन्न हुआ ।

सीमा सड़क महानिदेशालय

सीमा सड़क महानिदेशालय, नई दिल्ली में दिनांक 1 सितंबर 2007 से 14 सितंबर 2007 तक हिन्दी दिवस तथा हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता तथा सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सामान्य हिंदी ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन हिंदीतर भाषी कार्मिकों के लिए अलग से किया गया। हिंदी दिवस के अवसर पर दिनांक 14 सितंबर 2007 को राजभाषा हिंदी से संबंधित विषयों पर हिंदी भाषण/कविता/गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में महानिदेशालय के विभिन्न अनुभागों के कार्मिकों ने बड़-चढ़कर भाग लिया ।

वर्ष 2006-2007 के दौरान 5 तीन दिवसीय हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया । हिंदी कार्यशाला में कार्मिकों को हिंदी में विभिन्न प्रकार के पत्र, अर्ध-सरकारी पत्र, नोटिंग/ड्राफ्टिंग, आवेदन-पत्र इत्यादि तैयार करने की जानकारी दी गई। इसके अतिरिक्त कार्मिकों को हिंदी वर्तनी तथा भारत सरकार की राजभाषा नीति की जानकारी भी दी गई ।

परमाणु ऊर्जा विभाग
परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसन्धान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र

परमाणु खनिज अन्वेषण एवं अनुसन्धान निदेशालय पश्चिमी क्षेत्र, जयपुर में दिनांक 10-9-2007 से 14-9-2007 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रम आयोजित किए गए । हिंदी सप्ताह में आयोजित लगभग सभी प्रतियोगिताएं हिंदी भाषी एवं हिंदीतर भाषी वर्गों में आयोजित की गई जिसमें दोनों वर्गों में ही कार्मिकों ने बढ़चढ़कर भाग लिया ।

हिंदी सप्ताह का समापन दिनांक 14-9-2007 को किया गया । समापन समारोह में क्षेत्रीय निदेशक श्री ललित कुमार नंदा ने हिंदी प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरुस्कृत किया। अपने समापन उद्बोधन में क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने पश्चिमी क्षेत्र में राजभाषा से संबंधित गतिविधियों के कुशल संचालन पर संतोष व्यक्त किया ।

फिल्म प्रभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, सूचना भवन, सी. जी. ओ. कंप्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली

फिल्म प्रभाग, नई दिल्ली कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितंबर 2007 तक किया गया । इस अवधि में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा हिंदी में कामकाज करने के लिए प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । पखवाड़ा के मुख्य समारोह का आयोजन दिनांक 28-9-2007 को किया गया ।

मुख्य अतिथि श्री राजेश कुमार झा ने अपने भाषण में बताया कि केवल हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा के दौरान ही नहीं बल्कि पूरे वर्ष हमें राजभाषा हिंदी में कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए । उन्होंने आगे कहा कि राजभाषा तभी सफल हो सकती है जब वह अपनी किलिष्टता दूर करके सरल बने, जन-जन की भाषा बने । उन्होंने यह भी कहा कि फिल्मों का राजभाषा के विकास में काफी योगदान है ।

श्री पी. के. साहा, निदेशक जो स्वयं हिंदीतर क्षेत्र से आते हैं ने अपने संक्षिप्त अध्यक्षीय भाषण में बताया कि केवल दिल्ली में बैठकर हम राजभाषा हिंदी का विकास नहीं कर सकते, बल्कि इसके लिए हमें देश के दूर दराज के क्षेत्रों, विशेषकर गैर हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करना होगा । उन्होंने अपने भाषण में आशा ज़ताई कि राजभाष हिंदी का पूर्ण विकास अवश्य होगा उन्होंने व्यक्तिगत अनुभवों का वर्णन करते हुए बताया कि जिन क्षेत्रों में प्रारम्भ में हिंदी फिल्मों व हिंदी का विरोध होता था, वहां भी लोगों ने हिंदी को धीरे-धीरे स्वीकार किया है ।

आयुध निर्माणी भंडारा

आयुध निर्माणी भंडारा में दिनांक 14-9-2007 से 28-9-20077 तक के समय को बडे उमंग, हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिता के प्रथम दिन अर्थात् दिनांक 14-9-2007 को पखवाड़े का विधिवत उद्घाटन अस्थायी प्रभारी अधिकारी द्वारा किया गया । अध्यक्षीय भाषण में मुख्य अतिथि महोदय ने अपने प्रेरणात्मक वक्तव्य के माध्यम से लोगों को कहा कि हिंदी में काम करना सरल है। इसका आसान तरीका यह है कि जो भी फाइल हमारे अधिकारियों के पास विभिन्न लोगों के द्वारा आती हैं, यदि वे हिंदी में टिप्पण लिखना शुरू कर दें तो हमारा राजभाषा हिंदी में कार्य करने का उद्देश्य सफल हो सकेगा । हिंदी में जो भी कार्य कर सकते हैं, उसे यथासम्भव करने की कोशिश करें। इसके लिए हिंदी सॉफ्टवेयर की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इससे हिंदी में काम करना आसान हो जाएगा और विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़चढ़ कर भाग लेने का आग्रह किया। हिंदी पखवाड़े के अन्तर्गत काव्य पाठ, हस्ताक्षर, निबंध लेखन, शुद्ध लेखन, टिप्पण व लेखन, प्रश्नोत्तरी, नारा, वाद-विवाद, हिंदी टंकण और प्रश्न मंच प्रतियोगिताएँ आयोजित कराई गई ।

डाक प्रशिक्षण केंद्र, वडोदरा

14 सितंबर 2007 को समारोह का उद्घाटन करते हुए निदेशक महोदया श्रीमती शारदा सम्पत् ने बताया कि जन साधारण से सीधा संबंध रखने वाले डाक विभाग में जनता की ही भाषा का प्रयोग होना चाहिए और इससे ही सही अर्थों में हम उनकी सेवा कर सकते हैं । उद्घाटन भाषण के बाद सहायक निदेशक (प्रशिक्षण) श्री आर. एस. सगर ने हिंदी दिवस का संदेश पढ़कर सुनाया और अनुदेशक श्रीमती वंदना तारे ने संघ की राजभाषा नीति तथा उसके कार्यान्वयन संबंधी जानकारी दी ।

दिनांक 15-9-2007 से प्रशिक्षार्थियों तथा कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं शुरू हुई। शब्दावली लेखन, टिप्पणी लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भी सभी लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया अंतिम दिन दिनांक 28-9-2007 को आयोजित समापन समारोह में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों के लिए पुरस्कार वितरण किए गए ।

प्रधान मुख्य पोस्टमास्टर जनरल कर्नाटक सर्किल बेंगलूर-560001

दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा अति हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दिनांक 14-9-2007 को हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन किया गया और हिंदी दिवस-2007 के सिलसिले में डाक निदेशालय से प्राप्त संदेश, सभी अधिकारियों/पद्धारियों के समक्ष पढ़ा गया। पखवाड़े के दौरान पद्धारियों को कार्यालयीन कामकाज के दौरान राजभाषा हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करने हेतु प्रेरित एवं प्रोत्साहित किया गया ।

पदधारियों के लिए विविध हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इसी परिप्रेक्ष्य में सर्किल कार्यालय के परिसर में दिनांक 28-9-2007 के अपराह्न 2.00 बजे "हिंदी पखवाड़ा-2007-समापान एवं पुरस्कार वितरण समारोह" का भव्य आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता, पोस्टमास्टर जनरल (व्यवसाय विकास एवं प्रोद्योगिकी), कर्नाटक डाक सर्किल, श्रीमती करुणा पिल्लै ने की । मुख्य अतिथि श्रीमती सरोजा व्यास, अध्यक्ष, 'शब्द' साहित्यिक संस्था, बेंगलूर द्वारा हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए ।

मुख्य अतिथि श्रीमती सरोजा व्यास, ने अपने ओजपूर्ण भाषण में भारत के सामासिक संस्कृति को परस्पर मिलाने में समर्थ भाषा के रूप में हिंदी की महत्ता पर अपने विचार प्रकट किए। उन्होंने कहा कि संपर्क भाषा के रूप में हिंदी अपनी सफल भूमि का न केवल संपूर्ण भारतवर्ष में ही, अपितु सात समुंदर पार विदेशों में भी अपना परचम लहरा रही है। आज के वैश्वीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियां भी अपने-अपने उत्पादों को जन-जन तक मशहूर करने हेतु हिंदी भाषा का सहारा ले रही है। हिंदी सीखना और हिंदी में ही सरकारी काम करना न केवल हमारा संवैधानिक उत्तरदायित्व है बल्कि यह हमारे आत्म गौरव

759 HA/08—10A

की भी बात है। यदि हम प्रण कर लें तो अपनी-अपनी मातृभाषा की उन्नति के साथ-साथ हिंदी, जो कि गाँधीजी के शब्दों में हमारी राष्ट्रभाषा है और संविधान के अनुसार हमारी राजभाषा भी है, को भी समुन्नत करके हम उसे उसके उचित स्थान पर बिठा सकते हैं । हिंदी को अपनाकर हम सभी भारतवासी एक दूसरे की सभ्यता और संस्कृति से परिचित होकर उसे उचित सम्मान देकर आपस में प्रेम भाव का संचार कर सकते हैं । इस प्रकार हिंदी सीखना मात्र राष्ट्र गौरव ही नहीं है बल्कि आत्मगौरव भी है। इस प्रकार उन्होंने सभी अधिकारियों/ पद्धारियों को राजभाषा हिंदी में काम करने हेतु प्रेरणा दी ।

कार्यालय पोस्टमास्टर जनरल (इन्दौर क्षेत्र) इंदौर 452001

दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक कार्यालय में हिंदी दिवस व हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । पखवाड़े के दौरान मुख्य रूप से हिंदी निबंध, पत्र व टिप्पणी लेखन, सामान्य ज्ञान तथा हिंदी निबंध (वर्ग "घ" हेतु) आदि प्रतियोजिगताएं आयोजित हुई । विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री एस. के. स.ज्ञ. श्री आर. के. यादव श्री जे. पी. बुन्देला तथा कु. सीमा मेश्राम ने हिंदी की अच्छी साहित्यिक पुस्तकें देकर पुरस्कृत किया ।

हिंदी पखवाड़े के मुख्य आयोजक सहायक निदेशक (अन्वेषण) श्री पी. आर. देशमुख ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमें पूरे वर्ष भर हिंदी में कार्य करना चाहिए ताकि हिंदी पखवाड़े की सार्थकता सिद्ध हो सके । विशेष अतिथि सहायक निदेशक (स्थापना) श्री एम. एम. पिंगले ने कहा कि हमारा प्रदेश हिंदी भाषी प्रदेश है अत: हमें हिंदी में अधिकाधिक सरकारी कामकाज करके "ग" क्षेत्र के लिए उदाहरण पेश करना चाहिए । विशेष अतिथि लेखाधिकारी श्री आर. सुरेन्द्र ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि मैं एक हिंदीतर भाषी प्रदेश से हूं और इस कार्यालय ने ही मुझे पचास प्रतिशत हिंदी सिखाई है। उन्होंने आगे कहा कि मुझे अब हिंदी में लिखने की आदत पूरी तरह बनाना हैं ताकि मैं अधिकांश सरकारी कामकाज हिंदी में कर सकूं ।

सीमा सुरक्षा बल महानिदेशालय

सीमा सुरक्षा बल महानिदेशालय में दिनांक 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया । इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थानों पर आए कार्मिकों को बल के अपर महानिदेशक श्री अमर प्रताप सिंह ने नकद पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया । अपर महानिदेशक महोदय ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज से 58 वर्ष पहले हमारे देश की संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा दिया था । तभी से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है । सीमा सुरक्षा बल में देश के कोने-कोने से देश के विभिन्न प्रांतों के व्यक्ति शामिल हैं और इनकी मातृ-भाषा भी अलग-अलग है लेकिन बल में इन सभी कार्मिकों को, आपसी बातचीत या कामकाज करने में कोई परेशानी नहीं आती है क्योंकि सभी हिंदी भाषा व्यवहार में लाते हैं । जापान, रूस, चीन जैसे देशों ने अपनी राष्ट्र भाषा में कार्य करके काफी उन्नति की है और वे अपनी भाषा में कार्य करते हुए गर्व महसूस करते हैं । अन्य भाषाओं को सीखना गलत नहीं अन्य भाषाएं सीखनी चाहिएं, लेकिन इन भाषाओं के मोह में हमें अपनी राष्ट्र-भाषा हिंदी को नहीं भूलना चाहिए । उन्होंने अधिकारी वर्ग से विशेष रूप से अनुरोध किया कि वे अपना दैनिक कार्य स्वयं हिंदी में करके अपने अधीनस्थ कार्मिकों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करें तथा उन्हें भी अपना दैनिक सरकारी कार्य, हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहित करें । इस प्रकार हिंदी में कार्य करने की मानसिकता विकसित होगी । हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने वाले अधिकारी एवं कार्मिकों को उन्होंने बधाई दी । साथ-साथ उन्होंने ये भी कहा कि "हिंदी दिवस" पर हमें अपने पूरे वर्ष में किए गए हिंदी के कार्य की पूरी समीक्षा करनी चाहिए और जो भी कार्य हम पिछले वर्ष नहीं कर पाए उन्हें इस वर्ष पूरे मनोयोग से करने का संकल्प लेना चाहिए । इस अवसर पर वर्ष 2006-07 के दौरान हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने पर सीमान्त मुख्यालय राजस्थान, सीमा सुरक्षा बल अकादमी, टेकनपुर और मुख्यालय उप महानिरीक्षक आर. के. पुरम, नई दिल्ली को तीन राजभाषा शील्डें दी गईं ।

इससे पूर्व श्री नरेश गौड़, महानिरीक्षक (प्रशासन) ने अपर महानिदेशक का स्वागत करते हुए सीमा सुरक्षा बल में हिंदी में किए जा रहे कार्यों का विवरण प्रस्तुत किया । उन्होंने कहा कि हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर जो भी निर्देश जारी किए जाते हैं उनकी अनुपालना सुनिश्चित करवाने के लिए बल मुख्यालय का राजभाषा अनुभाग बहुत सक्रिय है। उन्होंने कहा कि बल मुख्यालय के निदेशालयों में हिंदी में हो रहे कार्यों की समीक्षा के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति

759 HA/08—10B

गठित है। इस समिति के वे स्वयं अध्यक्ष हैं और सभी निदेशालयों के उप महानिरीक्षक इसके सदस्य हैं । प्रत्येक तिमाही में इसकी बैठक आयोजित की जाती है और इस बैठक में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने संबंधी निर्णय लिए जाते हैं । उन्होंने बताया कि बल मुख्यालय में 60 प्रतिशत तक हिंदी में मूल कार्य हो रहा है। हिंदी पत्राचार में और वृद्धि करने के प्रयास जारी हैं। हिंदी कार्य में लगातार वृद्धि जारी रखने हेतु राजभाषा अनुभाग का स्टाफ समय-समय पर अधीनस्थ कार्यालयों और बल मुख्यालय के निदेशालयों का राजभाषा संबंधी निरीक्षण करता है और मौके पर जाकर राजभाषा नियमों और आदेशों की जानकारी तो देता ही है साथ ही उनके कार्यों की समीक्षा भी करता है ।

भारत-तिब्बत सीमा पुलिस बल महानिदेशालय

महानिदेशालय द्वारा 1 से 15 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के अवसर पर, भा.ति.सी. पुलिस बल के महानिदेशक श्री वि. कु. जोशी, भा.पु.से. की आर से दिनांक 3 सितम्बर, 2007 को एक अपील जारी की गई। अपील में राजभाषा की संविधान में स्थिति, राष्ट्र के लिए योगदान तथा बल द्वारा हिंदी के प्रयोग में प्रगति की ओर ध्यान आकर्षित किया गया ।

हिंदी पखवाड़े का "मुख्य समारोह" "हिंदी दिवस" अर्थात 14 सितम्बर को आयोजित किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि श्री वि. कु. जोशी, भा.पु.से., महानिदेशक ने "हिंदी दिवस" के अवसर पर माननीय गृह मंत्री श्री शिवराज वि. पाटील द्वारा जारी संदेश से सभी को अवगत कराया । इसके बाद, "स्वरचित हास्य काव्य-पाठ प्रतियोगिता" के पुरस्कृत प्रतियोगियों द्वारा हिंदी में कविता पाठ प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार, प्रमाणपत्र तथा सहायक साहित्य भेंट किया । इसके अलावा, हिंदी में टिप्पण एवं आलेखन (नोटिंग/ड्रॉफ्टिंग) को बढ़ावा देने के लिए लागू प्रोत्साहन योजनाओं के विजेताओं को भी प्रमाणपत्र एवं सहायक साहित्य वितरित किया गया ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि ने उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में हिंदीतर भाषी कार्मिकों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया । संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी के प्रयोग में हुई प्रगति हमारी टीम भावना से कार्य करने एवं सकारात्मक सोच का परिणाम है । इसके परिणामस्वरूप ही हम वर्ष 2006-07 में भी गृह मंत्रालय की राजभाषा शील्ड में पुन: "प्रथम" स्थान प्राप्त कर सके हैं । उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को बधाई दी और आशा व्यक्त की कि राजभाषा के क्षेत्र में सभी निष्ठा एवं लगन से कार्य करते रहेंगे ।

कार्यालय सेनानी 13वीं वाहिनी भारत-तिब्बत सीमा पुलिस गृह मंत्रालय/पत्रालय-बसर, जिला-वैस्ट सियांग (अरुणाचल प्रदेश)

13वीं वा. भा.ति.सी.पुलिस कार्यालय बसर, (अ.प्र.) व टैक मुख्यालय गंगटोक (सिक्किम) में दि. 1-9-07 से 14-9-07 तक हिंदी पखवाड़ा का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया । इस दौरान दोनों स्थानों पर राजभाषा हिंदी के अधिकतम प्रचार-प्रसार हेतु जगह-जगह बैनर व महापुरुषों के अमृत वचन लगाए गए । वाहिनी में इस दौरान केवल हिंदी में ही सभी कार्य/पत्राचार किए गए । वाहिनी के पूर्व परिचारित आदेश संख्या-5607 दि. 11-8-07 के निर्धारित कार्यक्रमों के अनुसार विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं यथा-हिंदी निबंध, सुलेख, कविता, टंकण, वाद-विवाद, सामान्य ज्ञान, प्रशासनिक शब्दावली आदि आयोजित किए गए, जिसमें हिमवीरों ने काफी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया ।

पोत परिवहन विभाग, नई दिल्ली

दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ दिनांक 14-9-2007 को किया गया । इस पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया ।

दिनांक 24 अक्तूबर, 2007 को सचिव (पोत परिवहन) श्री अशोक कुमार महापात्र द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरित किए गए । नकद पुरस्कार के साथ-साथ प्रमाण-पत्र भी दिए गए । इस अवसर पर सचिव (पोत परिवहन) ने अपने उद्बोधन में हिंदी की महान कृति रामचरितमानस का दृष्टांत देते हुए उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया कि वे सरकारी काम-काज में हिंदी को और अधिक बढ़ाएं । संयुक्त सचिव (प्रशासन) ने पुरस्कार वितरण हेतु व्यस्त समय में से समय निकालने के लिए सचिव महोदय का धन्यवाद किया और उन्होंने भी राजभाषा हिंदी में सरकारी काम-काज किए जाने की पुरजोर अपील की ।

प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा कार्यालय, पश्चिम-मध्य रेल, जबलपुर

श्री जे. एस. कोचर उपनिदेशक लेखा परीक्षा, पश्चिम मध्य रेल, जबलपुर की अध्यक्षता में दिनांक 28-9-2007 को मुख्यालय में हिंदी पखवाड़े के मुख्य समारोह का आयोजन किया गया । हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री हरिशचन्द्र श्रीवास्तव एवं उपनिदेशक द्वारा प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया। पश्चिम मध्य रेल के कोटा, भोपाल स्थित कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन संबन्धित मंडल लेखा परीक्षा अधिकारियों की अध्यक्षता में मनाया गया । हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिताओं में विजेताओं को वरिष्ठ मंडल लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी

दिनांक 3-9-2007 से 14-9-2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस उपलक्ष्य में, अकादमी स्टाफ के लिए कार्यालयी पद्धति की जानकारी, कार्यालय से संबंधित सामान्य जानकारी (समूह 'घ'), राजभाषा नीति से संबंधित सामान्य ज्ञान, हिंदी श्रुतलेख, हिंदी निबंध लेखन तथा हिंदी काव्य रचना प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

इस समारोह में, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों के साथ ही, वार्षिक टिप्पण तथा मसौदा लेखन प्रोत्साहन योजना-2006-07 के प्रतिभागियों को भी पुरस्कृत किया गया । कार्यक्रम का संचालन डॉ. दलजीत कौर, सहायक आचार्य (हिंदी) तथा नामित हिंदी अधिकारी ने किया । श्री यतेंद्र कुमार, उपनिदेशक वरिष्ठ एवं राजभाषा प्रभारी ने अपने संबोधन में अकादमी के प्रशिक्षण एवं प्रशासनिक क्षेत्र में हिंदी के बढ़ते प्रयासों से अवगत कराया । अंत में, उन्होंने सभी संकाय सदस्यों, अधिकारी प्रशिक्षणार्थियों एवं अकादमी स्टाफ का आभार प्रकट करते हुए, पुनः सभी से अकादमी में हिंदी के प्रयोग को और अधिक बढ़ाने का आह्वान किया ।

कार्यालय पुलिस महानिरीक्षक, पूर्वोत्तर सेक्टर, के.रि.पु. बल, शिलांग

मुख्यालय, के.रि.पु. बल, शिलाँग में दिनाँक 1-9-07 से 15-9-07 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । पखवाड़े के दौरान 1-8-07 से 31-8-07 तक हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता आयोजित की गई । दूसरे चरण में दिनाँक 20-8-07 से 24-8-07 तक 5 दिवसीय 2 घंटे प्रतिदिन हिंदी कार्यशाला चलाई गई । इससे शिलाँग स्थित 67 बटा. के प्रतिभागियों सहित 16 कार्मिकों ने भाग लिया । इसके अलावा हिंदी नोटिंग/ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता व हिंदी टंकण प्रतियोगिता आयोजित की गई । इनमें प्रथम तीन स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया । 14 सितंबर को श्री के. आर. ब्रहमा, अपर पुलिस उप महानिरीक्षक की अध्यक्षता में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया । इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि हम सभी को अपनी राजभाषा हिंदी पर गर्व होना चाहिए और रोजमर्रा के काम में सरल हिंदी का प्रयोग करने की अपील की ताकि गैर हिंदी भाषी कर्मचारी को आसानी से समझ आए जिससे उन्हें भी हिंदी लिखने में प्रोत्साहन मिले ।

इसके अलावा महानिदेशालय असम राइफल्स एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शिलाँग द्वारा गैर हिंदी भाषी कार्मिको के लिए भी सुलेख, शब्दावली तथा हिंदी टिप्पण एवं पत्र लेखन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई । इसमें पूर्वोत्तर सेक्टर कार्यालय के 3 कार्मिकों ने भाग लिया और तीनों ने ही इन प्रतियोगिताओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया ।

संघ शासित प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली प्रशासन, राजभाषा विभाग, सचिवालय, सिलवासा

सचिवालय, सिलवासा तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, सिलवासा के संयुक्त तत्वावधान में दादरा एवं नगर हवेली में हिंदी के प्रचार व प्रसार को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 31-8-2007 से 13-9-2007 तक 'संयुक्त हिंदी पखवाड़ा' और दिनांक 14-9-2007 को 'हिंदी दिवस' बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। 'संयुक्त हिंदी पखवाड़ा' के दौरान 11 हिंदी प्रतियोगिताएँ केंद्रीय सरकार, राष्ट्रीयकृत बैंक, सरकारी उपक्रम तथा भारत सरकार के प्रतिष्ठानों और प्रशासन द्वारा प्रायोजित की गई । इन प्रतियोगिताओं के लगभग 155 विजेताओं को दिनांक 14-9-2007 को श्री पी. के. गुप्ता, माननीय सचिव (वित्त-राजभाषा), दमण व दीव और दादरा एवं नगर हवेली तथा श्री आर. एस. रावत, प्रभारी उप-निदेशक, भारत सरकार, गृह मंत्रालय, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, नवी मुंबई के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। इस सुअवसर पर श्री आर. एस. रावत, प्रभारी उप-निदेशक (राजभाषा), मुबई ने अपने अभिभाषण में संघ प्रदेश दादरा एवं नगर

हवेली में हिंदी की संतोषजनक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए नराकास, सिलवासा के कार्य की प्रशंसा की । और सभी विजेताओं को बधाई देते हुए कहा कि नराकास, सिलवासा पिछले 8 वर्षों से दादरा एवं नगर हवेली में हिंदी में उत्कृष्ठ कार्य कर रही है जिसके लिए उन्हें लगातार भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा नियमित रूप से प्रथम पुरस्कारों से सम्मानित किया जा रहा है । यह अपने आप ही यह नराकास एक मिसाल बन चुकी है ।

इसके पश्चात् श्री पी. के. गुप्ता, माननीय सचिव (वित्त राजभाषा)/अध्यक्ष (नराकास) ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में सर्वप्रथम राजभाषा विभाग, सचिवालय, सिलवासा द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए उपस्थित सभी अधिकारीगण, कर्मचारीगण और विजेतागण को इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ दी और अपील भी की कि रोजमर्रा का सरकारी कामकांज राजभाषा हिंदी में करें और अपने अधीन कार्य कर रहे उन सभी साथियों को हिंदी में काम करने के लिए प्रोत्साहित करें जिससे भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा किया जा सकें । इसके साथ-साथ समय-समय पर हिंदी कार्यशालाएँ, हिंदी विकास सम्मेलन, हिंदी काव्य संगोष्ठियाँ तथा समय-समय पर राजभाषा कार्यान्वयन समिति और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें भी आयोजित की जा रही हैं । प्रशासन के सभी विभागों में राजभाषा हिंदी से संबंधित निरीक्षण भी समय-समय पर किया जा रहा है। इसके साथ-साथ इस वर्ष हिंदी शिक्षण योजना के तहत हिंदी प्राज्ञ प्रशिक्षण के प्रमाण-पत्रों को भी वन विभाग, चिकित्सा विभाग, पुलिस विभाग तथा प्रशासन के अन्य विभागों के कर्मचारियों को वितरित किए गए ।

कर्मचारी चयन आयोग (उ. पू. क्षे.) क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । दिनांक 14-9-2006 को कार्यालय में हिंदी दिवस का दीप प्रज्जलित करके श्री एन. आई. लस्कर, क्षेत्रीय निदेशक (उ.पू.क्षे.) महोदय ने उद्घाटन किया । उद्घाटन समारोह में श्री लस्कर जी के कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा और राजभाषा है क्योंकि भारतीय संविधान में आज के दिन ही अर्थात् 14 सितंबर सन् 1949 हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। हम सभी का यह संवैधानिक कर्तव्य है कि कार्यालय का अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करने का प्रयास करें ताकी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके। उद्घाटन वक्तव्य में श्री एस. बोस, उप निदेशक (उ. पू. क्षे.) महोदय ने भी अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करने के लिए अपना सुझाव रखा ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान दिनांक 27-9-2007 को एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिस में कुल 6 अधिकारी/कर्मचारियों ने भाग लिया । हिंदी कार्यशाला में श्री अशोक कुमार मिश्र, अनुसन्धान अधिकारी, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पूर्वोत्तर क्षेत्र), गुवाहाटी ने मसौदा एवं टिप्पणी लेखन का अभ्यास कराया। हिंदी पत्राचार के विविध रूपों से भी प्रतिभागियों को अवगत कराया ।

इस क्षेत्रीय कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा के दौरान अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी निबंध, हिंदी शब्दावली प्रतियोगिता तथा आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया । उक्त तीनों प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया ।

क्षेत्रीय आयुक्त का कार्यालय, कोयला खान भविष्य निधि क्षेत्र-2, रांची-834001

कोयला खान भविष्य निधि के तीनों कार्यालयों में संयुक्त रूप से 1 सितम्बर से 15 सितम्बर 2007 तक मनाए गए ''हिंदी पखवाड़ा'', ''समापन समारोह'' दिनांक 27-9-2007 को आयोजित किया गया।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री रमापति तिवारी, सचिव नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने कहा कि राजभाषा से संबंधित निष्ठा केवल पखवाड़ा तक ही सीमित न रहे बल्कि ऐसा उत्साह साल भर रहे । उन्होंने जोर देकर कहा कि ऐसे समारोह हमें आत्मावलोकन का मौका प्रदान करते है । उन्होंने आगे कहा कि प्रत्येक व्यक्ति अपनी जगह से राजभाषा के विकास में योगदान कर सकता है । पखवाड़ा एक पर्व के समान है । समारोह के विष्शिष्ट अतिथि डा. दिनेष्वर प्रसाद, सेवानिवृत विभागाध्यक्ष, रॉची विश्वविद्यालय, रॉची एवं वरिष्ठ साहित्यकार ने हिंदी को क्षेत्रीयता से मुक्त कहा और इसे सबकी भाषा बताया । उन्होंने कहा कि हिंदी के माध्यम से सम्पूर्ण भारत को जोड़ा जा सकता है तथा शेष विश्व के साथ भारत का जुड़ाव संभव है। मन में ही द्वंद है जिस दिन मन से यह द्वंद्व मिट जाएगा उसी दिन हिंदी लागू हो जाएगी ।

अध्यक्षीय भाषण करते हुए श्री पी. के. चौधुरी, क्षेत्रीय आयुक्त ने कहा कि हिंदी सीखना नहीं है यह हमारे खून में है। हिंदी की संप्रेषण क्षमता इतनी अधिक है कि हर तरह के भावों की अभिव्यक्ति हो सकती है। हमारे मन के विचारों की भाषा विदेशी नहीं हो सकती है। समापन भाषण करते हुए श्री हरी पचौरी, सहायक आयुक्त-1 ने कहा कि हिंदी एक सम्पूर्ण वैज्ञानिक एवं लचीली भाषा है। पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया।

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग

आयोग के मुख्यालय में दिनांक 17-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस के अवसर पर आयोग के सचिव महोदय द्वारा एक अपील जारी की गई।

दिनांक 8-10-2007 को आयोग के सचिव, श्री विल्फ्रेड लकड़ा द्वारा आयोग में आयोजित किए गए हिंदी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह विधिवत रूप से किया गया। उनके द्वारा प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त करने वालों को बधाई दी गई तथा जिन्हें इस बार कोई पुरस्कार प्राप्त नहीं हुआ है, उन्हें अपना अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया गया।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय, फरीदाबाद

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड मुख्यालय, फरीदाबाद में दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, हिंदी टिप्पण-आलेखन, हिंदी टंकण, हिंदी भाषा बोध आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के अधिकारियों-कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। हिंदीतर भाषी कर्मचारियों एवं वर्ग 'घ' कर्मचारियों के लिए भी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। कार्यालय में हिंदी कामकाज को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनुभागों के लिए भी सर्वाधिक हिंदी कार्य प्रतियोगिता आरंभ की गई।

दिनांक 28-9-2007 को हिंदी पखवाड़ा समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। श्री बी. एम. झा, अध्यक्ष ने पखवाड़े के सफल आयोजन की प्रशंसा की तथा सभी विजेता प्रतिभागियों को बधाई दी। उन्होंने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि कार्यालय में हिंदी प्रयोग व कार्यान्वयन की दिशा में उत्तरोत्तर प्रगति हो रही है। उन्होंने कहा कि हिंदी देश को जोड़ने वाली भाषा है। हिंदी में कामकाज करना हमारा सांवैधानिक दायित्व है। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि हिंदी दिवस अन्य भारतीय भाषाओं और हिंदी के लिए गौरव बोध जागृत करने का पावन पर्व है। इस अवसर पर हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम अपना अधिकाधिक दैनिक कार्य हिंदी में करेंगे।

मुख्य नियंत्रण सुविधा, हासन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हासन के तत्वावधान में 3-9-2007 से 17-9-2007 तक संयुक्त हिंदी पखवाड़े का भी आयोजन किया गया, जिसमें सदस्य कार्यालयों के लिए प्रतियोगिताएं आयोजित की गई।

संयुक्त हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह दिनांक 4-10-2007 को एम.सी.एफ हासन में बड़े ही धूम-धाम से आयोजित किया गया।

डॉ. सी. जी. पाटिल, निदेशक, एमसीएफ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। सभी विजेताओं को बधाई देते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना हम सभी का संवैधानिक उत्तरदायित्व है अतः राजभाषा हिंदी का प्रयोग केवल पखवाड़े तक सीमित न रखते हुए पूरे वर्ष करें तभी हिंदी पखवाड़े का आयोजन सही मायने में सफल होगा।

श्री एल. एम गंगराडे जी अतिथि वैज्ञानिक (समूह निदेशक पीपीईजी) आईजैक (से. नि.) बेंगलूर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने कहा कि हिंदी अत्यंत सरल एवं जनप्रिय भाषा है। संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा देकर उसके महत्त्व को और भी अधिक बढ़ा दिया है इसलिए यह हमारा परम कर्तव्य बन जाता है कि हम सरकारी कामकाज मे हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करें एवं हिंदी पखवाड़ा मात्र पन्द्रह दिन या एक साल के लिए नहीं अपितु आजीवन मनाए। तद्नंतर आपके 'अंतरिक्ष में भारत' तकनीकी विषय पर अत्यंत ज्ञानवर्धन एवं रोचक व्याख्यान दिया जिसने सभी श्रोतागण को मंत्रमुग्ध कर दिया तथा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने हेतु मूल्यवान सुझाव दिए।

तत्पश्चात हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि तथा निदेशक, एमसीएफ द्वारा नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

श्री याकूब बेरी, उपमहा प्रबंधक, केनरा बैंक, हासन ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि यूं तो आम जीवन में हिंदी का उपयोग करते ही है परन्तु औपचारिक रूप से भी हिंदी का अधिक प्रयोग होना चाहिए। हिंदी इतनी सरल एवं सुंदर भाषा है कि हर कोई इसकी ओर आकर्षित हो जाता है।

हिंदी जानने और समझने वाला व्यक्ति भारत के किसी भी कोने में भ्रमण कर सकता है एवं हिंदी के ज्ञान से उसे अपने विचारों की अभिव्यक्ति करने में बहुत आसानी होती है अत: हम सभी को हिंदी सीखने का भरसक प्रयास करना चाहिए।

खान सुरक्षा महानिदेशालय धनबाद

खान सुरक्षा महानिदेशालय के मुख्यालय, धनबाद (झारखण्ड) सहित देशभर में क्रमश: क, ख एवं ग क्षेत्र में स्थित सभी छ: मंडलीय, ईक्कीस क्षेत्रीय तथा पाँच उप-क्षेत्रीय कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार तथा राजभाषा नीति के अनुपालन हेतु अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने हेतु प्रेरित करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा के दौरान भिन्न-भिन्न प्रकार के प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया।

पखवाड़ा के दौरान आयोजित कार्यक्रमों में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा प्रतियोगिता के दौरान क्रमश: प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पाने वालों को मंत्रालय के निर्देशानुसार नकद पुरस्कार महानिदेशक महोदय द्वारा प्रदान किया गया। इसके अतिरिक्त वर्ष के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों एवं कर्मचारियों कुल 105 को हिंदी सेवा पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कार्यालय कंपनी रजिस्ट्रार गुजरात, दादरा, एवं नागर हवेली

कार्यालय में दिनांक 7-9-2007 से 14-9-2007 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह के दौरान कार्यालय कार्य अधिकाधिक हिंदी में किया गया तथा हिंदी संबंधित विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गई एवं विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाणन वितरित किए गए। जिसके कारण कार्यालय में हिंदी को लागू करने में अधिक प्रोत्साहन मिला। इस सप्ताह के दौरान कार्यालय कर्मचारियों ने यथा संभव अपना कार्य हिंदी में किया। हिंदी सप्ताह के दौरान कार्यालय में बेनर लगाए गए। इस प्रकार हिंदी के प्रयोग हेतु अनुकूल माहौल बनाया गया।

14-9-2007 को हिंदी सप्ताह का समापन समारोह कम्पनी रजिस्ट्रार की अध्यक्षता में हुआ। सी. यु. शाह आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद के हिंदी प्राध्यापिका श्रीमती रेणुका शुक्ला ने अपने मुख्य अतिथि के पद से बोलते हुए कहा कि हमें किसी भी भाषा के प्रति कोई विरोध नहीं है। लेकिन हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है इसी लिए हिंदी का विकास करना हमारा कर्तव्य बन जाता है। कंपनी रजिस्ट्रार ने अध्यक्ष पद संभालते हुए कहा की हिंदी सप्ताह एक राष्ट्रीय पर्व है। उसे एक ही दिन नहीं मनाना है। बल्कि उसे रोज मनाना चाहिए एवं हिंदी में काम किया जाना चाहिए। अंत में सभी को धन्यवाद देते हुए कार्यक्रम का समापन किया गया।

भारतीय सर्वेक्षण विभाग तिरूवन्नतपुरम-695522

भारतीय सर्वेक्षण विभाग, केरल एवं लक्षद्वीप भूस्थानिक आँकड़ा केंद्र में दि. 9-9-2007 से 13-9-2007 तक हिंदी राजभाषा सप्ताह मनाया गया। ब्रिगेडियर के. एस. काली प्रसाद निदेशक ने इसका उद्घाटन किया। बच्चों के लिए हिंदी मानचित्र क्विज और कहानी लेखन का आयोजन किया गया। तथा सभी स्तर के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए, श्रुत लेखान, निबन्ध, टिप्पण एवं आलेखान क्विज, गीत भाषण और आशुभाषण और हिंदी पाठ जैसे विभिन्न प्रतियोगिताएं चलाई गई। इसमें अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

राजभाषा सप्ताह के आयोजन के बाद दि. 21-9-2007 को 11.30 बजे, सी. पी. डब्ल्यु. डी. के सम्मेलन भवन में राजभाषा का समापन समारोह मनाया गया। ब्रिगेडियर के. एस. काली प्रसाद निदेशक महोदय ने इसकी अध्यक्षता की। विभिन्न प्रतियोगिताओं के कुल 54 विजेताओं को निदेशक महोदय ने प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया। प्रतियोगिताओं के निर्णायकों को भी सम्मानित किया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में ब्रिगेडियर के. एस. काली प्रसाद निदेशक महोदय ने हिंदी भाषा के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि समस्त भारतीय भाषाएं संस्कृत आधारित होने के कारण, उन्हें सीखना बहुत आसान है। चूँकि हिंदी राजभाषा और संपर्क भाषा है, उसे सीखना अनिवार्य है। सीखने के अवसर प्राप्त हैं, इसे दिल से अपनाना है। जब अंतर्राष्ट्रीय कंपनियां हिंदी के प्रयोग से लाभ उठा रहीं हैं तो, हम भारतीय अपनी भाषा को छोड़ कर विदेशी भाषा पर क्यों गर्व करें ? काव्यात्मक रूप में उन्होंने कहा कि मन के कोरे कागज पर अपनी भाषा हिंदी का नाम लिख कर उसे आदर और प्रेम से अपनाएं।

भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण, पोर्ट ब्लेयर बेस

14-28 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत हिंदी दिवस के मौके पर "क्या भारत निकट भविष्य में महाशक्ति के रूप में उभरेगा ?"

विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

हिंदी पखवाड़े के उपलक्ष्य में दिनांक 19-9-2007 को शाम 5.30 बजे "संध्या" का आयोजन संस्थान परिसर में किया गया । केंद्र सरकार कर्मचारी कल्याण समन्वय समिति के अध्यक्ष श्री के. शेखर मुख्य अतिथि तथा केंद्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. आर. सी. श्रीवास्तव इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित थे । द्वीपों के जाने-माने 12 कवि-कवयित्रियों ने इस अवसर पर अपने चित-परिचित अंदाज में प्रकृति, हिंदी, भ्रष्टाचार, सरकारी दिखावा, माँ की ममता, नैतिक अवमुल्यन, आतंकवाद जैसे विषयों पर अपनी रचनाएं प्रस्तुत की । मुख्य अतिथि श्री शेकर ने अपने संबोधन में हिंदी कार्यान्वयन को अपना नैतिक दायित्व बताते हुए कहा कि भारतीय मात्स्यिकी सर्वेक्षण के ऐसे आयोजन हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध होंगे। मुख्य अतिथि ने इस अवसर पर अपने तमिल भाषी होने के नाते अपने साथ हिंदी के अल्प ज्ञान को लेकर घटित खट्टे-मिठे अनुभव भी उपस्थिति के समक्ष बयान किए ।

हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के सिलसिले में दिनांक 26-09-2007 को टिप्पण-आलेखन, प्रश्नोत्तरी एवं "राष्ट्रीय एकता में हिंदी का योगदान" विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़े का समापन 28-09-2007 को प्रात: 10.00 बजे संपन्न हुआ । दूरदर्शन केंद्र, पोर्ट ब्लेयर के केंद्र निदेशक श्री पी. के. सुबाष मुख्य अतिथि श्री सुभाष ने पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए। अपने संबोधन में सभी विजेताओं को बधाई देते हुए हिंदी को राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा के रूप में संवैधानिक सम्मान प्रदान करने का आग्रह किया।

देना बैंक, देना कार्पोरेट सेंटर, मुंबई

हिंदी माह के मुख्य कार्यक्रम मुंबई स्थित प्रधान कार्यालय में संपन्न हुए, दिनांक 14 सितम्बर, 2007 को हिंदी दिवस / माह का औपचारिक उद्घाटन करते हुए हमारे अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री पी एल गेरोला ने समस्त देनाकर्मियों का आह्वान करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि हम अपने दैनंदिन कार्य-कलापों में हिंदी की उपयोगिता कानूनी धारा से नहीं बल्कि मानसिक धारणा से बढ़ाएं । उन्होंने आगे कहा कि अपने बैंक में आज राजभाषा हिंदी का बेहतर भविष्य, उसकी दिशा एवं दशा हम सब के उच्च स्तरीय चिंतन, आचरण एवं मानसिकता पर निर्भर है, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने विश्वास व्यक्त किया कि वर्तमान में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन के प्रयास राष्ट्रीय एकता और अंखडता के साथ-साथ हमारी अपनी प्रिय संस्था को भाषायी स्तर पर सुदृढ़ता प्रदान करेंगे।

पूरे हिंदी माह के दौरान देनाकर्मियों की हिंदी अभिरुचि में अभिवृद्धि करते हुए उनके रूझान को बनाए रखने हेतु प्रधान कार्यालय स्तर पर अनेक हिंदी प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया । इनमें हिंदी श्रुतलेखन, बैकिंग शब्दावली, टिप्पणी लेखन प्रतियोगिता, निबंध लेखन प्रतियोगिता और अंत्याक्षरी प्रतियोगिता प्रमुख रहे, क्षेत्र स्तर पर भी अनेक आकर्षक और रूचिकर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । हिंदी माह के अंत में सभी विजेताओं को समुचित पुरस्कार प्रदान किए गए । प्रधान कार्यालय, मुबंई में महाप्रबंध क (राजभाषा) के हाथों पुरस्कार दिए गए जबकि क्षेत्रीय कार्यालयों में क्षेत्रीय प्रबंधकों ने पुरस्कार का वितरण किया ।

बैंक ऑफ इंडिया, आंचलिक कार्यालय, नई दिल्ली

दिनांक 15 अगस्त से 14 सितंबर, 2007 तक अंचल में हिंदी माह का आयोजन किया गया । इस दौरान विविध प्रतियोगिताओं यथा हिंदी में नोटिंग एवं टिप्पणी प्रतियोगिता (शाखाओं के नामित अधिकारियों हेतु), हिंदी वाक्य निर्माण प्रतियोगिता, हिंदी पत्र लेखन एवं टिप्पण प्रतियोगिता (अधिकारियों हेतु), हिंदी चित्र कहानी प्रतियोगिता, राजभाषा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता, प्रश्न मंच, हिंदी में स्लोगन लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

तदुपरांत आंचलिक प्रबंधक एवं महाप्रबंधक श्री गिरीश तिवारी एवं उप महाप्रबंधक श्री आर. रविचन्द्रन ने वर्ष 2006-07 एवं 'हिंदी माह' के दौरान हमारे अंचल में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये ।

भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, रांची

भारतीय स्टेट बैंक, आंचलिक कार्यालय, राँची में सितंबर का पूरा माह राजभाषा मास के रूप में अत्यंत गरिमा और श्रद्धा से मनाया गया।

उपमहाप्रबंधक महोदय श्री अनिल कुमार गुप्ता ने सभी समारोहों की अध्यक्षता की । अपने अबतक के कार्यकाल में तीनों भाषाई क्षेत्रों में कार्य कर चुके अध्यक्ष महोदय ने राजभाषा हिंदी से संबंधित अपने कई अनुभवों के बारे में बताया और हिंदी

में काम करने के लिए सभी कर्मियों का उत्साहवर्धन किया ।

राजभाषा मास पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन दिनांक 28-09-2007 को किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि सुख्यात साहित्कार डॉ. अशोक प्रियदर्शी तथा बैंक के वरिष्ठ अधिकारियों ने विभिन्न स्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया । डा॰ प्रियदर्शी ने हिंदी के विकास में हिंदीतरभाषियों के योगदान की चर्चा की । साथ ही उन्होंने भारतीय स्टेट बैंक में ग्राहकों के अधिकतर कार्य हिंदी में संपादित कार्य करने के प्रयासों की सराहना की । अध्यक्ष महोदय ने अपने संबोधन में इस बात पर जोर दिया कि इस दिशा में प्रयास निरंतर जारी रहने चाहिए ।

यूको बैंक, अंचल कार्यालय, कोलकाता

अंचल कार्यालय, कोलकाता में दिनांक 14 से 29 सितंबर तक 2007 हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । दिनांक 14 सितम्बर को पखवाड़े का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध कवि तथा समकालीन सृजन के वर्तमान संपादक श्री प्रियंकर पालीवाल ने अपने संक्षिप्त किंतु सारगर्भ वक्तव्य में हिंदी भाषा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया । उन्होंने कहा कि आने वाले समय में हिंदी अपनी सजात भाषाओं के साथ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में धाक जमाने वाली है । इस क्रम में, उन्होंने, कहा हिंदी की अनेक शैलियां विकसित होंगी । इससे एक बड़ा जन समुदाय हिंदी से जुड़ेगा । विगत जनगणना से मिले आकड़ों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि ओड़िसा तथा कर्नाटक राज्यों के लोगों ने बड़ी संख्या में अपनी दूसरी भाषा के रूप में हिंदी का उल्लेख किया है । उन्होंने हिंदी को उच्च शिक्षा तथा प्रशासन की भाषा बनाने के लिए प्रयास करने का भी आग्रह किया ।

अध्यक्षीय भाषण में सहायक महाप्रबंधक श्री दीपंकर दत्त ने हिंदी को स्वाधीनता संग्राम की विरासत बताया तथा इसे भारतीय एकात्मकता की वाणी कहा । हिंदी पखवाड़े के अंतर्गत अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी की अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । यथा शब्दावली प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी, कविता आवृति प्रतियोगिता आदि। पखवाड़े के समापन समारोह में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया ।

यूको बैंक, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी

यूको बैंक, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी के तत्ववधान में दिनांक, 14 सितम्बर 2007 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया । समारोह की अध्यक्षता श्री हर प्रसाद सतपथी, आंचलिक प्रबंधक ने की । अपने अध्यक्षीय भाषण में उन्होंने कहा कि हिंदी आज विश्व भाषा के रूप में स्थापित हो रही है और यह भाषा अभिव्यक्ति की सबसे सरल, सहज, सर्वग्राह्य एवं सशक्त भाषा है । भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग क्षेत्रीय भाषाएं हैं, किंतु हिंदी ही वह भाषा है जो सभी भारतीय भाषाओं के बीच सेतु का कार्य करती है ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि कामाख्याराम बरूआ महिला महाविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमार शर्मा ने अभिभाषण में राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार के लिए-सतत प्रयास की आवश्यकता पर विशेष बल दिया । उन्होंने कहा कि बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी आज विश्व भाषा क्रम में दूसरे स्थान पर स्थापित हो चुंकी है और 123 से अधिक देशों में सौ करोड़ से ज्यादा लोग हिंदी बोलते हैं । अपनी भाषा में कार्य करना गर्व की बात है और इसमें किसी प्रकार का संकोच नहीं होना चाहिए । हिंदी में काम करना ज्यादा सरल है, आवश्यकता बस इच्छाशक्ति और आत्मविश्वास को दृढ़ करने की है।

इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड पूर्वी अंचल व कोलकाता मुख्य शाखा

इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लि. कोलकाता में दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितंम्बर 2007 तक बड़े ही उत्साह और सौहार्दपूर्ण माहौल में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान स्टाफ सदस्यों के लिए अनुवाद निबंध, श्रुतलेखन और सुलेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें भागीदारी उत्साहवर्द्धक रही ।

दिनांक 28 सितंम्बर 2007 को पुरस्कार वितरण तथा मुख्य समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि तथा वक्ता के रूप में हिंदी के प्रसिद्ध कवि, कला समीक्षक तथा समकालीन सृजन साहित्यिक पत्रिका के संपादक श्री मानिक वच्छावत ने अपने सरगर्भित तथा प्रभावशाली भाषण में कहा कि अंग्रेजी दास्ता की भाषा थी जिसे आज भी हम ढ़ो रहे हैं अंग्रेजों ने चंद किरानी पैदा करने के लिए हमें अंग्रेजी सिखाई और आज हम उनकी सभ्यता और संस्कृति के वश में होते जा रहे हैं । उन्होंने कहा कि दुनिया के सभी विकसित देश अपनी भाषा के माध्यम से आगे से बढ़ रहे हैं । अपनी सभ्यता, संस्कृति और मूल्यों को बचाने के लिए हमें अपनी भाषाओं को महत्त्व देना

759 HA/08—11A

होगा । उन्होंने सलाह दी कि प्रत्येक भारतीय को अपनी मातृभाषा के अलावा एक अन्य भारतीय भाषा सीखनी चाहिए । महाप्रबंधक श्री एस. के. पै ने कहा कि किसी भी देश की पहचान के लिए तीन चीजें बड़ी प्रमुख होती हैं--राष्ट्रीय ध्वज, उसकी अंतराष्ट्रीय सीमाएं तथा उसकी भाषा । भाषा किसी देश की सभ्यता, संस्कृति तथा उसके मूल्यबोध की प्रतीक होती है । अपनी भाषा से कटनेवाला व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा मूल्यबोध से भी कटता है । अत: देशहित में हमें अपनी भाषाओं को महत्व देना होगा । उन्होंने स्टाफ सदस्यों से अनुरोध किया कि वे कार्यालय में हिंदी के प्रयोग पर अधिक-से-अधिक बल दें ।

आईडीबीआई के जयपुर शाखा कार्यालय

आईडीबीआई के जयपुर शाखा कार्यालय में सितंबर 07 मास को राजभाषा मास के रूप में मनाया गया । 1 सितंबर को राजभाषा मास की शुरूआत करते हुए महाप्रबंधक श्री एस॰ के॰ बंसल ने स्टाफ सदस्यों से अनुरोध किया कि वे इस महीने में अपनी सीट के पत्र , नोटिंग आदि हिंदी में तैयार करें और आपस में व ग्राहकों से बातचीत हिंदी में करें अपने इस आह्वान के पश्चात् उन्होंने समस्त स्टाफ सदस्यों के साथ संकल्प लिया कि राजभाषा मास सितंबर 2007 में वे अपना समस्त कार्य हिंदी में करेंगे ।

हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह 18 सितंबर 2007 को आयोजित किया गया । कार्यक्रम के प्रारंभ में उप महाप्रबंधक श्री एच॰ डी॰ महेश्वरी हिंदी दिवस पर गृहमंत्री, भारत सरकार का संदेश पढ़ा, इस समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित एलआईसी के एस.ई.श्री अशोक कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि अभी बैंकिंग, क्रेडिट कार्ड, म्यूचुअल फंड, मोबाईल, मल्टी नेशनल कंपनियों के ग्राहक सेवा टॉल फ्री अथवा अन्य नंबरों पर हिंदी या अंग्रेजी भाषा चुनने का विकल्प रहता है क्योंकि ग्राहक अपनी बात को सही व स्पष्ट रूप से हिंदी में व्यक्त कर सकते हैं--इन कंपनियों को यह बात समझ में आ गई है कि अगर इस देश में उन्हें अपना कारोबार बढ़ाना है तो यह हिंदी भाषा के माध्यम से ही बढ़ सकता है । इससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि व्यवसाय-वृद्धि के लिए हिंदी भाषा एक अनिवार्य जरूरत बन गयी है ।

महाप्रबंधक श्री एस॰के॰ बंसल ने अपने संबोधन में कहा कि पारस्परिक संवाद स्थापित करने व अपनी मूल भावना को व्यक्त करने के लिए हिंदी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । इसलिए हमें अपनी बोलचाल में व्यवहार की भाषा और अपने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए ।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री अशोक कुमार ने सभी प्रतियोगियों को पुरस्कार प्रदान किए कार्यक्रम के अंत में श्री राजीव शर्मा के प्रति आभार व्यक्त किया ।

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा

इण्डियन ओवरसीज़ बैंक के क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा में प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी हिंदी - दिवस के उपलक्ष्य में स्टाफ सदस्यों के लिए प्रतियोगिताएं और समारोह आयोजित किया ।

हिंदी- दिवस का मुख्य समारोह दिनांक 14 सितंबर 2007 को सहायक महाप्रबंधक श्री सतीशचंद्र वी जोशी की अध्यक्षयता में क्षेत्रीय कार्यालय के परिसर में आयोजित किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में गुजराती हिंदी विद्वान डॉ॰ राज कुमार नागर ने उपस्थित-लाभ प्रदान किया । समारोह का शुभारंभ बैंक के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक के हिंदी-दिवस संदेश को वीरेन्द्र मेहता पाठ से किया गया । अवसर पर अपने उद्‌बोधन में सहायक महाप्रबंधक श्री जोशी ने कहा हिंदी का कार्य सरकारी आदेशों का अनुपालन ही नहीं देश के गौरव का पुनीत कार्य भी है । उन्होंने बैंक के दैनंदिन कार्य में हिंदी प्रयोग को बढ़ाने और पत्राचार के लक्ष्य को निभाने हेतु संबोधन प्रदान किया । मुख्य अतिथि श्री राज कुमार नागर ने हिंदी -गुजराती और देश की अन्य भाषाओं के मूल में छिपी भारतीयता की पहचान को महत्व को समझाया । उन्होंने हिंदी की संवैधानिक स्थिति पर प्रकाश डालते हुए निज भाषा के प्रयोग से अर्जित राष्ट्रीय अस्मिता की भी चर्चा की ।

विजया बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर

क्षेत्रीय कार्यालय, मंगलूर के सभागृह में 14 सिंतबर 2007 को हिंदी दिवस मनाया गया । समारोह का शुभारंभ श्रीमती सुचेत वै शेट्टी व श्रीमती आशालता पुत्रान की वंदना से हुआ । डॉ मुकुन्द प्रभु, हिंदी विभागाध्यक्ष, संत अलोशियस कॉलेज, मंगलूर ने परंपरागत रूप से दीप प्रज्जवलित कर समारोह का उद्‌घाटन किया । अपने उद्‌घाटन भाषण में कहा कि हमें हिंदी दिवस एक दिन मनाने की प्रक्रिया से आगे आकर हर दिन को हिंदी दिवस करना चाहिए । हिंदी एक सरल भाषा है जिसे अधिकांश जनता बोलते व समझते हैं, मात्र अभ्यास करना जरूरी है ।

759 HA/08—11B

समारोह के अध्यक्षीय भाषण के दौरान क्षेत्रीय प्रबंक श्री के.जे. हेग्डे ने बताया कि रोजमर्या के काम में हिंदी का प्रयोग करने से हमारे राजभाषा नीति का अनुपालन हो जाएगा और साथ ही देश की भाषा को मजबूत कर सकेंगे । राजभाषा अधिकारी श्रीमती एस. माया ने हिंदी दिवस के सिलसिले में वित्त मंत्रालय से प्राप्त वित्त मंत्री के संदेश को सभा में पढ़ा । तथा वर्ष 2006-07 के राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी गतिविधियों के रिपोर्ट भी सभा में प्रस्तुत किया । समारोह पर हिंदी दिवस के सिलसिले में आयोजित 7 विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं का क्षेत्रीय प्रबंध ं ने पुरस्कार वितरित किए । स्टाफ सदस्यों और बच्चों का रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

बैंक ऑफ इंडिया, क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा

दिनांक 14-9-2007 को क्षेत्रीय कार्यालय बड़ौदा में श्री हरीश मलिक उप महाप्रबंधक की अध्यक्षता में हिंदी समारोह आयोजित किया गया । उन्होंने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि राष्ट्रीय अस्मिता और पहचान की प्रतीक होने के साथ हिंदी सारे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है । राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए प्रत्येक को गर्व का अहसास होना चाहिए ।

उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय जीवन में हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है । सेवादायी संस्था के कारण ग्राहकों से सीधा संपर्क बने होने को ध्यान में रखते हुए बैंक के विभिन्न खुदरा उत्पादों एवं सेवाओं के प्रचार-प्रसार तथा ग्राहक सेवा के लिए हिंदी को अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम के रूप में अपनाना चाहिए । वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) राजकुमार रंजन ने क्षेत्र में हो रहे हिंदी के प्रयोग के बारे में जानकारी दी ।

इसके बाद बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. अनिल खण्डेलवाल द्वारा इस अवसर पर प्रेषित संदेश का वाचन एआरएम शाखा के प्रमुख अजम त्रिवेदी ने किया । संदेश की सीडी भी प्रदर्शित की गई ।

इस अवसर पर उप क्षेत्रीय प्रबंधक के.एन. शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किए । अनेक स्टाफ सदस्यों ने जीवनकाल में बैंकिंग के अनुभव व्यक्त किए । कार्यक्रम का संयोजन क्षेत्र के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) राजकुमार रंजन ने किया । एसएमई के मुख्य प्रबंधक आशुतोष लाल ने उपस्थितों के प्रति आभार जताया ।

बैंक ऑफ महाराष्ट्र के केंद्रीय कार्यालय, पुणे

बैंक ऑफ महाराष्ट्र, केंद्रीय कार्यालय के अप्पासाहेब जोग सभागृह में दिनांक 20 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह का भव्य आयोजन किया गया । कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री एम.डी. मल्या ने की । इस अवसर पर उपस्थितों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि भाषा हमारी सांकृतिक धरोहर होती है । हम अपनी भाषा को जितना सम्मान देंगे, हमारा आत्मगौरव उतना ही बढ़ेगा ।

इस कार्यक्रम के प्रमुख अतिथि के रूप में डॉ. केशव प्रथमवीर, पूर्व विभागाध्यक्ष पुणे विश्वविद्यालय तथा "समग्र दृष्टि" पत्रिका के संपादक उपस्थित हुए । इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय स्तर पर चलाई जा रही आंतरिक राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत केंद्रीय कार्यालय, के विभागों तथा हिंदी दिवस के दौरान केंद्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में बैंक ऑफ महाराष्ट्र के अध्यक्ष व प्रबंधक निदेशक श्री एम.डी. मल्या ने कहा कि राजभाषा के क्षेत्र में हमारा बैंक निरंतर सक्रिय रहा है । हमें काफी उपलब्धियां भी मिली हैं । हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम राजभाषा के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ते रहें ।

पंजाब नेशनल बैंक झारखण्ड अंचल, रांची

पंजाब नेशनल बैंक झारखण्ड अंचल का राजभाषा समारोह और कवि सम्मेलन 22 सितम्बर, 07 को रांची में सम्पन्न हुआ । समारोह की अध्यक्षता श्री कमल प्रसाद अंचल प्रबंधक ने की ।

अंचल प्रबंधक श्री कमल प्रसाद ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि बैंक में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करना केवल संवैधानिक औपचारिकता नहीं है, बल्कि व्यावसायिक आवश्यकता भी है, क्योंकि बैंक के अधिकांश ग्राहक हिंदी भाषी हैं। ग्राहकों को उनकी भाषा हिंदी में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने पर वे बैंक और बैंक-कर्मियों के साथ संवेदना के स्तर पर विशेष लगाव महसूस करते हैं जो अन्ततः बैंक का व्यवसाय बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है । इसलिए हिंदी के प्रचार-प्रसार पर किए जाने वाले खर्च को व्यय न मान कर निवेश माना जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि पीएनबी ने बैंक में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित कराने के उद्देश्य से "बैंकमित्र" नामक बहुभाषी डाटाबेस सॉफ्टवेयर विकसित कराने में पहल की । पीएनबी की सीबीएस शाखाओं को छोड़कर शेष सभी शाखाओं में "बैंकमित्र" लगाया गया है जिनमें झारखण्ड की कुल 57 में से 34 शाखाएँ शामिल हैं । उन शाखाओं में बैंक मित्र के माध्यम से ग्राहक सेवाएं हिंदी में दी जा रही हैं ।

डॉ. महुआ माजी ने कहा कि हिंदी सद्भाव और सामंजस्य की भाषा है, स्नेह और सम्मान की भाषा है। हिंदी ने देश के स्वाधीनता सेनानियों को एक सूत्र में पिरोने का काम किया था, इसलिए हिंदी स्वतंत्र चेतना की भाषा है, देश की एकता और राष्ट्रीय स्वाभिमान की भाषा है। उन्होंने कहा कि वे बांगला भाषी हैं किंतु लिखती हैं मूलत: हिंदी में । डॉ. महुआ ने कहा कि विदेशों में रहने वाले भारतीय चाहे किसी भी प्रांत के और किसी भी भाषा के हों वहां हिंदी ही उन्हें अपने वतन के लोगों से जोड़ती है, इसलिए हिंदी भाईचारा, अपनत्व एवं व्यापक सम्पर्क की भाषा है। उन्होंने पीएनबी द्वारा बैंक के कार्यकलाप में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों को प्रशंसनीय और अनुकरणीय बताया।

मुख्य अभियंता (उ.प.क्षेत्र) का कार्यालय आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहाटी

मुख्य अभियंता का कार्यालय (उत्तर-पूर्व क्षेत्र) आकाशवाणी एवं दूरदर्शन, गुवाहटी के सभाकक्ष में दिनांक 14-9-2007 को अपराह्न 3 बजे भारतीय भाषाओं के सौहार्द दिवस के रूप में हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़ा उद्घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस समारोह की अध्यक्षता श्री इरा विद्या सागर, मुख्य अभियंता ने की तथा मुख्य अतिथि के रूप में श्री आर. एस. दुबे, मुख्य अभियंता (सामान्य) रेलवे, गुवाहाटी उपस्थित थे।

मुख्य अतिथि श्री आर. एस. दुबे ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी के बिना भारत की सांस्कृतिक एकता की कल्पना करना एक बौने द्वारा चाँद को छूने की कोशिश करने के समान है। यही वह भाषा है, जिसमें भरत की सांस्कृतिक एकता का बचपन और जवानी दोनों झलकते हैं। जब जब देश पर संकट के बादल मँडराए, भारत मां के सपूत अपने प्राणों की आहुति देने हेतु सीमा पर तैयार रहे। उसमें सभी भाषा मजहब के जवान थे, किन्तु नस-नस में जवानी के जोश का संचार, उनके अंदर देश प्रेम की भावना का हिंदी भाषा के जोशीले देशभक्ति संगीत ने ही किया। श्री महादेव शर्मा, उपनिदेशक प्रशासन, ने भी समारोह को संबोधित किया तथा हिंदी के औचित्य पर प्रकाश डाला।

दूरदर्शन केंद्र, तिरूवनंतपुरम

दूरदर्शन केंद्र तिरूवनंतपुरम में दिनांक 14 सितंबर 2007 को हिंदी दिवस के साथ हिंदी पखवाड़ा 2007 का शुभारंभ किया गया। 14 सितम्बर 2007 से 28 सितम्बर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया। इस दौरान केंद्र के मुख्य द्वार तथा अन्दर में हिंदी पखवाड़ा का बैनर लगाया गया। इसके बाद हिंदी के प्रति कर्मचारियों का रुझान बढ़ाने हेतु विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में सभी वर्ग तथा अनुभाग के कर्मचारियों को शामिल किया गया।

इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। इन प्रतियोगिताओं में प्रथम द्वितीय, तृतीय तथा सात्वना पुरुरकार दिए गए।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। इसमें कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्य हिंदी में करने के लिए प्रशिक्षित किया गया। इसके अलावा उनसे अभ्यास भी करवाया गया।

दूरदर्शन केंद्र, देहरादून-248008

दूरदर्शन केंद्र देहरादून पर दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। दिनांक 14-9-2007 को अपराह्न 3.00 बजे पखवाड़ा का शुभारम्भ केंद्र निदेशक श्री तारा दत्त सती द्वारा किया गया। निदेशक महोदय ने इस अवसर पर उपस्थित सभी अधिकारी/कर्मचारियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् हिंदी दिवस के अवसर पर मा. सूचना एवं प्रसारण मंत्री, एवं महानिदेशक, दूरदर्शन की अपील को पढ़कर सुनाया। पखवाड़े के दौरान निबंध, श्रुतलेखन, हिंदी टंकण, वाद-विवाद, हिंदी प्रश्नोत्तरी आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें केंद्र के सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। पखवाड़े के दौरान निबंध श्रुत लेखन, हिंदी टंकण (कंपयूटर), वाद-विवाद एवं अंताक्षरी प्रतियोगिताओं को आयोजन किया गया।

दिनांक 28-9-2007 को सायं 03:00 बजे हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह के अवसर पर माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री शिवराज पाटिल एवं प्रसार भारती के मुख्य कार्यकारी श्री बी.एस. लाली जी की अपील को पढ़कर सुनाया गया। निदेशक महोदय ने आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता प्रातियोगियों को बधाई देते हुए कहा कि वे सभी कर्मचारी एवं अधिकारी गण धन्यवाद के पात्र है जिन्होंने प्रतियोगिताओं में भाग लिया। हिंदी पखवाडा के दौरान इस प्रकार की प्रतियोगिताओं का उद्देश्य भी यही है कि सभी की राजभाषा हिंदी में कार्य करने की रूचि बढे और प्रोत्साहन व पुरस्कार पाकर मन से कार्यालय का कार्य राजभाषा हिंदी में ही करेंगे। तत्पश्चात् निदेशक महोदय द्वारा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया।

दूरदर्शन केंद्र, मऊ (उ.प्र.)

दूरदर्शन केंद्र मऊ में दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन उत्साह

पूर्वक किया गया । दिनांक 14-9-2007 को पखवाड़े उद्घाटन समारोह आयोजन किया गया । इस अवसर पर हिंदी के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. जटाशंकर द्विवेदी को मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में कहा कि हमें अपनी राजभाषा हिंदी को संविधान में दिए गए सर्वोपरि स्थान को देखकर अत्यंत प्रसन्नता होती है, अपनी भाषा में कार्यालय के काम काज करने में जो गर्व महसूस होता है वे किसी अन्य भाषा में नहीं हो सकता है । आगे उन्होंने यह भी कहा कि कार्यालयों में हिंदी का कार्य सिर्फ पखवाड़ा मनाए जाने तक ही सीमित न रह जाए अपितु प्रयास यह होना चाहिए की हम सदैव हिंदी में कार्य करने हेतु तत्पर रहे ।

केंद्र निदेशक श्री डी. एन. मोघे ने अपने संबोधन में कहा कि इस आयोजन का मूल उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रति कर्मचारियों के रूझान को बढ़ाना है । कार्यालय का शत प्रतिशत कार्य राजभाषा हिंदी में हो ऐसा सभी को प्रयास करना है ।

उच्च शक्ति प्रेषित्र : आकाशवाणी आलप्पुपुर केंद्र

1-9-2007 से 14-9-2007 तक मनाया गया । इस अवसर पर तारीख 11-9-2007 को अपराह्न 2.00 बजे से छः प्रतियोगिताएं जैसे निबंध लेखन, टिप्पणी एवं मसौदा लेखन, स्मरण-शक्ति प्रतियोगिता, अनुवाद एवं गीत प्रतियोगिता, आम तौर पर सभी कर्मचारियों के लिए और स्मरण-शक्ति प्रतियोगिता केवल घ-श्रेणी के कर्मचारियों के लिए, आयोजित की गई थीं । सभी कर्मचारियों ने अत्यंत रुचि के साथ इसमें भाग लिया और पुरस्कार भी प्राप्त किया ।

छः प्रतियोगिताओं के पहले, दूसरे एवं तीसरे पुरस्कार विजेताओं को, हिंदी दिवस यानी 14 सितंबर, 2007 को मुख्य अतिथि, श्री नीलकंठन नंपूतिरी, आचार्य, हिंदी विभाग, संत मैक्लिस कॉलेज, आलप्पी, द्वारा नकद पुरस्कार एवं द्विभाषी प्रमाण-पत्रों का वितरण किया गया । इस अवसर पर उन्होंने कर्मचारियों द्वारा प्रतियोतगिताओं में भागीदारी, हमारी संस्कृति एवं अखंडता पर राष्ट्रभाषा का स्थान, अन्य भाषाओं में अनुवाद करने से बढ़कर हिंदी में अनुवाद करने पर भाषा में आत्मा की निहितता, आदि बातों पर जिक्र किया ।

दूरदर्शन केंद्र, हैदराबाद

दूरदर्शन केंद्र हैदराबाद की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में दिनांक 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया । इस संदर्भ में दिनांक 14-9-07 तथा 15-9-07 को दो दिवसीय कार्यशाला रखी गई । इस में 23 कर्मचारियों ने भाग लिया । कार्यशाला में कर्मचारियों को हिंदी व्याकरण, सेवा पंजी में प्रविष्ठियाँ टिप्पण एवं आलेखन आदि का अभ्यास करवाया गया । इससे कर्मचारियों के प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए उत्सुक हुए, अत्याधिक कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ प्रतियोगिताओं में भाग लिया । इस बार जो कर्मचारी सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया परन्तु पुरस्कार प्राप्त नहीं कर सके ऐसे कुछ कर्मचारियों को एक छोटा सा पुरस्कार (शब्द कोश) भी दिया गया ।

दिनांक 1 अक्तूबर 2007 को हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह की अध्यक्षता केन्द्र अधीक्षक अभियन्ता श्री डी. एस. आर. बी. एन हेच. बाबा ने किया । कार्यक्रम का संचालन सुश्री पी. गायत्री देवी हिंदी अधिकारी ने किया । प्रशासनिक अधिकारी तथा अन्य अधिकारियों ने अपने-अपने विचार प्रकट किए । अध्यक्ष महोदय अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हमारे यहाँ अधिक से अधिक कर्मचारी ठीक तरह से हिंदी बोल तथा लिख सकते हैं । अधिकतर छुट्टी फाइलों में नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग हिंदी में ही किए जा रहे हैं । इसी तरह से दैनिक कार्यालय का कार्य हिंदी में करने से अभ्यास होगा । और हिंदी के प्रति झिझक भी दूर होगी । इसके बाद श्री डी. एस. बी. एन. हेच. बाबा अधीक्षक अभियन्ता तथा श्री मीर असफर अली, प्रशासनिक अधिकारी द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र वितरित किए गए ।

आकाशवाणी, तृश्शूर-680631

आकाशवाणी, तृश्शूर के हिंदी पखवाड़ा समोराह 14 से 28 सितंबर तक मनाया गया । पखवाड़े के दौरान अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अधिक से अधिक काम हिंदी में करने का अनुरोध किए गए और मार्गदर्शन हेतु परिपत्र भी जारी किया गया । पखवाड़े के भाग के रूप में आठ प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । हर एक प्रतियोगिता को प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं दो सांत्वना पुरस्कार प्रदान किए गए ।

दिनांक 19-9-2007 को आयोजित कार्यशाला में बारह अधिकारी/कर्मचारी सदस्य उपस्थित रहे । दूर संचार विभाग, तृश्शूर के सहायक निदेशक (रा.भा.) श्रीमती सी. मेदिनी ने क्लास चलाया ।

दिनांक 28-09-2007, अपराह्न 3.30 बजे हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह संपन्न हुआ । समारोह में केंद्र अभियंता एवं कार्यालय के अधिकांश अधिकारी/कर्मचारी गण उपस्थित थे ।

आकाशवाणी, गोरखपुर

आकाशवाणी के गोरखपुर केंद्र द्वारा 1सितंबर से 14 सितंबर 2007 की सम्पूर्ण अवधि को हिंदी पखवाड़ा के रूप में समारोहपूर्वक मनाया गया ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में केंद्राध्यक्ष श्री वी. बी. राय ने राजभाषा संबंधी विभिन्न प्रावधानों के अनुपालन पर बल देते हुए कहा कि आज हिंदी हमारी आवश्यक आवश्यकता बन गई है । इसके बिना न तो अपने को न अपनों को जाना पहचाना जा सकता है । उन्होंने आगे कहा कि यदि हमें इस देश की गौरवशाली, वैभवशाली एवं समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को जानना है, देशवासियों से भावनात्मक संबंध स्थापित करना है राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को मजबूती प्रदान करना है तो हिंदी की शरण में जाना होगा और इसके लिए विकल्पहीन संकल्प लेना होगा ।

हिंदी पखवाड़ा को जीवंत, प्रेरणादायक, रूचिकर एवं ज्ञानवर्द्धक बनाने के उद्देश्य से इस दौरान कतिपय प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था । यथा निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता, श्रुत लेखन प्रतियोगिता, हिंदी टंकण प्रतियोगिता एवं आशुभाषण प्रतियोगिता । इन प्रतियोगिताओं में इस केंद्र के सभी संवर्गों के अधिकारियों व कर्मचारियों ने काफी उत्साह, उमंग एवं रूचि से भाग लिया । हिंदी दिवस 14 सितंबर 2007 की पूर्व संध्या पर आज के परिवेश में हिंदी विषय पर विशेष प्रसारण भी किया गया था जिसे श्रोताओं द्वारा काफी सराहा गया था ।

प्रतियोगिता के सफल उन्नीस प्रतिभागियों को 25 सितंबर 2007 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में नकद राशि एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

आकाशवाणी, जालंधर केंद्र

1-9-07 से 14-9-07 तक पखवाड़ा व 14-9-07 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी निबंध, भाषण, टिप्पण-आलेखन व सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

मुख्य समारोह 14 सितंबर को अयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता केंद्र निदेशक श्री धर्मपाल मलिक ने की ।

इस अवसर पर अधीक्षण अभियंता महोदय ने अपना अभिभाषण देते हुए कहा कि हिंदी को यदि सही माथनों में आगे बढ़ना है तो उसे विज्ञान प्रौद्योगिकी और सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ना होगा ।

इस के उपरान्त केंद्र निदेशक, अधीक्षण अभियंता महोदय द्वारा वर्ष भर में आयोजित प्रतियोगिताओं के 54 सफल प्रतियोगियों को नौ हजार रु. नकद पुरस्कार व प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया । हिंदी में मूल रूप से काम करने वाले 10 सदस्यों को टिप्पण-आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना के तहत लगभग पांच हजार रु. नकद राशि व प्रमाण-पत्र दे कर प्रोत्साहित किया गया ।

कार्यशालाओं में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया ।

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता

मुख्य अभियंता (पूर्वी क्षेत्र), आकाशवाणी और दूरदर्शन, कोलकाता के कार्यालय में दिनांक 03-09-2007 से 14-09-2007 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया । पखवाड़े के दौरान पांच प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14-09-2007 को हिंदी पखवाड़ा का समापन तथा पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया । श्री प्रभाकर पंडा जी ने मुख्य अतिथि के रूप में अपना भाषण प्रदान किया । अपने वक्तव्य में उन्होंने हिंदी दिवस के महत्व पर आलोकपात करते हुए संविधान में हिंदी के प्रावधान पर विस्तृत रूप से चर्चा की एवं प्राचीन काल से हिंदी के इस्तेमाल संबंधी दृष्टांत को प्रस्तुत किया । उन्होंने कहा –''हिंदी की अग्रगति के लिए केवल हिंदी पखवाड़ा में भाग लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि पूरे वर्ष में हिंदी में कामकाज को बढ़ावा देना आवश्यक है । हिंदी हमारी राजभाषा है और राजभाषा को भली प्रकार सीखना और समझना जरूरी है ताकि इसमें कार्य करने में कोई असुविधा न हो''। इसके बाद मुख्य अतिथि के करकमलों द्वारा सफल प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया ।

आकाशवाणी, कोलकात्ता

आकाशवाणी, विज्ञापन प्रसारण सेवा, तथा उप महानिदेशक (पूर्वी क्षेत्र) का कार्यालय, कोलकाता के संयुक्त तत्वाधान में 11 सितंबर से 25 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रेरणादायक एवं प्रतिस्पद्र्धात्मक कार्यक्रम आयोजित किए गए ।

दिनांक 11 सितंबर, 2007 को हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया । समारोह के मुख्य अतिथि सुरेन्द्रनाथ सांध्य कॉलेज के वरिष्ठ रीडर व हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. प्रेम शंकर त्रिपाठी ने हिंदी की आधारभूत संरचना एवं वर्तमान परिप्रेक्ष में हिंदी की सार्थकता पर बल देते हुए कहा कि आश्वासनों के मकर जाल में हिंदी को कैद करके रखा गया है । हिंदी एक डोर है जो पूरे भारत वर्ष को जोड़ती है । हमें हिंदी लिखने-पढ़ने से घबराना नहीं चाहिए । हिंदी देश की अश्मिता के लिए बहुत जरूरी है । अपने अध्यक्षीय संबोधन में केंद्र निदेशक श्री प्रदीप कुमार मित्र ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग करने का आग्रह किया । श्रीमती शिखा भट्टाचार्य हिंदी अनुवादक ने सभी अधिकारियों एवं सहकर्मीगण के प्रति उनके सकारात्मक सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया ।

दिनांक 25 सितंबर, 2007 को हिंदी पखवाड़ा का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया ।

आकाशवाणी, सम्बलपुर

हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े-2007 का आयोजन 19 सितंबर, 2007 से 27 सितंबर, 2007 तक किया गया । 19 सितंबर को अपरान्ह 4.00 बजे इस केंद्र की सम्मेलन कक्ष में हिंदी पखवाड़े का उद्घाटन समारोह को इस केंद्र के केंद्र निदेशक श्री काली किंकर मिश्र ने उद्घाटन किया और प्रारम्भ में सभी प्रतियोगियों को धन्यवाद देते हुए हिंदी पखवाड़े का महत्व एवम् उद्देश्य बताते हुए राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए कदम उठाने हेतु और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए आह्वान किया ।

इस अवसर पर राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए और अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए आकाशवाणी, सम्बलपुर के हिंदीतर भाषी अधिकारियों एवम् कर्मचारियों के बीच विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं तथा अनुवाद, निबंध, टिप्पण/ प्रारूप लेखन, तत्कालिक भाषण आदि का आयोजन किया गया ।

पखवाड़े का समापन समारोह तथा पुरस्कार वितरण सभा का आयोजन दिनांक 27-09-2007 अपरान्ह 5 बजे कार्यालय के प्रतिक्षा कक्ष में केंद्र निदेशक श्री काली किंकर मिश्र के अध्यक्षता में हुआ । सभाध्यक्ष केंद्र निदेशक ने हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा का तात्पर्य के बारे में अधिकारियों/कर्मचारियों को अवगत किया और अपने वक्तव्य में कहा - ''हिंदी पखवाड़े के दौरान राजभाषा का ज्यादा से ज्यादा उपयोग किया जाए तथा कार्यालय के कामकाज में हिंदी को अधिक से अधिक रूप में प्रयोग करने के लिए आह्ववान किया और कहा कि हम सबको मिलकर हिंदी में काम करने का प्रयास जारी रखना चाहिए और दूसरों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अनुरोध किया'' ।

मुख्य अतिथि डा. कुलजीत सिंघ (पूर्व ओ.ई.एस.) ने हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़ा का तात्पर्य के बारे में बताते हुए अपनी वक्ताव्य में कहा ''हिंदी भाषा सहज और सरल के साथ-साथ सुरुचिपूर्ण भी है और अगर हमारा प्रयास जारी रहेगा तो अवश्य ही एक दिन आएगा जिस दिन हम सबको हिंदी में काम करने के लिए अवश्य सरलता का अनुभव होगा'' । उसके बाद मुख्य अतिथि डा. सिंघ ने अपने कर कमल से कृति प्रतियोगियों को चेक माध्यम से नकद पुरस्कार वितरण करके सम्मानित किया ।

आकाशवाणी, अहमदाबाद

आकाशवाणी एवं विज्ञापन प्रसारण सेवा आकाशवाणी, अहमदाबाद में दिनांक 14 सितंबर 2007 को हिंदी दिवस मनाया गया एवं उसी दिन से दिनांक 27-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा राजभाषा पर्व के रूप में मनाया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2007 को श्री एल.पी. मण्डरवाल, उपमहानिदेशक, दूरदर्शन केंद्र ने दीप प्रज्वलित करके हिंदी पखवाड़ा 2007 का उद्घाटन किया । पखवाड़े का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि हिंदी के सरल शब्दों का प्रयोग करते हुए अपना सरकारी कामकाज हिंदी में करें । आगे श्रीमती मीनाक्षी सिंघवी, केंद्र अभियंता ने अनुरोध करते हुए

कहा कि हिंदी भाषा को औपचारिक रूप न देते हुए असली रूप से अपनाया जाए तो ही हिंदी की प्रगति हो सकती है । इस प्रकार राजभाषा की अस्मिता को बनाए रखा जा सकता है । भारत जैसे विशाल देश में विविधता में एकता लाने वाली भाषा हिंदी ही हो सकती है । श्री भगीरथ पंड्या, केंद्र निदेशक ने बताया कि अब तो हिंदी विश्व स्तरीय भाषा बन चुकी है । आप सभी पूरे वर्ष हिंदी में कार्य करें और अधिक से अधिक प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले कर इसे सफल बनाए ।

श्रीमती साधना भट्ट केंद्र निदेशक विप्रसे ने कहा कि उत्तर से दक्षिण, कश्मीर से कन्याकुमारी तक बोली और समझी जाने वाली भाषा हिंदी सरल है । कार्यालय में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए । आभार व्यक्त करते हुए श्री मनुभाई जानी, उपनिदेशक ने बताया कि हिंदी भाषा की प्रगति के लिए हम सभी को प्रयास करने चाहिए ताकि हम लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें ।

दूरदर्शन केंद्र : नागपुर

दूरदर्शन केंद्र, नागपुर में दिनांक 14 से 28 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । दिनांक 14 सितम्बर को हिंदी दिवस समारोह के आयोजन के अवसर पर केंद्र निदेशक श्री लक्ष्मेंद्र चोपड़ा ने द्वीप प्रज्वलित कर पारंपरिक ढंग से हिंदी पखवाड़े के शुभारंभ की घोषणा की । उन्होंने इस अवसर पर माननीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्री प्रियरंजन दासमुंशी की अपील को उपस्थित स्टाफ के समक्ष पढ़कर सुनाया । केंद्र अभियंता श्रीमती सुनिता भिशीकर ने भी उपस्थित स्टाफ को हिंदी दिवस की बधाई देते हुए महानिदेशक श्री लीलाधर मंडलोई द्वारा प्रेषित अपील को पढ़कर सुनाया । अपने अध्यक्षीय उद्‌बोदन में निदेशक श्री लक्ष्मेंद्र चोपड़ा ने कहा, "हिंदी आमलोगों की भाषा है और दूरदर्शन आम लोगों का मीडिया । अतः यह न केवल हमारा कर्तव्य है बल्कि हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम हिंदी को और अधिक सशक्त बनाए और अपना अधिक से अधिक कार्य हिंदी में ही करें ।

पखवाड़े का समापन 28 सितंबर को पुरस्कार वितरण के साथ किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित पश्चिम क्षेत्र के निदेशक (अभियांत्रिकी), (प्रकल्प) श्री सी.एच. रंगाराव के कर-कमलों से हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी की विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरुस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान किए गए । उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से हिंदी के कार्यान्वयन को लक्ष्य तक पहुंचाने की अपील की । केंद्र अभियंता श्रीमती सुनीता भिशीकर ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए उपस्थित स्टाफ का मार्गदर्शन किया ।

आकाशवाणी, कडपा

आकाशवाणी, कडपा केंद्र में अठारवां हिंदी माह 07 सितंबर से 01 अक्तूबर 2007 तक कडपा आकाशवाणी के प्रांगण में बड़ी उल्लास के साथ मनाया गया । इस समारोह के उपलक्ष्य में 07 सितंबर, 2007 को उद्‌घाटन समारोह का आयोजन किया गया था और 07 सितम्बर से लेकर 1 अक्तूबर, 2007 तक हिंदी से संबंधित अनेक कार्यक्रमों का निर्वहन किया गया ।

हिंदी माह के समापन समारोह 1 अक्तूबर, 2007 को आकाशवाणी के प्रांगण में श्री टी.एस. गौरी शंकर के प्रार्थना गीत से आरंभ हुआ । समारोह के अध्यक्षता श्री ए.मल्लेश्वर राव ने की है । उन्होंने अपने भाषण में यह कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है, ज्यादातर भारतवासी इस भाषा को आसानी से समझ सकते हैं । इसीलिए हमारे संविधान में 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान की हैं । हिंदी में काम करना बहुत आसान है । उन्होंने उपस्थित सभी सदस्यों से यह निवेदन किया कि हिंदी में काम बढ़ावे और केंद्र सरकार की नीति का पालन सुचारू रूप से कार्यान्वित करें ।

आकाशवाणी, इम्फाल

14 से 28 सितंबर, 2007 तक इस कार्यालय में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस पखवाड़ा के प्रारम्भ होने के पूर्व सहायक केंद्र निदेशक श्री एम. काननकुमार सिंह ने कर्मचारियों को अपील करते हुए कहा कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना हमारा कर्तव्य ही नहीं बल्कि हिंदी के प्रति सेवा तथा सम्मान प्रदान कर राष्ट्र प्रेम की भावना को सुदृढ़ करना है । हिंदी पखवाड़ा के दौरान सभी कार्य हिंदी में करने का संकल्प लेने के लिए अपील भी की ।

14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस/पखवाड़ा समारोह का उद्‌घाटन सहायक केंद्र निदेशक श्री एम. कानन कुमार सिंह द्वारा किया गया । कार्यक्रम निष्पादक श्री इ अचौ सिंह ने उद्‌घाटन भाषण दिया तथा उपस्थित सभी प्रतियोगिताओं

में भाग लेने के लिए अपील भी की । इसी उपलक्ष्य में सहायक केंद्र निदेशक ने महानिदेशक आकाशवाणी श्री बी. एस. लाली के संदेश को पढ़कर सुनाया । श्री लाली ने बताया–"हम न केवल प्रसारण के क्षेत्र में, बल्कि अपने रोजमर्रा के कामकाज में भी हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की परम्परा को कायम रखें ।" उन्होंने यह भी बताया कि सूचना प्रौद्योगिकी के आज के इस दौर में थोड़ा सा समय निकालकर कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी सीखी जा सकती है । इस पखवाड़ा में तीन प्रतियोगिताएं रखी गई है । ये प्रतियोगिताएं पखवाड़े के अलग-अलग दिनों में आयोजित की गई । सबसे पहली प्रतियोगिता थी "हिंदी में श्रुतलेखन" इस प्रतियोगिता में दस कर्मचारियों ने भाग लिया । इसी पखवाड़ा के दौरान एक कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

आकाशवाणी, धारवाड़

आकाशवाणी, धारवाड़ में दिनांक 1-9-2007 से 14-9-2007 तक हिंदी पखवाड़ा धूमधाम से मनाया गया । इस संदर्भ में पखवाड़ा भर हिंदी पत्र लेखन, हिंदी आशुभाषण, हिंदी कवितापाठ, हिंदी वाचन तथा शब्द लेखन (वाहन चालक तथा 'घ' श्रेणी समूह कर्मचारीयों के लिए) हिंदी निबंध, हिंदी श्रुतलेखन तथा शब्दावली प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनांक 14-9-2007 को अपरान्ह 4.00 बजे मुख्य समारोह आयोजित किया गया था । समारोह की अध्यक्षता सहायक केंद्र निदेशक सी यू बेल्लक्की ने की ।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. मालती आदवानी सेवानिवृत विभागाध्यक्षा जे एस एस कालेज धारवाड़ ने अपने भाषण में कहा कि हिंदी भाषा न सिर्फ भारत में अब देश विदेश में भी काफी लोकप्रिय हो रही है, दुनिया के कई विश्वविद्यालयों में इसका अध्ययन हो रहा है और हिंदी फिल्मों और अन्य समूह माध्यमों का इसको और ज्यादा लोकप्रिय बनाने में सराहनीय योगदान रहा है । हमें हिंदी भाषा और अपनी भाषाओं पर अभिमान होना चाहिए उनका सम्मान हमारी संस्कृति का सम्मान है ।

आकाशवाणी, बेंगलूर

आकाशवाणी, बेंगलूर में 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय में अधिकाधिक हिंदी में काम करने पर बल दिया गया । हिंदी के काम-काज में गति लाने ओर कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से हिंदी की सात प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें केंद्र के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के हिंदी अक्षर ज्ञान प्रतियोगिता तथा अन्य सभी के लिए हिंदी निबंध लेखन, हिंदी टिप्पण आलेखन, अंत्याक्षरी, हिंदी अनुवाद, हिंदी टंकण तथा आशुभाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

किन्हीं अपरिहार्य कारणों से दिनांक 28-9-2007 को हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह का आयोजन नहीं किया जा सका अत: दिनांक 17-10-2007 को समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया ।

उपमहानिदेशक श्री एच.आर. कृष्णमूर्ति ने सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए उन्हें बधाई दी तथा राजभाषा हिंदी के प्रति इसी प्रकार उत्साहित बने रहने का आहवान किया । उन्होंने कहा कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी ही मूलत: कार्यालयीन हिंदी है अत: हिंदी में हर काम संभव है । मुझे खुशी है कि आकाशवाणी, बेंगलूर के कर्मचारी इस दिशा में अच्छा कार्य कर रहे हैं ।

आकाशवाणी, कटक

आकाशवाणी, कटक में दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । 14 सितम्बर को अपरान्ह 3.00 बजे सम्मेलन कक्ष में आयोजित उद्घाटन सभा में केंद्र अभियन्ता तथा कार्यालयध्यक्ष श्री बसन्त कुमार बेहेरा ने अध्यक्षता की । उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा हिंदी के महत्व पर प्रकाश डाला एवं कार्यालय के समस्त अधिकारी कर्मचारियों से राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्य करके निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आग्रह किया । सम्माननीय वक्ता श्री प्रसेनजित महांति, सहायक केंद्र निदेशक ने अपने उद्बोध न में कहा कि हिंदी हमारी राजभाषा है तथा बहुत बड़ी भू-भाग में बोली जाती है । हिंदी में कार्य करना तथा राजभाषा का प्रचार-प्रसार हमारा कर्तव्य है। इसी उद्देश्य से ओड़िशा स्थित अन्य आकाशवाणी केंद्रों को हमारे हिंदी अधिकारी जाकर हिंदी पखवाड़ा का संचालन करते हैं । उन्होंने पखवाड़ा को सफल बनाने के लिए समस्त अधिकारी कर्मचारियों को आग्रह किया ।

759 HA/08—12A

मुख्य वक्ता रेवेंशॉ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. रवीन्द्रनाथ मिश्र ने सभा को संबोधित करके हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर सविस्तार प्रकाश डाला । मुख्य अतिथि रेवेंशॉ विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. स्मरप्रिया मिश्र ने अपने अभिभाषण में कहा कि उनका रिश्ता आकाशवाणी से बहुत पुराना है । हिंदी से संबंधित अनेक कार्यक्रमों में उन्होंने भाग लिया है । मुख्य अतिथि ने कार्यालयीन तथा व्यावहारिक हिंदी पर जोर देते हुए कहा कि इसे सीखना हमारे लिए बहुत जरूरी है क्योंकि इससे हम कार्यालय के कार्य बिना झिझक के हिंदी में कर सकते हैं । हिंदी एक ऐसी कड़ी है जो जोड़ने का कार्य करती है ।

हिंदी पखवाड़ा के उपलक्ष में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन आकाशवाणी कटक के हिंदीतर-भाषी अधिकारी एवं कर्मचारियों के लिए किया गया ।

केंद्र अभियन्ता तथा कार्यालयाध्यक्ष श्री बसन्त कुमार बेहेरा ने अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में कहा कि जब तक हम हिंदी के साथ आत्मीयता स्थापित नहीं करेंगे तब तक हमें हिंदी में कार्यालयीन कार्यों को करना कठिन लगेगा । उन्होंने हिंदी में कार्य करने की आदत पर जोर डालते हुए कहा कि हर हिंदुस्तानी को इस पर निरन्तर प्रयत्न करना चाहिए ।

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, बेंगलूर

विज्ञापन प्रसारण सेवा, आकाशवाणी, बेंगलूर में 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । हिंदी पखवाड़े के दौरान कार्यालय में अधिकाधिक हिंदी में काम करने पर बल दिया गया । हिंदी के काम-काज में गति लाने और कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने की दृष्टि से हिंदी की छः प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिसमें केंद्र के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के हिंदी अक्षर ज्ञान प्रतियोगिता तथा अन्य सभी के लिए हिंदी निबंध लेखन, हिंदी टिप्पण आलेखन, अंत्याक्षरी, हिंदी अनुवाद, तथा आशुभाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

उपमहानिदेशक श्री एच.आर. कृष्णमूर्ति ने सभी विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान करते हुए उन्हें बधाई दी तथा राजभाषा हिंदी के प्रति इसी प्रकार उत्साहित बने रहने का आह्वान किया । उन्होंने कहा कि देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी ही मूलतः कार्यालयीन हिंदी है अतः हिंदी में हर काम संभव है । मुझे खुशी है कि आकाशवाणी, बेंगलूर के कर्मचारी इस दिशा में अच्छा कार्य कर रहे हैं ।

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण, नई दिल्ली-2

भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (ट्राई) में दिनांक 14-28 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया था । 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर श्री नृपेन्द्र मिश्र, माननीय अध्यक्ष, ट्राई का संदेश परिचालित किया गया । इस पखवाड़े के दौरान प्राधिकरण में सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग का प्रेरित-प्रोत्साहित करने के लिए राजभाषा संबंधी लगभग 20 प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । इन प्रतियोगिओं का आयोजन नियमानुसार दो विभिन्न वर्गों अर्थात हिंदीभाषी एवं हिंदीतरभाषी में किया गया । बड़ी संख्या में अधिकारियों/कर्मचारियों ने इन प्रतियोगिताओं में बड़े उत्साह से भाग लिया ।

प्राधिकरण के माननीय अध्यक्ष द्वारा इन प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को दिनांक 19 अक्तूबर, 2007 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में सम्मानित किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित कुल 20 राजभाषा प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितिय और तृतीय आने वाले लगभग कार्मिकों ने अध्यक्ष महोदय से प्रमाण-पत्र एवं नकद पुरस्कार प्राप्त किए । अध्यक्ष महोदय ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन की प्रशंसा की तथा साथ ही पुरस्कार विजेताओं को बधाई देते हुए सभी से आह्वान किया कि वे प्राधिकरण में संघ सरकार की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन में अपना पूर्ण योगदान दें । प्राधिकरण के माननीय सदस्यगणों ने भी इस समारोह की शोभा बढ़ाई ।

कार्यालय, महाप्रबंधक दूरसंचार जिला, कटक

दिनांक 14 सितंबर 2007 से 28 सितंबर 2007 के दौरान हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस अवधि में अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों और बैठकों का आयोजन किया गया । दिनांक 28-9-2007 को अपरान्ह 6.00 बजे हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह आयोजित किया गया ।

अध्यक्ष तथा महाप्रबंधक श्री प्रदीप कुमार होता ने बदलती वैश्विक चुनौतियों, खुले बाजार की प्रतिस्पर्धात्मक

759 HA/08-12B

रणनीतियों और उपभोक्ताओं में गुणवत्तामूलक सेवाओं को लेकर बढ़ते हुए आग्रह को दृष्टिगत रखते हुए निगमकर्मियों से नई कॉरपोरेटर संस्कृति अपनाने और उपभोक्तओं की अपनी भाषाओं को सेवा देने के लिए प्राथमिकता प्रदान करने का संदेश दिया । उन्होंने समापन समारोह को संकल्प दिवस के रूप में मानने का सुझाव दिया ।

दूरसंचार, भारत संचार निगम लि., डिब्रुगढ़

न.रा.का.स. डिब्रुगढ़ की ओर से 14-29 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन महाप्रबंधक, बी. एस.एन.एल. डिब्रुगढ़ कार्यालय में किया गया । 14 सितंबर 2007 को न.रा.का.स. की ओर से हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया गया । माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार, श्री शिवराज वि. पाटील का राजभाषा संदेश अध्यक्ष नराका ने पढ़कर सुनाया तथा माननीय वित्तमंत्री, भारत सरकार श्री पी. चिदम्बरम द्वारा की गयी राजभाषा अपील को भी पढ़कर सुनाया । कार्यक्रम का संचालन श्री हरि राम मीणा नराकास सचिव एवं हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, डिब्रुगढ़ ने किया ।

हिंदी दिवस पर अपने भाषण में श्री हरि राम मीणा ने कहा कि हिंदी दिवस को राजभाषा दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए । हिंदी दिवस पर नया संकल्प लेकर हिंदी में कार्य करने की क्षमता को बढ़ाना चाहिए । कार्यालय में हिंदी का कार्य बहुत आसान है जैसे–उपस्थिति पंजिका में हिंदी में नाम लिखना, हिंदी में हस्ताक्षर करना, मुहर द्विभाषी होना समय-समय पर तिमाही रिपोर्ट भेजना, हिंदी कार्यशाला, तिमाही बैठकों का आयोजन करना चाहिए ।

एम एस एम ई विकास संस्थान, कटक

संस्थान में दिनांक 14-09-2007 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । यह संस्थान 'ग' क्षेत्र में अवस्थित होने के बावजूद लोगों में हिंदी के प्रति आर्कषण बेमिसाल है । इस संस्थान के 95% अधिकारी एवं कर्मचारीगण हिंदी में प्रवीण या कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त हैं । हिंदी दिवस के अवसर पर संस्थान के परिसर में हिंदी से संबंधित नारों एवं स्लोगनों को चिपकाया गया । संस्थान का वातावरण हिंदीमय हो गया ।

हिंदी दिवस समारोह संस्थान के सेमिनार हॉल में आयोजित किया गया । श्री दीन बन्धु सिंह, हिंदी अधिकारी, एम एस एम ई विकास संस्थान, कटक ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया तथा इस आयोजन की आवश्यकता एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला । संघ की राजभाषा अधिनियम एवं नियम की चर्चा करते हुए उन्होंने द्विभाषी तथा त्रिभाषी फार्मूले को विस्तार से बताया । उन्होंने कहा कि संस्थान में 50 % के लगभग कार्य हिंदी में होते हैं जिसे बढ़ाकर 100 % किया जाना चाहिए । हिंदी में कार्य करना काफी सरल और आसान है, अगर कहीं कमी है तो सिर्फ मानसिकता की । यदि हम दृढ़निश्चय कर लें कि हम सिर्फ हिंदी में ही अपना सारा कार्य करेंगें तो सारी समस्या और सारे अवरोध अपने आप समाप्त हो जाएगी ।

महाप्रबंधक दूरसंचार कार्यालय, संचार भवन, नाशिक - 422 002

भारत संचार निगम लिमिटेड, नाशिक में वर्ष 2007 का हिंदी पखवाड़ा बड़े ही आकर्षक और सुरुचिपूर्ण ढंग से मनमाड में दिनांक 17-09-2007 को नांदगांव, मनमाड, चांदवड और येवला एसडीसीए के लिए और उसी प्रकार मालेगांव में दिनांक 18-9-2007 को मालेगांव, सटाणा, कलवण और उमराणे एसडीसीए के लिए और पिंपलगांव में दिनांक 19-9-2007 को पिंपलगांव, निफाड, दिंडोरी, पेठ, सुरगाना एसडीसीए के लिए और नाशिक में 14 सितम्बर 2007 से दिनांक 28 सितम्बर 2007 तक नाशिक, त्र्यंबकेश्वर, इगतपुरी, सिन्नर, दिंडोरी, पेठ निफाड और सुरगाना एसडीसीए के लिए मनाया गया । इस प्रकार सम्पूर्ण नाशिक दूरसंचार जिले के कार्यालयों को पखवाड़े की प्रतियोगिताओं में भाग लेने तथा प्रोत्साहन पाने का अवसर मिला ।

प्रतियोगिताओं के विजेता अधिकारियों और कर्मचारियों को महाप्रबंधक दूरसंचार बीएसएनएल नाशिक श्री अशोक वीर और नाशिक महानगरपालिका आयुक्त श्री विलासजी ठाकुर व उपमहाप्रबंधक (प्रशासन) श्री विश्वमोहन ने नकद राशि के पुरस्कार देकर सम्मानित किया ।

भारत संचार निगम लि., टेलीफोन, चेन्नई

हिंदी पखवाड़ा 2007 के उपलक्ष्य में चेन्नई टेलीफोन के कर्मचारियों, वरिष्ठ अधिकारियों तथा उनके बच्चों के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई ।

वरिष्ठ अधिकारियों के लिए अनुलेखन की प्रतियोगिता, दिनांक 10-09-2007 को आयोजित की गई । कर्मचारियों के लिए टिप्पण व प्रारूप लेखन, गायन, श्रुतलेखन, प्रश्नोत्तरी, अनुलेखन आदि प्रतियोगिताएं, दिनांक 01-09-2007 से 07-09-2007 तक अयोजित की गई । चेंगलपट्टू मंडल के कर्मचारियों के लिए दिनांक 17-08-2007 को चेंगलपट्टू, कांचीपुरम व मींजूर आदि एककों में अनुलेखन व श्रुतलेखन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । बच्चों के लिए कविता पाठ, अनुलेखन, कहानी पाठ, श्रुतलेखन, गायन, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताएं दिनांक 26-08-2007 को आयोजित की गई ।

विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को गौरवांवित करने का पुरस्कार वितरण समारोह, 14 सितम्बर, 2007, पी व टी, स्टाफ क्वार्टर्स, अण्णा नगर, चेन्नई -40 में आयोजित किया गया । श्री जी. सेल्वम, महाप्रबंधक (प्र.), चेन्नई टेलीफोन, इस समारोह के अध्यक्ष रहे । डॉ. एच.एन. पांडे, उपचार्य व अध्यक्ष, हिंदी विभाग, डी.जी. वैष्णव कालेज, चेन्नई, पुरस्कार वितरण समारोह के मुख्य अतिथि रहे । श्री एस. मणि, उप महाप्रबंधक (प्रशासन) व मुख्य राजभाषा अधिकारी द्वारा स्वागत भाषण प्रस्तुत किया गया । श्रीमती जया सूर्या चेल्लम, सहायक निदेशक (राजभाषा), द्वारा राजभाषा अनुभाग की वार्षिक रिपोर्ट 2006-2007 प्रस्तुत की गई ।

इस वर्ष ''चेन्नई वाणी'' वार्षिक हिंदी पत्रिका के ग्यारहवें अंक का प्रकाशन खेल-कूद विशेषांक के रूप में किया गया । वर्ष 2006-2007 के लिए राजभाषा हिंदी के अत्युत्तम कार्यान्वयन का शील्ड महाप्रबंधक, ग्रा.स.से. आंचल को प्राप्त हुआ । तत्पश्चात् पुरस्कारों का वितरण किया गया । श्री जी. सेल्वम, महाप्रबंधक (प्रचालन) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी भाषा हमारे राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति है । चूंकि हिंदी, संघ सरकार की राजभाषा है अत: हिंदी का प्रचार व प्रसार करना हमारे बी.एस.एन.एल. संगठन के प्रत्येक कर्मचारी का कर्तव्य है । मातृभाषा की अहमियत व अद्वितीयता का उल्लेख करते हुए, डॉ. एन.एच. पांडे, मुख्य अतिथि ने मातृभाषा को मां का दर्जा दिलाया । तत्पश्चात् हिंदी सीखना भी आसान होगा और इसका प्रचार-प्रसार करना अति सुलभ । श्रीमती के. मृदला, क.हिं.अ. द्वारा प्रस्तुत धंयवादार्पण के साथ, समारोह संपन्न हुआ ।

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी, चण्डीगढ़

सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी में इस वर्ष हिंदी पखवाड़ा मनाने का सिलसिला 14-09-2007 से आरम्भ हुआ । इस दौरान हिंदी सुलेख प्रतियोगिता - विशेषत: हिंदीतर भाषा-भाषी लोगों के लिए, निबंध प्रतियोगिता एवं हिंदी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 18-09-2007 को किया गया । तत्पश्चात् आशु-भाषण प्रतियोगिता एवं हिंदी प्रश्नोत्तरी (Quiz) प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20-09-2007 को किया गया । इन सभी प्रतियोगिताओं में सेमी-कंडक्टर लेबोरेटरी के वैज्ञानिकों तथा कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर सोत्साह भाग लिया । इसके अतिरिक्त पूरे वित्तीय वर्ष में 'हिंदी में मूल रूप से कार्य करने पर लागू की गई प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 2 कर्मचारियों को पुरस्कृत किया गया और इस वर्ष समूह घ के 1 कर्मचारी को पुरस्कृत किया गया ।'

तदुपरांत, विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता कर्मचारियों को 21 पुरस्कार वितरित किए गए और सेमीकंडक्टर लेबोरेटरी के प्रमुख (कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन), श्री अश्वनी कुमार द्वारा आभार प्रदर्शन करते हुए हिंदी दिवस समारोह का सुखद समापन किया गया ।

केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, हैदराबाद

दिनांक 17/9/2007 से 21/9/2007 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन राजभाषा का व्यापक प्रसार प्रचार के उद्देश्य से उत्साहपूर्वक किया गया ।

इस समारोह के अंतर्गत विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिनमें कई वरिष्ठ अधिकारियों एवं अन्य कर्मचारियों ने बड़े हर्ष उल्लास के साथ बहु-मात्रा में भाग लिया । हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं में प्रयोगशाला के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के 60 नामांकन पत्र दर्ज किए गए और 58 प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया । पूरे सप्ताह तक प्रयोगशाला परिसर में हिंदी में वातावरण बना रहा ।

इन प्रतियोगिताओं के सफल समापन्न के उपरांत केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, हैदराबाद में 28 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया । डॉ. आर.के. सरीन, उप-निदेशक के स्वागत

भाषण से हिंदी दिवस समारोह प्रारंभ हुआ । समारोह के मुख्य अतिथि श्री सी.एच. गांधी, सरकारी परीक्षक प्रश्नास्पद प्रलेख, हैदराबाद थे, हिंदी सप्ताह के दौरान 6 प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकेद पुरस्कार क्रमशः प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा 35 सहभागिता पुरस्कार प्रदान किए गए ।

केंद्रीय जल और विद्युत् अनुसंधानशाला, पुणे

14-9-2007 को हिंदी दिवस के पूर्व 3 सितंबर, 2007 से हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस अवधि में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई थी । 1-14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह मनाया गया ।

अनुसंधानशाला की निदेशक, श्रीमती वैजयंती बेंद्रे ने मुख्य अतिथि पद्मभूषण डॉ. मोहन धारिया जी का स्वागत किया । अपने स्वागत संबोधन में उन्होंने उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालयीन कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करने की अपील की और आगे कहा कि सभी भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा लोकप्रिय हो गई है इसीलिए उसे राजभाषा के रूप में हमें आगे ले जाना है । हिंदी भाषा बहुत सरल और सीखने में आसान है/हर राष्ट्र की अपनी-अपनी राजभाषा होती है और हमारी राजभाषा हिंदी है । जब समूचे देश में लोग राजभाषा के रूप में एक भाषा अपनाते हैं तो आपसी सद्भाव और राष्ट्र प्रेम की भावना जागृत होती है ।

श्री फ्रांसिस मॅथ्यू, अध्यक्ष, राजभाषा कार्यांवयन समिति ने वर्ष 2006-2007 की अवधि में अनुसंधान शाला में हिंदी के संबंध में चलाई गई गतिविधियों से अवगत कराया । राजभाषा अधिकारी श्री नारायण प्रसाद ने अनुसंधान शाला में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के बारे में प्रकाश डाला । हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी निबंध, वाद-विवाद, वार्तालाप, प्रश्नमंच, प्रस्तुतीकरण, टंकण, तकनीकी लेख और हिंदी में मूल रूप से टिप्पण आलेखन योजना में पुरस्कार प्राप्त कर्मचारियों को मुख्य अतिथि द्वारा पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर प्रोत्साहित किया गया ।

राजभाषा हिंदी के बारे में धारियाजी ने कहा कि देश की लगभग 40 करोड़ जनता हिंदी बोलती है तथा 15 करोड़ हिंदी जानती है । इस प्रकार लगभग 55 करोड़ लोग हिंदी जानते हैं । ऐसी स्थिति में हिंदी को संयुक्त राष्ट्र संघ में उचित स्थान प्राप्त नहीं हुआ है यह खेद की बात है । गांधीजी ने संस्कृत प्रचुर शब्दों का हिंदी में प्रयोग न करने की सलाह दी थी उसे हमें ध्यान में रखना चाहिए ताकि सरल हिंदी का प्रयोग किया जा सके ।

केंद्रीय मत्स्य नौचालन एवं इंजीनियरी प्रशिक्षण संस्थान (सिफनेट) : कोच्चिन

राजभाषा के सफल कार्यान्वयन तथा इसके उत्तरोत्तर प्रयोग के प्रति जागरूकता पैदा करने तथा इसके लिए सहायक माहौल बनाने के उद्देश्य से सिफनेट मुख्यालय तथा चेन्नई एवं विशाखपट्टनम इकाइयों में हर साल की तरह 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस मनाया गया ।

हिंदी दिवस पर राजभाषा के सफल कार्यान्वयन में भागीदार होने के लिए संस्थान में कार्यरत प्रत्येक अधिकारी/कर्मचारी से निदेशक की अपील की प्रतियाँ परिचालित की गई । अधिकारियों, कर्मचारियों, उनके बच्चों तथा प्रशिक्षणार्थियों के लिए हिंदी में प्रतियोगिताएं चलाई गई । सिफनेट मुख्यालय में 28-09-2007 को श्री जी एच मनिक्फान, निदेशक की अध्यक्षता में समापन समारोह आयोजित हआ । श्री के विश्वनाथन, सहायक निदेशक (रा.भा.) ने सभा का स्वागत किया तथा माननीय गृह मंत्री श्री शिवराज पाटील का हिंदी दिवस संदेश प्रस्तुत किया । ललित गान प्रतियोगिता में पुरस्कृत गीत पेश किए गए । समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण-प्रत्र प्रदान किए गए । श्रीमती बीना के. नायर, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

एन.एच.पी.सी. लि., चमेरा पावर स्टेशन-II करियां चम्बा (हि.प्र.)

चमेरा पावर स्टेशन-II में निगम मुख्यालय से प्राप्त दिशा-निर्देशों के अनुपालन में दिनांक 1 सितंबर, 2007 से 13 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा तथा 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस तथा पखवाड़े का समापन समारोह पूरे भाषायी सद्भाव से आयोजित किया गया । इस दौरान परियोजना में कार्यरत अधिकारियों के लिए 8 विभिन्न प्रतियोगिताओं भाषण, निबंध, कविता, स्लोगन, नोटिंग, ड्राफ्टिंग, आलेखन व श्रुतलेख हिंदी संबंधित महापुरुषों के विचार प्रतियोगिता तथा हिंदीत्तर भाषी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए अलग से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

मुख्य अभियंता-प्रभारी श्री राजीव हस्तु ने सभी को संबोधित करते हुए कहा कि संविधान निर्माताओं ने हमें संविधान मे जो अधिकार दिए है उनमें प्रमुख से कर्तव्य भी दिए हैं इस ओर विशेष ध्यान देने की जरूरत है । राजभाषा में कार्य करते हुए हम सब को गर्व होना चाहिए और हो भी क्यों नहीं क्योंकि केंद्र सरकार के कार्यालयों की भाषा तो हिंदी ही है । महात्मा गांधी जी का यह कथन है कि राट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है कितना सार्थक प्रतीत होता है । इसलिए राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के लिए राजभाषा राष्ट्रभाषा संपर्कभाषा हिंदी का सम्मान करना हम सबका नैतिक दायित्व है । इसके पश्चात् विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को एवं वर्ष 2006-07 प्रोत्याहन योजना के अधीन चयनित कार्मिकों को पुरस्कृत किया गया । हिंदी दिवस के दिन राजभाषा प्रश्नमंच का आयोजन भी किया गया ।

तीस्ता-V : जल विद्युत परियोजना, बालुटार (पूर्वी सिक्किम)

तीस्ता चरण-V जल विद्युत परियोजना में दिनांक 1-9-2007 से 14-9-200- तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया और 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह मनाया गया । इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं एवं निगम में लागू प्रोत्साहन योजनाओं के अंतर्गत कुल 102 अधिकारियों/कर्मचारियों/कार्यालयों कों पुरस्कार प्रदान किया गया । उसके अलावा दो दिन हिंदी कार्यशाला एवं भारतीय भाषाएं दिवस का भी आयोजन किया गया । इन कार्यशालाओं में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को बृहत प्रशासन शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी) की एक-एक प्रति दी गई और भारतीय भाषाएं दिवस में भाग लेने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को स्मृति चिंह प्रदान किया ।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., चण्डीगढ़

नैशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., चण्डीगढ़ में 14 सितंबर से 28 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा आयोजित किया गया । पखवाड़े के दौरान विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई जिनमें अधिकारियों व कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । विभिन्न प्रतियोगिताओं में 41 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री एम. के. रैना, कार्यपालक निदेशक ने अपने उद्बोधन में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डाला ।

समापन समारोह में हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया । यह पुरस्कार डॉ. सुरेंद्र शर्मा, सहायक निदेशक (राजभाषा) और कार्यापालक निदेशक श्री एम के रैना के कर-कमलों द्वारा प्रदान किए गए ।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., कोमकैराप, मणिपुर

हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी और हिंदीत्तर भाषियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें प्रशासनिक शब्दावली, टिप्पण/मसौदा, निबंध लेखन, कविता पाठ, वाद विवाद, कंप्यूटर में हिंदी टंकण और विशेषकर श्रुतलेख हिंदीत्तर भाषियों के लिए शामिल थी । इस वर्ष से लैमाताक में भी प्रशासनिक शब्दावली, टिप्पण/मसौदा, निबंध लेखन और श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित किया गया ।

14 सितंबर, 2007 को पखवाड़े का समापन समारोह पावर स्टेशन के सामुदायिक केंद्र में किया गया । इस अवसर पर लोकताक पावर स्टेशन के अधिकारी एवं कर्मचारीगण सहित बड़ी संख्या में महिलाएं ओर बच्चे भी उपस्थित थे । समारोह के मुख्य अतिथि श्री आई. एस. काङजम, प्रोफेसर (हिंदी), मणिपुर यूनिवर्सिटी ने अपने वक्तव्य में सभी से हिंदी बोलने, लिखने और सीखने का आह्वान किया । इन्होंने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी एक सरल भाषा है । अपने कार्यालयीन कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने एवं प्रचार-प्रसार के लिए हम सब मिलकर हिंदी में काम करें और लोकताक पावर स्टेशन का नाम रोशन करें ।

समापन समारोह के शुअवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि द्वारा सभी 47 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी गई ।

नेशनल हाइड्रोइलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., फरीदाबाद

एन.एच.पी.सी., मुख्यालय में 1 से 14 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का भव्य आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालयीन कार्य प्रणाली को **''राजभाषामय''** बनाने के लिए विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में तकनीकी और गैर-तकनीकी कार्यों से जुड़े 211 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह व पुरस्कार वितरण कार्यक्रम दिनांक 17-09-2007 को अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित ''राजभाषा'' पत्रिका का विमोचन किया। इस अवसर पर प्रत्येक प्रतियोगिता के लिए प्रथम, द्वितीय व दो सांत्वना पुरस्कारों के तौर पर 30 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार दिए गए।

इस अवसर पर **अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक** महोदय ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन की सभी को बधाई देते हुए कहा कि हमारे देश में अनेक भाषाएं बोली जाती हैं और इनमें हिंदी ही एकमात्र ऐसी भाषा हे जो ज्यादातर लोगों द्वारा समझी व बोली जाती है। हिंदी देश की एकता की मजबूत कड़ी है और इसने देश के विभिन्न वर्गों के लोगों को जोड़ा है। हिंदी हमारी मात्रभाभाषा है। यह सरल और सहज भाषा है जो पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोती है। आज हिंदी राष्ट्रीय ही नहीं अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठापित और सम्मानित हैं। निस्संदेह हिंदी ही भारत देश को आगे ले जा सकती है।

स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लि., कोलकाता

केंद्रीय विपणन संगठन के पूर्वी क्षेत्रीय कार्यालय में राजभाषा हिंदी की प्रगति के राजभाषा पखवाड़े के दौरान हिंदी क्विज एवं अन्य प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विजयी टीमों को पुरस्कृत किया गया। इस दौरान कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। कर्मचारियों/अधिकारियों ने भाग लिया।

पुरस्कार वितरण के समय क्षेत्रीय प्रबंधक (एफ. पी.) ने आह्वान किया कि सभी लोग हिंदी जानते हैं, कार्यालय के कार्य में भी हिंदी को आगे बढ़ाएं।

भिलाई इस्पात संयंत्र, भिलाई

राजभाषा विभाग, भिलाई इस्पात संयंत्र द्वारा 17 से 29 सितंबर, 2007 तक आयोजित किया गया। राजभाषा पखवाड़ा का समापन समारोह के आयोजन में दिनांक 29 सितंबर को इस्पात भवन के सभागार में श्री तपन कुमार गुप्ता, कार्यपालक निदेशक (वित्त एवं लेखा) ने कहा कि यह अनवरत कार्यक्रम है, न ही इसकी शुरूआत हुई है और न ही आज इसका समापन। इस क्रम को हमेशा बनाए रखना है। आपके कामकाज में राजभाषा हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करते हुए हमें अपने आपको गौरवान्वित महसूस करना है तभी भाषा के प्रति सही सम्मान व समर्पण होगा।

स्वागत संबोधन में श्री अशोक सिंघई, सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि भाषा का संबंध मनुष्य की मनुष्यता से जुड़ा हुआ है। वही उसकी विकास यात्रा को तय करता है और प्रगति के सोपान तक पहुंचाता है। विकास में भाषा की अहम भूमिका है। राष्ट्र के संबंध में हिंदी ही एकमात्र भाषा है जिसे अधिकांश लोगों द्वारा बोली, समझी व लिखी जाती है। देश को एकता के सूत्र में पिरोने का हिंदी ही एक सशक्त माध्यम है इन्हे सम्पर्क भाषा के रूप में विकसित किया जाना चाहिए।

स्पंज आयरन इण्डिया लिमिटेड, खम्मम, (आंध्र प्रदेश)

कंपनी में दिनांक 14-9-2007 को ''राष्ट्रीय हिंदी दिवस'' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कंपनी के कर्मचारियों और विद्यालय के विद्यार्थियों में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई हैं।

इस अवसर का आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कंपनी के उप महाप्रबंधक (प्र. एवं क.मा.) ने भाग लिया और कहा कि सरकारी नीतियों का पालन करना अपना दायित्व है, इस भाषा का विस्तृत प्रयोग करना अपना परम कर्तव्य है। वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.का.व.प्रशा.) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और अपने संबोधन में कहा कि सरकार इस समय कर्मचारियों द्वारा हिंदी में काम कराने और कंप्यूटरों में हिंदी का प्रयोग करने पर जोर दिए जाने के कारण इस संबंध में सभी कर्मचारियों के सहयोग का निवेदन है। इस शुभ अवसर पर अध्यक्ष-एवं-प्रबंध निदेशक और प्रभारी महा

प्रबंधक (प्रचालन) द्वारा भेजे गये संदेशों को पढ़ाया गया । मुख्य अतिथि ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के 53 विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया । राष्ट्र गीत के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

नॉर्थ इस्टर्न इलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लि., शिलांग

नॉर्थ इस्टर्न इलैक्ट्रिक पावर कारपोरेशन लिमिटेड, (नीपको) के मुख्यालय, शिलांग में दिनांक 01 सितंबर, 2007 से 14 सितंबर, 2007 तक राजभाषा हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । निगम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक ने प्रदीप प्रज्जवलित करके राजभाषा हिंदी पखवाड़ा का उद्घाटन किया ।

राजभाषा हिंदी के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने हेतु हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताएं जैसे–कविता पाठ, हिंदी टंकण, टिप्पणी एवं प्रारूप लेखन, अनुवाद, निबंध, आकस्मिक भाषण, संगीत, क्विज, अंताक्षरी, सुलेख तथा श्रुतलेख आयोजित की गई जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया ।

दिनांक 14 सितम्बर, 2007 को हिंदी दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया । समारोह के मुख्य अतिथि जे. बरकाकति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, नीपकों लि., शिलांग ने प्रदीप प्रज्जवलन कर हिंदी दिवस समारोह का उद्घाटन किया । सभी वरिष्ठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक इस समारोह में भाग लिया । श्री पी. भट्टाचार्जी, महाप्रबंधक (का. व प्रशा.) ने सभी का स्वागत किया । इस अवसर पर निदेशक (कार्मिक) महोदय ने कहा कि हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें । उन्होंने कहा कि मुझे खुशी है कि हिंदी पखवाड़ा के उद्घाटन के अवसर पर हमने जो निर्णय लिया था कि हर सोमवार को हम अपना सरकारी कार्य हिंदी में करेंगे उसकी शुरूआत हो चुकी है । निदेशक (वित्त) महोदय ने इस अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि भाषा के माध्यम से हम अपने विचारों को प्रकट करते हैं हिंदी भाषा संपर्क भाषा है इसलिए सभी को हिंदी भाषा सीखनी चाहिए । समारोह के विशिष्ट अतिथि महोदया, श्रीमती एफ. मारबानियांग, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, सेंट एंथेनीज कॉलेज, शिलांग ने इस अवसर पर कहा कि हिंदी सहज सरल भाषा है उसके माध्यम से आप अपने विचार प्रकट कर सकते हैं । मुख्य अतिथि श्री बरकाकति, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें हिंदी के सहज शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जिससे हिंदी जन सामान्य के लिए सुगम बन सके और सभी उसे सहजता से स्वीकार कर सके । इस अवसर पर निगम को राजभाषा के उल्लेखनीय कार्यान्वयन हेतु वर्ष 2006-2007 के लिए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिलांग द्वारा राजभाषा शील्ड से सम्मानित किए जाने पर उन्होंने बधाई दी ।

राजभाषा हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि द्वारा आकर्षित पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया ।

एन पी. सी आई एल, अणु-शक्ति नगर, मुंबई-400094

दिनांक 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस के अवसर पर न्यूक्लियर पावर कारपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, (एनपीसीआईएल) के अध्यक्ष-एवं-प्रबंध निदेशक श्री एस. के. जैन ने समस्त कार्मिकों से राजभाषा हिंदी में लक्ष्यों से भी अधिक कार्य करने के लिए एक अपील जारी की । कार्पोरेशन के निदेशक (मानव संसाधन) श्री वी सी अग्रवाल ने भी समस्त कार्मिकों से अपने कार्यालयीन कार्यों को हिंदी में ही करने की अपील की । हिंदी दिवस के अवसर पर एक विभागीय काव्यपाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जनवरी से सितंबर, 2007 तक की अवधि में रोचक प्रसंग कथन, वर्ग पहेली, अंताक्षरी, राजभाषा प्रश्नोत्तरी, आशुभाषण, चित्रकथा, नारा/घोष वाक्य लेखन आदि प्रतियोगिताओं का प्रतिमाह आयोजन किया गया जिनमें लगभग 300-400 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

एनपीसीआईएल में प्रोत्साहन प्रतियोगिताओं का आयोजन हिंदी दिवस के अवसर पर ही नहीं अपितु वर्ष भर यानि प्रत्येक माह में एक हिंदी प्रोत्साहन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है जिससे कार्मिकों में राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए लगातार उत्साह बनाया रखा जाता है ।

सैंट्रल कॉटेज इण्डस्ट्रीज कारपोरेशन ऑफ इण्डिया लि., जनपथ, नई दिल्ली

कारपोरेशन के मुख्यालय में हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितंबर से 30 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री, वस्त्र मंत्री तथा सचिव महोदय द्वारा जारी संदेश की प्रतियाँ सभी कर्मचारियों की जानकारी के लिए कार्यालय में वितरित की गई, उनके सम्मुख पढ़ी गई तथा शाखाओं को परिचालित की गई । हिंदी दिवस के अवसर पर प्रबंध निदेशक की ओर से संदेश जारी किया गया जिसमें उन्होंने सभी कर्मचारियों से अपने दैनिक कामकाज को अधिक से अधिक हिंदी भाषा में ही करने का प्रण लेने की अपील की । उन्होंने यह भी कहा कि आप राजभाषा हिंदी के उपयोग करने से न सिर्फ अपने कार्यालय का बल्कि देश का सम्मान बढ़ाने में भी सहायक सिद्ध होंगे । इसी दिन कार्यालय परिसर एवं विभागों में राजभाषा विभाग से प्राप्त राजभाषा विषयक कैलेंडर/पोस्टर लगाए गए ।

कार्यालय में हिंदी मास के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । सभी प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह 1 अक्तूबर, 2007 को सम्पन्न हुआ । विजेताओं को नकद पुरस्कार देकर पुरस्कृत किया गया । पुरस्कार वितरण समारोह में अपने संदेश में प्रबंध निदेशक महोदय ने विजेताओं को हार्दिक बधाई दी तथा यह कहा कि हिंदी क्षेत्र का होने के कारण हमारा दायित्व अन्य लोगों से अधिक है तथा हमें इसका निष्ठापूर्वक निर्वाह करना चाहिए । उन्होंने प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों की भागीदारी को देखते हुए आशा व्यक्त की कि हिंदी का भविष्य अच्छा है तथा इसे निरंतर बनाए रखा जाए ।

भारत इलैक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड के कारपोरेट कार्यालय, बेंगलूर

कारपोरेट कार्यालय में आयोजित हिंदी माह के दौरान सात प्रतियोगिताएँ नामत: पीसी पर हिंदी में की-इन करना, सरल अनुवाद, श्रुतलेख, वर्ग पहेली, वार्तालाप, अंताक्षरी तथा सही शब्द क्या है? प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई जिसमें कार्यालय के 51 अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और 32 प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया । 14 सितंबर को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया ।

26 सितंबर को पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया जिसमें श्री संजय वीर सिंह, आईजीपी तथा रजिस्ट्रार, बेंगलूर विश्वविद्यालय को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । इस अवसर पर श्री सिंह ने राजभाषा का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ाने के साथ-साथ देश की अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को संरक्षित रखने की महत्ता पर बल दिया । श्री एम.एल. षणमुख, निदेशक (मानव संसाधन) तथा श्री अश्वनी कुमार दत्त, निदेशक (अन्य यूनिटें) ने राजभाषा हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डाला । श्री षणमुख ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे देश में अंग्रेजी जानने वालों की संख्या 10 प्रतिशत से भी कम है यानी 90 प्रतिशत से भी अधिक लोग हिंदी या आय भारतीय भाषाएँ बोलते और समझते हैं । ऐसी स्थिति में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने की आवश्यकता है । मुख्य अतिथि तथा निदेशकगणों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा मूल रूप से हिंदी में कार्य करने तथा हिंदी में डिक्टेशन देने/लेने की प्रोत्साहन योजनाओं के प्रतिभागियों को प्रशास्ति-पत्र एवं पुरस्कार वितरित किए ।

भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई

भारतीय कपास निगम ने सितंबर माह में हिंदी पखवाड़े का आयोजन करते हुए मुख्य कार्यक्रम 28 सितंबर, 2007 को सीबीडी बेलापुर में बैंक ऑफ इंडिया, प्रबंधन विकास संस्थान के ओडिटोरियम में आयोजित किया । अपने उद्बोधन संदेश में निगम के प्रबंध निदेशक श्री सुभाष ग्रोवर ने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगति के बारे में बताते हुए सूचित किया कि भारतीय कपास निगम को ''ख'' क्षेत्र के उपक्रमों की प्रतियोगिता में वर्ष 2005-06 के दौरान श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड **पुरस्कार** से 15वीं बार पुरस्कृत किया गया है । विशेष अतिथि श्रीमती सुलभा कोरे ने राजभाषा अधिनियम और संविधान की अपेक्षाओं पर प्रकाश डाला । मुख्य अतिथि डॉ. राजम् पिल्लै ने डॉ. हरिवंशराय बच्चन की एक प्रसिद्ध कविता की उपमा देते हुए हिंदी की लोकप्रियता और संपूर्ण देश को जोड़ने की अद्भुत क्षमता पर प्रकाश डाला । कार्यक्रम के अंत में स्पंदन ग्रुप द्वारा गीत गजल कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया । आभार प्रदर्शन श्रीमती जयोत्स्ना सिंहासने, हिंदी अधिकारी द्वारा किया गया ।

759 HA/08—13A

भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड, के.जी.एफ. कॉम्प्लेक्स, बेंगलूर

भारत अर्थ मूवर्स लिमिटेड, कोलार गोल्ड फील्ड कॉम्प्लेक्स कार्यालय में दिनांक 24-09-2007 को राजभाषा कार्यशाला का आयोजन किया गया । यह कार्यशाला श्री एस. प्रसाद, महाप्रबंधक की अध्यक्षता में संपन्न हुई । अध्यक्ष श्री प्रसाद ने कहा कि राजभाषा हिंदी निश्चय ही अभिव्यक्ति की सशक्त भाषा है । न केवल यह राजभाषा है, बल्कि समस्त देशवासियों को मनोरंजन से मन बहलाने वाली भाषा है । कोई भी कौन बनेगा करोड़पति जैसे कार्यक्रमों को भूल नहीं सकते । हिंदी भाषा का प्रसार आगे बढ़ता जा रहा है, और अब यह अधिकांश देशवासियों द्वारा समझी, बोली व पढ़ी जाने वाली भाषा बन गयी है ।

हिंदी कार्यशाला की शुरूआत में श्री यू. के. हुसैनब्बा, उप महाप्रबंधक (मा.सं.) ने कहा कि प्रत्येक वर्ष के. जी. एफ. काम्प्लेक्स में राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए एक अनुकूल वातावरण का निर्माण करने का प्रयास किया जाता है और इसका हमें लाभ भी मिला है । उन्होंने कहा कि इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जिन कार्मिकों ने हिंदी में कार्यसाधक ज्ञान रखा है उन्हें हिंदी में कार्यालयीन काम करने के लिए प्रोत्साहित करना है ।

हिंदुस्तान पेपर कॉरपोरेशन लि., कोलकाता

कोलकाता में 01 सितंबर से 30 सितम्बर, 2007 तक राजभाषा माह पालन का आयोजन किया गया । निगम के अध्यक्ष सह-प्रबंध निदेशक श्री रजी फिलिप की प्रेरणा से पूरे माह के दौरान मुख्यालय सहित पंजित कार्यालय, दोनों मिलों तथा दोनों अनुषंगियों में विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताएँ, उच्च स्तरीय कार्यशालाएं, कवि सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ आयोजित की गई ।

29 सितंबर, 2007 को साल्ट लेक स्थित निगम के मानव संसाधन विकास सभागार में ''राजभाषा कार्यावयन की दिशा में हमारे बढ़ते चरण एवं संभावनाएं'' विषय पर एक भव्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें तेरह वक्ताओं ने अपने महत्वपूर्ण विचार रखे । अतिथि पद से भारतीय खाद्य निगम के प्रबंधक (राजभाषा) श्री टी.आर. आर्या ने इस अवसर पर अपना विशेष व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए निगम की कार्यशैली की भूरि-भूरि प्रशंसा की । निष्कर्ष स्वरूप निगम के बहुमुखी विकास के साथ-साथ राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति में अध्यक्ष सह-प्रबंध निदेशक श्री रजी फिलिप की भूमिका एवं उनके आदर्श वाक्य ''हिंदी में काम करते समय हमें शर्म की नहीं अपितु गर्व की अनुभूति होनी चाहिए'' को अपना आलोक-पथ मानकर आगे बढ़ने का सभी ने संकल्प लिया ।

30 सितंबर, 2007 को श्री अशोक कुमार भाटिया, निदेशक (प्रचालन) की अध्यक्षता में पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह का आयोजन किया गया । श्री भाटिया ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि हिंदी के प्रयोग के लिए अंतर्भावना का होना अनिवार्य है । इसके लिए हम सभी भारतीयों को संकुचित मानसिकता से अलग होना होगा ।

समारोह के मुख्य अतिथि पद से कोलकाता विश्व-विद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. अमरनाथ ने कहा कि हिंदी अपनी सहजता, सरलता एवं सरसता के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार की भाषा बनती जा रही है । यह आम आदमी की बोलचाल की भाषा है, जो वैज्ञानिकता के समस्त गुणों से ओत-प्रोत है । इसलिए यह स्वयंमेव प्रचारित व प्रसारित है । हर भारतीय के लिए यह सांविधिक राजभाषा है ।

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद

नेशनल मिनरल डेवलपमेंट कॉरपोरेशन लिमिटेड, हैदराबाद में दिनांक 14 सितम्बर, 2007 से 15 अक्तूबर, 2007 तक 'राजभाषा माह' विभिन्न श्रेणियों के लिए हिंदी प्रतियोगिताओं, हिंदी कार्यशाला, राजभाषा समारोह आदि कार्यक्रमों के आयोजन के साथ मनाया गया ।

दिनांक 15 अक्तूबर, 2007 को ''राजभाषा समारोह'' एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया । समारोह की अध्यक्षता निगम के निदेशक (उत्पादन) एवं प्रभारी अध्यक्ष-सह-प्रबंध निदेशक, श्री विजेन्द्र कुमार जैन ने की ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री विजेन्द्र कुमार जैन ने कहा कि ''राजभाषा के कार्यावयन और प्रयोग में एनएमडीसी एक विशेष स्थान रखता है और सभी राजभाषा कार्यकलापों में विशेष रुचि रखते हुए अपना योगदान

759 HA/08—13B

देता रहा है । राजभाषा का विषय भी हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उत्पादन, पर्यावरण एवं सुरक्षा । मुख्यालय की तरह ही हमारी उत्पादन परियोजनाओं में भी राजभाषा गतिविधियां निरंतर चलती रहती हैं । हमारे प्रयासों के फलस्वरूप हमें राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय स्तर का सर्वोच्च पुरस्कार 'इंदिरा गांधी राजभाषा शील्ड' कई बार प्राप्त करने का गौरव मिला है । इस्पात मंत्रालय से भी राजभाषा के क्षेत्र में हमारे प्रयासों के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए हैं । नराकास (उपक्रम) से भी हमें पिछले तीन वर्षों से पुरस्कार प्राप्त हो रहे हैं'' ।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि, डॉ. शशि मुदीराज ने अपने संबोधन में राजभाषा हिंदी के विविध रूपों और भारतीय संस्कृति की रक्षा में हिंदी की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी रोजी रोटी और व्यावसायिक भाषा बन गई है और इसीलिए आज हर क्षेत्र में इसका व्यापक प्रचार-प्रसार और प्रयोग होने लगा है । आपने विदेशों में अपने अध्यापन के अनुभव बांटते हुए आगे कहा कि भारतीय संस्कृति और भारतीय लोगों की भावनाओं को जानने के लिए विदेश के छात्र हिंदी सीख रहे हैं और हिंदी में शोध कार्य कर रहे हैं ।

गुवाहाटी रिफाइनरी

गुवाहाटी रिफाइनरी में गत 14 सितंबर से 21 सितंबर तक हिंदी सप्ताह समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया । समारोह का उद्घाटन गुवाहाटी रिफाइनरी के कार्यपालक निदेशक श्री जी. भानुमूर्ति द्वारा द्वीप प्रज्जवलन करके किया गया ।

अपने उद्बोधन भाषण में श्री जी. भानुमूर्ति ने हिंदी दिवस को हिंदी कार्यान्वयन के मूल्यांकन का भी पर्व बताया । शोधनागार के सर्वांगीन उन्नति के साथ-साथ हिंदी कार्यान्वयन में भी उचित स्थान प्राप्त करने के लिए इन्होंने सभी से आग्रह किया । साथ ही लगातार पिछले तीन वर्षों से गुवाहाटी रिफाइनरी की अध्यक्षता में कार्यरत नराकास (उपक्रम) को प्रथम राजभाषा पुरस्कार तथा लगातार दो वर्षों से गुवाहाटी रिफाइनरी कार्यालय को प्रथम राजभाषा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए सभी को बधाई दी । मुख्य अतिथि के रूप में पधारे असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के परीक्षा सचिव डॉ. क्षीरोदा शईकीया ने अपने भाषण में हिंदी को संपर्क भाषा के रूप में अति सहज सरल, सर्वग्राह्य एवं माँ की ममता के समान प्यारी बताया ।

सप्ताह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया तथा समारोह का समापन सी.आई.एस.एफ. के जवानों द्वारा प्रस्तुत सारे जहाँ से अच्छा गीतों के साथ सम्पन्न हुआ ।

केंद्रीय रेशम बोर्ड, भंडारा (महाराष्ट्र)

केंद्रीय रेशम बोर्ड की संयुक्त राजभाषा कार्यांवयन समिति भंडारा के तत्वाधान में केंद्रीय रेशम बोर्ड के भंडारा स्थित सभी कार्यालयों में दि. 14-9-2007 से 28-9-2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । हिंदी पखवाड़ा समापन का मुख्य कार्यक्रम 28-9-2007 को क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र, भंडारा में आयोजित किया गया । इस दिन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं–जैसे हिंदी पत्र/परिपत्र लेखन, टिप्पणी एवं शुध्दलेखन का आयोजन किया गया ।

डॉ. एस. के. माथुर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सदन को सूचित किया कि बुनियादी बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, प्रशिक्षण सहतकनीकी सेवा केंद्र एवं क्षेत्रीय तसर अनुसंधान केंद्र, भंडारा को प्रतिवर्ष नराकास, भंडारा की ओर से राजभाषा के उत्तम कार्यांवयन के लिए पुरस्कृत किया जा रहा है । बुनियादी तसर बीज प्रगुणन एवं प्रशिक्षण केंद्र, (बु.बी.प्र. एवं प्र.के.) भंडारा को रेशम बोर्ड, बेंगलूर द्वारा उसके क एवं ख क्षेत्र में स्थित केंद्रों के लिए वर्ष 2005-2006 के लिए चल शिल्ड एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया गया है ।

श्री विजय मोहोलकर ने अपने भाषण में केंद्रीय रेशम बोर्ड में राजभाषा में किए जा रहे कार्यों की बहुत प्रशंसा की एवं इसे अन्य विभागों के लिए प्रेरणा योग्य बताया । उन्होंने यह बताया कि उनके बैंक में भी हिंदी में कार्य सुचारू रूप से चल रहा है, वे इसे और गति प्रदान करने का प्रयास करेंगे ।

राष्ट्रीय ज्वार अनुसंधान केंद्र, राजेंद्र नगर, हैदराबाद

श्री ए. के. उपाध्यक्ष आई.ए.एस. अपर सचिव, कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग तथा सचिव, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने 14 सितंबर, 2007 को हिंदी में तैयार 'ज्वार सूजी के व्यंजन' तथा 'ज्वार पोहा' नामक

पुस्तिकाओं का विमोचन करते हुए 14-21 सितंबर, 2007 के दौरान आयोजित हिंदी सप्ताह का शुभारंभ किया । इस सप्ताह के दौरान हिंदी में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया, जिसके अंतर्गत सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने यथासंभव छोटी-छोटी टिप्पणियाँ हिंदी में लिखकर हस्ताक्षर भी हिंदी में किए । इसके अतिरिक्त छोटे शब्दों एवं पदों का हिंदी अनुवाद, निबंध-लेखन, टिप्पण एवं आलेखन, वाद-विवाद, तीन मिनट हिंदी पाठ का वाचन, प्रश्नोत्तरी तथा आशुभाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । जिनमें वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक इत्यादि सभी वर्गों ने बड़े-ही उत्साह के साथ भाग लिया ।

संस्थान में मनाए जा रहे हिंदी सप्ताह के समापन समारोह का आयोजन 21 सितम्बर, 2007 को किया गया । डॉ. एन. सीताराम, निदेशक, राष्ट्रीय ज्वार अनुसंधान केंद्र की अस्वस्थता के कारण उनके प्रतिनिधि डॉ. एस. आदिलक्ष्मी, प्रधान वैज्ञानिक ने हिंदी सप्ताह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय तथा सहभागिता पुरस्कार एवं प्रतियोगिता के निर्णायकों को स्मृति-चिह्न प्रदान किए । पुरस्कार वितरण समारोह के पश्चात् उन्होंने बताया कि हिंदी हमारी दिनचर्या का एक अंग है जिसके बिना हमारा एक-दूसरे से परस्पर संपर्क पूरा नहीं हो पाता ।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे में दि. 14 सितंबर, 2007 से 21 सितंबर, 2007 की अवधि में हिंदी सप्ताह समारोह का आयोजन किया गया । इस अवधि में स्टाफ के लिए 5 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं जिनमें बड़ी संख्या में वैज्ञानिकों/अधिकारियों/कर्मचरियों ने भाग लिया । पहले दिन दि. 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस के अवसर पर प्रयोगशाला के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए सामान्य ज्ञान की प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसमें 24 कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया । इसी दिन अपराह्न में प्रयोगशाला की वार्षिक राजभाषा पत्रिका एनसीएल आलोक का लोकार्पण किया गया । इस अवसर पर पत्रिका का विमोचन करते हुए मुख्य अतिथि के रूप में समारोह में उपस्थित डॉ. सच्चिदानंद परळीकर ने सरकारी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अति आवश्यक बताया । डॉ. परळीकर ने कहा कि हिंदी ही सभी भारतीयों को सभी जगह एकता के सूत्र में पिरोए रख सकती है । अध्यक्ष के रूप में उपस्थित प्रयोगशाला के उप निदेशक डॉ. भास्कर कुलकर्णी ने इस अवसर पर अपने संबोधन में हिंदी की अपरिहार्यता को स्पष्ट किया और कहा कि हिंदी अब तो केवल भारत की ही नहीं, बल्कि एक विश्व भाषा बन गई है ।

एन.टी.पी.सी. लि., टांडा

टांडा विद्युतगृह में हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार करने एवं हिंदी के प्रति जन जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से दिनांक 14 से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इसके अंतर्गत विद्युतगृह के कर्मचारियों, महिलाओं एवं टाउनशिप परिसर स्थित विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । दिनांक 14 से 28 सितंबर, 2007 तक मनाए गए हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह 07 अक्टूबर 2007 को सांय 6.00 बजे सप्तरंग क्लब में आयोजित किया गया । विद्युतगृह के महाप्रबंधक श्री पी.के. अग्रवाल समारोह के मुख्य अतिथि थे । कार्यक्रम का शुभारंभ एनटीपीसी गीत एवं वाणी वंदना से किया गया । इसके पश्चात् समारोह के मुख्य अतिथि श्री अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित करके कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया ।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में 394 कर्मचारियों, महिलाओं एवं छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया जिसमें से कुल 109 सफल प्रतिभोगियों को मुख्य अतिथि एवं वरिष्ठ कार्यपालकों ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया । हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी सफल प्रतिभागियों को महापुरुषों की हिंदी रचनाएं ही पुरस्कार स्वरूप प्रदान की गई । पुरस्कार स्वरूप हिंदी पुस्तकें प्रदान किए जाने से मुख्य अतिथि एवं सभी पुरस्कार विजेताओं ने प्रसन्नता व्यक्त की । कार्यक्रम आद्यंत सफल रहा जिसकी सर्वत्र सराहना हुई ।

एनटीपीसी लिमिटेड नेशनल कैपिटल पावर स्टेशन, दादरी

एनटीपीसी के दादरी पावर स्टेशन में हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं हिंदी प्रचार-प्रसार के प्रति उपयुक्त वातावरण बनाने की दृष्टि से 14 सितम्बर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

महाप्रबंधक श्री एस.एन. गांगुली ने हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए हिंदी को राष्ट्रीय आस्मिता का प्रतीक एवं संवाद सेतु की सशक्त संवाहिका बताया । श्री गांगुली ने हिंदी को राजभाषा के गौरवमयी स्थान पर प्रतिष्ठित करने

का आह्वान करते हुए कहा कि हिंदी में काम करने से मौलिक चिंतन और आत्मविश्वास बढ़ता है ।

14 से 29 सितंबर, 2007 तक मनाए गए हिंदी पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों, स्कूली बच्चों और टाउनशिपवासियों के लिए हिंदी निबंध, भाषा ज्ञान, वाद-विवाद, श्रुतलेख/सुलेख, टिप्पण एवं आलेखन, अनुवाद, काव्य पाठ, टंकण आदि जैसी अनेक प्रतियोगिताएं आयोजित कर हिंदी प्रचार प्रसार का अनुकूल वातावरण सृजित किया गया । इसके अलावा स्कूली बच्चों के माध्यम से विशाल जागरूकता रैली निकाल कर हिंदी प्रचार-प्रसार एवं प्रेम के प्रति जन चेतना पैदा की ।

केंद्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, पाम्पोर केंद्रीय रेशम बोर्ड, श्रीनगर (जे.के.)

संस्थान में 14 सितम्बर, 2007 से 28 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस अवसर पर प्रोफेसर अब्दुल रशीद गनाई विभागाध्यक्ष, राजकीय महिला महाविद्यालय, अनंतनाग मुख्य अतिथि थे । हिंदी पखवाड़े के दौरान केंद्रीय कार्यालय के निर्देशानुसार पाँच विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस आयोजन में कार्यालय के लगभग सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया । पुरस्कार वितरण समापन समारोह की शुरूआत श्रीमती इम्तियाजा अखतर के स्वागत गीत के साथ हुआ । सबसे पहले श्रीमती राजिंदर कौर उप निदेशक एग्रोनॉमी व प्रभारी हिंदी अनुभाग ने समारोह में उपस्थित व आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया, तत्पश्चात् कहा कि हिंदी को सरल रूप में हम सभी को सीखने के लिए प्रयास करना चाहिए । मुख्य अतिथि के रूप में पधारे प्रो. गनाई ने कहा कि हिंदी जन-जन की भाषा है, करोड़ों लोगों की भाषा है, हर व्यक्ति के रोजगार की भाषा है । संसार में हर 3/4 में से एक व्यक्ति हिंदी बोलने समझने वाला मिलता है । दिल्ली अगर हिंदुस्तान का दिल है तो हिंदी उस दिल की धड़कन है । अत: हिंदी पंद्रह सौ करोड़ व्यक्तियों की भाषा है । इस तरह हिंदी में विश्व भाषा बनने की शक्ति है ।

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली

क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली में कार्यालय प्रमुख श्री कुलदीप राज शर्मा, संयुक्त सचिव (तक.) की अध्यक्षता में दिनांक 14-09-2007 से 20-09-2007 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया जिसके दौरान शब्दावली, टिप्पण-आलेखन, निबंध, वाक् तथा वाद-विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के सभी कर्मचारियों एवं चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक एवं बिना झिझक भाग लिया ।

श्री कुलदीप राज शर्मा, संयुक्त सचिव (तक.) एवं अध्यक्ष राजभाषा कार्यावयन समिति, क्षेत्रीय कार्यालय, केंद्रीय रेशम बोर्ड, नई दिल्ली ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि यह निर्विवाद सत्य है कि विभिन्न विचारों, अनुसंधान कार्यों के लिए मौलिक चिंतन की आवश्यकता होती है और हम मौलिक चिंतन अपनी भाषा के माध्यम से सहजता से कर सकते हैं यह कोई दुरूह कार्य नहीं है, आवश्यकता है तो सिर्फ इच्छा शक्ति की । विश्व परिदृश्य पर इस क्षेत्र में नवीनतम तकनीक पर आधारित विश्व स्तरीय गुणवत्ता युक्त सेवाओं में निरंतर विकास और विस्तार हो रहा है । संपूर्ण विश्व को जो आज एक परिवार जैसा बना दिया है और अब भारत का सूक्ति वाक्य ''वसुधैव कुटुम्बकम'' अक्षरक्ष: चरितार्थ होने लगा है । हाल ही में न्यूयार्क में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन राजभाषा के महत्व को स्वीकारा गया है ।

20 सितंबर, 2007 को समापन समारोह के अवसर पर श्री कुलदीप राज शर्मा, संयुक्त सचिव (तक.) द्वारा सभी प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विजयी प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया ।

सूक्ष्म लधु एवं मध्यम उद्यम, विकास संस्थान, करनाल

संस्थान में 1 से 30 सितंबर, 2007 तक हिंदी माह मनाया गया । 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन संस्थान के श्री एस. के. पात्र, उप निदेशक (रसायन) की अध्यक्षता में किया गया । अपने अध्यक्षीय उदबोधन में सभी को हिंदी पर्व की बधाई दी और कहा कि संवैधानिक दायित्वों के अनुसार हमें अपना शतप्रतिशत कार्य हिंदी में करना चाहिए । सुनील कुमार, सहायक निदेशक ने सभी का आभार व्यक्त किया और कहा कि जब हम अपनी फाईल की नोटिंग, ड्राफटिंग, सभी हिंदी में करते हैं तो पत्र हिंदी में ही जाना चाहिए । दिनांक 28-9-2007 को सूक्ष्म

लघु एवं मध्यम उद्यम विकास संस्थान, भारत सरकार, करनाल में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य संस्थान के कार्मिकों को व्याकरण संबंधी त्रुटियों को दूर करना था। अतः इस का विषय हिंदी का समकालीन साहित्य एवं व्याकरण संबंधी त्रुटियां रखा गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, करनाल के प्रसिद्ध कवि एवं लेखक, प्रोफेसर डा. अशोक भाटिया ने कहा कि हमें 14 सितंबर को भारतीय भाषा दिवस के रूप में मनाना चाहिए। उन्होने बताया कि हिंदी एक समृद्ध भाषा है इसका इतिहास उठा कर देखें तो हम पांएगे कि इसमें 15 लाख शब्द हैं। उन्होंने कहा कि हमें उदारता से सभी शब्दों को अपना कर उसे देवनागरी लिपि में लिखना चाहिए। आज सभी 65 प्रमुख विज्ञापन केवल हिंदी में ही दिए जा रहे हैं, क्योंकि बहुराष्ट्रीय कंपनियां यह बात अच्छी तरह जान चुकी हैं कि भारतीय बाजार पर कब्जा करने के लिए हिंदी में बात करनी ही होगी।

एम एस एम इ-विकास संस्थान, तृश्शूर

संस्थान में 14-9-2007 से 28-9-2007 तक की अवधि के दौरान हिंदी पखवाड़ा 2007 का आयोजन किया गया। इस दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताएँ व 18-9-2006 को एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला आयोजित हुई। हिंदी पखवाड़ा 2007 का समापन समारोह 28-9-2007 के 11.00 बजे प्रातः संस्थान के उप निदेशक (इलेक्ट्रानिकी) श्री जी. एस. प्रकाश की अध्यक्षता में सम्मेलन कक्ष में संपन्न हुआ।

श्री जी. एस. प्रकाश ने सरकारी कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर जोर दिया तथा मत प्रकट किया कि हिंदी का प्रयोग केवल पखवाड़े की अवधि तक ही सीमित न कर सम्पूर्ण वर्ष में अपने दैनिक सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग करें।

अपने संक्षिप्त संबोधन के पश्चात् पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि महोदय ने अपने कर कमलों से पुरस्कृत कर गौरवान्वित किया।

एम एस एम ई-विकास संस्थान, कोलकाता

संस्थान में दिनांक 3 से 14 सितंबर, 2007 की अवधि में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया और शुक्रवार, दिनांक 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस का पालन किया गया। हिंदी पखवाड़ा के दौरान हिंदी में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसी दौरान दिनांक 6 और 7 सितंबर, 2007 को दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

दिनांक 3 सितंबर, 2007 को अपराह्न 12.30 बजे संस्थान के संगोष्ठी सभागार में हिंदी पखवाड़ा का विधिवत् उद्घाटन संस्थान के प्रभारी उपनिदेशक श्री डी. बी. दत्ता द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री दत्ता ने कहा कि देश में आज हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है। हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या सबसे अधिक है। उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे हिंदी पखवाड़ा के दौरान अपना सरकारी कामकाज अधिक से अधिक हिंदी में ही करें। इस अवसर पर स्वागत भाषण प्रस्तुत करते हुए संस्थान के सहायक निदेशक (यांत्रिक) और नामित राजभाषा अधिकारी श्री एस. विजय कुमार ने कहा कि विश्व की कुछ श्रेष्ठ भाषाओं में हिंदी एक है। यह हमारे संविधान की भाषा है। राजभाषा हिंदी में सरकारी कामकाज करना आसान है।

सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने में अधिकारियों और कर्मचारियों की झिझक को दूर करने तथा टिप्पणी, मसौदा/प्रारूपण तैयार करने, पत्र-लेखन आदि का अभ्यास कराने के संबंध में हिंदी पखवाड़ा की अवधि में दिनांक 6 और 7 सितंबर, 2007 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें कुल 15 (पन्द्रह) अधिकारियों और कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। दिनांक 14 सितंबर, 2007 को पूर्वाह्न 11.30 बजे संस्थान के संगोष्ठी सभागार में हिंदी दिवस का हर्षोल्लास के साथ पालन किया गया और दिनांक 3 से 14 सितंबर, 2007 की अवधि में मनाए गए हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में प्रेसीडेंसी कालेज, कोलकाता के हिंदी विभाग के प्रोफेसर डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत की संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया और आज देश में हिंदी बोलने-समझने वालों की संख्या सर्वाधिक है। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी पूरे राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांध कर रखी हुई है। देश में हिंदी का प्रयोग निरंतर आगे बढ़ रहा है।

केंद्रीय मूगा एरी अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, लाहदोईगढ़, असम

केंद्रीय मूगा एरी अनुसंधान व प्रशिक्षण संस्थान, लाहदोईगढ़, जोरहाट, असम में 1 सितंबर से 14 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाए जाने के पश्चात् संस्थान के सभाकक्ष में दिनांक 14 सितंबर, 2007 को अपराह्न 2 बजे भारतीय भाषाओं का सौहार्द दिवस के रूप में हिंदी दिवस तथा हिंदी पखवाड़े का समापन समारोह का आयोजन किया गया।

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित हिंदी प्रतियोगिता के विजेताओं को प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार का परिणाम तथा मूल रूप में हिंदी में काम-काज करने की योजना के तहत वर्ष 2006-2007 में पुरस्कार पाने वाले संस्थान तथा इसके अधीनस्थ इकाईयों के अधिकारियों तथा कर्मचारियों के नाम की घोषिणा संस्थान के निदेशक के द्वारा की तथा उन्हें प्रोत्साहन राशि प्रदान की गई।

अपने अध्यक्षीय भाषण में, संस्थान के माननीय निदेशक डॉ आर. चक्रवर्ती ने कहा कि हम अपने काम-काज में अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग कर राजभाषा हिंदी को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय के स्तर पर गरिमामय दर्जा बना सकते हैं। अपने संस्थान में राजभाषा हिंदी की मौजूदा गतिविधियों का जिक्र करते हुए कहा कि संस्थान में राजभाषा हिंदी की प्रगति संतोषजनक है। वर्ष 2006-2007 में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट निष्पादन किए जाने पर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (TOLIC), जोरहाट, असम की ओर से इस संस्थान को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, मोहाली

राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर), एस. ए. एस. नगर, पंजाब में 31 अगस्त से 14 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। 31 अगस्त से प्रारंभ इस पखवाड़े में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

14 सितंबर को हिंदी दिवस पर आयोजित हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह में दिनेश नाईपर, प्रो. पी. रामाराव ने सभी आमंत्रित अतिथियों, अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए अपने संबोधन में कहा कि आज सभी लोग हिंदी के महत्व को बखूबी समझने लगे हैं। यह हमारी संस्कृति और समाज की एकता की कड़ी है। अत: सभी लोगों को आगे आकर इसका सम्मान करते हुए प्रचार-प्रसार में सहभागिता निभानी चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी को जनप्रिय बनाने के लिए 'चक दे इंडिया' की तर्ज पर 'चक दे हिंदी' के स्लोगन का इस्तेमाल किया जाए तो एक नया जोश हिंदी को प्रोत्साहन दे सकता है।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

संस्थान के डॉ. लवरांज कुमार प्रेक्षागृह में माह-भर की राजभाषा विषयक गतिविधियों के उपरांत हिंदी माह समापन समारोह का आयोजन किया गया।

विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रो. शैलेंद्र कुमार शर्मा ने हिंदी दिवस से संबंधित कार्यक्रमों को, हिंदीतर भाषियों द्वारा हिंदी की सेवा मे किए गए प्रयासों के प्रति कृतज्ञ होने का अवसर बताया और कहा कि आज़ादी की संपूर्णता दिलाने के लिए हिंदी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के आयाम को भी लेना होगा। हिंदी के राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के लिए भी यह आवश्यक है। वैज्ञानिक दृष्टि से संपन्न राष्ट्र बनाने के लिए अपनी भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान लाना आवश्यक है। उन्होंने अपनी भाषा भूलने के खतरे की ओर संकेत करते हुए फिलीपीन्स का उदाहरण दिया और कहा कि अपनी भाषा भूलने वाले राष्ट्र नष्ट हो जाते हैं।

माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं 'दैनिक ट्रिब्यून' के पूर्व संपादक श्री राधेश्याम शर्मा ने हिंदी को सारे देश में एक छोर से लेकर दूसरे छोर तक समझी जाने वाली भाषा बताते हुए कहा कि इसके बावजूद हिंदी की स्वीकृति न होने के कुछ प्रमुख कारण हैं-राजनीति और मानसिकता। उन्होंने विदेशियों के कुचक्र की ओर इंगित करते हुए कहा कि वे हमारी सांस्कृतिक और भाषाई एकता को तोड़ देना चाहते हैं। उन्होंने इस षड्यंत्र और अंतर्राष्ट्रीय स्वार्थों के प्रति सचेत होने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हिंदी समारोह अपनी सुषुप्त शक्ति को पहचानने व जगाने की दिशा देता है। यह आत्मचिंतन का दिन है। भाषा जोड़ती है, राजनीति तोड़ती है। देश की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए हमें अपनी भाषा से जुड़ना चाहिए।

राष्ट्रीय विषाणु विज्ञान संस्थान, पूणे

इस संस्थान में दिनांक 10 सितंबर, से 14 सितंबर, 2007 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया । पांच दिन के इस "हिंदी सप्ताह समारोह" के दौरान दि. 10 सितंबर, 2007 को उद्घाटन समारोह पर डा. विदुला गुप्ते, भुतपूर्व वरिष्ठ प्रबंध क बैंक ऑफ महाराष्ट्र, पुणे अपने व्याख्यान में हिंदी का महत्व बताते हुए कहा की भारत की अर्थव्यवस्था के लिए हिंदी का प्रचार एवं प्रसार हो रहा है क्योंकि भारत में हर प्रांत के लोग हिंदी समझते और जानते हैं । भाषा के साथ मनोवैज्ञानिक भावना हो जाती है । अर्थ को सही ढंग से इस्तेमाल करके अंग्रेजी शब्दों को हिंदी में लिखना होगा तथा हिंदी में अनुवाद करना होगा । इससे हिंदी का व्यापक रूप समझने में मद्द होगी। राजभाषा की इस बढ़ती प्रगति को बनाए रखने के लिए मद्रास जैसे क्षेत्रो में खास तौर से प्रयत्न हो रहे हैं । उन्होंने प्रसन्नता से आगे यह भी कहा की भाषा अदान-प्रदान से तथा भाषा शब्दों के प्रचलन से ही बनती है। इस में दूरदर्शन और हिंदी फिल्मों ने हिंदी भाषा समझने तथा सीखने का कार्य आसानी से कर दिखाया तथा ऐसे माध्यमों से ही हिंदी भाषा अब घर-घर में पहुंच गई है। हिंदी भाषा बोलने, समझने और सीखने के लिए बहुत आसान एवं सरल है सिर्फ उनका लाभ लोगों ने लेना चाहिए । यह कहकर अंत में सभी कर्मचारियों को हिंदी सप्ताह की बधाई दी । श्री तोमर ने उनका धन्यवाद किया तथा आभार प्रदर्शित किया।

केंद्रीय विद्यालय, आई. ओ. सी., बरौनी

रिफाइनरी टाउनशिप, बेगूसराय (बिहार) के. वि. आई. ओ. सी. बरौनी. में दिनांक 14-09-07 से दिनांक 28-9-07 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रम संपन्न किए गए । हिंदी में टिप्पणी, पत्र प्रारूप आशुलिपि लेखन एवं प्रोत्साहन हेतु कार्यालय कर्मचारियों के बीच एक प्रतियोगिता आयोजित की गई।

हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरणा स्वरूप प्राचार्य महोदय द्वारा अपील जारी की गई, जिसके परिणामस्वरूप एक पखवाड़े तक विद्वान शिक्षकों एवं शिक्षकाओं द्वारा प्रात: कालीन सभा में हिंदी के महत्व, प्रसार एवं प्रयोग पर बल देते हुए उद्गार प्रकट किए गए ।

बच्चों के बीच भिन्न-भिन्न तिथियों पर भाषण, वाद-विवाद, अंताक्षरी, निबंध लेखन, काव्य-पाठ, भजन एवं सुलेख प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं ।

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान, नई दिल्ली

राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान में 1 से 14 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । इस अवसर पर संस्थान में हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता, हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता और हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इनमें संस्थान के अनेक अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहकपूर्वक हिस्सा लिया । इस पखवाड़े का मुख्य समारोह 14 सितंबर, 2007 को आयोजित किया गया । श्री रमेश चन्द्र जोशी इस समारोह के मुख्य अतिथि थे ।

यह कार्यक्रम संस्थान के निदेशक, अरूण कुमार गोपाल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ । मुख्य अतिथि श्री जोशी जी ने अपने भाषण में उल्लेख किया कि हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम हिंदी का मूल रूप से प्रयोग करें । हम आदेशों के बल पर नहीं अपितु राष्ट्रीय भावना से प्रेरित होकर हिंदी का प्रयोग करें । उन्होंने इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि संस्थान के अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा हिंदी से संबंधित कार्यो में रूचि लेते हैं । मुख्य अतिथि और उपाध्यक्ष महोदया ने पखवाड़े के दौरान आयोजित हिंदी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता और हिंदी में डिक्देशन देने हेतु प्रोत्साहन योजना और हिंदी में मूल कार्य की नकद पुरस्कार योजना के विजेताओं को पुरस्कार भी प्रदान किए ।

नेशनल इनश्योरेन्स कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली

दिल्ली मंडल कार्यालय-1 तथा इसके अधीनस्थ समस्त मंडल एवं शाखा कार्यालयों में इस वर्ष दिनांक 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस तथा 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिंदी पखवाड़ा उत्साहपूर्वक मनाया गया । 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस के अवसर पर दिल्ली क्षेत्रीय कार्यालय-1 जीवन भारती परिसर में सांय 4.00 बजे आम सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता डा. एच. के. शर्मा, उप महाप्रबंधक ने की ।

डा. यू. वी. सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक ने हमारे कार्यालय एवं कंपनी में राजभाषा के कार्यान्वयन के बारे में बताते हुए कहा कि हमारी कंपनी में भारत सरकार द्वारा बनाए हुए राजभाषा नियमों, संविधान में निहित राजभाषा संबंधी प्रावधानों का पूर्णत: अनुपालन किया जाता है तथा रोजमर्रा के कामकाज

में यथासंभव अधिक से अधिक हिंदी का प्रयोग किया जाता है ।

तत्पश्चात् मुख्य अतिथि पद्मश्री डा. श्याम सिंह शशि ने सभा को संबोधित करते हुए हर्ष व्यक्त किया कि कार्यालय परिसर में आम सभा आयोजित करने का ये नवीन ढंग जिसमें कि कार्मिकों के कार्यस्थल को ही सभा स्थल का रूप देना, नया अनुभव है । उन्होंने सभा को आगे संबोधित करते हुए अपने साहित्यिक सफर के बारे में बताया तथा देश-विदेश की यात्राओं के अनुभव बैठक में उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों के साथ बाँटे । उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त कि नेशनल इंश्योरेंस कंपनी में बीमा व्यवसाय के साथ-साथ राजभाषा हिंदी में कामकाज को भी बढ़ावा दिया जाता है जिसका यह हिंदी सभा स्पष्ट उदाहरण है ।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, कोयम्बतूर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, कोयम्बतूर में 01 सितंबर से 15 सितंबर, 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया ।

हिंदी पखवाड़े के दौरान चार हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इनमें कार्यालय के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया तथा हिंदी टिप्पण आलेखन प्रतियोगिता में कर्मचारियों की भागीदारी उत्साहजनक रही ।

हिंदी को राजभाषा बनाएं जाने के शुभ दिन दिनांक 14 सितंबर को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह की मुख्य अतिथि श्रीमती जी. रेणुका, प्रवक्ता, पी.एस. जी. आर. कृष्णम्माल महिला महाविद्यालय, कोयम्बतूर ने कर्मचारियों के हिंदी समझने पर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें लगा था कि इस कार्यालय में भाषण हिंदी के बदले अंग्रेजी में देना पड़ेगा। किन्तु कर्मचारियों की हिंदी संप्रेषण क्षमता को देखकर उन्हें अपना विचार बदलना पड़ रहा है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी की प्रगति को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि मौरीशस, फीजी, सूरिनाम, ट्रिनिडाड जैसे देशों में हिंदी तीव्रगति से बढ़ रही है। यहां तक की फीजी जैसे देश की राजभाषा हिंदी ही है। 8वें अंतर्राष्ट्रीय विश्व हिंदी की उपयोगिता को सर्वगत बनाया हैं। राजभाषा का महत्व बताते हुए उन्होंने कहा कि सारे विश्व में सभी देशों की राजभाषा और राष्ट्रभाषा एक है। अंग्रेजी के सह-राजभाषा होने के कारण विश्व के अन्य देशों के लिए हमारे देश के राज या संवेदनशील दस्तावेज प्राप्त करना सरल हो जाता है ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

निगम के क्षेत्रीय कार्यालय गुवाहाटी में दिनांक 01-09-2007 से 14-09-2007 तक राजभाषा पखवाड़ा एवं दिनांक 14-09-2007 को अपराह्न 2.30 बजे से हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया ।

दिनांक 31-08-2007 को पखवाड़े का उद्घाटन समारोह आयोजत किया गया। क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने इस अवसर पर सभी कर्मचारियों से इस दौरान अपना सभी कार्य हिंदी में करने की अपील की ।

अनुवादक के स्तर पर व्यक्तिगत रूप से कर्मचारियों से संपर्क कर हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों को दूर कर उन्हें हिंदी में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। इस दौरान निगम कार्यालयों में हिंदी के प्रति कर्मचारियों एवं अधिकारियों में अभिरूचि उत्पन्न करने के लिए मुख्यालय द्वारा अनुमोदित विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया ।

पखवाड़े के अंतिम दिन 14-09-2007 को क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी में सादगीपूर्ण परन्तु उत्साहपूर्वक हिंदी दिवस समारोह का आयोजन क्षेत्रीय निदेशक श्री बालादत्त शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। इसमें सभी अधिकारियों/कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षे०का०-पंचदीप भवन, विंग नं० 4, शिवपुरी प्रेमनगर, देहरादून, उत्तराखंड

दिनांक 7-9-07 को टिप्पण एवं आलेखन प्रतियोगिता 11-9-07 को वाक प्रतियोगिता 12-9-07 को निबंध प्रतियोगिता 13-9-07 को अन्ताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

अपने अध्यक्षीय भाषण में क्षेत्रीय निदेशक महोदय ने कहा कि हिंदी भाषा हमारी पहचान है। अत: हमें इसका आदर करना चाहिए तथा इसके अधिकाधिक प्रयोग पर बल देने की आवश्यकता है। संसार में सभी स्वतंत्र एवं स्वाभिमानी राष्ट्र अपनी अभिव्यक्ति अपनी ही भाषा में करते है। हिंदी भाषा हमारा स्वाभिमान है। अत: हिंदी भाषा के अधिक से अधिक प्रयोग करना हमारा कर्तव्य है। हिंदी का भविष्य उज्जवल है । राजभाषा होने के कारण कार्यालय में हिंदी में ही कार्य करने की प्रेरणा क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त कार्यरत

759 HA/08—14A

अधिकारियों एवं कर्मचारियों को देते हुए समारोह में सफलतापूर्वक आयोजन सहभागी एवं सभी माध्यमों को आभार व्यक्त किया तथा समापन की घोषणा की अन्त में स्वल्पाहार वितरित किया गया।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम, क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद में दिनांक 01-09-2007 से 14-09-2007 तक 'राजभाषा पखवाड़ा समारोह' का आयोजन किया गया। पखवाड़ा आरंभ होने के पूर्व, क्षेत्रीय निदेशक ने अपने संदेश द्वारा क्षेत्र के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अधिक से अधिक काम हिंदी में निपटाने का निवेदन किया । अधिकारियों/कर्मचारियों में हिंदी के प्रति श्रद्धा जगाने तथा प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देने के लिए 07-09-2007 को हिंदी निबंध, हिंदी वाक् प्रतियोगिता, 10-09-2007 को हिंदी टिप्पण-लेखन प्रतियोगिता तथा दिनांक 12-09-2007 को हिंदी अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया ।

दिनांक 14 सितंबर, 2007 को 'हिंदी दिवस' हर्षोल्लास के साथ मनाया गया ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री दासरि रतनम्, प्रभारी क्षेत्रीय निदेशक ने की। इस अवसर पर अपने विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि निगम हिंदी के कार्यान्वयन और इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रतिबद्ध है और आज इस अवसर पर मुझे यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि 'ग' क्षेत्र में स्थित निगम कार्यालयों में क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद राजभाषा के कार्यान्वयन में अग्रणी है । नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हैदराबाद-सिकंदराबाद के उपक्रमों के अधीन उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए निरंतर 6 वर्षों से राजभाषा शील्ड/ट्रॉफी का सम्मान निगम को प्राप्त हो चुका है। न.रा.का.सं. के तत्वावधान में अन्य संस्थाओं द्वारा आयोजित विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं में भी क्षेत्रीय कार्यालय के कर्मचारियों ने अपनी प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते हुए अनेक पुरस्कार प्राप्त किए हैं । उन्होंने आशा व्यक्त की कि निगम इसी प्रकार हिंदी के काम को आगे बढ़ाता रहेगा। उन्होंने क्षेत्रीय कार्यालय में कार्यरत राजभाषा शाखा के अधिकारी एवं कर्मचारियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए कहा कि राजभाषा शाखा के कर्मचारी नि:स्वार्थ भाव से राजभाषा के प्रति समर्पित हैं तथा वे बधाई के पात्र हैं ।

मुख्यालय राज्य बीमा निगम, नई दिल्ली

मुख्यालय में 1 से 14 सितंबर, 2007 तक राजभाषा पखवाड़ा मनाया गया।

राजभाषा हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए श्री विनोद कुमार महाजन, संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने कहा कि भूमंडलीकरण के दौर में राजभाषा हिंदी की भूमिका प्रबल हो गई है। हिंदी प्रयोग के बारे में उन्होंने सूचना प्रौद्योगिकी का उल्लेख किया कि माइक्रोसोफ्ट अर्थात श्री बिलगेट ने भारतीय भाषाओं के महत्व को समझते हुए करोड़ों डालर खर्च किए हैं। यूनीकोड प्रोग्रामिंग से हिंदी प्रयोग को काफी बल मिला है और यूनीकोड नामक एनकोडिंग सिस्टम ने कंप्यूटर पर हिंदी प्रयोग को और अधिक सहज बना दिया है । यूनीकोड के मानकीकरण को भारतीय आई. टी. कंपनियों का समर्थन मिल रहा है। उन्होंने कहा कि याहू, गूगल, एम.एस.एन. आईबीएम लीनकस हिंदी को अपनाए हुए है और अब भाषा के फॉंट को कनवर्ट भी किया जा सकता है । श्री महाजन ने कहा कि हिंदी प्रयोग में स्थिरता है क्योंकि हम अपनी भाषा में विचारों को ठीक तरह से रख सकते हैं और अपने उद्गारों को व्यक्त करने के लिए इसी भाषा का सहारा लेते हैं ।

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़

क्षेत्रीय कार्यालय, कर्मचारी राज्य बीमा निगम, चण्डीगढ़ में 01 सितंबर से 14 सितंबर 2007 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । 14 सितंबर, 2007 को हिंदी दिवस समरोह का आयोजन किया गया । पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के दर्शन शास्त्र विभाग के विद्वान श्री धर्मा शर्मा ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि हिंदी पूर्ण रूप से विकसित और सम्पन्न भाषा है फिर भी आम प्रयोग के अन्य भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने में हमें संकोच नहीं करना चाहिए । उन्होंने कहा कि सबसे अहम बात यह है कि अपनी भाषा का प्रयोग करने का दृढ़ निश्चय हमारे मन में होना चाहिए । श्री जी.सी. जेना, क्षेत्रीय निदेशक ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि हिंदी हमारी संघ की राजभाषा है और यह पूरे देश की संपर्क भाषा है । उन्होंने कहा कि निगम कर्मचारियों को हिंदी के विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए नियमित रूप से नामित किया जाता है और सभी प्रकार के प्रोत्साहन दिए जाते हैं । ■

759 HA/08—14B

हिंदी के बढ़ते चरण

न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन आफ़ इंडिया लिमिटेड मुख्यालय : मुंबई

(एनपीसीआईएल) में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोतर प्रगति

न्यूक्लियर पावर कोंपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एनपीसीआईएल), मुख्यालय मुंबई एवं देश के विभिन्न प्रांतों यथा–रापतभाटा (राजस्थान), नरोरा (उत्तर प्रदेश), काकरापार (गुजरात), तारापुर (महाराष्ट्र), कैगा (कर्नाटक), कल्लपक्कम (तमिलनाडू) एवं कुडन कुलम (तमिलनाडु) आदि स्थानों पर स्थित इकाइयों में राजभाषा कार्यान्वयन में उत्तरोतर वृद्धि हुई है ।

एनपीसीआईएल में अपने गहन वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रकृति के कार्यों के साथ-साथ राजभाषा कार्यों में भी उल्लेखनीय प्रगति देखी गई है एवं निरंतर प्रगति के समग्र प्रयास किए जा रहे हैं । प्रबंधन के शीर्ष पदों पर आसीन वरिष्ठ वैज्ञानिक भी अपने कार्यालयीन कार्यों को राजभाषा में करने में संकोच नहीं करते हैं। इन समग्र प्रयासों की वजह से ही एनपीसीआईएल को राजभाषा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रयासों के कारण विभिन्न संस्थाओं से पुरस्कार एवं सम्मान इस वर्ष के दौरान मिले है। एनपीसीआईएल के नरोरा, तारापुर एवं रावतभाटा में स्थित बिजलीघरों की राजभाषा गृह पत्रिकाओं यथा–अणुविहार, अणुभारती एवं अणुशक्ति को अखिल भारतीय परमाणु ऊर्जा विभाग के जादुगोडा (झारखण्ड) में दिनांक 3 से 5 अक्तूबर, 2007 को आयोजित किए गए राजभाषा सम्मेलन में विभाग की सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाएं होने का गौरव मिला है ।

परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष अपने अधीनस्थ संस्थापनाओं की गृह पत्रिकाओं के लिए तीन पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं और वर्ष 2007 के यह तीनों पुरस्कार न्यूक्लियर पावर कार्पोरेशन की इकाइयों को प्राप्त हुए हैं ।

राजभाषा के प्रचार प्रसार के लिए सन् 1969 में गठित सामाजिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था, आशीर्वाद, मुंबई एवं फिल्मस डिवीजन, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा संयुक्त रूप से दिनांक 16 एवं 17 अक्तूबर, 2007 को आयोजित दो दिवसीय 16वें आशीर्वाद राजभाषा पुरस्कार समारोह एवं राजभाषा सम्मेलन-2007 में एनपीसीआईएल को सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े उपक्रमों की श्रेणी में इस वर्ष राजभाषा में सर्वाधिक कामकाज करने के लिए प्रथम पुरस्कार एवं चल वैजयंती शील्ड श्रीमती इंदिरा गाँधी पुरस्कार व सम्मान प्रदान किया गया तथा एनपीसीआईएल के वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री वी. के. सक्सेना को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए राजभाषा अधिकारी सम्मान एवं स्मृति चिह्न से सम्मानित किया गया । साथ ही एनपीसीआईएल के काकरापार परमाणु बिजलीघर की गृह पत्रिका अणुमाला को सर्वश्रेष्ठ राजभाषा गृह पत्रिका का सम्मान प्रदान किया गया एवं अणुमाला के संपादक श्री दिनेश कुमार, हिंदी अधिकारी को भी इसके लिए सम्मानित किया गया । एनपीसीआईएल को आशीर्वाद संस्था द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में किए गए उल्लेखनीय कार्यों के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े उपक्रमों की श्रेणी में वर्ष 2004 में तृतीय पुरस्कार एवं वर्ष 2006 में द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है ।

अत: इन प्रयासों एवं सम्मानों से एनपीसीआईएल के कार्मिकों को निसंदेह गर्व महसूस होता है कि हम वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्र में ही आगे नहीं अपितु राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सतत प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं और हमारे कार्य दायित्वों के प्रति हम पूरी तरह समर्पित हैं । ■

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हैदराबाद में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

दिनांक 4-5 अक्तूबर, 2007 भारतीय रासायनिक प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईसीटी) के सभागार में भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्रों का दो दिवसीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह उद्घाटित हुआ । इस दो दिवसीय सम्मेलन को मुख्य चार सत्रों में विभाजित किया गया। प्रथम सत्र में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रसायन वैज्ञानिक श्री जे. एस. यादव ने अपने संबोधन में बताया कि आईआईटी, हैदराबाद, सीएसआईआर के अंतर्गत आने वाले समस्त प्रयोगशालाओं में सबसे उन्नत प्रयोगशाला है, जहां इस वर्ष 650 से ज्यादा रिसर्च पेपर प्रकाशित किए गए हैं। इस वर्ष 40 पेटेन्ट किए गए हैं। इसके अतिरिक्त संस्थान ने 32.8 करोड़ के विदेशी प्रोजेक्ट को पूरा किया है, जो सीएसआईआर के अन्तर्गत सर्वोत्तम है। श्री यादव ने संस्थान क्रियाकलापों के विषय में बताया कि आईआईसीटी में एग्रोकेमिकल्स एवं हरित क्रान्ति पर बेहद जोर दिया जा रहा है। उन्होंने इस बात पर दुख जताया कि आम जनता के बीच यह धारणा है कि रसायन शास्त्र के माध्यम से वातावरण में प्रदूषण का स्तर बढ़ रहा है, जो पूर्ण रूप से गलत है। श्री यादव ने बताया कि रसायन विज्ञान आज हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। सुबह की शुरुआत से रात में निश्चित होकर सोने तक हर मोड़ पर हमें रसायन शास्त्र का सहारा लेना पड़ता है। इतने व्यापक स्तर पर हम रसायन शास्त्र का इस्तेमाल अपनी दिनचर्या में कर रहे हैं। इससे उत्पन्न होने वाले प्रदूषण की मात्रा नगण्य है। जे. एस. यादव ने अपने संबोधन के अंत में इस बात पर जोर दिया कि बिना रसायन शास्त्र के हम जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते ।

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में मौलाना आजाद उर्दू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डा. टी. कट्टीमणि ने दक्कन की माटी में भाषाओं के "गंगा-जमनी रंग" विषय पर अपना व्याख्यान दिया । डॉ. कट्टीमणि ने कहा कि हिंदी भाषा में पूरे दक्षिण भारत में जितने प्रेम से कार्य हो रहे हैं, वैसा समर्पण देश के अन्य क्षेत्रों में नहीं दिखता है । उत्तर भारत के लोगों का मानना है कि हिंदी उनकी मातृभाषा है, फिर भी हिंदी के प्रति उनका रवैया उतना उत्साहवर्धक नहीं है । हमें समझना होगा कि हिंदी का महत्व अंग्रेजी से कहीं ज्यादा व्यापक है। स्वयं की मातृभाषा हिंदी न होने के बावजूद भी हिंदी में काम करने के विषय में बोलते हुए डॉ कट्टीमणि ने बताया कि हिंदी के कारण ही उनका पेट भरता है। हिंदी बहुत बड़े आकर्षण एवं व्यापार का केंद्र है ।

इसके उपरान्त सम्मलेन को संबोधित करते हुए निदेशक (राजभाषा) श्री शचीन्द्र शर्मा ने राजभाषा के विकास के लिए बनाए गए नियमों एवं अधिनियमों के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि राजभाषा विभाग प्रतिवर्ष राजीव गांधी ज्ञान-विज्ञान पुरस्कार, इन्दिरा गांधी पुरस्कार एवं समय-समय पर आयोजित की जाने वाली प्रदर्शनियों के माध्यम से राजभाषा के विकास में अपनी भूमिका निभा रहा है ।

सम्मेलन में अगले वक्ता के रूप में बोलते हुए दक्षिण मध्य रेलवे के पी. सी. कुमार ने कहा कि आपसी संवाद से राजभाषा कार्यान्वयन में जागरुकता बढ़ेगी। हिंदी से राष्ट्रीय अवधारणाएं व स्वाभिमान जुड़े हैं। हिंदी पर सबका अधिकार है। सम्मेलन के विषय में बोलते हुए श्री कुमार ने कहा कि इस सम्मेलन में हिंदी के प्रचार के लिए महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाएंगे ।

प्रथम सत्र के अंतिम वक्ता एवं मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग के सचिव श्री रंजीत ईस्सर ने कहा कि "ग" क्षेत्र में हिंदी का प्रचार बहुत अच्छे तरीके से हो रहा है। दक्षिण में हिंदी का अच्छा माहौल है। मुझे आशा है कि यह सम्मेलन अपने गंतव्यों में पूर्ण रूप से सफल होगा ।

प्रथम सत्र के अन्त में कोच्चिन से आए श्री पी. विजय कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया एवं सम्पूर्ण सत्र का सकुशल संचालन होमनिधि शर्मा ने किया ।

5 अक्तूबर, 2007 को अंतिम दिन दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र में राजभाषा के उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए राजभाषा पुरस्कार प्रदान किए गए । प्रथम सत्र में स्वागत भाषण के रूप में सभा को गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी ने कहा कि शहर में आज खेले जा रहे भारत एवं आस्ट्रेलिया के महत्वपूर्ण मैच को छोड़कर लोग यहां उपस्थित हुए ये सभी लोगों की तरफ से राजभाषा के प्रति प्रेम का प्रतीक है। प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि उस्मानिया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो॰ सुलेमान सिद्दीकी के विषय में बताते हुए उन्होने कहा कि अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकालकर प्रो॰ सिद्दकी का यहां आना राजभाषा के प्रति उनकी भावना को बताता है । प्रो॰ सिद्दकी के संबोधन से अवश्य ही यहां उपस्थित लोगों को लाभ पहुंचेगा। श्रीमती कुट्टी ने राजभाषा विभाग के सचिव श्री रंजीत ईस्सर के विषय में बताया कि राजभाषा के विकास में उन्होंने सदैव कारगर कदम उठाए हैं । अपने स्वागत भाषण में सम्मेलन में आए समस्त प्रतिनिधियों से कहा कि राजभाषा का विकास सिर्फ अपने कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने से ही नहीं होगा, अपितु इस तरह के सम्मेलनों में सामूहिक भागीदारी भी राजभाषा के विकास में अहम भूमिका अदा करती है ।

इसके बाद कार्यक्रम में दक्षिण एवं दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र के कार्यालयों एवं नराकास को राजभाषा के विकास में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए ।

पुरस्कार वितरण के बाद सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए सत्र के मुख्य अतिथि प्रो॰ सुलेमान सिद्दकी ने उस्मानिया विश्वविद्यालय का संक्षिप्त परिचय देते हुए बताया कि यह देश के सबसे पुराने विश्वविद्यालय में से एक है । जहां सबसे ज्यादा विद्यार्थी हैं। प्रो॰ सिद्दकी ने आईटी के इस युग में भाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि नैतिक मूल्य सिर्फ अपनी भाषा के माध्यम से आते हैं। आज का युग कंप्यूटर की भाषा बोल रहा है, जिससे समाज में आज नैतिक मूल्यों का अभाव पूर्ण रूप से दिख रहा है । भाषा के माध्यम से हम आपस में मिलकर रहते हैं । भारत में कई भाषाऐं बोली जाती हैं परन्तु हिंदी इन सभी में सबसे बड़े क्षेत्र एवं सबसे ज्यादा लोगों द्वारा बोली, पढ़ी एवं समझी जाती हैं । इसलिए देश भर में इस्तेमाल की जाने वाली समस्त भाषाओं में हिंदी का स्थान सबसे ऊँचा है । प्रथम सत्र के अंतिम वक्ता के रूप में सी.सी.एम.बी. के निदेशक पद्मश्री डॉ॰ लालजी सिंह "डी.एन.ए. फिंगर प्रिंटिंग" जैसे जटिल विषय के बारे में बड़ी ही सहजता, सरलता एवं विस्तार से उपस्थित लोगों को बताया ।

प्रथम सत्र की अन्तिम प्रस्तुति के रूप में नेत्रहीन बच्चों ने बेहद मनमोहक गीत प्रस्तुत कर सबका दिल जीत लिया ।

सम्मेलन के दूसरे एवं अंतिम सत्र में सभी वक्ताओं का जोर आधुनिक तकनीकी के माध्यम से हिंदी के विकास में ही रहा । इस अवसर पर राजभाषा विभाग में तकनीकी निदेशक श्री राकेश कुमार ने विभाग द्वारा सरकारी संस्थानों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई साफ्टवेयरों की जानकारी दी । इनके अतिरिक्त इस सत्र में राष्ट्रीय सूचना केंद्र के तकनीकी निदेशक श्री केवल कृष्ण ने भी विभिन्न सॉफ्टवेयरों की जानकारी दी । इसके उपरान्त पुणे सीडेक ने स्थानीयकरण एवं भाषा प्रौद्योगिकी विषय पर अपनी प्रस्तुति में कंप्यूटर क्षेत्र में आम समस्याओं से निपटने के लिए बेहद सटीक उपाय बताए । सत्र के अंत में इस सत्र के मुख्य अतिथि हनुमन्त राव ने राजभाषा के इस सम्मेलन की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं यहां उपस्थित समस्त लोगों से राजभाषा के विकास में अपना सहयोग देने की अपील की । कार्यक्रम के अन्त में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय बेंगलूर के उप निदेशक श्री विश्वनाथ झा ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने, यहां आए सभी सदस्यों, आईआईसीटी, राजभाषा विभाग एवं इस कार्यक्रम से जुड़े तमाम लोगों को धन्यवाद दिया ।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा सिलीगुढ़ी में पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

सिलीगुढ़ी में पश्चिम बंगाल राज्य के सूचना एवं संस्कृति विभाग के दीप बंधू मंच में दिनांक 13 नवंबर, 2007 को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित पूर्व तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए दो दिवसीय (13-14 नवंबर, 2007) राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का भारत सरकार के सचिव श्री रंजीत ईस्सर की अध्यक्षता में दीप प्रज्जवलित से शुभारंभ हुआ ।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ताओं में श्री जे.एन. नायक, उप कुल सचिव नार्थ ईस्ट हिल विश्वविद्यालय गुवाहाटी में पूर्वोत्तर क्षेत्र में ''हिंदी के बढ़ते चरण'' विषय पर अपने ओजपूर्ण वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर क्षेत्र में हिंदी मुख्य धारा में आ रही है। यहां पर अनेक प्रांतीय/क्षेत्रीय भाषाएं बोली जाती हैं। इन सबमें हिंदी भी संपर्क भाषा का कार्य कर रही है। यहां विद्वानों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में खूब भूमिका निभाई है। भारतीय रिजर्व बैंक, गुवाहाटी के श्री एम.बी. अशोकन, सहायक महाप्रबंधक ने ''भारत में वित्तीय समावेशन की प्रासंगिकता एवं उसमें राजभाषा हिंदी का योगदान'' तथा भारतीय नौवहन कंपनी के क्षेत्रीय प्रबंधक श्री एस.जी. थवानी ने राजभाषा हिंदी में तकनीकी विषयों की जानकारी दी।

द्वितीय सत्र राजभाषा के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी विषय पर प्रकाश डाला गया। सॉफ्टवेयर निर्माताओं द्वारा हिंदी सॉफ्टवेयर की प्रस्तुति की गई। विभाग द्वारा पुस्तक तथा पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई। हिंदी सॉफ्टवेयर ''अक्षर'' की प्रदर्शनी पर ध्यानाकर्षक किया गया।

दिनांक 14 नवंबर, 2007 को पुरस्कार वितरण के दौरान समारोह के अध्यक्ष, भारत सरकार के सचिव श्री रंजीत ईस्सर ने अपने अध्यक्षीय भाषण में केंद्र सरकार के उन कार्यालयों, उपक्रमों, बैंको, वित्तीय संस्थानों तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों को बधाई देते हुए कहा कि जिन्हें राजभाषा नीति के बेहतर अनुपालन के लिए पुरस्कार दिए गए हैं, उनसे आशा है कि पुरस्कार विजेता हिंदी का प्रयोग और बढ़ाएंगे, साथ ही कार्यालयों को भी हिंदी में अच्छा काम करने के लिए प्रेरित करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी के प्रसार-प्रचार में क्षेत्रीय राजभाषा समारोहों की अपनी अहम् भूमिका होती है। कार्यालयों में हिंदी में काम करने के लिए सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध हैं इनका भरपूर उपयोग किए जाने की जरूरत है।

प्रमुख वक्ताओं में केनरा बैंक, क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के वरिष्ठ प्रबंधक श्री निरुपम शर्मा ने ''हिंदी के प्रसार में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंको का योगदान'' के विषय पर ''पावर पाइन्ट'' के माध्यम से प्रस्तुति दी। उन्होंने कहा कि बैंकों में अंग्रेजी में कार्य करना पहले मजबूरी थी अब भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार हिंदी में कार्य किया जा रहा है।

भारत सरकार के निदेशक (कार्यान्वयन) श्री शचीन्द्र शर्मा ने भारत सरकार की राजभाषा नीति एवं उसके कार्यान्वयन तथा योजनाओं को ''पावर पाइन्ट'' के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुति की। उन्होंने कहा कि राजभाषा नीति के अनुसार प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं सद्भावना के तहत ही कार्य किया जाना है। उन्होंने राजभाषा की गतिविधियों को वेबसाइट पर उपलब्ध है कि जानकारी भी दी।

इस समारोह के मुख्य अतिथि भारतीय स्टेट बैंक सिलीगुढ़ी के उप महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति सिलीगुढ़ी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सिलीगुढ़ी में आयोजन हेतु आयोजकों को बधाई दी। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी में काम करना हम सबका राष्ट्रीय कर्तव्य है। भाषा आम बोलचाल की होनी चाहिए। प्रथम दिन का मंच संचालन श्रीमती सुमन श्री तथा दूसरे दिन का संचालन श्री अमलशेखर करणसेठने किया।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा हरिद्वार में (उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र) का संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह

हरिद्वार में स्थित बी.एच.ई एल. के सभागार में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित द्विदिवसीय संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र) दिनांक 13 दिसंबर, 2007 को भारत सरकार के सचिव श्री रंजीत ईस्सर जी की अध्यक्षता में शुभारंभ हुआ। प्रथम दिन के प्रथम सत्र में बी.एच.ई.एल. के कार्यपालक निदेशक एवं अध्यक्ष नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति हरिद्वार ने मुख्य अतिथि के रूप में भाग लेते हुए कहा कि हिंदी का प्रयोग न केवल समय की मांग है बल्कि व्यापारिक उत्कृष्टता एवं वाणिज्य क्षेत्र में प्रगति हेतु राजभाषा की परम आवश्यकता है। हिंदी के प्रयोग में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं है बस आवश्यकता है तो संकल्प की। उन्होंने कहा कि हिंदी में विभिन्न क्षेत्रों स्वास्थ्य, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, सूचना प्रणाली, कंप्यूटर आदि में काम करने की भरपूर क्षमता है। इन क्षेत्रों में काम हो भी रहा है। लेकिन अभी काफी काम करना है। इसके लिए बी.एच.ई.एल. के कार्यकलापों तथा हिंदी में किए जा रहे कार्यों के बारे में संक्षिप्त परिचय दिया। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को भाषा का ज्ञान होना चाहिए। भाषा में सरल और आम बोलचाल के शब्दों के प्रयोग में लाना चाहिए।

इसके पूर्व, अध्यक्ष एवं मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्जवलन, शिक्षा निकेतन प्राइमरी स्कूल की बालिकाओं

द्वारा वाणी वंदना तथा भारत सरकार के निदेशक श्री शचींद्र शर्मा ने स्वागत भाषण में सम्मेलन के आयोजन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि राजभाषा नीति के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए लक्ष्यों के अनुरूप राजभाषा के अनुपालन के लिए इस समारोह में उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों को पुरस्कृत किया जाएगा ।

सम्मेलन के मुख्य वक्ताओं में सर्वप्रथम उत्तराखंड संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ॰ महावीर अग्रवाल ने "प्रबंधन में हिंदी का प्रभाव" विषय पर कालीदास के श्लोक से शुरुआत करते हुए कहा कि संस्कृत भाषा भारत की आत्मा है। भारत के संपूर्ण साहित्य में प्रबंधन के मूल सूत्र हैं। उन पर आज विचार करना होगा। उन्होंने कहा कि भारत और पाश्चात्य प्रबंधन में तुलनात्मक अध्ययन करने पर भारतीय प्रबंधन प्रमुख है। किसी भी व्यक्ति के भाव जिस भाषा में उत्पन्न होते हैं वही भाषा व्यक्ति की मातृभाषा होती है। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य से उधार लिया हुआ चिंतन, विचार आदि सहायक हो सकता है लेकिन अपने भाव अपनी भाषा में ही व्यक्त होते हैं। वही महत्वपूर्ण है । भाषा और माता का अपना संबंध होता है। देश का कल्याण अपनी भाषा, संस्कृति, अपने भावों के माध्यम से ही होगा ।

उत्तराखंड साहित्य परिषद के आचार्य श्री विष्णुदत्त राकेश ने "हिंदी की प्रगतिशील यात्रा एवं सरल हिंदी का प्रयोग" पर चर्चा करते हुए प्राचीन कवियों का हिंदी के प्रति उनके योगदान की महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि हिंदी की जड़ें मजबूत हैं । आजादी की लड़ाई हिंदी के माध्यम से ही लड़ी गई । हमें आज अपनी भाषा और संस्कृति को जीवित करना होगा। हिंदी को विज्ञान, स्वास्थ्य तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में लाना होगा । प्राचीन हिंदी कवियों में जो दृढ़ इच्छा शक्ति थी उसी इच्छा शक्ति की आज आवश्यकता है ।

भारतीय लिपि पर चर्चा हुए उन्होंने कहा कि यदि भारत का प्राचीन इतिहास, संस्कृति को जानना है तो भारतीय लिपि के ज्ञान के बिना यह सम्भव नहीं होगा। अनुवाद के शब्दों के बारे में कहा कि जो शब्द लोगों के अनुसार होंगे वो बचे रहेंगे, शेष लुप्त हो जाएंगे ।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभागाध्यक्ष श्री कमल कांत बुद्धकर ने "पत्रकारिता में हिंदी का योगदान" पर कहा कि हमारी पत्रकारिता ने हिंदी को गौरव प्रदान किया है । इतिहास साक्षी है कि भाषा को सीखने के लिए लोग हिंदी अखबार पढ़ते थे । उन्होंने इलैक्ट्रानिक मीडिया पर आरोप लगाते हुए कहा कि इलैक्ट्रानिक मीडिया बढ़ रहा है लेकिन हिंदी शब्दों को बिगाड़ रहा है। लेकिन भाषा प्रिंट मीडिया से ही सीखी जा सकती है । उन्होंने आगे कहा कि साहित्य और पत्रकारिता का सेतु टूट रहा है। इनकी दूरियां कम करनी होंगी तभी हिंदी पत्रकारिता के लिए सौभाग्यशाली दिन होगा ।

भारत सरकार की संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी जी ने कहा कि हमें उस दिन की प्रतीक्षा है जब हम सभी को हिंदी में काम करने के लिए पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं होगी। अपने मन की बात अपनी भाषा में लिख सकें।

इस समारोह के द्वितीय सत्र में राजभाषा के क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी तथा साफ्टवेयरों पर चर्चा हुई । हिंदी साफ्टवेयरों की प्रस्तुति की गई । इस अवसर पर कंप्यूटर तथा हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की प्रदर्शनी भी लगाई गई ।

दिनांक 14 दिसंबर, 2007 को माननीय गृह राज्य मंत्री श्री माणिकराव एच. गावीत मुख्य अतिथि द्वारा राजभाषा नीति के अंतर्गत भारत सरकार द्वारा निर्धारित किए गए तथ्यों के अनुरूप राजभाषा के अनुपालन के लिए उत्तर एवं दिल्ली क्षेत्र के केंद्रीय कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में 42 विभागों को पुरस्कृत किया गया। अपने भाषण में गृह राज्य मंत्री ने कहा कि हिंदी संपूर्ण राष्ट्र की भाषा है । इसको किसी जाति या व्यक्ति विशेष से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए । उन्होंने कहा कि सभी को हिंदी के सरल प्रयोग पर ध्यान देना चाहिए । इस भाषा के प्रयोग के लिए सोच और मानसिकता की जरूरत है। हिंदी जन-जन की भाषा है ।

इस सत्र में भेल के कार्यपालक निदेशक श्री एस.एम. महाजन ने कहा कि हिंदी स्वयं में प्रयोग होने वाली तथा गति पाने वाली भाषा है । विश्व स्तर पर इसका भविष्य निःसंदेह उज्ज्वल है । कुछ वर्षों की तुलना में अब हिंदी का प्रयोग वास्तव में हो रहा है । राष्ट्रीय श्रम संस्थान नोएडा के सीनियर फैलो डाक्टर महावीर जैन ने व्यक्तित्व निर्माण एवं सकारात्मक सोच विषय पर अपने विचारों से श्रोताओं को चिंतन पर विवश कर दिया । केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के पूर्व निदेशक डॉ॰ विचार दास ने भारत की संस्कृति में हिंदी भाषा के योगदान के विषय में जानकारी दी। पंजाब एंड सिंध बैंक के वरिष्ठ प्रबंधक राजेन्द्र सिंह बेवली ने भी अपने विचार प्रकट किए । बिशिष्ट अतिथि के रूप में लुधियाना के सहायक आयकर आयुक्त श्री जयराज काजला ने कहा कि हिंदी की तरक्की के लिए हमें हिंदी भाषा के प्रति अपने दोयम व्यवहार का परित्याग करना होगा। उन्होंने कहा कि जब तक प्रत्येक देशवासी हिंदी को अपने व्यवहार की भाषा नहीं समझेगा, तब तक राजभाषा देश में अपने सम्मान से वंचित बनी रहेगी। उन्होंने आगे कहा कि विदेशी भाषाओं में

बहु अर्थी शब्दों के चलने से ये प्रतिपादित हो चुका है कि हिंदी भाषा जैसी समृद्धता अन्य भाषाओं में नहीं है और हिंदी ही विश्व की एकमात्र भाषा है, जिसमें भावों को सुस्पष्ट तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता है ।

सम्मेलन के दौरान कंप्यूटरों पर हिंदी में कैसे कार्य किया जाए, इस संबंध में सी डैक तथा अन्य कंपनियों द्वारा तैयार प्रोग्राम साफ्टवेयर का प्रदर्शन भी किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, मंगलूर

मंगलूर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में हिंदी माह समारोह-2007 के सिलसिले में नराकास, मंगलूर के अधीन गठित द्विभाषी प्रौद्योगिकी शोध संस्थान के बैनर तले कार्पोरेशन बैंक तथा एम आर पी एल द्वारा संयुक्त रूप से 29 एवं 30 अगस्त, 2007 को एमआरपीएल में ''उन्नत प्रौद्योगिकी में हिंदी-समस्याएं एवं समाधान'' पर संगोष्ठी आयोजित की गई ।

संगोष्ठी के अध्यक्ष एवं कार्पोरेशन बैंक के महाप्रबंधक (राजभाषा) श्री एन.आर. शेट ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नित नए अनुसंधान हो रहे हैं तथा उसके अनुरूप परिवर्तन और विकास हो रहा है । इस नई प्रौद्योगिकी को हमें अपनी भाषा में अपनाना चाहिए तथा अपनी भाषा के जरिए इस का अधिकाधिक प्रचार भी किया जाना चाहिए । प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी भाषा को भी अनिवार्यत: शामिल करने तथा इस क्षेत्र की नई गतिविधियों से समिति के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों को अवगत कराने के लिए नराकास द्वारा किए जा रहे प्रयासों की उन्होंने सराहना की ।

कार्पोरेशन बैंक के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) तथा मंगलूर नराकास के सदस्य सचिव डॉ॰ जयंती प्रसाद नौटियाल ने अपने भाषण में कहा कि यह दिन (29 अगस्त, 2007) हिंदी के लिए अविस्मरणीय रहेगा क्योंकि इस दिन सी-डैक द्वारा विकसित श्रंतलेखन पैकेज का लोकार्पण हो रहा है। उन्होंने कहा कि हिंदी का वर्चस्व केवल भारत में ही नही, बल्कि पूरे विश्व में फैल रहा है । न्यूयोर्क में हाल ही में आयोजित आठवां विश्व हिंदी सम्मेलन इस का साक्षी है ।

पूर्वाह्न सत्र में मैसर्स आरटेक इंफो सिस्टम्स प्राइवेट, लिमिटेड नोएडा के प्रतिनिधि श्री सुदर्शन हड़लालक एवं श्री राजेश श्रीवास्तव द्वारा अक्षर नवीन सॉफ्टवेयर की विशेषताओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया। यह सूचित किया गया कि उनके पैकेज के साथ आपरेटिंग सिस्टम भी प्राप्त हो रहा है। प्रतिभागियों की शंकाओं का समाधान भी किया गया। श्रीमती एम. आएशा सुल्ताना, राजभाषा अधिकारी, कार्पोरेशन बैंक ने इस सत्र का विषय प्रवर्तन किया।

भारतीय पेट्रोलियम संस्थान, देहरादून

आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी-XVIII का आयोजन

18वीं 'आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठी' का आयोजन संस्थान के सर सी वी रमन व्याख्यान-कक्ष में संपन्न हुआ ।

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए कार्यकारी निदेशक, श्री वी एस सैनी ने कहा कि राजभाषा अनुभाग ने आंतरिक हिंदी वैज्ञानिक संगोष्ठियों जैसे कार्यक्रमों का सतत आयोजन कर निश्चित रूप से संस्थान में मौलिक विज्ञान लेखन का प्रेरक उपक्रम जुटाया है । उन्होंने कहा कि संस्थान व अमुक-अमुक वैज्ञानिक प्रभागों की महत्वपूर्ण उपलब्धियों का प्रचार-प्रसार करने में इस प्रकार की संगोष्ठियां महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है । आज हमारे वैज्ञानिक महत्वपूर्ण विषयों पर अपने शोध लेख प्रस्तुत कर राजभाषा के साथ-साथ विज्ञान को भी कई दृष्टियों से प्रकाश में ला रहें हैं । उन्होंने कहा कि इन सब आयोजनों के लिए राजभाषा अनुभाग के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं । उन्होंने संगोष्ठी में प्रस्तुत किए गए शोध लेखों के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि सभी प्रस्तुतियों के द्वारा बहुत अच्छी जानकारी दी गई है जिससे संगोष्ठी की सार्थकता सिद्ध हुई है ।

संगोष्ठी का संचालन करते हुए संगोष्ठी के संयोजक एवं संस्थान के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डा. दिनेश चमोला ने कहा कि यदि हमें अपने उत्कृष्ठ वैज्ञानिक लेखन को जन-जन तक पहुंचाना है तो हमें अपनी वैज्ञानिक उपलब्धियों को विशेषकर हिंदी में व सामान्यत: भारतीय भाषाओं में अभिव्यक्ति देकर गर्व की अनुभूति करनी चाहिए ।

संगोष्ठी में संस्थान के वैज्ञानिकों यथा-श्रीमती पुष्पा गुप्ता ने 'ग्रीन हाउस प्रभाव: कारण और निवारण'; श्री जी एस डांग ने 'विलायक विएसफाल्टन प्रक्रम में विलायक की अति क्रांतिक अवस्था में पुन:प्राप्ति'; श्री मृत्युंजय कुमार शुक्ल ने 'डाइ-इथाइल ईथर: परिवहन ईंधन के रूप में संभावनाएं'; डॉ. बी आर नौटियाल ने 'रिफॉर्मेट फीडस्टॉक से विशुद्ध ऐरामैटिक अवयवों का निष्कर्षण' तथा डा. डी के अधिकारी/श्री सचिन कुमार ने 'जैव-परिष्करणी' विषयों पर क्रमश: शोध-पत्रों की प्रभावपूर्ण प्रस्तुतियां हिंदी में दी । ■

पुरस्कार/प्रतियोगिताएं

भारी पानी संयंत्र, तुतीकोरिन

प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष एवं स्वतंत्रता के 60 वर्ष पूर्ण होने पर देशभक्ति हिंदी गीत एवं राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं राजभाषा वार्ता

भारी पानी संयंत्र, तुतीकोरिन के अतिथि गृह के सभागृह में दिनांक 24 अक्टूबर, 2007 को हिंदी सप्ताह के दौरान कार्मिकों, गृहणियों एवं बच्चों के लिए आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के पुरस्कार वितरण के साथ-साथ प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के 150 वर्ष पूर्ण होने एवं स्वतंत्रता के 60 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर एक देशभक्ति गीत कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया ।

इन दोनों अवसरों पर संयंत्र के कार्मिकों हेतु देशभक्ति हिंदी गीत कार्यक्रम में 8 प्रतिभागी थे जिन्होंने देश भक्ति से ओतप्रोत अपनी हिंदी कविताएं एवं गीत सुनाए । सभी प्रतिभागियों को स्मृति चिन्ह भी प्रदान किए गए । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्पिक हायर सेकेन्ड्री स्कूल के प्रधानाध्यापक श्री वी. रघुवीरन थे । जिन्होंने अपना उद्‌बोधन कुछ हिंदी गीतों से शुरु किया एवं उन्होंने बताया कि दक्षिण भारतीय होते हुए भी उनकी रुचि भी शुरु से ही हिंदी में रही है एवं हिंदी सीखने का माध्यम हिंदी फिल्में एवं उनके गाने रहें हैं। वह फिल्मों को हिंदी सीखने का एक सशक्त माध्यम मानते हैं । उन्होंने अपने कुछ अनुभव भी सुनाए एवं कहा कि हिंदी सीखने की शुरुआत, स्कूलों से ही होनी चाहिए क्योंकि उस समय बच्चों में सीखने की लगन एवं ललक होती है, इसलिए ऐसे स्कूल जहाँ हिंदी नहीं पढ़ाई जाती है, वहां एक भाषा के रूप में हिंदी पढ़ाई जानी चाहिए । ताकि छात्र आसानी से उसे सीख सकें । भाषा सीखने का माध्यम साधारणतया प्रतीक ही होते हैं । इसलिए हिंदी भी प्रतीकात्मक रूप मे सीखाई जाए । अपनी राजभाषा वार्ता संदेश में श्री रघुवीरन ने बच्चों को हिंदी का महत्व समझाते हुए हिंदी सीखने का आह्वान किया एवं बच्चों एवं कार्मिकों को पुरस्कार वितरण किया ।

समारोह के अन्त में अपने उद्‌बोधन में महाप्रबंधक श्री वी. वी. एस. रामाराव ने कहा कि हिंदी प्रतियोगिताओं के माध्यम से हमें पता चलता है कि कार्मिकों एवं बच्चों के हिंदी के ज्ञान का स्तर क्या है इसे हमें प्रतियोगिताओं तक ही सीमित न रख कर कार्यालय एवं अपने दैनिक जीवन में भी उपयोग में लाना है एवं हिंदी ज्ञान निरंतर बढ़ाते रहना है ।

कार्मिकों हेतु 11 विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन अगस्त में किया गया था । आवासीय गृहणियों एवं बच्चों हेतु भी 8 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन सितंबर माह में किया गया, उन्हीं प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए । अतिथियों को स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए । कार्यक्रम का संचालन श्रीमती भाग्यवती एवं मनोज शर्मा ने किया कार्यक्रम के अंत में श्रीमती श्यामलता ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

आकाशवाणी पुणे में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

आकाशवाणी पुणे में 14 सितम्बर, 2007 से 28 सितम्बर, 2007 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया । पखवाड़े के उपरान्त 4 अक्तूबर, 2007 को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिता के विजेता कर्मियों तथा हिंदी में अन्य उत्कृष्ट कार्य करने वाले कर्मचारियों को केंद्र निदेशक श्री मुकेश शर्मा तथा अधिक्षण अभियंता श्री सुनील अरोरा ने नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया ।

आकाशवाणी पणजी (गोवा) में स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्रध्वज तले राष्ट्रभाषा पुरस्कार

राष्ट्रध्वज और राष्ट्रभाषा दोनों हमारी अस्मिता का परिचय देते हैं । स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर राष्ट्रध्वज के नीचे राष्ट्रभाषा और राजभाषा हिंदी के लिए सम्मानित होना गौरवपूर्ण क्षण होता है। यह उदगार प्रकट करते हुए 15 अगस्त, 2007 को आकाशवाणी पणजी में ध्वजारोहण कर केंद्र निदेशक श्री बी.डी.मजुमदार ने आकाशवाणी पणजी

759 HA/08—15A

के दस अधिकारियों और कर्मचारियों को भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग की हिंदी टिप्पण–आलेखन प्रोत्साहन योजना वर्ष 2006–2007 के अंतर्गत नकद पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया । हिंदी में उत्कृष्ट समाचार प्रेषण (डिस्पैच) के लिए श्री बालाजी प्रभुगांवकर, सहायक समाचार संपादक को तथा लेखा–प्रशासन अनुभाग के उत्कृष्ट हिंदी प्रयोग के लिए श्रीमती वैशाली साविया फर्नांडीस को प्रथम पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया । कार्यकक्ष में हिंदी के श्रेष्ठ क्रियान्वयन के लिए श्री नंदा दीपक बट्टा तथा लेखा–प्रशासन अनुभागों में हिंदी प्रयोग के लिए श्रीमती स्नेहल फोंडेकर और श्री राजेन्द्र सांवत को द्वितीय पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया । कार्यक्रम इंजीनियरी तथा अन्य अनुभागों में राजभाषा हिंदी में अच्छे काम–काज के लिए श्रीमती पुष्पलता भुवड, श्रीमती रेखा बोगती, श्रीमती सोनिया वेर्लेकर, श्रीमती अनुजा सांवत और श्रीमती अनुजा महाले को तृतीय पुरस्कार प्रदान कर राष्ट्रध्वज तले सम्मानित किया गया ।

इन्डस्ट्रियल डेवलपमेंट बैंक ऑफ इंडिया लिमिटेड शाखा कार्यालय: जनपथ शाखा, आई.डी.बी.आई. हाउस, जनपथ, भुवनेश्वर–751022 (ओडिशा)

बैंक–नराकास राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता–आई.डी.बी.आई.लि., भुवनेश्वर को सांत्वना पुरस्कार (वर्ष: 2006): प्रमाणपत्र

आई.डी.बी.आई.लि., भुवनेश्वर को कार्यालय में हिंदी के अच्छे कार्यान्वयन के लिए भुवनेश्वर–बैंक–नराकास राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता में वर्ष 2006 के लिए सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ है । उक्त क्रम में बैंक नराकास के अध्यक्ष (उप महाप्रबंधक, भारतीय स्टेट बैंक, होटल प्रेसिडेन्सी भुवनेश्वर) श्री एस. मगदुम मोहिद्दीन द्वारा कार्यालय के श्री जे. के. बास्कर, उप महाप्रबंधक को राजभाषा–शील्ड व प्रमाणपत्र देकर तथा डॉ आर.पी.सिंह, सहायक महाप्रबंधक (हिंदी) को राजभाषा–प्रशस्ति प्रमाण–पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग में निरन्तर प्रयासरत रहने की कामना की गई ।

पंजाब नैशनल बैंक झारखण्ड अंचल कार्यालय, रांची

'पीएनबी जोहार' को प्रथम एवं श्री श्रीलाल प्रसाद को सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार

पंजाब नैशनल बैंक, झारखण्ड अंचल, रांची को राजभाषा हिंदी के प्रयोग में प्रशंसनीय कार्यनिष्पादन के साथ–साथ उत्कृष्ट हिंदी पत्रिका प्रकाशन के लिए लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता के अन्तर्गत पुरस्कृत किया गया है। बैंक के मुख्य प्रबंधक श्री नन्द किशोर सिंह तथा वरिष्ठ प्रबंधक–राजभाषा एवं 'पीएनबी जोहार' के संपादक श्री श्रीलाल प्रसाद ने 20–10–2007 को नई दिल्ली में आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में कार्यकारी निदेशक श्री जगमोहन गर्ग से पुरस्कार स्वरूप शील्ड एवं प्रमाण–पत्र ग्रहण किया। इसके अलावा श्री श्रीलाल प्रसाद को सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार भी प्रदान किया गया। इसके अन्तर्गत उन्हें पांच हजार रुपए एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

अंचल प्रबंधक श्री कमल प्रसाद ने कहा कि लाला लाजपत राय राजभाषा शील्ड प्रतियोगिता 2006–07 के अन्तर्गत पीएनबी के देश में कार्यरत सभी अंचल कार्यालयों, अंचलों तथा अंचलों से प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं के बीच अलग–अलग आयोजित तीनों प्रकार की प्रतियोगिताओं में झारखण्ड अंचल तीनों ही श्रेणियों में पुरस्कृत किया गया है। पत्रिकाओं की प्रतियोगिता में झारखण्ड अंचल से प्रकाशित "पीएनबी जोहार" को प्रथम, हिंदी के प्रयोग के लिए अंचलों को प्रतियोगिता में झारखण्ड अंचल (सभी शाखाओं की समेकित स्थिति) को द्वितीय तथा अंचल कार्यालयों की प्रतियोगिता में अंचल कार्यालय रांची (एक इकाई के रूप में) को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ हैं । इसके अलावा पीएनबी जोहार के संपादक श्री श्रीलाल प्रसाद को सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार भी प्रदान किया गया है। अंचल प्रबंधक ने बताया कि झारखण्ड अंचल को राजभाषा के प्रयोग तथा पत्रिका प्रकाशन के क्षेत्र में अखिल भारतीय स्तर पर पहली बार पुरस्कृत किया गया है और वह भी एक साथ सभी प्रतियोगिताओं में पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। साथ ही, श्री श्रीलाल प्रसाद सर्वश्रेष्ठ संपादक का पुरस्कार प्राप्त करने वाले पीएनबी के पहले अधिकारी हैं । ■

759 HA/08—15B

प्रशिक्षण

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/ हिंदी शिक्षण योजना

सितम्बर, 2007 की महत्वपूर्ण गतिविधियां

अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण

1. कर्मचारियों की हिंदी में काम करने की झिझक को दूर करने हेतु दिनांक 17-9-2007 से 21-9-2007 तक 310वीं गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जिसमें 28 प्रतिभागियों ने सक्रिय सहयोग किया ।

2. दिनांक 5-9-2007 से देश भर में गहन प्रबोध पाठ्यक्रम का नया सत्र आरंभ हुआ ।

संस्थान

1. 29-9-2007 को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा निरीक्षण किया गया ।

2. राजभाषा विभाग द्वारा 27-28 सितंबर, 2007 के दौरान लीला मंत्र एवं श्रुतलेखन के इंस्टालेशन एवं प्रयोग संबंधी प्रशिक्षण कार्यक्रम में संस्थान के 3 अधिकारियों ने भाग लिया ।

3. दिनांक 19-9-2007 को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/हिंदी शिक्षण योजना के सभी अधिकारियों के लिए मशीनी अनुवाद तथा मंत्रा साफ्टवेयर से संबंधित कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें प्रो. ठाकुर दास ने व्याख्यान दिया ।

भाषा पत्राचार एकक

भाषा पत्राचार के लिए पंजीकृत प्रशिक्षार्थियों को सितंबर माह की पाठ्य सामग्री भिजवाई गई ।

टंकण पत्राचार

हिंदी टाइपलेखन पत्राचार पाठ्यक्रम का 34वां सत्र अगस्त, 2007 से आरंभ हुआ ।

गहन हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण

हिंदी टंकण की 2 कक्षाओं तथा आशुलिपि की एक कक्षा का संचालन किया गया ।

हिंदी शिक्षण योजना

1. दिनांक 1-9-2007 से 16-9-2007 तक उप निदेशक (मध्योत्तर) कार्यालय द्वारा हिंदी पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा 17-9-2007 को समापन समारोह आयोजित किया गया जिसमें विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए ।

2. क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी पखवाड़े का आयोजन हुआ तथा हिंदी दिवस व समापन समारोह आयोजित किए गए ।

3. हिंदी शिक्षण योजना की प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ कक्षाओं के परीक्षा फार्म तथा नामीनत रोल भरवा कर परीक्षा शाखा को भेजे गए ।

परीक्षा

1. जुलाई, 2007 में आयोजित हिंदी टंकण/आशुलिपि परीक्षाओं का परीक्षा परिणाम सभी संबंधित अधिकारियों/ कार्यालयों को भिजवाया गया ।

2. 27-7-2007 को देश भर में आयोजित प्राज्ञ गहन पाठ्यक्रम की परीक्षा का परिणाम सभी संबंधित कार्यालयों को भिजवाया गया ।

3. वित्तीय वर्ष 2007-2008 के संशोधित अनुमान तथा आगामी वित्तीय वर्ष 2008-2009 का नॉन प्लान बजट अनुमान की सूचना केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान को भिजवाई गई ।

4. 25-9-2007 तथा 25-9-2007 को क्रमशः हैदराबाद एवं बेंगलूर में विशेष गहन प्राज्ञ परीक्षाओं का आयोजन किया गया ।

केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान/ हिंदी शिक्षण योजना

अक्तूबर, 2007 की महत्वपूर्ण गतिविधियां

अल्पकालिक गहन प्रशिक्षण

1. दिनांक 10-10-2007 को देश भर में गहन हिंदी प्रबोध परीक्षा आयोजित की गई तथा दिनांक 11-10-2007 से गहन हिंदी प्रवीण कक्षा आरंभ की गई ।

2. दिनांक 8 अक्तूबर, 2007 से 12 अक्तूबर, 2007 तक प्रशिक्षकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 7 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

3. दिनांक 22-10-2007 से 28-10-2007 तक 311वीं गहन हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया ।

संस्थान

1. हिंदी शिक्षण योजना के क्षेत्रीय उप निदेशकों, प्रभारी सहायक निदेशकों एवं केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों की वार्षिक बैठक दिनांक 8-9 अक्तूबर, 2007 को निदेशक, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की अध्यक्षता में उप निदेशक मध्योत्तर, हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित हुई। बैठक में संयुक्त सचिव (रा. भा.), राजभाषा विभाग, मुख्य अतिथि के रूप में तथा निदेशक (सेवा) विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित हुए। इस बैठक में हिंदी शिक्षण योजना तथा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के 25 अधिकारियों ने भाग लिया। बैठक में सामान्य मदों के अतिरिक्त प्रशिक्षण कार्यक्रमों की ऑन-लाइन करने के संबंध में निर्णय लिया गया ।

2. दिनांक 16-10-2007 को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 54वीं बैठक आयोजित की गई ।

भाषा पत्राचार एकक

1. भारत सरकार मुद्रणालय, चंडीगढ़ से मुद्रित किटें तथा उत्तर-पत्र मंगवाने संबंधी कार्रवाई की गई ।

2. संसदीय राजभाषा समिति के 8वें खण्ड की संस्तुति संख्या 2 के अनुपालन में, निदेशक (संस्थान) की ओर से उन मंत्रालयों को पत्र भेजे गए जहां प्रशिक्षण के लिए अभी भी अधिकारी/कर्मचारी शेष हैं ।

टंकण प्रत्राचार

हिंदी टंकण पत्राचार के 34वें सत्र में कुल 456 कर्मचारियों को पंजीकृत किया गया ।

गहन हिंदी टंकण एवं आशुलिपि प्रशिक्षण

1. गहन हिंदी टंकण की 2 कक्षाओं तथा आशुलिपि की एक कक्षा का संचालन किया गया ।

2. दिनांक 18-10-2007 को गहन हिंदी टंकण प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की परीक्षा आयोजित की गई ।

हिंदी शिक्षण योजना

1. उप निदेशक (मध्योत्तर) तथा सहायक निदेशक द्वारा कक्षाओं का निरीक्षण किया गया ।

2. जालंधर में पूर्णकालिक केंद्र खोलने के बारे में आवश्यक कार्रवाई की गई ।

3. दिनांक 10-10-2007 को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, चैन्नई केंद्र पर प्रबोध परीक्षा का संचालन किया गया जिसमें कुल 96 परीक्षार्थियों ने भाग लिया ।

4. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण उप संस्थान, कोलकाता में सहायक निदेशक द्वारा गहन प्रशिक्षण के लिए साऊथ-ईस्टर्न कोल-फील्डस, कोलकाता में नया केंद्र खोला गया ।

5. हिंदी शिक्षण योजना (पूर्व) के कार्यालय से दो सहायक निदेशकों को नई दिल्ली में सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में दिनांक 29-10-2007 से 2-11-2007 तक की अवधि के लिए भेजा गया ।

7. (अ) हैदराबाद की प्रभारी सहायक निदेशक ने 4 एवं 5 अक्तूबर, 2007 को हैदराबाद में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में भाग लिया ।

(ब) प्रभारी सहायक निदेशक ने हैदराबाद में बैंक तथा केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की नराकास बैठक में भाग लिया ।

7. उप निदेशक (पश्चिम) के कार्यालय द्वारा क्षेत्रीय समाचार बुलेटिन "पश्चिमांचल-हिंदी शिक्षण समाचार" के तृतीय अंक का प्रकाशन किया गया तथा वितरित किया गया ।

8. हिंदी शिक्षण के सभी क्षेत्रीय निदेशकों तथा प्रभारी सहायक निदेशकों को आयोजित की गई क्षेत्रीय उप-निदेशकों की बैठक में भाग लिया ।

परीक्षा

1. बेंगलूर केंद्र पर दिनांक 1-10-2007 तथा 29-10-2007 को हिंदी गहन प्राज्ञ (विशेष) परीक्षा का आयोजन किया गया ।

2. दिनांक 10-10-2007 को 7 केंद्रों पर प्रबोध (गहन) की परीक्षा का आयोजन किया गया ।

3. दिनांक 18-10-2007 को नई दिल्ली में गहन हिंदी टाइपलेखन परीक्षा का आयोजन किया गया ।

4. दिनांक 31-10-2007 को हैदराबाद में तीन केंद्रों पर गहन प्राज्ञ (विशेष) परीक्षा का आयोजन किया गया । ■

आदेश-अनुदेश

भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, नई दिल्ली, का दिनांक 9 अगस्त, 2007 का
का.ज्ञा. सं. 21034/35/2007-रा.भ.(प्रशि.)

कार्यालय ज्ञापन

विषय :–हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा हिंदी टंकण एवं आशुलिपि परीक्षा के परीक्षार्थियों की उत्तरपुस्तिकाओं की संवीक्षा कराने की फीस में वृद्धि के संबंध में ।

हिंदी शिक्षण योजना के अधीन आयोजित की जाने वाली हिंदी प्रबोध, प्रवीण, प्राज्ञ तथा हिंदी टंकण एवं आशुलिपि परीक्षाओं में जो परीक्षार्थी अपने परीक्षा परिणाम से संतुष्ट नहीं होते तथा अपनी उत्तर-पुस्तिकाओं की संवीक्षा के लिए आवेदन करते हैं, उनकी उत्तर-पुस्तिकाओं के संवीक्षा शुल्क में वृद्धि किए जाने का मामला कुछ समय से विचाराधीन रहा है। अब भारत सरकार ने यह निर्णय किया है कि इस शुल्क को रु. 5 से बढ़ाकर रु. 50 कर दिया जाए। यह फीस उप निदेशक (परीक्षा), हिंदी शिक्षण योजना, नई दिल्ली को देय रु. 50 के डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा दी जाएगी जो कि संवीक्षा करवाने के लिए आवेदन-पत्र के साथ भेजा जाना होगा।

2. उपर्युक्त वृद्धि इस कार्यालय ज्ञापन के जारी होने की तारीख से प्रभावी होगी।

3. यह कार्यालय ज्ञापन वित्त-II, गृह मंत्रालय की टिप्पणी संख्या एफ-900/07/ए.एस.एण्ड एफ.ए(एफ), दिनांक 29 जून, 2007 के तहत दी गई सहमति से जारी किया जा रहा है ।

विजय कुमार गुप्ता,
अवर सचिव,
भारत सरकार

भारत सरकार, गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग, नई दिल्ली, दिनांक का 9 अगस्त, 2007 का कार्यालय ज्ञापन का.ज्ञा. सं. 21034/47/2007-रा.भ.(प्रशि.)

कार्यालय ज्ञापन

विषय :–हिंदीतर राज्यों से मैट्रिक स्तर तक का हिंदी का ज्ञान प्राप्त केंद्र सरकार के अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए हिंदी के सेवाकालीन प्रशिक्षण की अनिवार्यता के संबंध में ।

केंद्र सरकार के जिन कर्मचारियों ने हिंदीतर राज्यों से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में पढ़ी है, उनके लिए प्राज्ञ का प्रशिक्षण अनिवार्य है अथवा नहीं, इस संबंध में विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, केंद्रीय कार्यालयों आदि से समय-समय पर स्थिति स्पष्ट करने के लिए अनुरोध प्राप्त होते रहे हैं। इस विषय में विचार-विमर्श के उपरांत यह पाया गया कि दिनांक 19 अक्तूबर, 2001 को जारी कार्यालय ज्ञापन सं. 14034/36/2001-

रा.भा. (प्रशि.) तथा उससे संबंधित स्पष्टीकरणों से असमंजस की स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसे दूर किया जाना आवश्यक है। अतः स्थिति को स्पष्ट करने हेतु राजभाषा विभाग द्वारा निम्नलिखित निर्णय लिए गए हैं :–

(क) केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी के कार्यसाधक ज्ञान की परिभाषा राजभाषा नियम (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग), 1976 (यथासंशोधित, 1987) के नियम 10 में दी गई है जो कि स्वतः स्पष्ट और मान्य है।

(ख) तथापि पूर्व में जारी आदेशों/स्पष्टीकरणों से उत्पन्न असमंजसता को समाप्त करने के लिए पुनः स्पष्ट किया जाता है कि केंद्रीय सरकार के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदीतर राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के विश्वविद्यालय/शिक्षा बोर्ड से मैट्रिक स्तर तक हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की है परन्तु हिंदी में उत्तीर्ण होने हेतु संबंधित राज्य सरकार के शिक्षा बोर्ड/विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित न्यूनतम अंक प्राप्त नहीं किए हैं उनके बारे में यह समझा जाएगा कि उन्हें हिंदी के प्रवीण स्तर का ज्ञान प्राप्त है, परंतु प्राज्ञ स्तर का ज्ञान प्राप्त नहीं है। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य होगा तथा उन्हें प्राज्ञ पाठ्यक्रम में तभी दाखिला दिया जा सकता है, जबकि पात्रता के अनुसार उनके लिए प्राज्ञ का पाठ्यक्रम अंतिम पाठ्यक्रम हो। प्राज्ञ परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को इस विभाग के दिनांक 2-9-1976 के का.ज्ञा. सं. 12014/2/76-रा.भा.(डी) तथा दिनांक 14-2-1979 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 12014/1/78-रा.भा. (डी) के अनुसार वैयक्तिक वेतन देय होगा और वे दिनांक 14-5-1969 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 15/1/69-एच-1 एवं दिनांक 29-10-1984 के कार्यालय ज्ञापन संख्या 2011/5/83-रा.भा. (घ) में निहित शर्तें पूरी करने पर क्रमशः नकद एवं एकमुश्त पुरस्कार के भी पात्र होंगे।

(ग) केंद्रीय सरकार के जिन अधिकारियों/कर्मचारियों ने हिंदीतर राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के शिक्षा बोर्ड/विश्वविद्यालय से मैट्रिक स्तर तक अथवा उसके समतुल्य अथवा उससे उच्चतर कोई अन्य परीक्षा हिंदी द्वितीय अथवा तृतीय अथवा किसी अन्य भाषा के साथ संयुक्त विषय के रूप में हिंदी में निर्धारित उत्तीर्णांक लेकर उत्तीर्ण की है । उनके संबंध में यह समझा जाएगा कि उन्हें हिंदी के प्राज्ञ स्तर का अथवा राजभाषा के नियमानुसार हिंदी का कार्यासाधक ज्ञान प्राप्त है। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी के प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य नहीं होगा।

2. इसके अतिरिक्त यदि कोई अधिकारी/कर्मचारी राजभाषा नियम 1976 के उपनियम 10 (1)(ख) के अनुसार निर्धारित प्रपत्र में यह घोषणा करता है कि उसने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उसके लिए हिंदी के प्रवीण अथवा प्राज्ञ स्तर का प्रशिक्षण लेना अनिववार्य नहीं होगा।

3. यह आदेश केंद्र सरकार के मंत्रालयों/विभागों/अधीनस्थ एवं संबंधित कार्यालयों/उपक्रमों/निगमों/निकायों इत्यादि के उन सभी अधिकारियों/कर्मचारियों पर लागू होंगे जो वर्तमान में सरकारी सेवा में हैं, भले ही वे दिनांक 30-5-1988 से पूर्व नहीं भर्ती हुए हों।

4. कृपया इसे सभी के ध्यान में लाया जाए।

5. अंग्रेजी रूपांतर अलग से जारी किया जा रहा है।

(बी. सी. मण्डल),
निदेशक

पाठकों के पत्र

राजभाषा भारती का अक्तूबर-दिसंबर, 2006 का अंक प्राप्त हुआ । पत्रिका देखते ही बनती है। सुन्दर छपाई, उत्कृष्ट कागज, मानक हिंदी एवम् समसामयिक प्रबुद्ध लेखकों के विचारोतेजक लेख पठनीय व मननीय हैं। चिन्तन, सहित्यिकी एवम् विश्व हिंदी दर्शन, राजभाषा संबंधी गतिविधियां आदि . . . आदि से हिंदी-प्रेमी पाठक भाव-विभोर हो जाता है। उत्तरोत्तर प्रगति हेतु मंगल कामनाएं स्वीकार करें ।

–श्री निवास के. पंचारिया,
जगदीश मंदिर के पास, जिला बागलकोट (कर्नाटक), गुलेदगुड्ड-587203

''राजभाषा भारती'' के अंक 116 की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में चिन्तन, प्रशासनिक, साहित्यिक आर्थिक, भौगोलिक तथा राजभाषा संबंधी गतिविधियां इत्यादि विविध रचनाओं के समावेश से कई महत्वपूर्ण सूचनाएं एवं जानकारियां प्रदान करने का प्रयास किया गया है। श्री प्रशान्त कुमार मिश्र का प्रशासनिक लेख ''एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक सेवक'' इस अंक की उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती हैं इस अंक में छपी सभी सामग्री ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। संपादक मण्डल के साथ-साथ सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

–सुभाष कुमार बी, पटियाल
उप-सचिव (राजभभाषा), सचिवालय, संघ प्रदेश दादरा एवं नगर हवेली, तृतीय तल, सिलवासा-396230

''राजभाषा भारती'' पत्रिका की विविधमुखी सामग्री जहां पाठकों को अनेक विषयों पर उपयोगी जानकारी प्रस्तुत करती है वहीं मौलिक चिंतन की प्रेरणा देने में भी सहायक सिद्ध होती है। ''चिंतन'' शीर्षक के अंतर्गत समाहित आलेख न केवल देवनागरी लिपि एवं भाषा के महत्व को रेखांकित करने वाले है अपितु हिंदी की सार्वदेशिकता, साहित्यिकता एवं ऐतिहासिक विकास यात्रा के साथ-साथ इसके साहित्यिक-सांस्कृतिक परिदृश्य का भी लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं। वहीं ''प्रशासनिक'' व ''साहित्यिकी'' के अंतर्गत प्रकाशित रचनाएं भी परोक्षत: हिंदी प्रेम की मौलिक भावना को ही अनुप्राणित करती हैं । ''पुरानी यादें'' शीर्षक के अंतर्गत जहां दिवंगत हिंदी सेवियों के व्यक्तित्व एवं कृतितव का दिग्दर्शन है वहीं ''आर्थिक'' तथा ''भौगोलिक'' विषयों से संबंधित आलेख साहित्यिकता/संवेदनशीलता से इतर विषयों पर भी निरंतर लिखने हेतु उत्प्रेरित करते हैं। राजभाषा विषयक गतिविधियां/संगोष्ठी-सम्मेलन आदि पूर्ववत् सूचनात्मक एवं ज्ञानवद्र्धक है। संपूर्ण रचना संचयन हेतु ''विकल्प'' परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

–डॉ. दिनेश चमोला,
प्रभारी राजभाषा अनुभाग, वरिष्ठ हिंदी अधिकारी एवं संपादक ''विकल्प'',
भारत पेट्रोलियम संस्थान, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, हरिद्वार रोड,
मोहकपुर, देहरादून-248005 (उत्तराखण्ड)

''राजभाषा भारती'' का जनवरी-मार्च 2007 पठनीय प्रतीत हो रहा है क्योंकि राजभाषा के अनेक अनछुए पहलुओं पर विकास लेखकों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया है। साधुवाद।

श्री राकेश कुमार उज्जवल लिखित ''म्यूचुअल फंड'' पर लेख सामयिक तथा प्रसंगिक है। वित्त क्षेत्र तथा प्रबंधन के क्षेत्र में हिंदी के प्रगामी प्रयोग की दिशा में काफी काम करना वांछनीय हैं अस्तु, विशेषांक के रूप में ''वित्त और प्रबंधन'' पर विशेष लेख आमंत्रित कर प्रकाशित करें । भारतीय प्रबंध संस्थानों को इस ओर आकृष्ट करने की योजना बनाना समीचीन होगा।

–डॉ. मुकुल चंद पांडेय,
353, त्रिवेणीनगर लखनऊ-226620

''राजभाषा भारती'' का 116वां आद्योपांत देखा। बहुत अच्छा बना। निस्संदेह प्रत्रिका उत्कृष्ट स्तर की है। न केवल इसका मुद्रण तथा साज-सज्जा आकर्षक एवं सुरुचिपूर्ण है, बल्कि इसमें संकलित सामग्री भी रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक है। आपका संपादकीय प्रभावित करता है। पत्रिका से भारत के अनेक कार्यालयों की राजभाषा संबंधी गतिविधियों की अच्छी जानकारी मिली। श्री प्रशांत कुमार मिश्र का लेख ''एक सच्चा एवं आदर्श सभ्य लोक सेवक'' तथा डॉ. आर पी. सिंह का लेख ''वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग-समस्याएं और समाधान'' मुझे विशेष रूप से अच्छे लगे।

मुझे विश्वास है कि आप इस पत्रिका का स्तर बनाए रखेंगे तथा इसे और भी सुंदर एवं रोचक बनाते हुए नियमित रूप से प्रकाशित करते रहेंगे। इसके माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में काफी मदद मिल रही है।

–कृष्ण कुमार ग्रोवर पूर्व सचिव,
संसदीय राजभाषा समिति, एफ-बी/16, टैगोर गार्डन, नई दिल्ली-110027

''राजभाषा भारती'' का अप्रैल-जून, 2007 का 117वां अंक उत्कृष्ट एवं सराहनीय है। इसमें प्राद्योगिकी एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित कार्यालयों के लेखों को एक समान स्थान दिया गया है।

–निदेशक,
केंद्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, केंद्रीय न्यायालयिक संस्थान परिसर प्लॉट नं.-2, दक्षिण मार्ग, सेक्टर-36ए, चंडीगढ़-160036

''राजभाषा भारती'' (जनवरी-मार्च, 2007) अंक 116, वर्ष-29 की प्रति प्राप्त हुई । यह केवल पत्रिका नहीं, एक अभियान है। संपूर्ण भारतवर्ष का आईना है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक, गोवा से गुवाहाटी तक राजभाषा हिंदी से जुड़े महत्वपूर्ण कार्यक्रमों/गतिविधियों एवं अन्य सूचनाओं को प्रतिबिंबित करने का सशक्त माध्यम है-राजभाषा भारती । इस पत्रिका की सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं अनुकरणीय हैं।

इस पत्रिका से जुड़े सभी कर्मियों/संपादक मंडल को हमारी ओर से हार्दिक बधाई । संबंधित रचनाकारों/लेखकों को हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं। आप सबके प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय हैं।

–डॉ. पॉल माणिक्कम्,
विमानपतन निदेशक, भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण, गोवा-403801

''राजभाषा भारती'' का 117वां अंक प्रौद्योगिकी विशेषांक में विविध प्रौद्योगिकियों के बारे में संबंधित विद्वानों के लेख दिए गए हैं इसमें प्रौद्योगिकी की सांगोपांग जानकारी देने का हरसंभव प्रयास किया गया है। इसमें राजभाषा विभाग द्वारा विकसित कराए गए ''साफ्टवेयर'', ''बैंकों में सूचना प्रौदयोगिकी'', ''कृषि विकास में सूचना व संपर्क'', ''मोबाइल सेवा में हिंदी की स्थिति एवं संभावनाएं'', ''ऊर्जा बनाम पर्यावरण'', ''धमल भट्टी धातुमल'' आदि विषयों की जानकारी जनसामान्य को हिंदी में देना बड़ी ही उपादेय उपलब्धि है। इसे मैं यदि ''गागर में सागर'' कह दूं तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

–गजानन्द गुप्त,
मंत्री, राष्ट्रभाषा प्रचार परिषद्, 19-3-946, शमशीरगंज, हैदराबाद-500053 (आ.प्र.)

राजभाषा भारती का जनवरी-मार्च, 2007 अंक बहुत मनोरम लगा । विशेषकर, वरिष्ठ स्तर पर हिंदी का प्रयोग : समस्याएं और समाधान, राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की वास्तविकता, वर्ष 2006 का हिंदी साहित्यिक: सांस्कृतिक परिदृश्य और हिंदी तब और अब आदि लेख प्रभावशाली रहे। अंक काफी रोचक और ज्ञानवर्धक लगा। पत्रिका का मुखपृष्ठ व साज-सज्जा पाठ्क को पत्रिका पढ़ने हेतु आकर्षित करती है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका से कार्यालय में हिंदी का प्रचार-प्रसार होगा और सरकारी कामकाज में हिंदी की गति बढ़ेगी।

–डॉ. पवन कुमार,
राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय डेरी विकास बोर्ड, आणंद-388001

■

MGIPRRND—759 HA/2008—5,000

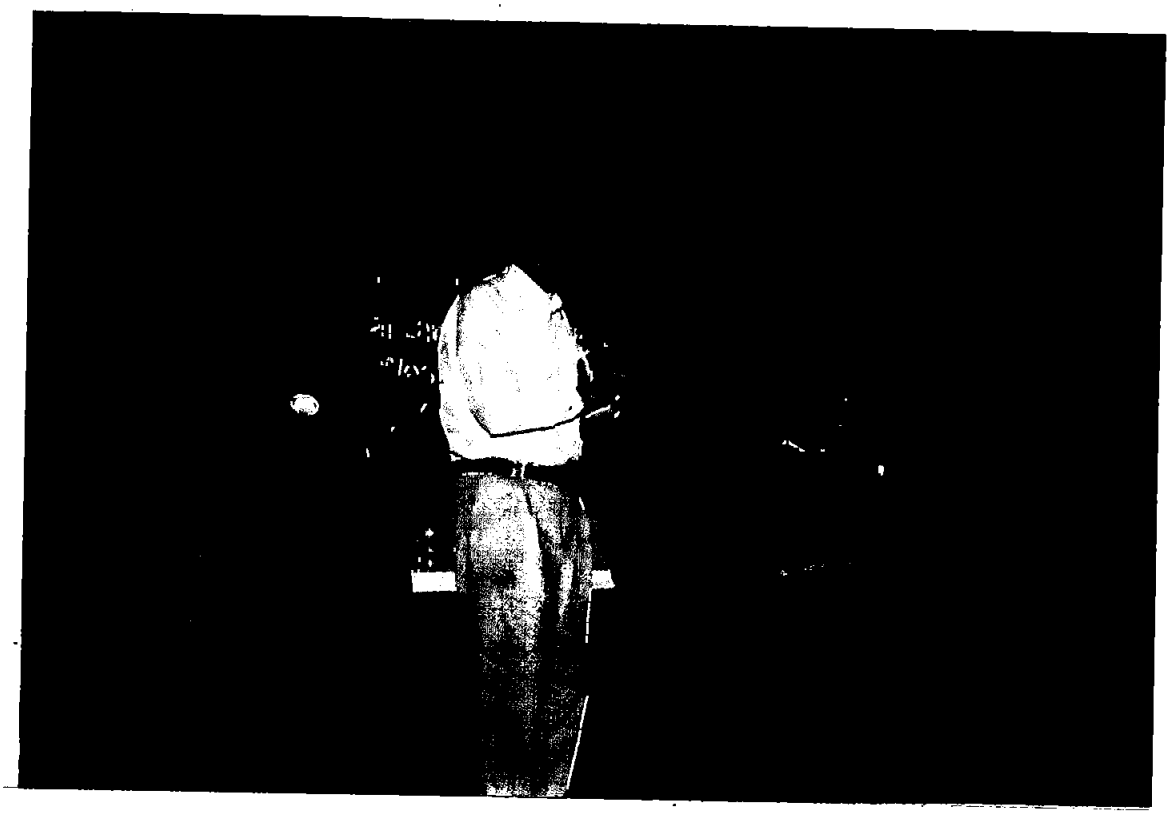

दिनांक 5 अक्तूबर, 2007 को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन (दक्षिण-दक्षिण पश्चिम क्षेत्र) हैदराबाद में पुरस्कार प्रदान करते हुए, उसमानिया विश्वविद्यालय हैदराबाद के कुलपति प्रोफेसर सुलेमान सिद्दीकी, भारत सरकार के सचिव श्री रंजीत ईस्सर, संयुक्त सचिव श्रीमती पी.वी. वल्सला जी कुट्टी ।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, एलूरू की बैठक का एक दृश्य ।

पं. सं. 3246/77
आई एस एम एन 0970-9398

विनोबा वाणी

मैंने हिंदी का सहारा न लिया होता तो कश्मीर और असम से केरल के गांव-गांव में जाकर मैं भूदान ग्राम दान का क्रांतिपूर्ण संदेश जनता तक न पहुंचा सकता । यदि मैं मराठी का सहारा लेता तो महाराष्ट्र से बाहर और कहीं काम न बनता । इसी तरह अंग्रेजी भाषा लेकर चलता तो कुछ प्रांतों में चलता, परन्तु गांव-गांव में जाकर क्रांति की बात अंग्रेजी द्वारा नहीं हो सकती थी । इसलिए मैं कहता हूं कि हिंदी भाषा का मुझ पर बहुत बड़ा उपकार है, इसने मेरी बहुत बड़ी सेवा की है ।

प्रत्येक प्रांतीय भाषा का अपना स्थान है । मैंने अनेक बार कहा है कि जिस प्रकार मनुष्य को देखने के लिए दो आंखों की आवश्यकता होती है, उसी तरह राष्ट्र के लिए दो भाषाओं, प्रांतीय भाषा और राष्ट्र भाषा की आवश्यकता होती है । इसलिए हम लोगों ने दो भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य माना है । भगवान शंकर का एक तीसरा नेत्र था जिसे ज्ञान नेत्र कहते हैं । इसी तरह हम लोगों को भी तीसरे नेत्र की जरूरत अनुभव हो तो संस्कृत भाषा का भी अध्ययन लाभकारी सिद्ध होगा और उस समय अंग्रेजी भाषा चश्मे के रूप में काम आएगी । चश्मे की जरूरत सबको पड़ती है । हां कभी कुछ लोगों को उसकी जरूरत पड़ती है । बस इतना ही है अंग्रेजी का स्थान । इससे अधिक नहीं । इसलिए मैं चाहता हूं कि हिंदी का प्रचार अच्छी तरह व्यापक रूप में होना चाहिए ।

भारत सरकार, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), लोकनायक भवन, नई दिल्ली-110003 के लिए शान्ति कुमार स्याल, सहायक संपादक द्वारा प्रकाशित तथा प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित ।